वैकल्पिक अर्थव्यवस्था

प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था

एक आर्थिक एजेंडा– भारतीय समाज के लिए घोषणापत्र

(Translated by Google)

बंदना चौधरी

संपादक–नरेंद्र अग्रवाल

प्रकाशक: बंदना चौधरी

वैकल्पिक अर्थव्यवस्था-प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था
एक आर्थिक एजेंडा- भारतीय समाज के लिए घोषणापत्र

पहला संस्करण: मई-2023
© लेखक के पास आरक्षित,
प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी तरह से पुन: प्रस्तुत या किसी अन्य भाषा में अनुवादित नहीं किया जा सकता।
यद्यपि इस पुस्तक के प्रकाशन में हर प्रकार की सावधानी बरती गई है, फिर भी इसमें हुई किसी भी त्रुटि या चूक के कारण किसी भी व्यक्ति को हुई हानि या क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक और मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे। यदि प्रकाशकों के ध्यान में कोई गलती लाई जाती है तो वे अगले संस्करण में उसमें सुधार करने के लिए बाध्य होंगे।

प्रकाशक: बंदना चौधरी
प्रथम तल, सी-6, अम्बिका नगर, सक्तीनाट
भरूच, गुजरात-392001, भारत

हमारे साथ जुड़ें

- **वेबसाइट**: resurrectionofdharma.com
- **ईमेल**: resurrectionofdharma@gmail.com
- **मोबाइल नंबर**: +91-9202974121

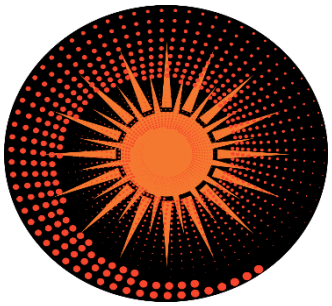

धर्म का पुनरुत्थान

मुख्य सामग्री नीचे तीन भागों में दी गई है

विषय–सूची: **पृष्ठ क्रमांक.**

1. प्रकाशक नोट, 6
2. प्राक्कथन, 7
3. प्रस्तावना, 10
4. मुखबंध, 12
5. संपादक का नोट, 16

भाग–1, अर्थव्यवस्था और आर्थिक परिदृश्य पर नोट्स–20 से 234

1. सामाजिक सुरक्षा की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था की सामाजिक सुरक्षा। 20
2. अर्थव्यवस्था: परिभाषा, सिद्धांत और आर्थिक मूल्यांकन की प्रणाली, 23
3. सोने की अर्थव्यवस्था या स्वर्णिम अर्थव्यवस्था। 25
4. मीडिया की अर्थव्यवस्था और मीडिया द्वारा अर्थव्यवस्था का प्रबंधन। 32
5. गोमांस की तेजी वाली अर्थव्यवस्था और गायों और बधिया बैल की अर्थव्यवस्था 45
6. मादक द्रव्यों की मितव्ययिता या मितव्ययिता का नशा। 55
7. युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध। 58
8. पारिस्थितिकी तंत्र, सौर (अग्नि), वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष का अर्थशास्त्र। 82
9. स्वच्छ और स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था और सफाई का अर्थशास्त्र और स्वच्छता. 95
10. अर्थव्यवस्था के सतत संचालन के लिए कार्य वितरण। 117
11. लाभकारी रोजगार और सम्मानजनक कार्य–संचालन के अवसर। 135
12. टिकाऊ अर्थव्यवस्था के लिए शासन, प्रशासन और उसका अनुकूलन। 141
13. पर्यटन की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था का भ्रमण। 164
14. कृषि विज्ञान – कृषि–संस्कृति या सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का अर्थशास्त्र। 169
15. स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय का अर्थशास्त्र। 179
16. धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थाओं) से अर्थशास्त्र का प्रबंधन – एक अहस्तक्षेप नीति। 195
17. टिकाऊ अर्थव्यवस्था के लिए परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण। 219
18. (वैकल्पिक) अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी तंत्र के अर्थशास्त्र का प्रबंधन । 232

भाग–2, आर्थिक संस्थाओं, प्रणालियों और परिधीयों पर नोट्स, (मीता– लाइफ़ स्टाइल एजेंडा से संपादित अंश) – 235 से 331

1. जीवन शैली. 236
2. सफल (सफलता) – सही फल. 238
3. ज़िम्मेदारी। 239
4. स्वतंत्रता। 241
5. धर्म. 242
6. विज्ञान। 244
7. मृत्यु और जीवन. 246
8. ब्रह्मचारी, संत, साधु और ऋषि। 249
9. परिवार – परिवार। 251
10. दौड़। 254
11. बूढ़े और बुद्धिमान (पुराने समय के बुद्धिमान लोग)। 255
12. बच्चे। 257
13. किशोर. 259
14. औरत। 260
15. पुरुष. 261
16. सेक्स. 262
17. विकलांग. 264
18. जनसंख्या। 267
19. जीडीपी बनाम जीएचआर (सकल खुशी अनुपात)। 269
20. मूल्य आधारित नेतृत्व. 270
21. धर्मनिरपेक्ष विस–ए–विज़ धर्म निर्पेक्षता। 272
22. कानून। 273
23. आदेश देना। 274
24. सरकार। 275
25. संसद। 279
26. मार्ग (कर्म, ज्ञान, भक्ति, राज योग और उसका) संयोजन)। 280
27. जीवन काल और उसका विभाजन (आश्रम व्यवस्था–प्रणाली) श्रम विभाजन का प्रावधान)। 282
28. वर्ग–जाति व्यवस्था– (वर्ण व्यवस्था– व्यवस्था) (पसंद का चयन) 284

29. समाज विकास के चरण. 287
30. आस्था, विश्वास, भरोसा और सत्य। 288
31. आदर्श और विचारधारा. 289
32. इतिहास और भूगोल. 291
33. आधुनिकीकरण और परंपरा. 294
34. समक्रमिकता. 295
35. पूजा स्थल – मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि। 296
36. प्रबंधन– प्रबन्ध। 298
37. सभी के लिए भोजन. 303
38. पोशाक एवं वर्दी। 305
39. भाषा, 308
40. रोजगार सृजन (भारत जैसे देश में)। 310
41. शक्ति–ऊर्जा. 312
42. वेश्यावृत्ति. 316
43. आरक्षण (भारत जैसे देश में) 318
44. मोटापा और कुपोषण। 321
45. आतंकवाद और आतंकवादी. 323
46. भ्रष्टाचार. 326
47. 'शिकायत और शिकायत', 'सुझाव और फीडबैक' और प्रस्तुतियाँ। 328
48. गर्व और आनंद. 330
49. हिंसा, अहिंसा, शांति और लय। 331

भाग–3, 332–342

1. **आर्थिक साधन – धन और मुद्रा।** 332

प्रकाशक नोट

"वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" पर यह दस्तावेज/पुस्तक लेखक और इसके संपादक की गंभीर मंशा का परिणाम कही जा सकती है, जिसका उद्देश्य युवाओं के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार और बुजुर्गों के लिए रोजगार के अवसर तलाशना, समय पर न्याय, अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं और आवश्यक शिक्षा समाज के सभी लोगों को उपलब्ध कराना है, चाहे उनकी वित्तीय और सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।

यह पुस्तक उन तरीकों और साधनों को खोजने से संबंधित है जिनके द्वारा स्थानीय पर्यावरण और व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखते हुए सभी के लिए बुनियादी सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है, जो भारतीय समाज के लिए एक बहुत जरूरी आर्थिक एजेंडा– घोषणापत्र के उद्देश्य को पूरा करती प्रतीत होती है।

"वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" पर इस पुस्तक में हमारे कई बुनियादी सवालों, जिज्ञासाओं, चिंताओं और परेशानियों के जवाब देने की कोशिश की गई है, जैसे: कोई व्यक्ति स्वस्थ, खुशहाल जीवनशैली कैसे अपना सकता है और उसे कैसे बनाए रख सकता है? लोगों को स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से उचित और भरोसेमंद जानकारी और मार्गदर्शन की उपलब्धता कैसे सुनिश्चित की जाए?

संसाधनों और आय का उचित वितरण कैसे सुनिश्चित किया जाए ताकि हम सभी के लिए हवा, पानी, भोजन, आश्रय और सूरज की रोशनी की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके? हम सभी के लिए शारीरिक, वित्तीय, भावनात्मक, नस्लीय और आध्यात्मिक सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाए? सबसे अच्छी टाउन और कंट्री प्लानिंग और इसकी स्थापना क्या हो सकती है? और भारत के लिए सबसे अच्छा आर्थिक मॉडल क्या हो सकता है?

यद्यपि कई लोगों को यह एक अजीब तरह से लिखी गई पुस्तक लग सकती है, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि, यह हमारे लिए बिल्कुल बुनियादी बातों से पुनः प्रयोग करने का सही समय है; इसलिए पुस्तक के लेखक और संपादक ने लोगों के लिए उचित चर्चा और पुस्तक में प्रस्तुत बिंदुओं पर अनुवर्ती कार्रवाई करने की ओर ध्यान देना उचित समझा।

बंदना चौधरी

प्राक्कथन

आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि महाभारत के समाप्त होते ही गांडीव (अर्जुन का धनुष और बाण) की शक्ति भी समाप्त हो गई, और भगवान कृष्ण के चले जाने के बाद अंधकार छाने लगा और अंधकार युग या कलयुग या मशीन युग (कलपुर्जा युग) या कलयुग या कल–काली का युग शुरू हो गया। कलयुग के आगमन के साथ ही सभी ऋषि–मुनियों ने अपने पैर पीछे खींच लिए और अपने आप को एकांत और प्रार्थना में समर्पित कर दिया।

ऐसा कहा जाता है कि अंधकार युग के आगमन के साथ ही सभी नाइटी–उल्लू, बैटमैन, स्पाइडरमैन, शिकारी, डाकू, चोर, मोहिनी, जादूगर, डार्क वेब के संचालक, चालाक कलाओं, काले जादू और छद्म विज्ञान के स्वामी तथा अन्य प्राणी और प्रचारक जो आमतौर पर अंधेरे में काम करते हैं, सक्रिय हो गए और अपनी गतिविधियां शुरू कर दीं।

अंधकार के प्रभाव में तथा संतों और महात्माओं से उचित संरक्षण और मार्गदर्शन से वंचित आम लोग आसानी से चालाक कलाओं और काले जादू के स्वामियों की ओर आकर्षित हो जाते थे।

अंधकार युग का प्रथम प्रभाव तब दिखाई दिया जब लोग, दैनिक सुख–सुविधाओं से वंचित, अंधकार युग से अंधे, सड़े–गले फलों और अनाजों से बनी मदिरा के नशे में चूर होकर, स्नेहहीन, अनादरशील और कमजोर हो गए कि वे बड़ों, पशु–पक्षियों, वनस्पतियों, मछलियों और जलचरों के प्रति आदर और कर्तव्यपरायणता नहीं रख सके, फलस्वरूप इनसे पारस्परिक सहयोग से वंचित हो गए और निराश हो गए।

इससे निराश होकर लोगों ने आत्म सुधार करने के स्थान पर जमीन पर ही अड़े रहे, पवित्रता को स्वीकार करने तथा मूर्खता को अस्वीकार करने के स्थान पर अपने दैनिक कार्यों, विशेषकर कृषि, में असहयोग की इस घटना को अपने तथाकथित वर्चस्व पर आक्रमण के रूप में लिया।

फिर संत के वेश में शैतान आता है जो लोगों को पालतू जानवरों को वश में करने, किसी भी तरह या किसी भी तरह पालतू जानवरों को अपने नियंत्रण में लेने की सलाह देता है, चाहे इसके लिए बछड़े को मारना हो या बैल को बधिया करना हो, उनकी नाक छिदवाकर उसमें धागा/रस्सी डाल देनी हो, विद्रोहियों पर स्थायी रूप से वजन डाल देना हो और उन्हें बंदी बनाकर रखना हो। मित्र के वेश में ये दुश्मन लोगों को आगे सलाह देते हैं कि इन्हें एक उपयोगी वस्तु के रूप में पूरी तरह से उपयोग करें। संत के वेश में ये शैतान, मित्र के वेश में दुश्मन लोगों को आगे सलाह देते हैं कि पशुओं और सोने को अपने पास रखना ताकत की निशानी है, पर्यावरण का अपने फायदे के लिए

इस्तेमाल करना है, और जिसके पास ये ज्यादा होंगे वो शक्तिशाली होगा। इन सबने लोगों की विचार प्रक्रिया और परिणामी व्यवहार और कार्रवाई में एक आदर्श बदलाव लाया है।

पर्यावरण का व्यक्तिगत लाभ के लिए उपयोग करने की इस सोच ने पशुओं, विशेषकर गौवंश पर बहुत अत्याचार किए हैं। बैलों को बधिया करके उन्हें बैल बना दिया गया है और खेती में उन्हें गुलाम पशुओं की तरह इस्तेमाल किया गया है, जिससे हम जो भी खाना खाते हैं और जो भी दूध पीते हैं, उसमें बैल और गाय का अभिशाप आ गया है।

इसे सबसे बड़ा आश्चर्य कहा जा सकता है कि कैसे पूरे समुदाय इस बुनियादी तथ्य को भूल गए कि "यह भोजन/दूध है जो मूड तय करता है और पानी जो आवाज़ तय करता है" और खुद को सबसे नीचे गिरा दिया, वह भी भारत जैसे देशों में जो अपने आंगन में सबसे बड़ी और सबसे बड़ी बुद्धि का दावा करता है। यह और भी अधिक आश्चर्यजनक है कि पिछले तीन हज़ार सालों में पाए गए अधिकांश नए धर्म जो मानव चेतना को ऊपर उठाने की बात करते हैं, पीने और खाने के इस बहुत ही बुनियादी मुद्दे पर चुप रहे जो पूरे मानव मानस और उसकी गतिशीलता को बदल देता है। अफसोस!

भारत के लिए गौवंश के प्रति यह उपयोगितावादी व्यवहार इसलिए भी अधिक आश्चर्यजनक है क्योंकि यहां के अधिकांश लोग शिव के मंदिरों में नंदी (बैल) और गाय को माता के रूप में पूजते हैं। इसके अलावा यह समझना भी अजीब लगता है कि कैसे गौवंश के प्रति इस वास्तविक जीवन के अत्याचार और क्रूरता को कई पंडित, संत और साधु अनदेखा कर देते हैं जो गाय माता और भगवान शिव और उनके दरबारियों पर मंत्रोच्चार और भाषण करते रहते हैं। ऐसे उपदेशकों का अनादर, ऐसे समुदायों का गरीबी में रहना और ऐसे देशों की गुलामी गौवंश के प्रति दुर्व्यवहार के स्वाभाविक परिणाम हैं।
जो लोग गाय का दूध पी रहे हैं और फिर गौमांस खा रहे हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि वे मशीनों की तरह असंवेदनशील हो गए हैं और कहीं न कहीं उन्होंने भी मशीनों की तरह इस्तेमाल किए जाने के लिए खुद को समर्पित कर दिया है और इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए अगर ये भ्रातृहत्या और नरसंहार की ओर मुड़ जाएं।

गर्म रेगिस्तान या बर्फीले देशों में गोमांस की बढ़ती खपत ने उन्हें भारत जैसे देशों में डेयरी उत्पादों के अधिक उपयोग के लिए आसान ऋण और अन्य प्रचार योजनाओं के माध्यम से डेयरी व्यवसाय को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है ताकि गोमांस की निरंतर मांग को पूरा किया जा सके। इसका परिणाम दूध और चीनी के साथ चाय और कॉफी की बढ़ती खपत में देखा जा सकता है। इसने समस्या को और बढ़ा दिया है और गौवंश के खिलाफ अपराध को बढ़ा दिया है और इसके

परिणामस्वरूप सबसे उपजाऊ भूमि का पच्चीस से तीस प्रतिशत घास, गन्ना, चाय और कॉफी की खेती के लिए उपयोग किया जा रहा है, जिसे वनों की कटाई और उसके बाद जलवायु परिवर्तन और चौतरफा दुख का एक प्रमुख कारण कहा जा सकता है।

ऊपर दिए गए तथ्यों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस अंतहीन मंदी से उबरना संभव है और इसकी शुरुआत हम अपने खाने-पीने और तरल पदार्थों में कुछ सरल सुधार करके कर सकते हैं। आध्यात्मिक मंडलियों में वे कहते हैं कि उपरोक्त बातों को मृगतृष्णा, असंख्यता या माया का प्रभाव कहा जा सकता है अन्यथा इतना सरल और छोटा सा कार्य इतने लंबे समय तक सफल नहीं हो सकता था। आध्यात्मिक मंडलियों में वे कहते हैं कि भोर होने वाली है और यह प्रार्थना, आत्म-सुधार, अपने खाने-पीने में सुधार, प्रकृति के प्रति अपने व्यवहार में सुधार का समय है और फिर मंथन के लिए तैयार हो जाओ ताकि जो भी मूर्खता है उसे त्याग दिया जाए और जो भी मूल्यवान है उसे हमारे सामूहिक कल्याण के लिए स्वीकार किया जाए। यह पुस्तक उपरोक्त जानकारी के लिए पर्याप्त जानकारी प्रदान करती है।

कौस्तुभ अग्रवाल

प्रस्तावना

वैकल्पिक अर्थव्यवस्था पर यह पुस्तक/दस्तावेज/परियोजना रिपोर्ट (इसे जो भी कहा जाए) एक स्नातक छात्रा (दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत के महिलाओं के लिए एक प्रमुख शैक्षणिक संस्थान की) के साथ सहयोग करते हुए किए गए प्रयासों से सामने आई है, जिसे निम्नलिखित में से किसी एक विषय में "आर्थिक समाजशास्त्र" पर एक छोटा अध्ययन सह शोध परियोजना करने के लिए कहा गया था:

1. डिजिटल विपणन
2. वैकल्पिक अर्थव्यवस्था
3. अनौपचारिक क्षेत्र
4. डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आधारित अर्थव्यवस्था
5. कार, जूते, बैग आदि की कमोडिटी चेन।
6. डिजिटल मुद्रा
7. विमुद्रीकरण (कई देशों में हो रहा है, एक अवधारणा के रूप में विमुद्रीकरण, भारत और स्वीडन केवल केस स्टडी हैं)।
8. शिकार और संग्रहण (अधिक तर्क देते हुए साहलिन्स के तर्कों का अनुसरण करें)
9. मार्क्स द्वारा सापेक्षिक वंचना की अवधारणा
10. अधिशेष मूल्य का सिद्धांत
11. आर्थिक चक्र
12. भारत, ऑस्ट्रेलिया आदि में ब्रिटिश उपनिवेश की साम्राज्यवादी प्रवृत्तियाँ (लैटिन अमेरिका में स्पेनिश उपनिवेशवाद जैसे उपनिवेशवाद के विशिष्ट संदर्भ का उपयोग करें)
13. पार सांस्कृतिक उपभोग
14. मार्क्स द्वारा अलगाव
15. प्रोटेस्टेंट नैतिकता और पूंजीवाद की भावना
16. पदार्थवाद.
17. अंतर्निहितता की अवधारणा
18. नियम-निष्ठता
19. पारस्परिकता और उपहार
20. बाजार: आदिवासी, आधुनिक और पारंपरिक
21. मध्यकालीन समय के किसान आदि।
22. समाजवादी अर्थव्यवस्था (चीन, रूस, कोरिया).

उपरोक्त विषयों की सूची को देखते हुए ऐसा प्रतीत हुआ कि "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" के विषय को छोड़कर, उपरोक्त किसी भी विषय पर अध्ययन सह अनुसंधान परियोजना करना या तो

पोस्टमार्टम करने या दूसरों के दृष्टिकोण को बढ़ाने जैसा होगा, जबकि वैकल्पिक अर्थव्यवस्था का विषय अब तक सुझाए गए सभी आर्थिक सिद्धांतों की विफलता से उत्पन्न वर्तमान आर्थिक अराजकता को दूर करने में एक संभावित योगदानकर्ता होने का सारा उत्साह और रोमांच देता है और फिर कुछ ऐसा पेश करता है जिस पर टिके रहना चाहिए।

और इस तरह हमने "वैकल्पिक अर्थव्यवस्था" विषय चुना। हालाँकि कॉलेज द्वारा मांगी गई पाँच-पृष्ठ की रिपोर्ट छात्र द्वारा फरवरी 2023 में निर्धारित एक महीने के समय में प्रस्तुत की गई थी, फिर भी मैंने और इस पुस्तक के मेरे मार्गदर्शक सह संपादक ने इस विषय को जारी रखने और "वैकल्पिक अर्थशास्त्र" पर एक व्यापक दस्तावेज़ प्रस्तुत करने का विचार किया, ताकि हम सभी इसे चरणबद्ध तरीके से सराह सकें और लागू कर सकें। इसी भावना से एक पुस्तक/दस्तावेज़/परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत की गई है।
भगवान् हमें आशीर्वाद दे,

बंदना चौधरी

(ए). मोटे तौर पर दो तरह की दिशाएँ होती हैं, जिसमें कोई सिस्टम काम करता है/आगे बढ़ता है, एक है समायोजन दिशा और दूसरी है लक्ष्य दिशा। हालाँकि, एक तीसरे तरह की दिशा की संभावना बनी हुई है जो इन दोनों का संयोजन है और जिसे शाश्वत/शाश्वत/सनातन कहा जा सकता है, जिसके बाद आनंद मिलता है। यह भी कहा जा सकता है कि जो कोई भी तीसरे प्रकार की दिशा का अनुसरण करता है, चाहे वह व्यक्ति हो, समाज हो या देश हो, वह आनंदित हो जाता है। कोई यह भी प्रार्थना कर सकता है कि पूरा विश्व इसका अनुसरण करे और खुशियों का आनंद उठाए।

(i) **"समायोजन अभिविन्यास" में** प्रणाली समायोजित हो जाती है और जो भी स्थिति आती है उसके साथ समायोजित होने के लिए तैयार रहती है। ऐसी स्थिति में विकास इस प्रकार होता है:
अव्यवस्था – संगठन – अव्यवस्था
कुसमायोजन – समायोजन – कुसमायोजन

समायोजन अभिविन्यास में, व्यवस्था के मामलों के शीर्ष पर बैठे लोग यथास्थिति बनाए रखने की कोशिश करते हैं और ऐसी व्यवस्था से जुड़े/जुड़े लोग आम तौर पर बिना किसी शोर–शराबे और परिणामी खुशी के अपना समय या यहां तक कि अपना पूरा जीवन गुजारने के लिए मजबूर होते हैं। इस तरह के अभिविन्यास वाले सिस्टम से जुड़े लोग नकारात्मक से सकारात्मक और फिर नकारात्मक, इत्यादि भावनाओं के चरम पर होते हैं।

(ii) लक्ष्य अभिविन्यास में , सिस्टम लक्ष्य निर्धारित करता है और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ता है और नई और (आमतौर पर) बेहतर स्थितियाँ बनाता है। लक्ष्य अभिविन्यास में विकास इस प्रकार होता है: –
कुसमायोजन – समायोजन – ठीक और परिष्कृत समायोजन,
अव्यवस्था – संगठन – संगठनात्मक विकास,

लक्ष्य अभिविन्यास में व्यवस्था के शीर्ष पर बैठे लोग सुधार करने का प्रयास करते हैं और ऐसी व्यवस्था से जुड़े लोग आमतौर पर लक्ष्य की ओर रोमांचकारी मार्च में भाग लेते हैं, इसकी क्रमिक प्रगति को देखते हुए प्रत्येक अगले कदम पर खुशी के गतिशील पारलौकिक पदानुक्रम का आनंद लेते हैं।
लक्ष्य अभिविन्यास वाली प्रणाली से जुड़े लोगों में अधिक आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण और दृष्टिकोण, आत्म–प्रेरणा, पर्याप्त लंबी अवधि के लिए इष्टतम गुणवत्ता और समय के बारे

में चिंता पाई गई। हालांकि, लक्ष्य अभिविन्यास के साथ शेष प्रश्न इरादे की शुद्धता और इसलिए इसकी स्थिरता और लक्ष्य की प्राप्ति के बाद प्राप्त फलों के वितरण के अलावा लक्ष्य की प्राप्ति के बाद क्या होगा?

(iii) समायोजन अभिविन्यास के साथ-साथ लक्ष्य अभिविन्यास में अंतर्निहित समस्या के कारण गुरु स्वयं को **शाश्वत/शाश्वत/सनातन अभिविन्यास के अधीन कर देते हैं** , जिसे समायोजन और लक्ष्य अभिविन्यास के संयोजन का सुधारित संस्करण कहा जा सकता है: यह श्रेणी उन लोगों की है जो सर्वशक्तिमान के सामने आत्मसमर्पण करते हैं और जीवन को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसा वह आता है, ऐसे व्यक्ति/समाज/देश लक्ष्य निर्धारित करते हैं और लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में और उसके बाद की यात्रा में उत्पन्न होने वाली स्थिति के अनुसार समायोजन करते हैं।

(बी) यदि हम दुनिया भर में आर्थिक परिदृश्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो शायद हमें यह स्वीकार करने में खेद महसूस करना होगा कि अधिकांश देश या तो समायोजन अभिविन्यास को अपना चुके हैं या खुद को इसके लिए प्रस्तुत करने के लिए मजबूर हैं और केवल कुछ चुनिंदा देशों के बारे में कहा जा सकता है कि उनकी अर्थव्यवस्था के लिए लक्ष्य अभिविन्यास है, लेकिन वर्तमान में कोई भी देश खुद को सतत/शाश्वत/सनातन अभिविन्यास के लिए प्रस्तुत नहीं करता है, इसलिए हम जो देख रहे हैं वह एक आर्थिक अराजकता या परिणामहीन आर्थिक युद्ध है, जिसे दिन-दहाड़े डकैती और लूटपाट, दमन और आक्रमण, उकसावे और संरक्षण, जीवन-रक्षक और जीवन लेने वाली गतिविधियों में वृद्धि से आसानी से समझा जा सकता है।

वैकल्पिक अर्थव्यवस्था (सरल, व्यवस्थित और टिकाऊ अर्थव्यवस्था) पर यह पुस्तक/दस्तावेज/प्रोजेक्ट रिपोर्ट (जिसे कोई भी नाम दे) वर्तमान स्थिति की आलोचनात्मक टिप्पणियों और हमारे सामूहिक कल्याण के लिए एक संभावित रोडमैप को शामिल करती है, ताकि न केवल आर्थिक गड़बड़ी से उबरा जा सके बल्कि धनिकतंत्र से बेहतर लोकतंत्र की ओर बढ़ने और टिकाऊ विकास के लिए 'विकल्प' पेश किया जा सके। एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो अपने नागरिकों को सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा (भोजन, पानी, कपड़ा, आश्रय, मनोरंजन, युवाओं को लाभकारी रोजगार और बुजुर्गों को सम्मानजनक जुड़ाव के साथ-साथ स्वास्थ्य, न्याय और सलाह/मार्गदर्शन की समय पर सेवा की समाज द्वारा संचालित मुफ्त सुविधा) प्रदान कर सके और अपने मेहमानों और आगंतुकों को भी यही देने की कोशिश करे।

विषय सूची पर एक त्वरित नजर डालने और अनुवर्ती स्कैनिंग से पता चल जाएगा कि कैसे पति–पत्नी, माता–पिता, बेटा–बेटी, समाज (या धर्म या स्थानीय सरकार) – राष्ट्रीय सरकार के बीच आय / संसाधन / प्राप्तियों का उचित वितरण और विभिन्न आयु वर्ग के लोगों (लड़के–लड़कियां, महिला–सज्जन) के बीच काम का विकल्प सह क्षमता संचालित वितरण एक स्थायी स्वस्थ अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करता है जो पारिस्थितिकी तंत्र में दृढ़ता से निहित है।
जहाँ भी आवश्यक समझा गया, एक उदाहरण या स्थितिजन्य प्रस्तुति भारत से ली गई है।

(सी) 'अंतहीन समायोजनों और अनगिनत कष्टों वाली धन–प्रधान–प्रधान सह राज्य–समर्थित अर्थव्यवस्था (धनिकतंत्र)' से, समाज–प्रधान सरल, सीधी, व्यवस्थित और टिकाऊ अर्थव्यवस्था और वास्तविक लोकतंत्र के लिए एक निर्बाध प्रतिस्थापन के लिए, वैकल्पिक अर्थव्यवस्था का मॉडल प्रस्तुत करना।

(D). While going through this document it will be worth referring to following books which will definitely help in consolidation of the views on alternate economy:
(1). सनातनी वैश्विक व्यवस्था (PERPETUAL WORLD ORDER), (हमारी व्यक्तिगत एंव सामूहिक प्रसन्नता के लिए आवश्यक संस्थाओं के पुर्नत्थान हेतु), विवेचना एवं दृष्टि प्रपत्र-
(2). Kaam ki baat– "काम की **बात**: जल, जमीन, जंगल पर शुद्ध जल, शुद्ध हवा और साफ़ ज़मीन की समस्याओं, विसंगतियों और प्रबंधन पर वासठ खुले पत्रों का संग्रह "–
(3). मीता–जीवन शैली एजेंडा (सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक–राजनीतिक एजेंडा)।
(4) दिव्य–लोकतंत्र (दिव्य–लोकतंत्र)– (हिंद स्वराज का पुनरावलोकन)
(5). परांजलि (गीतांजलि का पुनरावलोकन) डॉ. कल्पना सेंगर द्वारा
(6). धार्यते इति धर्म (ताओ ते चिंग का पुनरावलोकन) डॉ. कल्पना सेंगर द्वारा

(इ) हमारी इच्छा या प्रकृति की इच्छा

हर कोई समझता है,
अंततः ईश्वर (प्रकृति) की इच्छा ही प्रबल होगी,

प्रबंधन का संबंध, पुरुषों, धन, सामग्री से है,
मशीन, बाज़ार, जनता को काम देने के लिए,

योजना मनुष्य और पदार्थ (इरादों, अवधारणाओं,
इसका व्यवहार्य गठन और प्रस्तुतिकरण), प्रबंधकों को कार्य देना।

प्रकृति अंतर्ज्ञान (कंपन, ऊर्जा, दृष्टि), कल्पना और
स्वप्न (विचार और संकल्प), योजनाकारों को काम देना,
अतः अंततः प्रकृति की इच्छा ही प्रबल होती है।

इसलिए, जो लोग प्रकृति के साथ तालमेल बिठाते हैं, वे स्वस्थ, खुश और पवित्र रहते हैं। ऐसा कहा जाता है, "जो लोग प्रकृति या सर्वशक्तिमान के मार्गदर्शन का पालन करते हैं और अपने कर्म (कार्य–क्रिया–गतिविधियाँ) प्रकृति/सर्वशक्तिमान/अल्लाह/ब्रह्मा को समर्पित करते हैं, उनके कर्मों की सफलता जल्द ही मिलती है, और ऐसे लोग खुश और प्रेमपूर्ण होते हैं"।

ऊपर प्रस्तुत है,
भगवान् हमें आशीर्वाद दे,

बंदना चौधरी

संपादक नोट

यह पुस्तक – वैकल्पिक अर्थव्यवस्था, मूल रूप से भारतीय समाज के लिए एक आर्थिक एजेंडा है या इसे भारत, भारतीय समाज और बड़े पैमाने पर दुनिया के लिए एक एजेंडा या आर्थिक घोषणापत्र भी कहा जा सकता है, न कि केवल अकादमिक हित की सेवा करने वाली पुस्तक। वैकल्पिक अर्थव्यवस्था पर इस पुस्तक या दस्तावेज़ को अर्थशास्त्र के सिद्धांतों पर एक बुनियादी ग्रंथ माना जा सकता है जो न केवल सीमित स्थिरता प्रदान करता है बल्कि एक तरह की अनंतता / शाश्वतता या संस्कृत में – सनातनता (निरंतर– बारहमासी) प्रदान करता है। यह उम्मीद की जाती है कि अर्थशास्त्र और शासन के कई विशेषज्ञ प्रस्तुत किए गए कई प्रमेयों और दिए गए सूत्रों, उठाए गए मुद्दे और दिए गए बिंदुओं पर और विस्तार से बताना चाहेंगे ताकि समाज को खुद को बनाए रखने के लिए व्यापक और संक्षिप्त रूपरेखा और दिशानिर्देश मिल सकें। आसन्न कार्य के लिए चिंता की सराहना करने के लिए, उठाए गए तीन प्रश्नों और दिए गए उत्तरों को संदर्भित करना उचित होगा:

प्रश्न: वैकल्पिक अर्थव्यवस्था में सरकार कैसी होगी? या आपको लगता है कि वैकल्पिक अर्थव्यवस्था कैसी होगी?
उत्तर: यह हमारी इच्छा या अपेक्षा के अनुसार होगा, अर्थात हमें अनावश्यक चीजों के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं होगी, चाहे भौतिक सुख के लिए हो या भावनात्मक सुख के लिए। हम सभी को लगता है कि हम जहाँ भी जाएँ, हमें कठिनाई और अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना चाहिए, इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हम सभी सर्वांगीण विकास और उन्नति चाहते हैं या स्पष्ट शब्दों में, हम सभी चाहते हैं कि संपूर्ण विश्व मेरा परिवार है की भावना व्यावहारिक रूप से अस्तित्व में आए, व्यवहार में आए और केवल उपदेशों के लिए दूरस्थ अवधारणा के रूप में न हो। वैकल्पिक अर्थव्यवस्था पृथ्वी पर स्वस्थ, खुश और पवित्र व्यक्तियों, उनके परिवार और हमारे पूरे समाज की व्यवस्था प्रदान करती है।

प्रश्न: वैकल्पिक अर्थव्यवस्था की आवश्यकता महसूस की जा रही है, लेकिन इसे संकल्पित करने वाले और इसे प्रकाश में लाने वाले लोग कहीं नज़र नहीं आ रहे हैं। हालाँकि मैं पोप, शंकराचार्य और धर्म के अन्य नेताओं और सामाजिक क्षेत्र के अन्य नेताओं से परिचित हूँ, लेकिन वे लोग ऐसा करने वाले नहीं हैं। इस दुनिया में सबसे बुरी चीज़ जो हो सकती है, वह है धर्म का व्यवसायीकरण और पुराने धर्म इतने संतृप्त हो चुके हैं कि उनमें कुछ भी नहीं जोड़ा जा सकता (यह भी दुनिया में ज्ञान की बाढ़ के कारण है)। केवल एक नया धर्म या बिल्कुल नया धर्म या एक नया संप्रदाय जोड़ा जा सकता है ताकि नए विचारों को बाज़ार में पेश किया जा सके। मैं गंभीरता से महसूस करता हूँ कि पुराने धर्म का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए नहीं किया जा सकता।

सिद्धांत और व्यावहारिकता में अंतर है। लोकतंत्र और साम्यवाद सिद्धांत में अच्छे हैं, लेकिन व्यवहार में वे दोनों भ्रष्ट हैं। मनुष्यों की बढ़ती बुद्धि, पैसे की बढ़ती दर और दुनिया में लोगों के लिए घटती जगह, यहाँ तक कि अब भी धर्म भ्रष्ट है, तो आप आज, कल, सौ साल बाद और इतने पर अर्थव्यवस्था के बारे में क्या कह सकते हैं।

उत्तर: आपके प्रश्न के दो भाग हैं और मैं उनका उत्तर दो भागों में देना चाहूंगा:
यह जानकर अच्छा लगा कि आपको भी वैकल्पिक अर्थव्यवस्था की जरूरत महसूस हुई और आप इसके तौर-तरीकों को लेकर चिंतित हैं। जरूरी बदलाव लाने के लिए आप उस व्यक्ति की ओर देख रहे हैं जो या तो अब इस दुनिया में नहीं है या अपने धर्म के युवाओं को नियंत्रित करने में विफल रहा है। एक तरह से आप अपने माता-पिता, दादा-दादी यानी पिछली पीढ़ी की ओर देख रहे हैं और निराश हो रहे हैं, जबकि मैं आने वाली पीढ़ी की ओर देख रहा हूं और उम्मीद रख रहा हूं।
साम्यवाद ने अपना जीवन जी लिया है; लोकतंत्र (डेमोस-पीपुल्स, क्रेसी-रूल) ने अपना आधा जीवन दानव-क्रेसी के रूप में और शेष आधा प्रदर्शनीय अभिजात वर्ग के रूप में जी लिया है, दोनों ही सिद्धांत और व्यवहार में अपना कार्यकाल पूरा कर रहे हैं। आने वाले समय में सरकार का जो स्वरूप आएगा, उसमें ईश्वरीयता की झलक होगी और इसे ईश्वरीय लोकतंत्र कहा जा सकता है, जिसमें वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के रूप में प्रस्तुत आर्थिक संरचना होगी।

प्रश्न : यह बहुत बड़ा काम लगता है। आपको क्या लगता है कि वैकल्पिक अर्थव्यवस्था में प्रस्तुत अवधारणाएँ स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार की जाएँगी? हम सब इसे कब लागू करेंगे?

उत्तर : वे कहते हैं ' **यथा मुंडे-तथा ब्रह्माण्डे** (जैसा सिर, वैसा ही ब्रह्मांड)', मेरे मन में विचार अचानक से नहीं आ रहा है, यह पर्यावरण में होना चाहिए, पृथ्वी पर हर किसी को कुछ झलक, कुछ संकेत, वैकल्पिक अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था के उचित विचार का कुछ विचार/विचार होना चाहिए।
प्रत्येक लकड़ी में आग होती है, उसे जलाने के लिए केवल एक माचिस की तीली की आवश्यकता होती है, इसलिए यह समय, स्थान और व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह की ऊर्जा का मामला हो सकता है कि आग स्थानीय स्तर या क्षेत्रीय स्तर पर बनी रहे या यह पृथ्वी के संपूर्ण भूगोल को छू ले।

हमारे लिए, इस पुस्तक में प्रस्तुत 'वैकल्पिक अर्थव्यवस्था' की अवधारणाएँ किसी की कल्पना से भी अधिक तेज़ी से क्रियान्वित होती प्रतीत होती हैं। चूँकि बेहतर आर्थिक संरचना की आंतरिक इच्छा हर किसी के दिल में है, इसलिए बस इसे सतह पर लाने की ज़रूरत है। हम अभी से एक स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र समाज के निर्माण की दिशा में काम शुरू कर सकते हैं।
भगवान् हमें आशीर्वाद दे।

नरेंद्र अग्रवाल

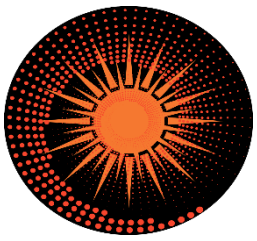

धर्म का पुनरुत्थान

भाग - 1

अर्थव्यवस्था और आर्थिक परिदृश्य पर नोट्स

1. सामाजिक सुरक्षा की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था की सामाजिक सुरक्षा

जो भी हो, चाहे यह सच हो या सिर्फ आशंका हो लेकिन हाल ही में दुनिया भर में हुए लॉकडाउन और महामारी के प्रकोप ने एक बात बहुत स्पष्ट कर दी है कि वायरस से संक्रमित एक भी व्यक्ति न केवल अपने पूरे परिवार और अपने साथ उसी घर में रहने वाले प्रियजनों को बल्कि अपने समूह/इलाके के कई लोगों को संक्रमित कर सकता है। इसके अलावा ये लोग बीमारी के संभावित वाहक होंगे जो इसे उस व्यक्ति/घर/इलाके में फैलाएंगे जहां भी वे काम के लिए जाते हैं या अन्यथा और जो भी उनके घर/स्थान में काम करने के लिए आते हैं। चूंकि वायु परिसंचरण और जल प्रवाह के लिए कोई सीमा नहीं है, इसलिए जीवित या मृत वायरस से संक्रमित एक भी व्यक्ति बीमारी फैलाने की क्षमता रखता है या पूरी पृथ्वी/विश्व के लोगों को संक्रमित कर सकता है।

इस मैट्रिक्स को देखते हुए यह स्पष्ट है कि यदि कोई व्यक्ति स्वस्थ/रोगमुक्त होना चाहता है तो यह उसके हित में है कि वह न केवल अपने घर, भवन, मोहल्ले, शहर, देश और पूरी पृथ्वी के अन्य लोगों को स्वस्थ/रोगमुक्त बनाए, इस तरह से यदि वह या उसका समाज दूसरों को रोगमुक्त बनाने और उन्हें रोगमुक्त रखने में मदद कर रहा है तो वह दूसरों का उपकार नहीं कर रहा है, बल्कि यह कहा जा सकता है कि वह और उसका समाज अपने स्वार्थ की सेवा कर रहा है और उसे स्वार्थी भी कहा जा सकता है। इस बिंदु पर यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दुनिया को एक बड़े परिवार की तरह समझना केवल उदारता, करुणा या परोपकार के कारण नहीं आया है, बल्कि भय/खतरे, संकलन और पूर्ण स्वार्थ (दूसरों की बीमारियों/संक्रमण, बीमारी आदि से स्वयं की रक्षा करने) के कारण भी आया है।

इस समझ के अनुसार, अगर कोई व्यक्ति बेसहारा हो जाए और उसके पास पैसे या संसाधन न हों, तो उसे किन चीज़ों की ज़रूरत होगी, ताकि वह बीमारियों का आसान शिकार न बने और फिर आस-पास के लोगों के लिए ख़तरा न बने? अगर वह व्यक्ति पहले से ही बीमार है और इस वजह से उसे अपने घर से निकाल दिया गया है या उसके प्रियजनों ने उसे जीने या मरने के लिए दूर-दराज के इलाके में अकेला छोड़ दिया है, तो क्या होगा? और इससे भी आगे, अगर कोई व्यक्ति पैसे होने के बावजूद अकेलेपन के कारण बेसहारा हो जाए, तो क्या होगा?

आगे निम्नलिखित प्रस्तुत हैं:

(क) यदि कोई विदेशी व्यक्ति (जो स्थानीय भाषा भी नहीं जानता) रोजगार की तलाश में हमारे समाज, देश या किसी अन्य देश में लूट लिया जाए, बेरहमी से पीटा जाए और फिर लहूलुहान करके छोड़ दिया जाए, तो क्या होगा? और अंत में, यदि कोई व्यक्ति युद्ध में घायल हो जाए

और गिरफ्तार हो जाए, तो क्या होगा? और युद्ध या प्राकृतिक आपदाओं या बीमारी के प्रकोप के कारण लावारिस पड़े शवों के प्रति हमारा रवैया कैसा होना चाहिए, ताकि भविष्य में संभावित बीमारियों से बचा जा सके?

ऐसी स्थिति में, निराश्रित/असहाय/परित्यक्त/घायल एवं भयभीत व्यक्ति के अप्रत्याशित प्रवेश से संक्रमित/रोगग्रस्त होने के संभावित खतरे से बचाव के लिए उदासीन रहने या उसे भगा देने या थोड़ी सी तात्कालिक सहायता (टिट बिट्स) करने तथा अनसुना करने के अलावा केवल दो ही सार्थक विकल्प उपलब्ध हैं: (1). व्यक्ति को मार दिया जाए तथा शव को या तो अंतिम संस्कार या दफनाकर या समुद्र में बहाकर या गिद्धों के खाने के लिए किसी ऊंचे कटोरे में डालकर समाप्त कर दिया जाए/हटा दिया जाए, ताकि मृत शरीर भी न बचे तथा समाज के लोगों को ही नहीं, बल्कि हवा, जमीन, जल निकायों और भूमिगत जल को भी संक्रमित कर दे।

इस नए प्रवेशी (चाहे वह किसी भी रूप में हो – पुरुष या महिला – भिखारी, निराश्रित, वेश्या, पकड़े गए दुश्मन, नागरिक या सैनिक, परित्यक्त बच्चे या निकाले गए युवा या अकेले वृद्ध) से संक्रमित/रोगग्रस्त होने के संभावित खतरे से स्वयं, परिवार और समाज की रक्षा करने का दूसरा विकल्प है कि उसे सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जाए, ताकि न केवल वह जीवित रहे और पिछले आघात से उबर सके, यदि कोई हो, बल्कि समाज में योगदान/चुकाने में सक्षम हो सके।

(ख) सामाजिक सुरक्षा का कोई भी रूप हो या समाज, स्थानीयता, राष्ट्रीय और राजनीतिक–आर्थिक–धार्मिक मोर्चे पर जो भी व्यक्ति मामलों के शीर्ष पर हो, बीमारी के फैलने के संभावित खतरे को दूर करने के लिए ऊपर कम से कम एक बात कही गई है, वह है रोगियों को हर संभव उपचार और अन्य आवश्यकताएं जैसे भोजन, पानी, कपड़ा और आश्रय प्रदान करना, जो सभी के लिए सामाजिक सुरक्षा का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, भले ही व्यक्ति के पास पैसा / संसाधन / बीमा हो या नहीं।

इससे यह संकेत मिलता है कि न केवल रोगों का उपचार, बल्कि अन्य सभी चीजें जो किसी व्यक्ति की प्रतिरक्षा को नष्ट कर सकती हैं और उसे बीमार या संक्रमित कर सकती हैं, जैसे भोजन, पानी, हवा, कपड़े, आश्रय, शारीरिक सुरक्षा, उचित जानकारी, सलाह और मार्गदर्शन, मनोरंजन, व्यायाम एवं फिटनेस केंद्र और न्याय, आसानी से, समय पर और यदि आवश्यकता हो तो बिना किसी पूर्व शर्त या बाद के बंधन के सभी के लिए स्वतंत्र रूप से उपलब्ध होनी चाहिए।

इसके अलावा ये सेवाएँ न केवल ऊपर बताए गए सभी व्यक्तियों के लिए उपलब्ध होंगी, बल्कि समाज में रहने वाले सभी लोगों के लिए भी उपलब्ध होंगी, जब भी कोई विपत्ति आए – जैसे घर

में कभी–कभार होने वाले झगड़े के दौरान या फिर घर से दूर किसी एकांत में रहना हो। यानी अगर परिवार में पति–पत्नी या बच्चों के बीच कोई छोटा–मोटा झगड़ा हो जाए, तो कोई भी पुरुष या महिला किसी भी समय (चौबीस घंटे) सम्मानजनक और गरिमापूर्ण तरीके से उपरोक्त सेवाओं का लाभ उठा सकेगा।

इसके अलावा, यह सर्वविदित और सिद्ध तथ्य है कि पालतू पशु और पक्षी भी संक्रमण/रोग फैलाने का स्रोत हो सकते हैं, इसलिए यह भी महत्वपूर्ण है कि भोजन/चारा, शुद्ध हवा और पानी, पालतू पशुओं के लिए आश्रय और पक्षियों के लिए वृक्षारोपण तथा किसी भी संक्रामक या साधारण बीमारी और आकस्मिक चोटों के खिलाफ उपचार सुविधाएं जैसे सभी आवश्यक जीवन निर्वाह इनपुट समाज के खर्च पर उपलब्ध होने चाहिए, अर्थात स्थानीय लोगों से एकत्रित राशि से।

(घ) यदि हम उपरोक्त बातों पर गौर करें तो यह बहुत स्पष्ट है कि चिकित्सा उपचार सुविधाएं, न्यायपालिका, शारीरिक सुरक्षा, भोजन, पानी, आश्रय, मनोरंजन, शारीरिक व्यायाम सह खेल का मैदान, श्मशान/दफ़न, और शिक्षा सह सूचना और मार्गदर्शन केंद्र स्थानीय समाज के नियंत्रण में होने चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर सरकारें, चाहे वे कितने भी कल्याणकारी उपायों की घोषणा करें या करें, चौबीसों घंटे व्यक्तिगत स्पर्श प्रदान नहीं कर सकती हैं, खासकर समाज की कीमत पर।

यदि समाज बुनियादी सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना चाहता है तो समाज को स्थानीय सुरक्षा, सभी प्रकार के न्याय (जूरी प्रणाली द्वारा), रोजगार, स्थानीय नियोजन और राष्ट्रीय नियोजन में भागीदारी, धार्मिक आवश्यकता, स्वास्थ्य और शिक्षा, मीडिया और मनोरंजन, पर्यावरण और स्थानीय आर्थिक गतिविधि, करों का संग्रह, अपने आस–पास के उद्योगों को चलाने में भागीदारी और अन्य स्थानीय मुद्दों के प्रावधान के सभी पहलुओं को ध्यान में रखना होगा। दूसरी ओर राष्ट्रीय सरकार संवैधानिक न्यायालय, रिजर्व पुलिस और सेना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क (एक तरफ सड़क, रेल, जल और वायु तथा दूसरी तरफ ऑडियो, वीडियो और डेटा), आपदा प्रबंधन और राहत अभियान, राष्ट्रीय त्योहार और उनके उत्सव, अनुसंधान और विकास में योगदान, विदेशी मामले और अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए विभाग आदि को संभालने तक ही सीमित रहेगी। ***

2.अर्थव्यवस्था: परिभाषा , सिद्धांत और आर्थिक मूल्यांकन की प्रणाली

अर्थव्यवस्था–परिभाषा: अब तक दी गई अनगिनत परिभाषाओं में, यह 'ऑक्सफोर्ड शॉर्टर' या संस्कृत शब्दकोष है जो मूल परिभाषा देता है:
अर्थ:–अर्थव्यवस्था (अंग्रेजी शब्द पृथ्वी–आधार इसी से बना है)।
अर्थ: साधन– अर्थ और धन। शास्त्र – लिखित रूप में या श्रुति और स्मृति (कहना और स्मरण) के माध्यम से विधि, प्रक्रिया, मार्ग और परिणाम का संग्रह।
नीति: नैतिकता, नीति जो नियम (प्रकृति) से आती है या नैतिकता, जो पर्यावरण से आती है।
इको: पर्यावरण की ध्वनि या पारिस्थितिकी–पारिस्थितिकी तंत्र का संक्षिप्त रूप।
नीति – कानून, प्राकृतिक कानून – जो पारिस्थितिकी से उत्पन्न होते हैं।
नॉमिक्स – लिखित रूप में विधियों, प्रक्रिया, योजना और परिणामों का संग्रह।

अर्थशास्त्र – साधन और धन के लिए, द्वारा और उसके तरीकों, पथ और परिणाम का संग्रह।
अर्थव्यवस्था – पर्यावरण में सामग्री (धन) स्थानांतरण की प्रक्रिया, योजना और तरीकों का संग्रह।

अर्थशास्त्र सम्पूर्ण पृथ्वी, अर्थ–अर्जन, धन और धन कमाने के तरीकों तथा उसके अर्थ का विज्ञान है, जो किसी वस्तु या सेवा का मूल्य निर्धारित करता है, उसे बेकार या मूल्यवान या अमूल्य बनाता है।

चाणक्यसूत्र (15.1) में अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी गई है: मनुष्य की वृत्ति को अर्थ कहते हैं। मनुष्य से संयुक्त भूमि ही पृथ्वी/अर्थ/धन है। जिस शास्त्र में इसकी प्राप्ति और पालन के तरीकों का वर्णन है, उसे अर्थशास्त्र कहते हैं।

आर्थिक सिद्धांत:
'वस्तु विनिमय प्रणाली' से लेकर पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद, शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत से लेकर नवीनतम 'नव शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत' तक सभी आर्थिक सिद्धांत किसी न किसी मामले में, अपने जन्म स्थान पर और वैश्विक व्यवस्था के रूप में विफल रहे हैं। वर्तमान में जो प्रचलन में हैं, वे सभी का मिश्रण हैं और अधिकांशतः नव शास्त्रीय अर्थशास्त्र सिद्धांत के अवशेष हैं। किसी भी सिद्धांत के वर्तमान समर्थक वे लोग हैं, जिन्हें नुस्खा देर से मिला, और कई लोगों को बुझे हुए सिगार को पीने की आदत है।
अब तक विकसित सभी आर्थिक सिद्धांतों की असफलता का कारण यह है कि किसी भी आर्थिक सिद्धांत ने अर्थशास्त्र और अर्थशास्त्र की मूल परिभाषा को ध्यान में नहीं रखा है।

प्रत्येक अर्थशास्त्री ने अपनी आवश्यकता की उपलब्धता और उपयुक्तता के अनुसार अर्थशास्त्र को परिभाषित किया है तथा उसे छोटे–छोटे स्थानों और समय में सफल पाते हुए उसका सामान्यीकरण प्रस्तावित किया है। 'पर्यावरण' के मूल सिद्धांत पर विचार किए बिना जो भी आर्थिक सिद्धांत विकसित होगा, वह असफल होगा और असफल होना तय है (बिना किसी किंतु–परंतु के)। * यह निश्चित है कि भविष्य का आर्थिक सिद्धांत इसी से विकसित होगा और उसकी प्रशंसा की जाएगी, उसे स्वीकार किया जाएगा और पूरे विश्व में लागू किया जाएगा ।

<u>आर्थिक मूल्यांकन प्रणाली :</u>

" अर्थव्यवस्था की योजना, मार्गदर्शन और प्रदर्शन मूल्यांकन" में राजनीतिक/राजनीति हस्तक्षेप दो स्तरों पर होना चाहिए, पहला यह कि समवर्ती कार्यक्रमों पर जनता की प्रतिक्रिया क्या है और दूसरा समाज के विभिन्न वर्गों की आकांक्षा और चाहत क्या है, जबकि शासन में "अर्थव्यवस्था की योजना, मार्गदर्शन और प्रदर्शन मूल्यांकन" से निपटने वाले केंद्र का हस्तक्षेप निरंतर आधार पर होना चाहिए।

" **अर्थव्यवस्था की योजना, मार्गदर्शन और प्रदर्शन मूल्यांकन केंद्र** " को खुद का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है कि क्या जनता की इच्छाएँ सही, व्यवहार्य और कार्यान्वयन योग्य हैं, और यदि हाँ तो अन्य क्या निहितार्थ हो सकते हैं। ऐसे केंद्र से यह अपेक्षा की जाती है कि वह नए सुझावों, तकनीकों, अपने स्वयं के शोधों का परीक्षण करने और फीडबैक का आकलन करने में खुद को व्यस्त रखेगा ताकि संबंधित (स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) स्तर पर स्थिरता और लय बनाए रखी जा सके।

सरकार का स्वरूप चाहे जो भी हो और चाहे कोई भी सरकार बनाए, "अर्थव्यवस्था की योजना, मार्गदर्शन और निष्पादन मूल्यांकन केन्द्र" का नेतृत्व गुरु, संतों जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए, चाहे उनकी जाति, पंथ और रंग कुछ भी हो और वे जन्म से किसी भी क्षेत्र और धर्म के प्रति निष्ठा रखते हों ।

3. सोने की अर्थव्यवस्था या स्वर्णिम अर्थव्यवस्था

"एक स्वर्णिम अर्थव्यवस्था या सोने की अर्थव्यवस्था, स्वर्णिम नियम या अच्छाई का नियम; वर्तमान में दुनिया एक चौराहे पर खड़ी है, स्वतंत्रता, सम्मान, स्वस्थ और खुशहाल जीवन का उपदेश देती है लेकिन धन, शहद और सोने का अनुसरण करती है। क्या हमें इस संबंध में सामूहिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता नहीं है?

यदि हम अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य पर नजर डालें तो हमें कहना होगा कि कुल मिलाकर वह स्थिति आ गई है, जिसमें सभी स्वर्ण नियम धूल खा रहे हैं और 'स्वर्ण का नियम' हावी हो गया है, अर्थात भारत और विश्व स्वर्ण की अर्थव्यवस्था के अनुसार चल रहे हैं और प्रकृति के शाश्वत नियम को भूलते नजर आ रहे हैं। जहां तक अर्थव्यवस्था के आधार का प्रश्न है, पिछले दो-तीन हजार वर्षों में भारत और विश्व एक चौराहे पर खड़े नजर आते हैं, वे स्वर्ण की अर्थव्यवस्था के अनुसार चल रहे हैं और जब लोग कहते हैं कि भारत कभी सोने की चिड़िया था, तो उन्हें खुशी होती है, जबकि सोने की लंका जलाने के बाद भारत द्वारा दिए गए प्रमाण बताते हैं कि स्वर्णिम आभा से युक्त प्रकृति के नियम पर आधारित अर्थव्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ है। **इस विषय पर विचार-विमर्श हेतु निम्नलिखित प्रस्तुत है**:

(1). कहा जाता है: " कनक कनक ते सौ गुनी विहितअधिकाय , वा खाये बौराये नर , वा : ... बौराये |" (कनक, कनक ते सौ गुणी, मदकता अधिकाय, यह खाये बौराये नर, थे पाये बौराये - अर्थात्; कनक-स्वर्ण का मादक प्रभाव कनक-धतूरे से सौ गुना अधिक शक्तिशाली है, क्योंकि लोग केवल कनक-धतूरा खाने से पागल हो जाते हैं, लेकिन इसे (कनक-स्वर्ण को) पाने मात्र से ही पागल हो जाते हैं। इस तथ्य को जानने के बाद भी भारत वर्तमान में कनक और अन्य तथाकथित मादक पदार्थों के सेवन पर प्रतिबंध लगाता है, लेकिन सोने के संग्रह को बढ़ावा देता है, जो एक विरोधाभासी व्यवहार है, एक पाखंडी अभ्यास है, ' पैसा बुद्धिमान रुपया मूर्खता' या 'पैसा बुद्धिमान पौंड मूर्खता' का स्पष्ट मामला है।

(2). ऐसा कहा जाता है कि "रावण ने सोने का नियम प्रदर्शित किया जबकि राम ने केवल स्वर्ण नियमों का पालन किया", और भारत में लोगों का दिल जीत लिया और उन्हें एक आदर्श माना गया। पिछले तीन हज़ार वर्षों में भारत का व्यवहार हमारी सीख के अनुरूप नहीं लगता। यह आश्चर्य की बात है कि सोने की लंका को जलाने (जो न तो जब्त की गई और न ही लूटी गई) के बाद भारत ने छोटे-छोटे सोने के संग्रह करना शुरू कर दिया और यहाँ तक कि अपने छोटे और कमज़ोर सोने के संग्रह पर गर्व करने लगा और सोने का शेर या सोने का बाज नहीं बल्कि सोने की चिड़िया कहलाने लगा जिसे कोई भी पकड़ सकता है, लूट सकता है या आसानी से मार सकता

है। अफसोस! 'क्या विडंबना है', और भी अजीब बात यह है कि इसने अयोध्या में राम के निवास पर भी गर्व से स्वर्ण मंदिर बनवाए।

जो कहते थे सोना स्वर्णिम होता है 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... का श्रृंगार और विपत्ति का आहार है "सम्पत्ति का श्रृंगार और विपत्ति का आहार" और इस कहावत को समाज में स्थापित करने से समाज व्यक्तिवादी और भविष्यवादी बन गया। इससे समाज में वैमनस्य पैदा हुआ और सोने का ढेर लग गया। यह जमा हुआ सोना आक्रमणकारियों के लिए आसान शिकार बन गया क्योंकि हमने समाज की सुरक्षा और सामंजस्य पर पैसा खर्च किए बिना ही सुरक्षा को गारंटी मान लिया था। इसके अलावा ऐसे समुदाय जो अभी भी इस कहावत पर विश्वास करते हैं, उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोने के व्यापार के संचालक और हेरफेर करने वालों के माध्यम से काल्पनिक विज्ञापन ग्लैमर द्वारा पूरी तरह से शोषण किया जा रहा है। ऐसे समुदायों को दयनीय कहा जा सकता है जिन्हें सोने के क्या, क्यों, कैसे और स्वस्थ और खुशहाल जीवन के साथ अंतर्संबंध पर उचित और खुली बातचीत की आवश्यकता है।

(3), यह आश्चर्य की बात है कि कैसे भारतीयों को भी सोने से इतना मोह है कि साधारण शब्द सोना भी उनके मन में छल-कपट पैदा कर देता है, इसलिए व्यापारिक घराने इस भावना का पूरा फायदा उठाते हैं और कई चीजों के नाम रख देते हैं - सोने का पदक (असली सोने के साथ या बिना), कृत्रिम सोने के आभूषण, सोने का प्याला, स्वर्ण योजना, स्वर्ण जयंती, सोने की चाय, सोने की कॉफी, स्वर्ण पर्यटन आदि। क्या कहें? क्या यह लालच है, या वासना, या लत, या माया का एक सरल खेल (मृगतृष्णा)?

(4), इस युग (कलयुग) में भारत में तीन संप्रदायों या तथाकथित धार्मिक पवित्रता को जन्म दिया गया- बुद्ध, जैन और सिख। यह अच्छी तरह से प्रलेखित और व्यापक रूप से ज्ञात है कि इन सभी के संस्थापक व्यक्ति ने न केवल सादा जीवन जिया बल्कि यह भी दिखाया कि कोई कैसे सादा जीवन जी सकता है, फिर भी उनके शिष्य उनके नाम पर बने मंदिरों को सोने से सजा रहे हैं, यह कैसी विडंबना है? कैसा दिखावा? क्या इसे उनके शिष्यों के कर्मों में गिरावट कहा जा सकता है?

धर्म के शाश्वत या सतत अभ्यास के अनुसार, व्यक्ति की आय का आठवाँ हिस्सा धार्मिक संस्थाओं को दिया जाता है, ताकि समुदाय की सभी सामाजिक ज़रूरतें पूरी हो सकें, न कि मंदिरों को सोने से सजाया जा सके। नानक ने इस एक-आठवें हिस्से यानी बारह-दशमलव पाँच प्रतिशत को खाद्य सुरक्षा और शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन आदि जैसी अन्य सुरक्षा का ध्यान रखने के लिए दस प्रतिशत-दसवंत (एक दसवाँ हिस्सा) में बदल दिया है।

(5), सोना हमेशा के लिए है (सोना हमेशा के लिए है), मानो अन्य धातुएँ लुप्त हो जाएँगी और जीवन छोटा है फिर भी हम सोने के लिए पागलों की तरह दौड़ते हुए देखते हैं। यह कैसा विरोधाभास है या मन का कैसा हेरफेर। ईस्टर युग के सभी स्वर्णिम नियम धूल में मिल रहे हैं। सोने का नियम स्वामी बन गया है।

(6), जहाँ भी सोने का भंडार पाया जाता है, वहाँ के लोगों का जीवन दयनीय हो जाता है, चाहे वह कोलार गोल्ड फील्ड हो या कोई और इलाका। इसी तरह, जो कोई भी सोने का भंडार खोज लेता है और उसे पकड़ लेता है, वह दुखी हो जाता है, चाहे वह भारत का कोई महल हो या किसी दूसरे देश के लोग। ऐसी परिस्थितियाँ बताई जा सकती हैं, जहाँ सोना न होने पर लोग थोड़े चिंतित हो सकते हैं, लेकिन सोना मिलने पर वे खुश नहीं होते।

(7) एक कहावत है कि: 'एक परिवार ने अपने घर पर धन की देवी को आमंत्रित किया, देवी के आगमन पर, परिवार के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति ने देवी से कहा कि आप कृपया प्रतीक्षा करें, मैं आपके लिए कुछ लेकर आता हूँ। देवी की आज्ञा पाकर, परिवार के इस सबसे बुजुर्ग व्यक्ति ने सोचा कि अब देवी को इस घर में स्थायी रूप से रहना होगा और पिछवाड़े में जाकर कुएँ में कूदकर आत्महत्या कर ली। ऐसा कहा जाता है कि इस समुदाय में धन की देवी इसी तरह रहती है। इस प्रकार का संचय जानलेवा (हत्यारी) है। ऐसे धन को देखने वालों, ऐसे सोने के जमाकर्ताओं का व्यवहार कैसा हो सकता है? क्या ऐसे लोग साहस या साहसिक व्यवहार के बारे में सोच सकते हैं? बौद्धिक जगत में यह भी प्रश्न पूछा जाता है: धन की देवी को ऐसे नरसंहारी चालबाजों से कैसे मुक्ति मिलेगी?' उपरोक्त संचय को एक प्रकार का संचय माना जाता है, न तो अच्छा और न ही बुरा, बल्कि एक निराशाजनक प्रकार जिसमें लोग धन पर बड़े पैमाने पर निष्क्रिय रहते हैं, ऐसे लोगों की तुलना परजीवी (या साँप के मुँह में छछूंदर) से की जा सकती है।
(8), साहित्य में धन के दो अन्य प्रकार बताए गए हैं। कहा जाता है कि धन की देवी या तो उल्लू पर या फिर हंस पर सवार होकर यात्रा करती हैं।

(क), जो लोग व्यक्तित्व के लिए काम करने की प्रथाओं में शामिल होते हैं, वे बुरी योजनाओं, चालाक कला और काले जादू से अर्जित धन से घृणा नहीं करते हैं (इस समझ के साथ कि "पैसा (संपत्ति) पैसा है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कैसे कमाया गया है – जैसे बच्चा बच्चा है चाहे वह कैसे पैदा हुआ हो या अस्तित्व में आया हो)" उनके लिए धन की देवी को उल्लू की पीठ पर यात्रा करते हुए (अंदर और बाहर) कहा जाता है।

आगे कहा गया है कि इस प्रकार का धन/धन, सोना और अर्थव्यवस्था दिन भर में यानी दृश्यमान दुनिया में (पूरे वातावरण में– समुद्र में, धरती की सतह पर और साथ ही आकाश में) शारीरिक,

मानसिक और भावनात्मक सभी रूपों में दुख और पीड़ा का कारण बनती है। ऐसी व्यवस्था को राक्षसी और तानाशाही कहा जा सकता है जिसे अब लोकतंत्र या तानाशाही लोकतंत्र के ब्रांड नाम से प्रचलित किया जा रहा है। इस व्यवस्था में केवल मुट्ठी भर लोग ही पैसे, बाजार, भौतिक मशीनों को नियंत्रित करते हैं और सब कुछ नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं और बाकी लोग काम करने और अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए भी रास्ते खोज लेते हैं।

(b), एक और वर्ग है जो कहता है कि पैसा एक ऐसी ऊर्जा है जिसकी हर किसी को ज़रूरत होती है। कुछ लोग कहते हैं कि जितना ज़्यादा उतना अच्छा और संचय करने की प्रवृत्ति होती है, लेकिन समझदार लोग कहते हैं कि ऊर्जा स्थिर है, इसे न तो बनाया जा सकता है और न ही समाप्त किया जा सकता है, यह केवल रूप और आकार बदल सकती है। धीमी और स्थिर गति से ऊर्जा का उपयोग करने से प्रकृति को अपने ऊर्जा चक्र को सामंजस्यपूर्ण ढंग से पूरा करने का समय मिलता है, जबकि ऊर्जा (पैसे) का तेज़ गति से उपयोग करना या कम समय में बड़ी मात्रा में उच्च ऊर्जा स्रोतों (तरल हाइड्रोजन या सोना और मोती) का उपयोग करना सभी के लिए परेशानी का कारण बन सकता है। इसलिए इस समझ वाले लोग कहते हैं कि पैसा अच्छाई के साथ आना चाहिए, लाभ अच्छाई के साथ आना चाहिए और सही तरीके से सही उद्देश्य के लिए निवेश किया जाना चाहिए।

ऐसे लोग कहते हैं कि जब ऊर्जा (धन) स्थिर रहती है तो एक स्थान पर उसका संचय दूसरी जगह पर अभाव पैदा कर सकता है इसलिए ऊर्जा (धन) पूरे पर्यावरण में फैली रहनी चाहिए ताकि सभी को हर समय, हर जगह आसानी से उपलब्ध हो सके। इस तरह से ये लोग अर्थव्यवस्था को परिभाषित करते हैं (पर्यावरण में लेन-देन, इको + नोमी = अर्थव्यवस्था, अर्थ-पृथ्वी, साधन, धन + शास्त्र = अर्थशास्त्र का विज्ञान और कला)। निर्माता पालनकर्ता और संहारकर्ता की त्रयी में , धन की देवी को पालनकर्ता के साथ दर्शाया गया है और इस समझ वाले लोग धन की देवी को उनके साथी पालनकर्ता (लक्ष्मी + नारायण = लक्ष्मी नारायण) के साथ ही प्रार्थना और आमंत्रित करते हैं। आगे ऐसी परंपरा के अनुयायी हमेशा (शुभ + लाभ) अच्छी कमाई + अच्छा लाभ कहते और लिखते हैं।

कहा जाता है कि धन की देवी ऐसे आमंत्रण को आशीर्वाद देती हैं और अपने पति के साथ हंस पर सवार होकर वहां निवास करती हैं। यह कहा जा सकता है कि ऐसी व्यवस्था में हर व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार योगदान देता है और अपने पूरे जीवन में अपनी आवश्यकता के अनुसार हिस्सा लेता है। जो लोग प्रकृति की इन विशेषताओं को समझते हैं, वे काम और धन के वितरण की एक ऐसी व्यवस्था बनाने का प्रयास करते हैं जो हर किसी के जीवन में प्रवाहित हो। ऐसी व्यवस्था को

समाज आधारित या सामुदायिक व्यवस्था से बेहतर माना जा सकता है और इसे दैवीय कहा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऐसे लोग या तो स्थगित हो गए हैं या अपने एकांत में हैं।

(9), चमकता सोना, चमकते मोती, हीरा और उसके आभूषणों की आवश्यकता उन लोगों को होती है जो अंधेरे में काम करते हैं और दिखावा करने और राज करने की इच्छा रखते हैं। दिन के उजाले में ये चीजें व्यक्तिगत व्यक्तित्व में बमुश्किल अतिरिक्त मूल्य जोड़ती हैं, इसलिए व्यक्तित्व मानव पूजा द्वारा इसे नकार दिया गया है – चाहे वह नानक, ईसा, महावीर, बुद्ध, सीता–राम, राधा–कृष्ण और गौरी–शंकर हों।

(10), सोना, चांदी, तांबा, कांस्य, प्लेटिनम, निकल, क्रोमियम आदि प्रत्येक धातु का मानवता के साथ–साथ अन्य सभी प्राणियों के लिए अपना औषधीय महत्व है। मोती और हीरे सहित सभी धातुओं का अपना ज्योतिषीय महत्व होता है (जिन मनुष्यों में कुछ कमजोरी या कमी है और वे सामान्य बनना चाहते हैं और जो कुछ समय के लिए कुछ अतिरिक्त चाहते हैं, उन्हें इनकी थोड़ी मात्रा में आवश्यकता होती है) को नकारा नहीं जा सकता है और न ही उनका अतिरिक्त मूल्य निर्धारित किया जा सकता है। सोना, चांदी, प्लेटिनम, हीरे और मोती जैसी किसी भी धातु या वस्तु का अतिरिक्त मूल्य निर्धारित करना दूसरों को मूर्ख बनाने या धोखा खाने और मूर्ख बनने का प्रयास है। यदि हम पिछले पचास वर्षों का अवलोकन करें तो सोने और चांदी की कीमत ने अन्य सभी धातुओं को पछाड़ दिया है और सौ गुना वृद्धि हुई है जिसे कोई भी पैरामीटर उचित नहीं ठहरा सकता है। सोने की कीमतों में वृद्धि और अचानक उतार–चढ़ाव दुनिया के कुछ सबसे अमीर लोगों की नापाक हरकतों का नतीजा है जो मीडिया की मदद से लोगों की भावनाओं को लगातार भड़काने और शेयरों को उछालने और पंचर करने के माध्यम से कमाई करने के लिए किया जाता है। ऐसा कोई पैरामीटर नहीं है जो इस अचानक और तेजी से मूल्य वृद्धि को उचित ठहरा सके, सिवाय इसके कि जो भी ताकतें उन्हें अच्छी, बुरी या बदसूरत कहें, उनके द्वारा हेरफेर किया गया हो।

जीवित रहने के लिए, भारत जैसे देशों के लोगों के पास एकमात्र रास्ता बचा है कि वे इन वस्तुओं से दूर रहें और जल्दी और बड़ी कमाई के उत्साह और अन्य भावनात्मक उत्तेजना तकनीकों से दूर रहें जो लुटेरों और धोखेबाजों द्वारा एक या दूसरे तरीके से खेली जाती हैं। हमें व्यक्तिगत रूप से और साथ ही सामूहिक रूप से स्वस्थ और खुश रहने के लिए त्योहारों के दौरान सोना और चांदी खरीदने के प्रलोभन से दूर रहना होगा चाहे वह दिवाली हो, ईद हो या क्रिसमस और जन्म और विवाह के दौरान भी उन्हें बैंक लॉकर में डेड स्टॉक के रूप में रखना बेहतर होगा, खाद्यान्न, मसाले, जड़ी–बूटियाँ, विभिन्न धातुओं और मिश्रित धातुओं के पौधे और कलाकृतियाँ और अंत में पेड़ के पौधे (कम से कम पेड़ तो ताज़ी हवा ज़रूर देगा) खरीदना बेहतर होगा। इन वस्तुओं का

उपयोग उपहार के लिए भी किया जा सकता है। इन्हें समझना और इनका पालन करना व्यक्तिगत रूप से कठिन हो सकता है लेकिन सामूहिक रूप से अनुभवी बुद्धिमान बुजुर्ग व्यक्ति/महिला के मार्गदर्शन में इसका अभ्यास करना आसान होगा।

(11), तथाकथित कठोर मुद्राओं (डॉलर, पाउंड स्टर्लिंग, यूरो, येन) की अस्थिरता के बीच कुछ अन्य देशों के राष्ट्रपतियों द्वारा सोने में व्यापार करने का प्रस्ताव दिया गया है, लेकिन फिर सवाल उठता है कि तथाकथित पावर ब्लॉक द्वारा सोने को भी उतना ही अस्थिर बनाया जाता है। इसका समाधान कम से कम छोटे समुदायों के भीतर और मित्र देशों के बीच संशोधित प्रारूप में मूल वस्तु विनिमय प्रणाली पर लौटने में निहित है। उन लोगों, समुदायों और देशों के लिए जिनके पास बदले में देने के लिए कुछ नहीं है, एक सद्भावना पूल या धर्मार्थ पूल बनाने की आवश्यकता है। ऐसा कहा जाता है कि सामग्री या सेवाओं के आदान-प्रदान के दौरान जो लोग बदले में कुछ भी नहीं दे सकते हैं, वे अपनी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद देते हैं, जो किसी भी चीज़ की अपेक्षा से कहीं अधिक है। अंधेरे शासन को समाप्त करने और सही शासन स्थापित करने के लिए हमें न केवल तैयार होना होगा बल्कि शायद हमें "पर्यावरण कमाने के लिए सोना जलाना होगा"।

(12), कहा जाता है, कि धन एक ऐसी ऊर्जा है जिसकी हर किसी को आवश्यकता होती है। कुछ लोग कहते हैं, कि जितना अधिक धन (जितनी अधिक ऊर्जा) उतना ही अच्छा होता है और इससे संसाधनों (धन और ऊर्जा) का संचय होने की संभावना बढ़ जाती है। दीर्घकालिक अनुभव कहता है कि धीमी और स्थिर गति से ऊर्जा का उपयोग करने से आनंद मिलता है और प्रकृति को ऊर्जा के अपने चक्र को सामंजस्यपूर्ण तरीके से पूरा करने का समय मिलता है, जबकि तेज गति से ऊर्जा (धन) का उपयोग करना या उच्च ऊर्जा स्रोतों (तरल हाइड्रोजन या) या कम समय में बड़ी मात्रा में केंद्रित धन (सोना, चांदी, प्लेटिनम और मोती) का उपयोग करना प्रदूषण का कारण बनता है और प्रकृति को अपना चक्र पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं देता है और चक्र में सभी के लिए (चाहे दिखाई दे या नहीं) गड़बड़ी का कारण बनता है। इस समझ वाले लोग कहते हैं कि धन अच्छाई के साथ आना चाहिए; लाभ अच्छाई के साथ और सही तरीकों से आना चाहिए और सही कारण के लिए निवेश किया जाना चाहिए।

कमाई कई स्रोतों से हो सकती है और होनी भी चाहिए, लेकिन यह सुनिश्चित करना होगा कि दूसरों को तकलीफ देकर कमाई न हो, अन्यथा उसमें अभिशाप की भावना होगी। जब ऐसी कमाई परिवार, समाज और सरकार में साझा की जाती है, तो इसका अच्छा नतीजा नहीं बल्कि इससे जुड़े सभी लोगों पर बुरा असर पड़ता है। इसे देखते हुए बेहतर है कि कमाई के साथ-साथ खर्च में भी सामंजस्य और सावधानी बरती जाए।

भारत (भा–प्रकाश, + रत–व्यस्त = भारत–दुनिया को प्रकाशित करने और लोगों को ज्ञान देने में व्यस्त) ज्ञात दुनिया में राख से दो बार उठ खड़ा हुआ है और सोने के राज {एक रावण का और दूसरा दुर्योधन (दुर्यो–गलत दिमाग + धन–संपत्ति)} को समाप्त कर दिया है और स्वर्णिम राज (एक राम द्वारा और दूसरा कृष्ण द्वारा) की स्थापना की है, अब इसे फिर से राख से उठने के लिए तैयार होना होगा ताकि सोने के इस काले राज को समाप्त किया जा सके और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वर्णिम राज की स्थापना की जा सके। ***

4. मीडिया की अर्थव्यवस्था और मीडिया द्वारा अर्थव्यवस्था का प्रबंधन

प्रस्तुत है: मीडिया की मूलभूत आवश्यकता, इसकी अपेक्षितताएं और अनुवर्ती आवश्यकता के संबंध में प्रस्तुतीकरण छह भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2) मीडिया पर आम ग्रामीण चर्चा, (3) मीडिया के विचित्र पहलू, (4) समस्या का प्रतिमान, (5) **समाधान का प्रतिमान – (क) सही सूचना और ज्ञान को साझा करने की व्यवस्था, (ख) मनोरंजन सुरक्षा की व्यवस्था,**

(1), **मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा**:

(1.A) किसी भी संचार में, मीडिया ट्रांसमीटर और रिसीवर के बीच एक मध्यवर्ती परत/माध्यम (वायु, जल/तरल और ठोस या डिज़ाइन किया हुआ) होता है, इसलिए मीडिया के पास मूल संदेश की नकल करने के अलावा, मूल संदेश को बढ़ावा देने, नष्ट करने या विकृत करने के सभी रास्ते होते हैं। मीडिया की इस शक्ति (बढ़ावा देने, नष्ट करने, बदलने या विकृत करने की) के कारण कोई भी आसानी से समझ सकता है कि पूरे बाजार और पूरी अर्थव्यवस्था और आर्थिक कार्रवाई को मीडिया के इर्द-गिर्द घुमाया/नचाया जा सकता है या मीडिया के माध्यम से बर्बाद या उछाला जा सकता है। यह मीडिया की इस छिपी हुई शक्ति के कारण है कि चालाक कला और छद्म विज्ञान के सभी स्वामी न केवल मीडिया के माध्यम से कहने या दिखने के लिए बल्कि मीडिया में बोलने, मीडिया में हिस्सेदारी करने और यदि संभव हो तो दुनिया के सभी अन्य मीडिया पर नियंत्रण करने के लिए अधिक इच्छुक पाए जाते हैं।

सभी आकाओं के लिए यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मीडिया (हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह) एक अंतरराष्ट्रीय इकाई है और इसे स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय स्तर पर सीमित नहीं किया जा सकता है, इसलिए यदि मीडिया को नियंत्रित या बंदी बनाना है तो यह केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ही किया जा सकता है। इसलिए कोई भी व्यक्ति जो अपने उद्यम को विकसित करना चाहता है, अपने साहसिक कार्य को समर्थन प्राप्त करना चाहता है, अपने व्यवसाय को फलने-फूलने देना चाहता है और अपने साम्राज्य का निर्माण, बसना और टिकना चाहता है, वह न केवल मीडिया की मदद और समर्थन चाहेगा, बल्कि मीडिया में अपनी बात रखकर या मीडिया पर पूर्ण नियंत्रण रखकर मीडिया के योगदान/सहयोग को सुनिश्चित करना चाहेगा।

इसके अलावा, जो शासक मीडिया पर पूरा नियंत्रण रखना चाहते हैं, वे डेटा विज्ञान, मशीन भाषा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के विज्ञान और तकनीकों पर भी नियंत्रण रखना चाहते हैं, जो दिमाग से दिमाग, भावना से भावना या दिल से दिल के बीच पूरी तरह से मौन संचार का ख्याल रख सकते हैं। इसके अलावा, चूंकि 'प्रबंधन, आदमी, पैसा, सामग्री, बाजार, मस्जिद-मठ और

आधुनिकीकरण मीडिया के कुछ महत्वपूर्ण और परस्पर जुड़े हुए मातृ शब्द हैं, इसलिए मीडिया के नियंत्रक इन पर नियंत्रण रखने की कोशिश करते हैं।

(1.बी) हर किसी को अपने आस-पास से दूसरों की जानकारी, ज्ञान और अनुभव प्राप्त करने की आवश्यकता होती है, साथ ही अपने पास मौजूद जानकारी, अपने द्वारा एकत्रित ज्ञान और अर्जित ज्ञान को दुनिया के साथ साझा करने की भी आवश्यकता होती है। इसके अलावा हर किसी को स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने के लिए मनोरंजन की भी आवश्यकता होती है।
जनता की इसी आवश्यकता के कारण मीडिया का निर्माण हुआ (क्योंकि आवश्यकता ही आविष्कार की जननी है) लेकिन अब ऐसा प्रतीत होता है कि इंटरनेट आधारित मीडिया के क्षेत्र में अनेक आविष्कार होने के कारण मीडिया चाहता है कि लोग जीवन भर उसके इर्द-गिर्द ही रहें। अब मीडिया न केवल यह चाहता है कि लोग उसकी कही हुई बातें सुनें, जो वह कहता/प्रसारित करता है, उसे पढ़ें और जो वह प्रसारित करता है, उसे देखें, बल्कि यह भी चाहता है कि लोग उस पर विश्वास करें, उसमें भाग लें और मीडिया कवरेज के माध्यम से प्रचारित कार्यक्रम का हिस्सा बनें। यानी अब आवश्यकता आविष्कार की पुत्री बन गई है। कोई भी इस बात को समझ सकता है कि ऐसी स्थिति में यह स्पष्ट है कि आवश्यकता/आवश्यकता को सत्ता द्वारा अपने विभिन्न प्रचार, प्रसार और प्रसार के माध्यम से बनाया या आगे बढ़ाया जा रहा है। इस स्थिति को स्वस्थ और खुशहाल समाज की निरंतरता कैसे माना जा सकता है?

(1.सी) यदि कोई गहराई से समझे तो समझ में आएगा कि मीडिया (जनसंचार के साधन यानी प्रकाशन, प्रसारण, टेलीकास्टिंग और इंटरेक्टिव इंटरनेट आधारित सोशल साइट्स) पर नियंत्रण रखने के लिए, किसी के पास सभी रूपों में नई जानकारी और ज्ञान का एक स्थायी स्रोत होना चाहिए। फिर इसकी सूचना, ज्ञान, कला और विज्ञान, संगीत और फिल्मों, रिकॉर्ड किए गए शो और नई रिलीज़ की सामग्री को स्ट्रीम करने के लिए, मीडिया के नियंत्रकों को दुनिया के सभी देशों की सरकारों में अपनी बात रखनी होगी।

क्या इस तरह का नियंत्रण सिर्फ़ मौखिक रूप से प्राप्त किया जा सकता है? कोई भी व्यक्ति जो अपने दिमाग का इस्तेमाल करता है, वह आसानी से कह सकता है कि इस तरह के नियंत्रण के लिए लगभग सभी तरह के पैसे और पैसे बनाने वाले उपकरणों, मशीनों और इसकी प्रक्रियाओं के साथ-साथ इसके फीडबैक और सुधार तंत्र पर नियंत्रण होना चाहिए। इसके अलावा क्या इस तरह का नियंत्रण सिर्फ़ पैसे से हासिल किया जा सकता है? यह बिल्कुल स्पष्ट है कि मीडिया और पैसे, बाजार और अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण रखने के लिए कानून बनाने वालों, प्रशासन और न्यायपालिका और अंत में सेना, सभी तरह के हथियारों और शस्त्रागार पर नियंत्रण करने की शक्ति होनी चाहिए। जब कोई मीडिया, पैसे, ज्ञान, शोध और विकास, शासन पर इस तरह का

नियंत्रण हासिल कर लेता है, तो अन्य नियंत्रण हासिल करना मुश्किल नहीं है या बल्कि यह उम्मीद की जाती है कि अन्य सभी नियंत्रण इस बड़े पैकेज के साथ आते हैं।

आम तौर पर, ऐसे साम्राज्य त्रिमूर्ति द्वारा बनाए जाते हैं – यानी धनवान, राजघराने और धार्मिक प्रमुख, हालांकि यह किसी देश से जुड़ी शक्ति की एकल पहचान का कोलाहल प्रतीत होता है, लेकिन ये बहुराष्ट्रीय हैं जिनके हुक्म दुनिया की सभी दस दिशाओं में चलते बताए जाते हैं [इसे किसी भी देश में "देशों के केंद्रीय बैंक, देश प्रमुख (सशस्त्र बलों, कार्यपालिका और न्यायपालिका के सामान्य प्रमुख) और मीडिया की त्रिमूर्ति से देखा जा सकता है। इन सभी देशों में प्रधानमंत्रियों सहित तथाकथित सार्वजनिक प्रतिनिधि और कानून निर्माता इस त्रिमूर्ति से बाहर हैं और इस त्रिमूर्ति द्वारा उन्हें निंदनीय, संदिग्ध और बदले जाने योग्य माना जाता है, जिनका उपयोग संकट के दौरान तोप के चारे के रूप में भी किया जा सकता है]।
ऐसा कहा जाता है कि मीडिया पर इस तरह का नियंत्रण पाने और इस तरह का साम्राज्य बनाने के लिए सैकड़ों साल तक लगातार काम करना पड़ता है । हालांकि यह सच है कि ऐसा साम्राज्य सर्वशक्तिमान के आशीर्वाद के बिना शायद ही कभी हासिल किया जा सकता है, इसलिए सभी तथाकथित महान लोग आम लोगों की तुलना में (अपने चुने हुए भगवान की) प्रार्थना करते हुए पाए जाते हैं।

(2) **मीडिया पर आम ग्रामीण चर्चा**:
(2.A) आम तौर पर कहा जाता है: "कोई भी खबर अच्छी खबर नहीं होती", और मीडिया कवरेज के मौजूदा चलन से यह कथन फिर से पुष्ट होता है। पहले जहां मीडिया विभिन्न घटनाओं को आईने की तरह दिखाने वाला माध्यम हुआ करता था, वहीं अब यह अर्थव्यवस्था, पर्यावरण, समाज और सरकार को नष्ट करने या बनाने वाले के रूप में केंद्र में आ गया है।

यह आम समझ है कि मीडिया की चतुराईपूर्ण प्रस्तुति से वास्तविक, अवास्तविक हो जाता है और अवास्तविक, वास्तविक हो जाता है (जब कोई सिनेमा हॉल/थिएटर में अंधेरे वातावरण में उपयुक्त प्रकाश और ध्वनि के साथ फिल्म देखता है तो फिल्म सत्य प्रतीत होती है)।
लगभग सभी मीडिया घराने अनुभूति के कई शोधों (जैसे कि पावलोव अनुभूति सिद्धांत–कुत्तों पर दोहराए गए शोधों के बाद) का उपयोग करके आभासी वास्तविकता बनाने और लोगों के दिमाग पर राज करने की कोशिश करने में सक्षम हैं, और परिणामस्वरूप अपने कई प्रत्यक्ष और गुप्त मंसूबों को पूरा करने में सक्षम हैं। आश्चर्य की बात यह है कि मीडिया नियंत्रण के ये दुष्परिणाम हर देश में इतने सारे थिंक–टैंक की मौजूदगी के बावजूद भी जारी हैं।

आजकल, खास तौर पर इंटरनेट आधारित सूचना सेवाओं के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आने के बाद, सही सलाह और सही जानकारी मिलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन सा लगता है। मीडिया– सही जानकारी देने, वास्तविक जन सरोकारों का निवारण करने, समग्र दृष्टिकोण से स्वस्थ और भविष्योन्मुखी चर्चा आयोजित करने और स्वस्थ समाज को सुधारने और सुधारने के प्रयास करने के बजाय – चिड़चिड़ाहट, भय, सनसनी, भ्रामक अभियान चलाने में व्यस्त है जो निश्चित रूप से चिंता का बड़ा कारण है। क्या लाभ या वर्चस्व के लिए डिजाइन और संचालित मीडिया को लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का दर्जा और उसके अनुसार विशेषाधिकार दिए जा सकते हैं?

(2.B) मीडिया को "आप मुझे खबर बताओ, मैं आपको फंडिंग का स्रोत बताऊंगा" की मौजूदा प्रवृत्ति से बाहर आना होगा, या आप विज्ञापन दें और मीडिया खुद को आपकी इच्छा के अनुसार ढाल लेगा। मीडिया को कुछ नैतिक संहिताएँ बनानी होंगी, जहाँ वह एम्बुलेंस का पीछा करने वाले पत्रकारों और खून दिखाने वाले कैमरामैन को बढ़ावा न दे। खबरों को शोरगुल के साथ बताने की ज़रूरत नहीं है, और विचारों को ज़ोर से व्यक्त करने की ज़रूरत नहीं है, उन्हें शांत और शांत तरीके से कहा और व्यक्त किया जा सकता है। क्या हमें इतनी सारी खबरें चाहिए, 24×7, स्ट्रीमिंग, जैसे कि प्रलय आने वाला है?
अखबारों को परिपक्वता से काम लेना चाहिए, अखबारों को अपने दर्शकों की संख्या (मॉडल) से अपनी पैठ देखने की जरूरत नहीं है, अखबार सिर्फ पढ़ने के लिए है। पन्नों की संख्या के हिसाब से नंबर वन अखबार बनना अप्रत्यक्ष रूप से प्रदूषण फैलाने में शामिल होना है।
(2.सी) लोकतंत्र का यह तथाकथित चौथा स्तंभ तब भी मजबूत होता है, जब अन्य स्तंभ थोड़े कमजोर पड़ जाते हैं, इसलिए यह स्पष्ट है कि मीडिया देश और समाज को सुधारने और बनाने की बड़ी जिम्मेदारी उठाता है। मीडिया चाहे तो बिगाड़ दे और चाहे तो हीरो बना दे और स्टारडम में चार चांद लगा दे। इसने इतना शक्तिशाली मंच बना लिया है कि यह अपराधियों, पुलिस, नेताओं और जजों से भी रिश्वत ले सकता है, सरकारी कर्मचारियों या निजी व्यापारियों की तो बात ही क्या करें।

(2.डी). मीडियाकर्मी समाज के संचारक हैं, इसलिए उन्हें समाज से बेहतर व्यवहार मिलना चाहिए, सौदेबाजी और जालसाजी से नहीं, बल्कि समाज के प्रति करुणा और कर्तव्य के रूप में। समाज और सरकार को मीडिया दिग्गजों के आगे झुके बिना, अपने परिवार को पर्याप्त सुरक्षा और भरण–पोषण (यदि कोई स्थिति उत्पन्न होती है) प्रदान करना होगा। समाज और सरकार को दुनिया भर में खुशी फैलाने के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया नेटवर्क का समर्थन करना होगा।

(2.ई) मीडिया में विदेशी निवेश मुंबई/बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के सेंसेक्स में उछाल की खबरें दिखाता है, जबकि मुंबई बाढ़ में डूब रहा है या लॉकडाउन में बंद है, जो स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों के प्रति इसके उदासीन व्यवहार को उजागर करता है, और बेकार, अनुत्पादक और खतरनाक है। देश के मीडिया का स्वामित्व और संचालन केवल देशवासियों द्वारा किया जाना चाहिए; मीडिया को यह समझना चाहिए कि स्वतंत्रता और जिम्मेदारी एक साथ चलती हैं। मीडिया को धर्म-निरपेक्ष और राष्ट्रीय एकता और अंतरराष्ट्रीय भाईचारे की भावना का मशालवाहक के रूप में व्यवहार करना होगा।

(2.एफ) अच्छाई का प्रचार और खुशी फैलाना इसका सकारात्मक पक्ष है, अखबारों के प्रथम पृष्ठ पर चोरी, डकैती और हत्या की खबरों को प्रमुखता देना तथा इलेक्ट्रॉनिक समाचारों के प्राइम टाइम पर लगातार उदासीन समाचार, विचार और विश्लेषण की बौछार करना इसका परपीड़क व्यवहार और दृष्टिकोण है, ब्लैकमेलिंग, घृणा और दुश्मनी पैदा करना, चिंता और भय फैलाना इसका नकारात्मक पक्ष है, जबकि बीमारियों का प्रचार, देशों के शासन को नियंत्रित करने और धनवानों, राजघरानों और धर्मगुरुओं द्वारा नियंत्रित होने का प्रयास इसका सबसे काला पक्ष है।

(2.जी). मीडिया और पारदर्शिता: मीडिया के चालाकी करने वाले दिग्गजों और नग्नतावादी मानसिकता वाले लोगों के लिए पारदर्शिता बनाए रखने की जरूरत नहीं है। जानवर और नागा-साधु बहुत पारदर्शी होते हैं, मानव समाज से यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह इतना पारदर्शी रहे। नग्न व्यक्ति से भी अधिक से अधिक पारदर्शिता की मांग करना मूल रूप से कुछ लोगों की नग्नतावादी मानसिकता है, और दुर्भाग्यपूर्ण है।

प्रधानमंत्री क्या कर रहे हैं, इसका बोझ चपरासी पर नहीं डाला जाना चाहिए; महल में क्या हो रहा है, इसकी चिंता चौकीदार को नहीं करनी चाहिए, और कुछ हद तक इसके विपरीत भी। व्यक्ति को केवल खुलासे की जरूरत है- पारदर्शिता, जहां तक उसका संबंध है। दोषियों को दंडित करने के लिए कोई अतिरिक्त शक्ति न होने के कारण सूचना का अधिकार एक बेकार खिलौना है जो सूचना मांगने वाले को सांत्वना देने के बजाय निराशा ही देता है

आम जनता चाहती है कि उसे पता चले कि कर कैसे वसूला जाता है, कितना खर्च हुआ है और किस मद में और किस व्यक्ति का इसमें क्या योगदान है। आम जनता चाहती है कि ऐसा विभाग हो जिसमें उसकी चिंता की जानकारी और विवरण उपलब्ध हो ताकि नौकरशाही और न्याय व्यवस्था में उसका भरोसा बना रहे। इसके अलावा आम जनता यह भी जानना चाहती है कि सुझाव और उस पर कार्रवाई की स्थिति क्या है। यह हमारा कर्तव्य है कि हम एक भरोसा पैदा करने वाली नौकरशाही, न्याय व्यवस्था और सूचना व्यवस्था बनाएं।

(2.एच) मीडिया से अपेक्षा है कि वह परिवार, समाज और देश में धर्म, काम और आय के वितरण आदि पर विशेषज्ञों और अनुभवी लोगों के बीच तुलनात्मक चर्चा आयोजित करे, ताकि हम वास्तव में खुद को और दुनिया को बेहतरी की ओर बदल सकें और सामूहिक रूप से स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी सकें। उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने पूरे मीडिया और उसकी गतिविधियों को सुव्यवस्थित करने, जांच और संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

(2.I) स्वस्थ समाज का सूचक मीडिया: लोग शिकायत करना बंद कर देंगे, जिसका पता किसी भी विभाग/संस्था द्वारा की जाने वाली शिकायतों की खबरों में कमी से चलेगा, बजट पर समाचार और विचारों से, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय पर होने वाले खर्च में कमी आ रही है, सरकार से पैरवी और नियमों और विनियमों की फोटोकॉपी करने में होने वाली गतिविधियां और खर्च कम हो रहे हैं। बजट पर समाचार और विचारों से मनोरंजन और उत्सव, शोध और विश्लेषण, उद्यम और रोमांच पर होने वाले खर्च में वृद्धि हो रही है। समाज और सरकार के प्रबंधन को कोसने के बजाय, लोग समाज और सरकार के प्रबंधन की रक्षा के लिए कुछ भी करने को तैयार दिख रहे हैं।

(3) मीडिया के विचित्र पहलू:

यह बहुत ही विचित्र और आश्चर्यजनक है कि अधिकांश समाचार/विज्ञापन महाभारत की एक घटना और बुनियादी विश्वास निर्माण तंत्र से प्रेरित हैं और इनका रणनीतिक रूप से जनता को गुमराह करने और स्वस्थ और खुशहाल समाज के निर्माण में योगदान देने के स्थान पर समाज में अराजकता पैदा करने में उपयोग किया जाता है।

(i) महाभारत युद्ध के दौरान जब गुरु द्रोणाचार्य को हराना मुश्किल लग रहा था। ऐसी मान्यता थी कि अगर गुरु द्रोणाचार्य को यह खबर मिल जाए कि उनका बेटा अश्वस्थामा मारा गया है, तो गुरु द्रोणाचार्य अपने सभी हथियार त्याग देंगे और गहरे शोक में चले जाएंगे, जिसके बाद उनका अंत हो सकता है। यह समझते हुए कि बुरी शक्तियों को खत्म करने के लिए सब कुछ जायज है (यह भी कहा जाता है कि प्यार और युद्ध में सब कुछ जायज है) एक चाल चली गई और अश्वस्थामा नामक हाथी को मार दिया गया और तुरही बजाई गई कि अश्वस्थामा मारा गया।

गुरु द्रोणाचार्य को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ तो उन्होंने अपने शिष्य धर्मराज युधिष्ठिर, जो स्वयं भी धर्म के धाम माने जाते थे और केवल सत्य बोलने के लिए प्रसिद्ध थे, से इस बात की पुष्टि के लिए प्रश्न पूछा कि 'क्या अश्वस्थामा मारा गया' इस पर धर्मराज युधिष्ठिर ने उत्तर दिया: ' अश्वस्थामा हतो हता- नरो नहीं कुंजरो ' अश्वस्थामा मारा गया, मनुष्य नहीं बल्कि

एक हाथी', लेकिन पहली पंक्ति अर्थात ' अश्वस्थामा हतो हता- नरो नहीं कुंजरो ' के बाद अश्वस्थामा मारा गया, बहुत शोर हुआ और सायरन बजे, जिस पर उनके उत्तर का दूसरा भाग अर्थात: नरो नहीं कुंजरो ', मनुष्य नहीं बल्कि एक हाथी', - यह बात गुरु द्रोणाचार्य सहित किसी ने भी नहीं सुनी। परिणामस्वरूप, महान योद्धा गुरु द्रोणाचार्य ने अपने हथियार त्याग दिए और फिर शहीद हो गए।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि अश्वस्थामा एक अमर–कालजयी है, जिसे किसी भी परिस्थिति में नहीं मारा जा सकता। फिर भी अश्वत्थामा के पिता, एक गुरु (महान गुरु) और महान योद्धा गुरु द्रोणाचार्य, शोरगुल के साथ चतुराईपूर्ण प्रस्तुति के बहकावे में आकर मारे गए।

(ii). यह आम समझ है कि हमारी पिछली जानकारी, ज्ञान और ज्ञान का हस्तांतरण मौखिक संचार के माध्यम से हुआ है और तुलनात्मक रूप से लिखित शास्त्रों के माध्यम से बहुत कम हुआ है, इसलिए लिखित शब्दों को मौखिक संचार से अधिक महत्व दिया गया है। इस तथ्य को हमारे रोज़मर्रा के व्यवसाय में आसानी से समझा जा सकता है जिसमें जोखिम शामिल है, लिखित दस्तावेजों को मौखिक प्रतिबद्धताओं से अधिक महत्व दिया जाता है, इसलिए हममें से लगभग सभी को अपने जीवन में यह मानने के लिए तैयार किया जाता है कि लिखित दस्तावेज़ मौखिक टिप्पणी से अधिक प्रामाणिक होते हैं। इसके अलावा हम सभी को यह मानने के लिए भी तैयार किया जा रहा है कि मौखिक समाचार/विचार/टिप्पणी/प्रतिबद्धता को प्रामाणिक माना जा सकता है और लिखित समाचार/विचार अधिक प्रामाणिक और दृश्य सबसे अधिक प्रामाणिक हैं। हालांकि बुद्धिमान कहते हैं कि अपने कान, नाक, आंखों पर भरोसा मत करो कि वे क्या सुनते हैं, सूंघते हैं या देखते हैं, बल्कि केवल अपने/हमारे अनुभव पर भरोसा करो।

(4), समस्या का प्रतिमान:

(अ) महाभारत के युद्ध में दुष्ट शक्तियों और उनके समर्थकों को समाप्त करने के लिए रची गई इस चाल को सभी मीडिया घराने और धूर्त कलाओं के महारथी खेलने की कोशिश कर रहे हैं। अगर ये हथकंडे लोगों द्वारा स्वीकार किए जा रहे हैं और मीडिया द्वारा प्रचारित किए जा रहे हैं, तो यह निश्चित है कि हमारे बीच एक बड़ा वर्ग दुखी हो गया है और आगे भी गुरु द्रोणाचार्य की तरह ही बने रहने के लिए लालच में आ रहा है और अपने दैनिक जीवन में मरने के लिए खुद को समर्पित कर रहा है, क्या कहा जा सकता है? अफसोस, यह कैसी भ्रांति है!

(ब) मीडिया के नियंत्रकों की भूख इतनी बढ़ गई है कि जीवित रहने के लिए उन्हें एक के बाद एक देश की लूट का समर्थन करना पड़ता है। इसने ऐसा रूप ले लिया है कि एक के बाद एक वस्तुओं का भंडारण और दलाली करना, उन्हें लूटना और चूसना उनके जीवित रहने के लिए आवश्यक हो गया है। कहा जाता है कि शासन करने की इच्छा (नाम, प्रसिद्धि और शक्ति) कभी खत्म नहीं

होती, हमेशा अधिक से अधिक की भूखी रहती है, (यदि इसे पृथ्वी पर पूर्ण नियंत्रण मिल जाए तो यह अपने पंख फैलाने के लिए चंद्रमा या शुक्र की ओर देखेगा) इसलिए यह सभी बुराइयों में सबसे बुरी और दुष्ट है। क्या इस प्रकार की व्यवस्था टिकाऊ है? क्या ऐसी व्यवस्था का जारी रहना इन नियंत्रकों सहित किसी के द्वारा भी सराहा जा सकता है। क्या इसे लोकतंत्र के स्थान पर दानव-तंत्र नहीं कहा जा सकता? क्या इसे संशोधित करने या सरल बनाने के लिए चर्चा करने लायक नहीं है?

(स) सम्पूर्ण शेयर बाजार, सराफा बाजार, मुद्रा, धातु, खाद्य पदार्थ एवं फल, ईंधन एवं खाद्य तेल, विद्युत ऊर्जा एवं अन्य सभी वस्तुओं के विनिमय बाजार में जुए की तरह या तो नीरसता या तेजी या मंदी की भावना पैदा करके व्यापार किया जा रहा है। यद्यपि मीडिया द्वारा आयोजित यह जुआ तटस्थ प्रतीत होता है और वास्तविक पासों के बिना खेला जाता है, लेकिन यदि कोई बारीकी से देखे तो समझ जाएगा कि यह अघोषित जुआ का खेल इसके स्वामी, मीडिया के मालिक और धन के नियंत्रकों की इच्छा के अनुसार खेला जा रहा है। यदि जुआ आधिकारिक रूप से खेलने की अनुमति है तो इसका मतलब यह है कि हम आधिकारिक रूप से मीडिया, धन, सामग्री, बाजार और शासन के नियंत्रकों को बहुत कम लोगों को रहने दे रहे हैं और दूसरों को बकरा या बच निकलने वाले बकरे की भूमिका निभाने के लिए छोड़ रहे हैं। क्या इसे अर्थव्यवस्था कहा जा सकता है, या एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था और एक स्वस्थ व्यवस्था?

(डी) वर्तमान में मीडिया घरानों ने इतनी तानाशाही शक्ति प्राप्त कर ली है कि वे अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति (2021 में महामहिम श्री ट्रम्प) के सोशल मीडिया अकाउंट भी हटा सकते हैं, विपक्ष के नेता और किसी अन्य देश के आम नागरिक की तो बात ही क्या करें। हाल ही में एक देश ने इंटरनेट आधारित बैंक लेन-देन को हटा दिया/रोक दिया और सामाजिक सुरक्षा कवर वापस ले लिया, जिसका लाभ लोकतांत्रिक देश में सरकार के खिलाफ हड़ताल करने के अपने अधिकारों का प्रयोग करने वालों को मिला, बिना मीडिया द्वारा किसी शोर-शराबे के।

अतीत में एक ऐसा उदाहरण था जब मीडिया को नियंत्रित किया गया था या पूरी तरह से बंदी बना लिया गया था, वह रावण द्वारा था। रावण ने इतना धन इकट्ठा किया था कि वह सोने से एक पूरा शहर बनवा सकता था। अतीत की तरह, वर्तमान परिदृश्य में भी ऐसा लगता है कि मीडिया को अन्य सभी संबंधित संस्थानों के साथ बंदी बना लिया गया है। हालाँकि कुछ उजागर हो रहे हैं और समाप्त हो रहे हैं, लेकिन असली रावण वास्तव में मीडिया को अपने सेवक या बंदी के रूप में उपयोग करके दुनिया में हंगामा मचा रहा है।

पहले के समय में राम ने खड़े होकर स्वर्ण नगरी को जला दिया था और मीडिया को मुक्त कराया था और मीडिया को बिना किसी भय या आवेश के स्वतंत्र और निष्पक्ष रहने दिया था। यह देखकर आश्चर्य होता है कि स्वर्ण नगरी को जलाने का दुस्साहस करने वाला देश और उसके लोग अब थोड़ा सा सोना इकट्ठा करने और सोने की चिड़िया कहलाने पर गर्व करने में व्यस्त हो गए हैं। क्या इससे अधिक दयनीय स्थिति हो सकती है?

(5), समाधान का प्रतिमान :

कहा जाता है कि: – "जब भारत बढ़ता है, तो दुनिया बढ़ती है, जब भारत सुधरता है, तो दुनिया बदल जाती है"! (भारत कहाँ है: भारत (भा–प्रकाश, + रत–व्यस्त = भारत–दुनिया को प्रकाशित करने और लोगों को प्रबुद्ध करने में व्यस्त)।

प्रश्न पूछा जा सकता है कि उपरोक्त कथन के अनुसार कोई व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में होने वाले परिवर्तनों की सराहना कैसे करेगा और समाज में भी इसे देखकर कैसे उसकी सराहना करेगा? परिवर्तनों की सराहना करने के लिए, हमें (समाज को) " **(A)" की व्यवस्था करनी होगी,** (बी) समाज में, समाज द्वारा और समाज के लिए, **सही जानकारी और ज्ञान को साझा करने की व्यवस्था, (बी) मनोरंजन सुरक्षा की व्यवस्था।**

(5.ए) सही जानकारी का प्रावधान और ज्ञान का आदान–प्रदान: आजकल, विशेष रूप से इंटरनेट आधारित सूचना सेवाओं के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आगमन के बाद, सही सलाह और सही जानकारी प्राप्त करना यदि असंभव नहीं तो कठिन प्रतीत होता है।
सूचना सह ज्ञान केंद्र' खोलना , जो न केवल सही जानकारी प्रदान करेगा बल्कि आवश्यकता पड़ने पर ईमानदारी से सलाह और संभव मदद भी करेगा, एक विकल्प हो सकता है? इस तरह के केंद्र के खुलने से वरिष्ठ और अनुभवी लोगों को सम्मानजनक जुड़ाव मिलेगा और उनकी ऊर्जा को सही तरीके से बाहर निकालने का एक रास्ता मिलेगा। यह गतिविधि वरिष्ठ नागरिकों को जुड़ाव और युवाओं को प्रचुर मात्रा में रोजगार प्रदान करेगी। यह उम्मीद की जाती है कि ऐसा एक केंद्र लगभग एक हजार लोगों को उनकी सही सेवाएं प्रदान करने में सक्षम होगा और प्रति सौ में से कम से कम एक पुरुष और एक महिला की आवश्यकता होगी, यानी **दो प्रतिशत लोगों को नियोजित/नियोजित करने की आवश्यकता है** ताकि चौबीसों घंटे प्रभावी सही और गुणवत्ता वाली **जानकारी** और ईमानदारी से सलाह के साथ–साथ आवश्यकता पड़ने पर संभव मदद मिल सके। ऐसे केंद्रों को पूरे समाज के साथ–साथ आगंतुकों/पर्यटकों के लिए पूरी तरह से धर्म–निर्णय के तरीके से एक विशाल धार्मिक केंद्र से संचालित किया जा सकता है।

(5.बी) मनोरंजन की व्यवस्था सुरक्षा:

(क) अनगिनत खोजों और शोधों में यह पाया गया है कि खुशी ही जीवन को बनाए रखने वाली एकमात्र शक्ति है। इसके अलावा यह भी सर्वविदित है कि मनोरंजन खुशी को समृद्ध करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है, जो जीवन को बनाए रखने वाली शक्ति है। यह कहा जा सकता है कि सहभागी मनोरंजन के सक्रिय साधनों की उपलब्धता संबंधित परिवार, समाज और देश की खुशी का सूचक और माप है।

(ख) एक कहावत है: " पराधीन सपनेहु सुख नहीं – पराधीन सपनेहु ऐसे नहीं"। इस कथन के कई अर्थ निकलते हैं–

(1) सीधी और स्पष्ट बात है कि गुलामी में कोई खुशी नहीं है।

(2) यदि सुख नहीं है तो इसका अर्थ यह लगाया जा सकता है कि व्यक्ति गुलामी जैसी स्थिति में है।

(3) यदि कोई खुश है तो इसका मतलब यह है कि वह गुलामी में नहीं है।

(4) गुलामों को खुशी का अहसास नहीं होना चाहिए.

(5). प्रभुत्व रखने के लिए, शासक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उसकी प्रजा या दास कभी भी खुश न रहें या सुख में न रहें। यह सुनिश्चित करने के लिए, मालिक या शासक आम तौर पर प्रजा या दासों द्वारा बनाए गए मनोरंजन और अवसरों की सभी गतिविधियों को बंद कर देता है या नियंत्रित करता है। शासक के लिए मुद्दा यह है कि प्रजा/दासों को मनोरंजन और परिणामी खुशी से कैसे वंचित रखा जाए।

(6) शासक का यह भी मानना था कि दासों को जीवित रखने तथा दास प्रथा को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि दासों को निष्क्रिय मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराये जायें जैसे भजन सुनना, क्रिकेट की कमेंट्री करना, चलचित्र देखना, मोबाइल चलाना आदि, परन्तु सक्रिय तथा सहभागी मनोरंजन तथा खेल उपलब्ध नहीं कराये जायें।

(7) गुलामी की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि मनोरंजन और खेल महंगे हो जाएं, या तो इवेंट मैनेजमेंट द्वारा या मनोरंजन कर द्वारा या दोनों द्वारा।

(8) प्रजा या दास द्वारा संचालित प्रत्येक साधन पर कर लगाओ, विशेषकर उस पर जो लोगों को कुछ धन या खुशी या दोनों दे सकता हो, चाहे वह सेवा हो या मनोरंजन, लेकिन शासक के नियंत्रण में आने वाली सभी चीजों को कर मुक्त करो, जैसे अस्पताल, शिक्षा और न्याय, जो अधिक से अधिक संतुष्टि तो दे सकते हैं, लेकिन जनता को कोई खुशी नहीं देते।

(9). वे कहते हैं कि, "यदि आप किसी व्यक्ति या उसके समुदाय और देश को तोड़ना चाहते हैं तो उनके विश्वास को तोड़ो और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है उनके आस्था केंद्रों (मंदिर, गुरुद्वारा आदि) को तोड़ दो या आस्था केंद्रों को निष्क्रिय कर दो या उन्हें संकीर्ण रूप से संचालित

होने दो। और अगर हम किसी व्यक्ति और उसके समुदाय और देश को बनाना चाहते हैं तो सबसे अच्छा तरीका है उनके आस्था केंद्रों को सक्रिय और क्रियाशील बना दो।
शासित लोगों की गतिविधियों को नियंत्रित करने के इसी विचार से तथाकथित शासक ने कब्जे वाले देश के सभी धार्मिक स्थलों पर नियंत्रण कर लिया, लेकिन साथ ही साथ अपने धार्मिक संस्थानों को बिना किसी जांच और संतुलन के बढ़ने दिया।

जब यह देखा गया कि कब्जे वाले देश के एक संप्रदाय के धार्मिक स्थल अधिक धन आकर्षित नहीं कर रहे हैं और उन्हें नियंत्रित करना बोझ है, तो उन्हें केवल साधारण प्रार्थना करने के लिए स्वतंत्र कर दिया गया और इसके मुख्य पुजारी, सरकारी पुजारी को मासिक वेतन पर एक कर्मचारी की तरह भर्ती किया गया। इसके अलावा जब यह देखा गया कि मध्य और उत्तरी भारत के दूसरे संप्रदाय के धार्मिक स्थल अधिक धन आकर्षित नहीं कर रहे हैं, तो उन्हें भी पुजारी और उसके परिवार की निजी संपत्ति बनने के लिए स्वतंत्र कर दिया गया।
दक्षिण भारत तथा अन्य भागों में धार्मिक संस्थाओं पर नियंत्रण रखने तथा उनसे धन एकत्र करने के लिए बंदोबस्ती विभाग बनाए गए। कुछ कमतर अनुयायियों/शिष्यों की धार्मिक संस्थाओं को भी किसी न किसी कारण से मुक्त रखा गया।
अफसोस! यह प्रथा आज भी स्वतंत्र भारत में (और कई अन्य देशों में भी) दिखाई देती है, जहां एक संप्रदाय की धार्मिक संस्थाओं पर नियंत्रण रखने के लिए एक बंदोबस्ती मंत्रालय बना हुआ है, तथा साथ ही अन्य संप्रदायों को भी स्वतंत्रता दी जाती है।

(10). एक समय था जब घर में बच्चे कहते थे– मा–पा, बोरियत हो रही है, चलो मंदिर चलते हैं, वहाँ मौज–मस्ती करेंगे, लेकिन अब ऐसा समय आ गया है जब बच्चे कहते हैं– मा–पा, मंदिर जाना बोरियत भरा है, हम वहाँ नहीं जाएँगे, वहाँ हमें बोरिंग और नीरस काम ही करना पड़ेगा। ऐसा सिर्फ़ इसलिए है क्योंकि मनोरंजन के मामले में लगभग सभी धार्मिक स्थल मृतप्राय हो चुके हैं।

यह खुले क्षेत्र में है कि अधिकांश नृत्य रूप (भारत के जैसे भरतनाट्यम, कथक, कच्छीपुड़ी, कथकली, ओडिसी आदि) और भारत, चीन, जापान के मार्शल आर्ट के रूप जैसे कैराली–कला, मल्ल–युद्ध, कुंगफू, जूडो–कराटे, शाओलिन, तीरंदाजी, तलवारबाजी, तलवार प्रशिक्षण आदि को धार्मिक स्थानों द्वारा विकसित, बढ़ावा दिया गया और संरक्षित किया गया।
अब वे जो भी बजाते हैं वह चिड़चिड़ाहट पैदा करने वाला, अधिक जोर से और शोरगुल वाला होता है, और वे जो भी उपदेश देते हैं वह विभिन्न नियमों और धर्मग्रंथों की रट लगाने या बांग देने जैसा होता है

(ग), उचित मनोरंजन के अभाव में, लोग व्यक्तिगत रूप से और साथ ही सामूहिक रूप से (स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर) न केवल मनोरंजन से वंचित हैं, बल्कि बुरी तरह से बीमार भी हो गए हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस कमी को पूरा करने के लिए बहुत से लोगों ने कम गुणवत्ता वाले निष्क्रिय मनोरंजन का सहारा लिया है। उचित गतिविधियों का कोई भी दमन गलत या हानिकारक गतिविधि के प्रति जुनून और लत को जन्म देता है, चाहे वह तथाकथित नार्को–पदार्थ हो या इंटरनेट आधारित मनोरंजन जिसमें बड़े पैमाने पर पोर्न–साइट देखना शामिल है।

(घ), मनोरंजन में नृत्य, संगीत, गायन, कॉमेडी, फैशन परेड, फैंसी ड्रेस या अन्य मनोरंजन प्रतिभाओं का स्वस्थ चित्रण शामिल होना चाहिए और टिकट के साथ या बिना टिकट के सभी के लिए खुला होना चाहिए। मनोरंजन और खेल में किए गए प्रयास और खर्च हमेशा चिकित्सा बिलों में कमी से अधिक संतुलित होते हैं। यह एक अनुभव है कि एक वर्ष में नौ दिन का साधारण गरबा (नृत्य का उत्सव) चिकित्सा बिलों को कम से कम दस प्रतिशत कम करने में सक्षम था। उनके पास एक कहावत है कि 'एक दिन नृत्य डॉक्टरों को दूर रख सकता है'।

सुबह में व्यायाम, दिन में रुचि की अभिव्यक्ति, शाम को मनोरंजन दिन को खुशनुमा बनाता है और अच्छी नींद और खुशनुमा सुबह लाता है। इसे एक आदर्श जीवनशैली कहा जा सकता है। मनोरंजन को रचनात्मक खोज को प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करने के रूप में भी देखा जाना चाहिए, खासकर बच्चों, महिलाओं और कलाकारों के लिए।

सरकारों से जो अपेक्षित है वह न केवल मनोरंजन करों को पूरी तरह से वापस लेना है, बल्कि समाज में मनोरंजन के लिए सुविधाओं के प्रावधान में समान भागीदार बनना है, जैसे कि बुनियादी ढाँचा और रसद सहायता। किसी भी समुदाय या देश के लिए उसका सकल खुशी सूचकांक (GHI) सकल घरेलू उत्पाद (GDP) से अधिक महत्वपूर्ण है, और सामुदायिक प्रयास और व्यय में समान व्यवहार का हकदार है।

(ई), मनोरंजन सुरक्षा का प्रावधान भी प्रमुख रोजगार सृजन का एक जरिया है। मनोरंजन के प्रावधान को विभिन्न प्रावधानों और प्रवर्तन द्वारा प्रतिबंध के स्थान पर सुविधा की आवश्यकता है। यह देखा गया है कि किसी भी मनोरंजन कार्यक्रम में कम से कम छह प्रतिशत लोग इसके प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं (चाहे वह वास्तविक प्रदर्शन हो, शिक्षित और कुशल बनना हो, शिक्षा देना हो या प्रशिक्षण देना हो) में शामिल होते हैं। इसका मतलब यह है कि यह मनोरंजन समाज द्वारा ही कम से कम छह प्रतिशत आबादी को रोजगार/सगाई प्रदान कर सकता है। उदाहरण के

लिए **भारत में मनोरंजन से लगभग आठ करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष जुड़ाव/रोजगार मिलने का अनुमान है।**

ऐसा कहा जाता है कि सोने से पहले की आखिरी बात और भावना (यहाँ तक कि मृत्यु भी) अगली सुबह की पहली याद बन जाती है, इसलिए हम कहते हैं कि– अंत भला तो सब भला , क्योंकि अगली सुबह, अगली घटनाएँ यहाँ तक कि अगला जन्म भी एक सुखद शुरुआत होगी। शाम को किया गया मनोरंजन निश्चित रूप से अगली सुबह में अच्छी ऊर्जा लाएगा, इसलिए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मनोरंजन सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है जो एक समाज और राष्ट्र अपने नागरिकों को प्रदान कर सकता है।
मनोरंजन के वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए हम भारत तथा अन्य स्थानों पर इस पर आवश्यक चर्चा तथा सुधारात्मक कार्रवाई करना चाहेंगे ।

5. गोमांस की तेजी वाली अर्थव्यवस्था और गायों और बधिया बैलों की अर्थव्यवस्था

निम्नलिखित प्रस्तुत है, प्रस्तुति में शामिल हैं: (1). गोमांस पर काल्पनिक चर्चा (2). ग्रामीण इलाकों की कहानी और मास्टर्स के बीच समाधान केंद्रित चर्चा:

(1) गौमांस पर काल्पनिक चर्चा:

गोमांस खाने वाले देशों की खाद्य सुरक्षा परिषद द्वारा की गई काल्पनिक चर्चा निम्नलिखित है:

सदस्य– प्रश्न: हम गोमांस की निरन्तरता के बारे में कैसे आश्वस्त हो सकते हैं, क्योंकि हमारे यहां जलवायु के कारण गोमांस उपलब्ध नहीं है तथा गौपालन भी बोझिल है?

चीफ – जवाब: हम भारतीय उपमहाद्वीप, लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी देशों से इसे आयात करते हैं और इसमें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है, बल्कि वे इसे भरपूर मात्रा में निर्यात करना पसंद करते हैं।

प्रश्न: यह तो ठीक है, लेकिन कोई नहीं जानता कि यदि गायों की आपूर्ति कम हो गई, तो क्या होगा, इससे गोमांस का उत्पादन कम हो जाएगा, जिससे एक ओर तो कीमतें बढ़ेंगी और दूसरी ओर हमारे देश में गोमांस की मांग बढ़ेगी, क्या हमने इस दिशा में कोई कदम उठाया है?

उत्तर: यद्यपि हम यहां सादी चाय और कॉफी पीते हैं, परंतु हमने उन देशों में दूध और चीनी के मिश्रण को बढ़ावा दिया है।

भारत जैसे देशों में सादी चाय और कॉफी का मतलब है, चाय जिसमें चाय की पत्तियां/दाने, पानी, दूध और चीनी होती है और विशेष चाय का मतलब है उसमें इलायची, अदरक, तुलसी आदि मिलाना, इसी कारण से उन्हें दूध की बड़ी आवश्यकता बनी रहेगी जिसका अर्थ है बड़ी संख्या में गाय, भैंस, बकरी आदि।

जब दूध की आपूर्ति कम हो जाती है, तो इन पालतू पशुओं को छोड़ने पर मजबूर होना पड़ता है; ये सेवानिवृत्त गायें और भैंसें हमारे लिए गोमांस की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त से अधिक हैं।

इसके अलावा, हमें गोमांस की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए हम यह सुनिश्चित करते हैं कि इन देशों में केवल दूध वाली चाय और कॉफी का विज्ञापन किया जाए, फिर हम डेयरी उद्योग, चीनी उद्योग, चाय और कॉफी के बागानों को बढ़ावा देने के लिए आसान ऋण प्रदान करते हैं, फिर हम इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि चीनी और डेयरी उत्पाद पर सब्सिडी कैसे आवश्यक है, ताकि ये उत्पाद इन देशों के आम लोगों की पहुँच में रहें। फिर गायों के लिए चारा और घास सुनिश्चित करने के लिए हम कृषि को बढ़ावा देते हैं, और हम यह सुनिश्चित करते हैं कि जब

जंगल काटे जाएँ या जंगल में आग लग जाए और वह राख हो जाए तो कोई ज़्यादा शोर न मचाए ताकि कृषि और चारागाह के लिए ज़मीन बढ़े।

प्रश्न: यदि ऐसा है, तो हम केवल गोमांस खाने के लिए इतना पैसा खर्च कर रहे हैं? क्या हम इस पैसे को वापस करने के लिए कुछ करते हैं?
उत्तर: ओह! हाँ। यह आम बात है कि अगर कोई व्यक्ति चीनी और दूध के साथ चाय और कॉफी पीना जारी रखता है, तो उसे निश्चित रूप से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी, जिसकी शुरुआत मौखिक स्वच्छता और पाचन में गिरावट से होगी। शरीर में ये दो ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ से सभी बीमारियाँ शुरू होती हैं। इसलिए यह निश्चित है कि दूध और चीनी के साथ चाय और कॉफी पीने वाले लगभग सभी उपभोक्ताओं को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होंगी और वे डॉक्टरों के पास जाएँगे और दवाइयाँ खरीदेंगे। हमने अपने स्तर पर दवा कंपनियों और अस्पतालों की श्रृंखला का बड़ा स्वामित्व हासिल कर लिया है। इससे हमें बड़ा लाभ मिलता है जो उन देशों में डेयरी और चीनी व्यवसाय को बढ़ावा देने में हमारे द्वारा किए गए निवेश से कहीं अधिक है।

इसके अलावा, हमने मीडिया में पर्याप्त निवेश किया है (हमारे पास समाचार पत्रों, समाचार चैनलों और सोशल साइट्स के पर्याप्त शेयर हैं) ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे हमारी आवाज़ और भावनाओं को प्रतिध्वनित करें (न कि वहाँ या किसी और की)। इसने हमें उन देशों में पर्याप्त रूप से शक्तिशाली बना दिया है कि हम अपनी शर्तों को निर्धारित करने की स्थिति में बने रह सकते हैं और साथ ही इन निवेशों से लाभ का अपना हिस्सा कमा सकते हैं।

प्रश्न: ऐसा सुनने में आया है कि कुछ लोग गाय को माता मानते हैं, उन्हें किस प्रकार संबोधित किया जा रहा है?
उत्तर: हमने मदर डेयरी के विचार को बढ़ावा दिया है, और कैसे प्रतिदिन कम से कम एक गिलास दूध पीना अच्छा है, हम अपने बुद्धिजीवियों के माध्यम से उन्हें अपने स्वयं के शास्त्रों और लेखन की पकड़ में अंधा, डरपोक, कायर बनाए रखने के लिए सब कुछ करते हैं, जैसे कि दूध अमृत है– सुधा, इसलिए सुधा डेयरी, दूध अमूल्य है: अमूल्य – अमूल डेयरी, इसलिए अमूल दूध– भारत का स्वाद, इस तरह वे संतुष्ट और संयमित रहते हैं।
अपने प्रवचनों के दौरान दूध और चीनी मिली हुई चाय या कॉफी पर आपत्ति नहीं करते, बल्कि उन्हें स्वयं भी इसे पीने में कोई आपत्ति नहीं होती।
इनमें से कुछ ने चाय के दुष्प्रभावों का उल्लेख किया, लेकिन उन्होंने दूध और चीनी के बारे में कुछ भी उल्लेख किए बिना आयुर्वेदिक चाय की पेशकश की।

इसके अलावा, ये उपदेशक हमारे देशों में जाकर, यहां तक कि गोमांस खाने वाले समुदायों के बीच भी अपना ज्ञान (जिसे वे बुद्धिमत्ता कहते हैं) बांटकर खुश होते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि वे हमसे मिलने वाले प्रसाद से अंधे हो गए हैं।

तब अधिकांश पुरुष और महिलाएं अपने जीवन में खालीपन को भरने के लिए चाय और कॉफी में पदार्थ ढूंढ लेते हैं।

जब घर में धर्म प्रचारक और महिलाएं, कर्मचारी और अधिकारी, अनुयायी और नेता गाय को माता मानने के नारे लगाते हुए दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी बनाने, पीने और परोसने में व्यस्त हो जाते हैं, तो न केवल गोमांस की आपूर्ति जारी रहती है, बल्कि कई अन्य चीजें और सेवाएं भी मिलती रहती हैं। इसके अलावा, इन लोगों ने स्वागत पेय के रूप में दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी देने की संस्कृति विकसित कर ली है, इसलिए हमें इन पाखंडियों से किसी भी तरह की चिंता करने की जरूरत नहीं है।

प्रश्न: इसका मतलब यह है कि हम गोमांस की निरंतरता को बनाए रखते हुए कमाई भी कर रहे हैं, क्या यह हमारी चतुराई और उनकी सरासर मूर्खता नहीं लगती?

उत्तर: हा हा,

प्रश्न: यदि उन्हें इस तथ्य का एहसास हो जाए तो क्या होगा?

उत्तर: ऐसा नहीं है कि किसी को इसका अहसास नहीं है, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है और जब भी वे चीनी और दूध मिश्रित चाय और कॉफी के आदी लोगों, डेयरी से लाभ कमाने वाले लोगों, अस्पतालों और दवा कंपनियों में काम करने वाले लोगों के खिलाफ आवाज उठाते हैं, तो कमोबेश उन पर काबू पा लिया जाता है।

इसे आसानी से हटाया नहीं जा सकता; यह इन देशों में आंतरिक युद्ध का कारण बन सकता है जिसे उनके नेता किसी भी कीमत पर टालना चाहेंगे और अगर वे (उन देशों के नेता) विफल हो जाते हैं तो हमारे पास इन देशों के आंतरिक मामलों में दखल देने की पर्याप्त महारत है। हमारे लिए दूसरों पर गाली-गलौज करना, दूसरों को लड़ाई, झड़प, युद्ध के लिए उकसाना खेल/खेल है जिसे इनमें से कई नेता जानते हैं, इसलिए वे हमसे डरते रहते हैं।

इसके अलावा, दूध और चीनी मिश्रित चाय और कॉफी से लत छुड़ाने में कम से कम एक महीने का समय लगता है, जिसे पूरे समुदाय और देश के लिए शामिल करना और उसका पालन करना कठिन है।

प्रश्न: क्या आप अपने द्वारा किये जा रहे बड़े-बड़े दावों का कोई उदाहरण दे सकते हैं?

उत्तर: हां, वे वहां हैं:

(क) उदाहरण के लिए, राजनीतिक हलकों में यह धारणा फैलाई गई कि गायों का वध मुसलमान ही कर रहे हैं, तथा मुसलमानों के बीच ऐसा करना उनका मौलिक अधिकार है, और इस प्रकार गोमांस को लेकर एक वर्ग विभाजित हो गया, जबकि तथ्य यह है कि गोमांस की आपूर्ति करने वाले अधिकांश स्वचालित बूचड़खानों का संचालन और स्वामित्व गैर-मुस्लिम समुदाय के पास है (जिसमें वह समुदाय भी शामिल है जो हर मानदंड और हर रूप में अहिंसा के लिए पूरी आवाज/शोर मचाता है)।

(ख) भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 1998 से 2005 तक अपनी लम्बी सुनवाई के बाद 2005 में गाय की रक्षा के लिए फैसला सुनाया, लेकिन सरकार में किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

(ग) संसद में प्रतिबन्ध लगाने संबंधी विधेयक तीन बार लाया जा चुका है, लेकिन
(i) एक बार सरकार ने लगभग दो हजार एक में सुबह विधेयक प्रस्तुत किया, लेकिन शाम को यह कहते हुए उसे वापस ले लिया कि इस पर बाद में चर्चा की जाएगी,
(ii) एक अन्य अवसर पर, गोमांस पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पारित होने ही वाला था कि एक महिला सांसद (जो हिंदू समुदाय से होने का दावा करती हैं) ने कहा कि मैं गोमांस खाती हूं, इसलिए यदि विधेयक पारित हो जाता है तो मेरी पसंद का भोजन करने के मौलिक अधिकार का क्या होगा, और विधेयक को छोड़ दिया गया।
(iii) तीसरी बार जब विधेयक पेश किया गया तो कोलकाता के हिंदू समुदाय से जुड़े एक प्रमुख पत्रकार (जिन्होंने एक बार भारत के राष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार खड़ा किया था) ने लिखा कि वे गोमांस खाते हैं और उनका और उनके जैसे लोगों का क्या होगा- इस बयान का फिल्म उद्योग में कुछ हस्तियों (सभी हिंदू) ने समर्थन किया और विधेयक फिर से गिर गया। तब से, हम कुछ आवाज़ें सुनते हैं लेकिन कोई ठोस बात नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि संसद में गोमांस पर प्रतिबंध लगाने वाला विधेयक पेश किया जा रहा है।
(घ) स्पेन में बैल लड़ाई के पूरे सत्र होते हैं, लेकिन भारत में तमिलनाडु के मीडिया द्वारा इस पर आपत्ति जताई गई है।
(ई) हम गाय की महिमा पर उपदेश देते हैं, लेकिन बैल के बारे में चुप्पी साध लेते हैं; गाय और बैल, भैंस और भैंस के बीच बढ़ती जनसंख्या के अंतर, गाय और भैंस के नर बच्चों को छोटी उम्र में ही भोजन देना बंद करके मार डालने, बैल और भैंस को छोटी उम्र में ही बधिया कर देने, गाय और भैंस को मल्चिंग में आसानी के लिए इंजेक्शन लगाने, गाय और भैंस को मल्चिंग के लिए मशीनों के उपयोग और गाय और भैंस के कृत्रिम गर्भाधान की बात कोई नहीं करता।
ऐसे कई उदाहरण हैं।

प्रश्न: क्या ऐसा है? वे किस प्रकार के लोग हैं?

उत्तर: आप अपने हिसाब से निष्कर्ष निकाल सकते हैं, पाखंडी या भावनात्मक, नैतिक, नैतिक रूप से मृत या जो भी आप चाहें। ये लोग तब से पतित हो गए जब से उन्होंने अधिकांश बैलों को बधिया करना शुरू किया, संतान के लिए बहुत कम छोड़ा, फिर ये लोग खेती और बैलगाड़ी में इन बधिया किए गए बैलों का उपयोग करने लगे, जिसके परिणामस्वरूप इस वर्ग में नपुंसकता, अनाचार, निराशा, लाचारी पैदा हुई।

इसके अलावा जब कुछ धर्मों ने बिना किसी विकल्प के मूल्य का हवाला देते हुए मांस खाने को आधिकारिक रूप से स्वीकार कर लिया और यह उपदेश दिया कि ऐसे अनुयायियों को अपने भोजन का चयन करने में कोई विवेक नहीं होना चाहिए, और एक अन्य धर्म ने कहा कि व्यक्ति को प्रत्यक्ष हत्या से दूर रहना चाहिए, हालांकि वह हत्या के फल का आनंद ले सकता है (जैसे कृषि बहुत हिंसा का कारण बनती है इसलिए कृषि से दूर रहें, लेकिन कोई कृषि का व्यवसाय कर सकता है) तो इन लोगों को कमोबेश उपयोगितावादी बना दिया।

प्रश्न: दो और प्रश्न हैं, एक हमें प्राप्त होने वाले गोमांस की गुणवत्ता के बारे में, तथा दूसरा, क्या पारिस्थितिकी गड़बड़ी हमें प्रभावित करेगी, जो गन्ना, चाय, कॉफी, घास की खेती के लिए पेड़ों की अत्यधिक कटाई के कारण होती है, इसके अलावा अदरक, इलायची की थोड़ी मात्रा की भी खेती होती है, जो उन देशों में दूध, चीनी और मसालों के साथ चाय बनाने के लिए आवश्यक है।

उत्तर: यह निश्चित रूप से चिंता का विषय है जिसके लिए हमने जलवायु परिवर्तन पर चर्चा और अनुवर्ती कार्रवाई को बढ़ावा दिया है, उम्मीद है कि इस अभ्यास से कुछ समाधान निकलेगा, चिंता न करें।

प्रश्न: तो क्या हम गोमांस की निरंतर आपूर्ति के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं?

उत्तर: हां, बिलकुल, जब तक हम अपना आधिपत्य बनाए रखते हैं, तब तक आराम का समय ही सर्वोपरि है।

प्रश्न: एक अंतिम प्रश्न, हम कब तक उन पर बढ़त बनाए रखेंगे?

उत्तर: यह वह प्रश्न है जिसके बारे में उन्हें अधिक चिंता करनी चाहिए। हम सभी मनुष्य हैं और सभी जातियाँ शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से लगभग समान हैं। उन पर हमारी बढ़त हमारी अतिरिक्त ताकत के कारण नहीं बल्कि उनकी कमज़ोरी के कारण है। यह सरल है कि यदि कोई बैल को मार रहा है, तो उसे धमकाया जाएगा, यदि कोई बैल को निर्दयता से बधिया कर रहा है, तो उसके साथ भी बैल की तरह निर्दयता से व्यवहार किया जाएगा और इस तरह वह कायर बन जाएगा और प्रतिकार करने की स्थिति में नहीं रहेगा। बैल, गाय, भैंस और भैंस का उपयोग और दुरुपयोग करने वालों की स्थिति देखिए, यह कितनी दयनीय है, चाहे वे किसान हों, दूधवाले हों या उनके पुजारी, क्या आपको लगता है कि वे कभी अपने तौर-तरीकों

को सुधारने का मन बना पाएंगे? एक तरह से उन्होंने उसी भगवान को नाराज़ किया है जिसकी वे पूजा करते हैं। उन पर हमारी बढ़त के बारे में आप और क्या सुनना चाहते हैं।

(2) <u>ग्रामीण क्षेत्र की कहानी और मास्टर्स के बीच समाधान केंद्रित चर्चा:</u>

(2.A) आध्यात्मिक मंडलियों में कहा जाता है कि एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका (मूल निवासी और लैटिन) के लोग बहुत ही लयबद्ध सामंजस्य में लगभग एक ही तल पर एक ही तरंगदैर्ध्य पर कंपन करते पाए जाते हैं। वे एक साथ उठते हैं और शिखर को छूते हैं, शांति और सद्भाव में सदियों तक वहाँ रहते हैं और प्रकृति के चक्र में घटनाओं के बदलने के साथ एक साथ रसातल (चट्टान के निचले भाग) में गिर जाते हैं।

जब ये शिखर पर थे, तब इन्होंने परिष्कृततम विज्ञान कीमिया (पारा और अन्य धातुओं को सोने में बदलना), जीवन विज्ञान पर ग्रंथ, कला के रूप, परिवार और समाज का प्रबंधन, काम और धन, प्रशासन और न्याय आदि का विकास किया, और सदियों तक परस्पर विश्वास और सम्मान के वातावरण में रहे, जिसकी आज कई लोग कल्पना भी नहीं कर सकते।
जो लोग इसकी सराहना करते हैं, वे समझते हैं कि सभी कम्पन, उसकी परिणामी लहरें, इन लहरों का उठना–गिरना, ईश्वर की कृपा ही कहा जा सकता है और वे परिवर्तनों को पूरी विनम्रता के साथ स्वीकार करते हैं।

(2.बी) संक्षिप्त कहानी :

कुछ लोग पूछते हैं कि यदि व्यवस्था इतनी अच्छी तरह स्थापित थी तो फिर हमारा यह पतन कैसे हुआ?
ऐसा कहा जाता है कि, एक समय था (लगभग तीन–चार हजार वर्ष पहले) जब पृथ्वी पर सब कुछ काफी हद तक सीधा और ठीक चल रहा था।
लेकिन एक दिन नरक से एक प्रतिनिधि भगवान के पास आया, जिसने कहा: "मेरे प्रभु, यह आप ही हैं जिन्होंने नरक और स्वर्ग का निर्माण किया है, और यह केवल आपके विवेक पर है कि हमें नरक में काम करने की अनुमति है। प्रभु के आदेश के अनुसार हम "नरक का 24×7×365 प्रबंधन" कर रहे हैं, लेकिन आपका प्रभु यह नोट करना चाहेगा कि पिछली कुछ शताब्दियों से हमें अपनी सेवाएँ देने के लिए कोई भी नहीं मिला है।

प्रतिनिधियों ने माननीय से पूछा कि ऐसा क्यों, माननीय इसे बंद करके हमें कहीं और पोस्ट कर सकते हैं? माननीय हम पर दया करें! कृपया हमें अनिश्चित काल तक ऊबने, छोड़े जाने, अयोग्य, सुस्त और एक तरह से बेकार महसूस करने से बचाएं।

उसी समय स्वर्ग से भी एक ज्ञापन प्राप्त हुआ जिसमें लंबी प्रतीक्षा लाइनों, लगातार काम करने तथा स्वर्ग के स्तर में गिरावट का मुद्दा उठाया गया।

इस पर भगवान को नरक और स्वर्ग के कर्मचारियों की दुर्दशा देखकर दया आ गई और उन्होंने कहा कि चिंता मत करो, धैर्य रखो, वे आवश्यक कार्य करेंगे।

(2.बी.1), ऐसा कहा जाता है कि ईश्वर ने नर्क और स्वर्ग दोनों पर कृपा की, इतना अधिक कि ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण मानवजाति ने स्वयं को भ्रष्ट कर लिया है और इस प्रकार स्वर्ग के अयोग्य हो गए हैं और न केवल नर्क के योग्य बन गए हैं, बल्कि उन्हें पृथ्वी पर अपना जीवन नर्क की तरह बिताना पड़ रहा है।

धरती पर पूरा परिदृश्य पूरी तरह से बदल गया है, जहाँ एक समय धरती पर स्वर्ग था, अब धरती के हर कोने में समस्याएँ हैं। ऐसा कहा जाता है कि पिछले कुछ हज़ार सालों में स्वर्ग और नर्क की तालिका बदल गई है।

लेकिन अजीब बात यह है कि अब भगवान को स्वर्ग और नर्क के विपरीत रूप में दर्शाया जा रहा है, खालीपन का स्वर्ग और भीड़ का नर्क। प्रतिनिधियों ने कहा कि स्वर्ग पूरी तरह से भूली हुई चीजें बन गई हैं और अब नर्क ही घूम रहा है।

(2.बी.2), मास्टर्स निम्नलिखित कारणों की ओर इशारा करते हैं कि क्यों लोग अपमानजनक स्थिति में फंस जाते हैं और फिर नीचे की ओर धकेल दिए जाते हैं:

क) ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान ऐसा चाहते हैं, या यह हमारा दुर्भाग्य है, या यह हमारे कर्मों का परिणाम है, या, सब कुछ एक भ्रम (माया) है,

(ख) परिवार के माता–पिता या वृद्धों में से कोई बुद्धिमान व्यक्ति तीर्थयात्रा या संन्यास के लिए चला गया है और चालाक कलाओं के महारथियों ने उस खाली स्थान पर आश्रय पाया है और उनके शुभचिंतक होने का दावा करते हुए उन परिवारों या समाज को नीचे धकेल दिया है।

ग) ऐसा तब होता है जब चीजें आसान हो जाती हैं और राजा/रानी, राजकुमार/राजकुमारी, राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री खुद को काफी सक्षम समझने लगते हैं और सादगी और दयालुता वाले इन गुरुओं/ऋषियों/संतों की उपेक्षा करने लगते हैं। उपेक्षा के माहौल में गुरु/ऋषि/ऋषि वहां से चले जाते हैं।

(घ) जब माननीय सदस्यगण और आदरणीय वरिष्ठजन केन्द्र से चले जाते हैं तो कुछ समय तक चीजें गति के कारण आसानी से चलती हैं, लेकिन उस गति के बाद एक छोटा सा मुद्दा भी तूफान बन जाता है और साम्राज्यों के पतन का कारण बन जाता है।

ई). संतों/साधुओं और ऋषियों की अनुपस्थिति में जो परिवर्तन होता है वह है पेय, भोजन और कामोद्दीपक का परिवार और समाज द्वारा उपयोग किया जाना, जो बदले में सब कुछ उल्टा–पुल्टा कर देता है या इसके विपरीत। यह सामान्य है कि ये चीजें (पेय, भोजन और कामोद्दीपक) समाज में कोई भी बदलाव लाने के लिए पर्याप्त हैं, अच्छाई से बुराई, बुरे से बदतर, राजत्व से गुलामी और इसके विपरीत।

यह एक समय परीक्षित और बिना किसी संदेह के सिद्ध तथ्य है कि पेय (पानी, दूध, फलों का रस, सूप) आवाज को प्रभावित करते हैं, भोजन मूड/दिमाग को प्रभावित करता है और नशा स्थिति/भाग्य का फैसला करता है (उदाहरण के लिए) पानी वैसी आवाज़ , जैसे खाना वैसा मन , उदाहरणार्थ ड्रग्स वैसी स्थिति : जैसा जल, वैसी वाणी, जैसा भोजन, वैसा मन, जैसा नशा, वैसी स्थिति।

इसके अलावा, पेय और भोजन केवल वे ही नहीं हैं जो मुंह से या इंजेक्शन के माध्यम से लिए जाते हैं, बल्कि भोजन और पेय में बहुत सी ऐसी चीजें शामिल हैं जिन्हें लोग आंखों, कानों, नाक और स्पर्श से लेते हैं। ऐसा कहा जाता है कि धन, नाम, प्रसिद्धि, शक्ति और यहां तक कि ज्ञान का नशा सबसे परिष्कृत और अधिक स्थिर होता है, इसलिए इसे मानव जाति को खराब करने के लिए अधिक खतरनाक/जहरीला कहा जा सकता है।
इसके अलावा जिस तरह से इन्हें (पेय, भोजन और मादक द्रव्यों को) प्राप्त किया जाता है (उगाया जाता है, एकत्र किया जाता है, संसाधित किया जाता है, संग्रहीत किया जाता है, पकाया जाता है या ठंडा किया जाता है), परोसा जाता है और स्वीकार किया जाता है (पीया जाता है और खाया जाता है) वह प्राप्तकर्ता की आवाज़, मन और स्थिति को आकार देता है। इस तरह से पेय, भोजन और नशे की इस पूरी प्रक्रिया का हर पहलू मानव जाति और हमारे पूरे वातावरण/पर्यावरण को प्रभावित करता है।

(**च**) यदि स्वामी की अनुपस्थिति में आम लोगों को मादक पदार्थ खुलेआम दिए जाएं तो वे धूर्त कला के स्वामी के आसान शिकार बन जाते हैं और यहां तक कि वे ऐसे जघन्य अपराध भी कर सकते हैं, जिनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता।
ऐसा कहा जाता है कि नशे के प्रभाव में आकर लोग चालाक कलाओं और निषिद्ध विज्ञान के स्वामी के संपर्क में आकर अपराध करते थे, पशुओं के दूध को नष्ट कर देते थे, बछड़ों को भूखा

छोड़ देते थे, बैल, भैंस, बकरी, भेड़ को बधिया कर देते थे तथा मित्रों/रिश्तेदारों के स्थान पर उन्हें गुलाम/मशीन के रूप में प्रयोग करना शुरू कर देते थे, जो दुर्भाग्य से आज भी और भी जघन्य तरीके से किया जा रहा है।
बदले में मनुष्य जाति को इन सभी जानवरों से शाप मिल रहा है। यह कहा जा सकता है कि खेत में सारा दूध और सारी उपज शापित हो जाती है। ऐसा शापित दूध पीना और ऐसा शापित भोजन खाना, मनुष्य द्वारा की जा रही सभी बुराइयों की जड़ कहा जा सकता है।

(छ) ऐसा कहा जाता है कि महर्षि दुर्वासा ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने गाय को माता कहा तथा प्रेम और शक्ति के प्रतीक बैल के साथ गाय की पूजा की।
दुनिया में हर धर्म का गाय और बैल से कुछ न कुछ संबंध पाया जाता है, कुछ लोग गाय को अपने बलिदान और शुद्धिकरण की प्रक्रिया का एक आवश्यक हिस्सा मानते हैं, जबकि कुछ अन्य लोग गाय और बैल को पवित्र मानते हैं, एक धर्म कहता है कि वर्तमान प्रबुद्ध व्यक्तित्व मुक्ति से पहले अपने पिछले जन्मों में गाय रहे होंगे, इसलिए, उनके धर्म में गाय की पूजा तब की जाएगी जब वह सभी कर्मों को त्याग कर मुक्त हो जाएगी, कुछ धार्मिक व्यक्ति यहाँ तक कहते हैं कि वर्तमान अवतारों में गाय और बैल भगवान और देवी के अभिशाप के रूप में जी रहे हैं। लेकिन एक बात बहुत दुखद लगती है कि, इन सभी धर्मों के लोगों ने मिलकर गाय और बैल पर अपराध करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, जिसने बदले में न केवल पूरी मानवता को दुखी किया बल्कि पूरी धरती और उसके पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित किया।

(ज) कहा जाता है कि मनुष्य द्वारा अतिरिक्त दूध के प्रति दीवानगी ने उसके बच्चों को इतनी छोटी उम्र से ही भ्रष्ट कर दिया है कि बड़े होने पर उन्हें यह अपराध ही नहीं लगता (बछड़ों को माँ का दूध पीने से रोकना, नर संतानों की हत्या करना और बधिया करना)।
यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि दूध देने वाले पशुओं पर हो रहे इस अपराध से उन लोगों को भी कोई फर्क नहीं पड़ता जो गौमाता और शक्तिशाली नंदी की प्रशंसा में नारे लगाते रहते हैं।

अफसोस! साधु-साध्वी, सुखी गुरु और सद्गुरु की पूरी नस्ल भी पशुओं पर अपराध करके एकत्रित दूध पीकर इतनी भ्रष्ट हो गई कि अब समाज में उनकी हुकूमत नहीं चलती।

यह कहा जा सकता है कि साधु, साध्वी, स्वामी, संन्यासी, संन्यासिन की विधाओं को आत्मशुद्धि, गहन ध्यान और सभी सुख-सुविधाओं से दूर होकर बड़े यज्ञ (निस्वार्थ कार्य) की आवश्यकता होती है। यह उनके स्वयं के विश्वास और आत्मविश्वास को पुनः स्थापित करने और जनता का नेतृत्व करने और गौरव प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक पहला कदम है।

यह सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना करता है और सभी को इस प्रार्थना में शामिल होने के लिए प्रेरित करता है कि हमें गाय और बैल पर आगे से अपराध करने से रोकने के लिए विवेक और संवेदनशीलता प्रदान करें तथा सभी जीवित प्राणियों और निर्जीवों के सम्मान को बहाल करने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान करें। इसके बिना कोई भी अर्थव्यवस्था टिक नहीं सकती।
भगवान् हमें आशीर्वाद दे,

6. मादक द्रव्यों की अर्थव्यवस्था या अर्थव्यवस्था का नशा

(1), शराब, सिगरेट और अन्य नशीले पदार्थों की बिक्री से एकत्र करों से सरकार की कमाई हमेशा इन पदार्थों से होने वाली बीमारियों के इलाज पर किए गए खर्च से बहुत कम पाई जाती है, फिर भी सरकार को ऐसी बिक्री से प्राप्त धन से इतना मोह है कि हाल ही में दुनिया भर में तालाबंदी के बाद सरकार ने पहला काम यह किया कि बीयर और शराब बेचने वाली दुकानों को खोल दिया। अफ़सोस! कैसी अर्थव्यवस्था है– शराबियों के कंधों पर चल रही है? क्या ऐसी अर्थव्यवस्था समाज के लिए स्वस्थ और खुशहाल स्थिति ला सकती है?

(2), शराब, सिगरेट और अन्य मादक पदार्थों की बिक्री से प्राप्त करों से सरकार द्वारा कमाई करने की बात सोचना ही न केवल घिनौना है, बल्कि शैतानी भी कहा जा सकता है। त्यौहारों और अन्य विशेष अवसरों पर नशीले पदार्थों पर प्रतिबंध लगाने का नारा लगाना मूलतः नशे के प्रचार का विज्ञापन है, जबकि सिगरेट और बीड़ी के पैकेटों पर चेतावनी और भयावह चित्र छापकर उन पर मिलने वाले करों से आनंद लेना हमारा संदिग्ध आचरण है।

(3), खुद को या दूसरों को बिगाड़ने के लिए, नशा और शराब सबसे बढ़िया विकल्प है, तथाकथित लव जिहाद (लव–वार) और नार्को जिहाद (नार्को–वार) – भारत के कुछ राज्यों और कई अन्य देशों में इस्तेमाल होने वाले शब्द इसका सामाजिक प्रभाव है जो आगे चलकर शरीर और उसके अंगों की ग्रे मार्केट को बढ़ावा देता है। उड़ता पंजाब जैसी ड्रग्स पर बनी फिल्म तो बस एक ट्रेलर थी, जबकि हकीकत यह है कि नशा भी सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक–राजनीतिक फेरबदल का एक बड़ा कारण बन रहा है। यह देखा गया है कि देश के कई हिस्सों में दस साल से कम उम्र के बच्चे भी कफ सिरप, कैप्सूल, इरेज़र, बूट पॉलिश का सेवन करते पाए गए हैं।

(4), यह आश्चर्य की बात है कि दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी को नार्को सूची में शामिल नहीं किया गया है, जो वास्तव में व्यक्ति, परिवार, देश और पूरे विश्व के लिए किसी भी अन्य नार्को पदार्थ चाहे वह हैश, हेरोइन और एलएसडी हो, से भी अधिक बुरे प्रजनन पदार्थ हैं।
दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी की लत शराब की लत से भी बड़ी मूर्खता है। इसके अलावा दूध और चीनी वाली यह चाय और कॉफी स्त्री की माँ (गाय, गंगा, गौरी) यानी गाय, नदी और धरती के पूरे पर्यावरण यानी हमारे पूरे अस्तित्व को बहुत तकलीफ़ पहुँचाती है।

(5), आम तौर पर हर जीवित प्राणी (और मनुष्य भी) स्वतंत्र है (आदर्श रूप से स्वतंत्र होना चाहिए) यह तय करने के लिए कि वह क्या करेगा, क्या खाएगा, क्या पीएगा और कहाँ रहेगा,

कहाँ सोएगा, हालाँकि उसे सामाजिक मानदंडों का पालन करना होगा। हालाँकि, गुलामी और बंधन की परिस्थितियों में, गुलामों को अपने मालिकों के हुक्म का पालन करना होता है और यह मालिक ही होता है जो तय करता है कि गुलाम क्या करेगा, गुलाम क्या पहनेगा (और क्या धारण करेगा), गुलाम क्या खाएगा, क्या पीएगा और क्या धूम्रपान करेगा, गुलाम कहाँ और कब सोएगा। वैसे तो गुलामों के पास भागने या मालिक को मारने या मारे जाने या आत्महत्या करने का विकल्प हमेशा खुला रहता है, लेकिन भारत जैसे देशों में आजादी मिलने के बाद भी उन्हीं नियमों और विनियमों का पालन करना गुलाम मानसिकता को दर्शाता है, अन्यथा सरकार को इस बात से कैसे सरोकार है कि कोई क्या खाता है, पीता है और क्या धूम्रपान करता है? क्या ये व्यक्तिगत, पारिवारिक और अधिक से अधिक सामाजिक मुद्दे नहीं हैं और इन्हें उन्हीं पर छोड़ देना चाहिए?

(6) तथाकथित मादक पदार्थ – अफीम, भांग, धतूरा (सींग वाला सेब) जो अपने कच्चे रूप में भगवान शिव को अर्पित किया जाता है, न्यूरॉन्स को आराम देता है जबकि शराब – सड़े हुए फल और अनाज से बनी शराब इंद्रियों को अंधा कर देती है। यही एक कारण है कि साधु-संत भांग का सहारा लेते हैं जबकि परिवार के लोग भांग को साधुओं द्वारा दिए जाने वाले प्रसाद के रूप में लेते हैं और सामान्य परिस्थितियों में तंबाकू-बीड़ी और हुक्का के उपयोग तक ही सीमित रहते हैं।
ऐसा कहा जाता है कि शराब उन लोगों की ज़रूरत होती है जो मौत की सेवा में तैनात होते हैं, इसलिए शराब काल-भैरव (भारत के उज्जैन में मंदिर, काल-भैरव को भगवान शिव का सेनापति कहा जाता है) को अर्पित की जाती है और उनके शिष्यों और आगंतुकों को प्रसाद के रूप में भी वितरित की जाती है। यही मूल कारण है कि शराब पीने के बाद अपराध किए जा सकते हैं, लेकिन भांग या भांग के धुएं के बाद नहीं। इसी कारण से मृत्यु की सेवा में लगी सेनाओं को शराब पीने की अनुमति दी गई है, लेकिन पुलिस कर्मियों को नहीं।
They have a saying: " दारू क्रांति कराती है, गांजा शांति लाता है। दारू किसी भी शांत व्यक्ति से कोई भी अपराध करा सकती है, गांजा किसी भी अपराधी को शांति के मार्ग पर ला सकता है"।"alcohol/liquor brings revolution, cannabis brings peace. Liquor can make a peaceful person commit any crime; Ganja/cannabis can bring any criminal to the path of peace".

(7), यह एक सर्वविदित तथ्य है कि अफ़गानिस्तान और कोलंबिया जैसे देश अफीम और कोको के कारण और अपनी सीमाओं की रक्षा करने में असमर्थता के कारण बिगड़ गए।, कई लोग "सीआईए को – भांग / कोकीन आयात करने वाली एजेंसी" कहते हैं, जबकि कुछ का कहना है कि विभिन्न शहरों और बंदरगाहों पर जब्ती तस्करी की गई दवाओं का एक बहुत छोटा हिस्सा है और मूल रूप से कई देशों के रक्षा ठेकेदार नशीली दवाओं की तस्करी में लगे हुए हैं।
यदि आप भ्रष्टाचार को रोक नहीं सकते तो प्रक्रिया को ही समाप्त कर दीजिए।

अगर हम नशीली दवाओं की तस्करी और दुरुपयोग को रोक नहीं सकते, तो हमें इन दवाओं, शराब की ज़रूरत को खत्म करना होगा और भांग और भांग के राल, तंबाकू, अफीम की खेती और खपत की अनुमति देनी होगी, भले ही समाज, संतों और साधुओं की निगरानी में हो। गुजरात और बिहार जैसे भारत में आंशिक प्रतिबंध या अलग–अलग प्रतिबंध से जनता और उनके सामूहिक समूह यानी सरकार को फ़ायदा होने के बजाय ज़्यादा नुकसान होता है।

क्या संतों, साधुओं और उनकी निगरानी में आम लोगों के लिए इससे बेहतर श्रद्धांजलि हो सकती है कि उन्हें अपने केक के लिए खेती करने, केक तैयार करने, केक सजाने और उसे खाने (पीने, धूम्रपान करने) की भी स्वतंत्रता हो। ***

7. युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध

ऐसा कहा जाता है कि अच्छी अर्थव्यवस्था तब आती है जब देश के सभी व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वतंत्र होते हैं, बेहतर अर्थव्यवस्था तब आती है जब समाज मानसिक रूप से स्वतंत्र होता है, अर्थात जब समाज संप्रदायों, जातियों, पंथों और रंग से ऊपर उठकर समग्र रूप से देखता है और सबसे अच्छी अर्थव्यवस्था तब आती है जब न केवल पूरा देश शारीरिक और वित्तीय रूप से, मानसिक और भावनात्मक रूप से, धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से जिम्मेदारी से मुक्त होता है, बल्कि पूरा विश्व स्वतंत्र और एक बड़े परिवार की तरह होता है।

निम्नलिखित प्रस्तुत है: "युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध" के संबंध में प्रस्तुतीकरण पाँच भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है, (1)। मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2)। बड़ी समस्या, (3)। पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा, (4)। धार्मिक कटुता युद्ध सरदारों और युद्ध के व्यापारियों/महिलाओं का एक आसान हथियार, (5)। समाधान का प्रतिमान,

(1) **मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा: "** युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध" के संबंध में , निम्नलिखित एक व्यापक रूपरेखा हो सकती है:

(1.A.) जिन देशों ने युद्ध लड़े हैं, लेकिन हार गए हैं, उनके नेतृत्व को पराजय मिली है, जिसके कारण उनकी जनता मरने या गुलामों जैसा जीवन जीने को मजबूर हुई है, उनसे अर्थव्यवस्था के मामले में कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। ऐसे पीड़ित, अपने ज्ञात या अज्ञात गलत कामों के अभिशाप से अपने मालिकों की सेवा करने के लिए बाध्य होते हैं और भगवान से मुक्ति के लिए प्रार्थना करने लगते हैं।

(1.A.1) जिन लोगों पर युद्ध थोपा जाता है, उनके लिए युद्ध सिर्फ़ एक ज़रूरत ही नहीं बल्कि हार की किसी भी संभावना से बचने और युद्ध जीतने की हर संभावना से बचने के लिए एक आपातकालीन स्थिति बन जाती है, यहाँ तक कि योद्धाओं के जीवित रहने और विपत्तियों के मामले में अपने प्रियजनों की गुलामी करने के लिए भी। युद्ध में मजबूर या फंसने वाले लोग, परिवार, समाज और देश न केवल अपनी पूरी सेना, हथियार और शस्त्रागार को दांव पर लगाते हैं, बल्कि अपनी पूरी अर्थव्यवस्था को भी दांव पर लगा देते हैं, जिसमें चल संपत्ति भी शामिल है। हर कोई उन कहानियों से परिचित होगा कि कैसे घर की महिलाओं ने अतीत में अपने गहने दान किए थे, जब उनका देश युद्ध में मजबूर था और उनके स्पष्ट वित्तीय संकट/संकट थे।

ऐसी स्थिति में यदि हम गौर करें तो पाएंगे कि खाद्य एवं फैशन, पर्यटन एवं यात्रा, समारोह एवं पार्टियां, होटल एवं आतिथ्य क्षेत्र में व्यापारिक लेन-देन कम हो जाता है, जबकि शवगृह, अस्पताल, ज्योतिषी, हथियार एवं गोला-बारूद की खरीद, सेना को सहायता सुविधाएं एवं रसद, योद्धा, जासूसी एजेंट, सूचना, समाचार, विचार एवं विश्लेषण के लिए नियंत्रण कक्ष आदि में व्यापारिक गतिविधियां कई गुना बढ़ जाती हैं।

युद्ध या युद्ध जैसी परिस्थितियों में युद्धरत दलों के लोग और समाज भी न केवल विरोधियों और उनके समर्थकों के उत्पादों और सेवाओं, नीतियों और नेताओं, लोगों और आस्थाओं की आलोचना करने लगते हैं, बल्कि इन सब पर अवरोध भी खड़ा करने लगते हैं। इसके अलावा, जबरन युद्ध में झोंके गए व्यक्ति, परिवार, समाज और देश भी किसी भी तरह की संभावना को छोड़ना पसंद नहीं करते और सवाल यह भी उठता है कि ऐसे दल किसी भी तरह की संभावना को क्यों और कब तक छोड़ें। एक तरह से यह कहावत भी सही साबित होती है कि प्यार और युद्ध में सब कुछ जायज है।

(1.A.2) उन समाजों और देशों के लिए जो शत्रुतापूर्ण हैं और निकट भविष्य में कभी भी टकराव, लड़ाई और यहां तक कि युद्ध की उम्मीद कर सकते हैं, उन्हें भी अपनी पूरी गतिविधियों, जीवन शैली, मानसिकता और किसी भी स्थिति के लिए तैयारियों को बदलने के लिए मजबूर होना पड़ता है, जो निश्चित रूप से उन्हें अपने आर्थिक लेन-देन, व्यय पैटर्न, यानी अपनी पूरी अर्थव्यवस्था को बदलने के लिए कहता है। ऐसे देशों को सभी प्रकार के सुरक्षा बलों की एक बड़ी टुकड़ी बनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है, साथ ही आवश्यक हथियार और गोला-बारूद, उपकरण और गैजेट, सहायता प्रणाली और बैकअप भी, जबकि देश की बड़ी आबादी गरीब घोषित की जाती है और उसके पास बुनियादी सुविधाएं भी नहीं होती हैं।

(1.बी). भारत जैसे देश के लिए युद्ध और आर्थिकी के कारण होने वाले संघर्ष, लड़ाई, आतंक, दंगे, युद्ध और विश्वयुद्ध विशेष महत्व रखते हैं (कम से कम वर्तमान परिदृश्य में) क्योंकि यह बुद्ध और महावीर जैसे महान लोगों द्वारा दिया गया शांति का उपदेश था जिसने भारत को टुकड़ों में विभाजित किया, इतना कि भारत के पड़ोसी देश जो बौद्ध धर्म को अपना मुख्य राष्ट्रीय धर्म मानते थे, इससे तंग आ गए और न केवल आंतरिक शांति और सद्भाव के लिए हथियारों के इस्तेमाल की वकालत करने लगे, बल्कि उनके धार्मिक नेताओं ने नेतृत्व से उपद्रवियों से निपटने के लिए हथियारों का उपयोग करने के लिए कहा।

(क) भारत ने भी कम से कम पिछले चौबीस सौ साल पहले से (महान चाणक्य के बाद का इतिहास) बाहरी आक्रमण के साथ-साथ आंतरिक उथल-पुथल का सामना करना शुरू कर दिया

है, क्योंकि शक्ति और परोपकार के बिना शांति और सद्भाव के ये अंतर्निहित विरोधाभास इसके जन और वर्गों के मानस में जबरदस्ती डाल दिए गए हैं।

(ख) जनता में प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वयं, परिवार और समाज की रक्षा करने की अंतर्निहित शक्ति के बिना शांति की भावना को प्रतिध्वनित करने से जनता पहले तो अपनी ही पुलिस और राज्य द्वारा प्रबंधित सेना की कैदी बन गई, और फिर इन राज्यों को इतना कमजोर बना दिया कि वे निकट और दूर के अवसरवादी और सत्ता के भूखे राज्य/राज्यों और लुटेरों के गिरोहों से आक्रमण और लूट का सामना करने के लिए मजबूर हो गए, जिससे अंततः भारतीय समाज असहाय बनकर रह गया।

(ग) जनता के बीच शांति के बारे में अत्यधिक उपदेशों और बातों का क्या हुआ कि सत्ता कुछ राजघरानों, धन्नासेठों, धर्मगुरुओं और सेनापतियों के हाथों में जमा हो गई, जो (इतिहास में इसका पूरा रिकॉर्ड है) उन्हें अपनी मर्जी के अनुसार जनता के साथ खेलने की अनुमति देते हैं। इसके अलावा ये राज्य कई धोखेबाजों, जोड़-तोड़ करने वालों, ठगों के आसान शिकार बन गए, जिन्होंने अपने नागरिकों को दूर के शासकों की दया पर जीने के लिए छोड़ दिया। आज भी अधिकांश तथाकथित लोकतांत्रिक देशों में यह आसानी से देखा जा सकता है कि कैसे सत्ता कुछ ही हाथों में केंद्रित है और ये राज्य कितने भ्रष्टाचारी हैं, जो उन देशों में और भी स्पष्ट है जहाँ सैन्य तानाशाही राजनीतिक ताकतों से आगे निकल गई है।

(घ) इसके अलावा, कुछ हाथों में सत्ता के संचय के साथ (अपने सभी नागरिकों को शक्तिहीन और अपनी ही सरकार के बंदी बनाकर) जो हुआ, उसने इन हाथों को विदेशी शक्तियों की नज़र में कमज़ोर और शक्तिहीन बना दिया, जिन्होंने अब तक शेयर बाज़ार, मुद्रा विनिमय, धातु विनिमय, प्रतिबंध, देशों को केवल विशेष मुद्रा/मुद्राओं में व्यापार करने के लिए मजबूर करना, आंतरिक बाज़ारों को खोलना, देशों को यह खरीदने और उसका उपयोग करने के लिए मजबूर करना जैसे विभिन्न नामों और खेलों के माध्यम से आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से जनता को निचोड़ने और लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी, भले ही आधार बहुत कम क्यों न हो। इन सभी ने कई देशों को अविकसित, अविकसित और विकासशील बना दिया और कुछ तो कंगाल या भिखारी भी बन गए। पृथ्वी पर ऐसी कोई घटना नहीं हो सकती जो एक ही पृथ्वी पर पाँच सितारा होटल और पाँच वर्ग गज की झोपड़ियों को सही ठहरा सके, सिवाय इसके कि अंधकारमय काले युग में शैतान का शासन हो।

(ई) जैसा कि इस दस्तावेज़/पुस्तक में कई स्थानों पर लाया गया है कि कैसे एक बुनियादी और शाश्वत/निरंतर ((सनातन धर्म) धर्म धीरे-धीरे पहले आलस्य, फिर इसकी परिणामी कमजोरी, फिर उपदेशों, वार्ता और अप्राकृतिक शांति का अभ्यास और विभिन्न धर्मों के तथाकथित महान अनुयायियों द्वारा पुरुष और महिला के बीच पहली बार सीमांकन के द्वारा पराधीन हो गया है,

यहां तक कि धर्म को भी एक अलग इकाई के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है और इसका दुरुपयोग मुख्य रूप से सत्ता के भूखे अमीरों, राजघरानों और यहां तक कि धार्मिक प्रमुखों द्वारा संचालित बाजार की ताकतों द्वारा किया जा रहा है। इसने धर्म को लोगों को युद्ध के लिए उकसाने और फिर पराजित समाज और देश को ही नहीं बल्कि विजेता को भी परिणामों से डराकर और फिर उन्हें परमाणु हथियार और शस्त्रागार सहित युद्ध के नए-नए खिलौने देकर लगातार लूटने का मुख्य बहाना बना दिया।

(च) यद्यपि पिछले पच्चीस सौ वर्षों में भारत ने अपनी सीमाओं को पर्याप्त रूप से लम्बे समय तक बनाए रखने का प्रयास किया, परन्तु अर्थव्यवस्था का ऐसा व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत नहीं कर सका, जो प्राथमिक भौतिक सुरक्षा से लेकर सामाजिक सुरक्षा तक तथा अन्य देशों और महाद्वीपों से आए सम्मानित और योग्य राजनीतिक शरणार्थियों को सुरक्षित आश्रय प्रदान करने तक जीवन के सभी पहलुओं का ध्यान रख सके।

युद्ध और युद्ध की धमकी से अर्थव्यवस्थाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने लगते हैं, लेकिन इन सभी समस्याओं का समाधान जनजातियों के जीवन जीने के तरीके में निहित है, जो विरोधियों से साहसपूर्वक कहता है: आप मुझे/हमें मार सकते हैं लेकिन आप मुझे/हमें नहीं जीत सकते। जनजातियों में हर एक व्यक्ति, महिलाओं और सज्जनों, लड़कों और लड़कियों को खुद की रक्षा करने, बचाने और खिलाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है और केवल आपातकालीन और अत्यावश्यकता के मामले में व्यक्तिगत आधार पर और सामूहिक रूप से उस स्थिति में हमला करना होता है जब बुनियादी अस्तित्व संदिग्ध हो जाता है।

सभ्य दुनिया में यह सीमा निर्धारित की गई है कि हर चौथा व्यक्ति अपने सामूहिक आस्था केंद्र के माध्यम से समाज की सतर्क निगाहों के तहत सुरक्षा पहलू की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया जाता है, जहाँ हथियार और गोला-बारूद का उत्पादन और रखरखाव देश और समाज के बीच विभाजित होता है, समाज के लिए छोटे हथियार और बड़े हथियार और गोला-बारूद। यही वह तरीका है जिससे भारत खुद को बचा सकता है और दूसरों के लिए एक उदाहरण पेश कर सकता है।

(1.सी). युद्ध के आयोजकों के तरीके: जिनके लिए युद्ध किसी अन्य जुआ व्यवसाय की तरह है, जिसका उद्देश्य पैसा कमाना, अपनी दुकानों का अधिकार क्षेत्र बढ़ाना तथा अपनी पैठ और प्रभाव का क्षेत्र/भूगोल बढ़ाना है, वे बहुत ही व्यवस्थित तथा रणनीतिक तरीके से दूरगामी दृष्टि, मिशन तथा मूल्यों (चाहे वे एक साधारण व्यक्ति के लिए कितने भी तुच्छ क्यों न हों) के साथ चलते हैं, जिससे प्रबंधन क्षेत्र का कोई भी व्यक्ति युद्ध, लड़ाई, आतंक, दंगे, भय और कट्टरता

फैलाने के उनके खेल की योजना की बारीकियों की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। ऐसे व्यवसायी तथा व्यवसायी महिलाएं यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि उनके कार्यक्षेत्र में लोगों के एक बड़े वर्ग की मानसिकता लड़ाई की बनी रहे, यहां तक कि प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह खेल खेल रहा हो, या राजनीति में भाग ले रहा हो, या समाज सेवा में हो या फिर धार्मिक संस्था में, उसका व्यवहार युद्ध के मोर्चे पर तैनात सैनिकों जैसा हो, जो विरोधियों से लड़ने और जीतने की भावना से घिरा हो।

इन व्यवसायियों ने विश्व युद्ध का आयोजन उसी प्रकार (बल्कि अधिक कठोर तरीके से) किया था, जैसे फुटबॉल या ओलंपिक के किसी भी विश्व कप का आयोजन किया जाता है, जिसमें खेल के प्रत्येक पहलू जैसे खिलाड़ियों के स्थान से लेकर पुरस्कार तक, प्रायोजकों की व्यवस्था से लेकर विज्ञापनदाताओं तक की पूर्व योजना बनाई जाती है।

कोई भी यह समझ सकता है कि युद्ध या विश्व युद्ध के खेल या आयोजन के लिए, युद्ध के प्रबंधक यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि युद्धरत समाज और देश, क्षेत्र और धर्म, जाति, पंथ और रंग के लोग, हथियारों और गोला–बारूद की आपूर्ति श्रृंखला, दोनों छोर पर और साथ ही स्वतंत्र रिपोर्टिंग पक्ष पर मीडिया का प्रबंधन कैसे किया जाएगा, दोनों छोर पर फंड का प्रवाह और फिर व्यय की वसूली कैसे की जाएगी और लाभ कैसे कमाया जाएगा।

(i) कोई कुछ भी कहे, लेकिन तथ्य यही है कि ये वे लोग हैं जिन्होंने नेतृत्व किया, पहल की और विश्व के लगभग सभी क्षेत्रों तथा सामूहिक रूप से विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्था को गति दी, और इसलिए वर्तमान परिस्थितियों के लिए उनकी निंदा और आलोचना नहीं की जा सकती, समवर्ती विनाशकारी स्थिति के लिए दोष उन अन्य लोगों को भी जाता है जो स्थिति का आनंद लेते रहे या उसे झेलते रहे।

(ii) आम लोगों के लिए, क्षेत्र, धर्म और नस्ल, जाति, पंथ और लोगों का रंग, भोजन, फैशन और त्योहारों में व्यापक अंतर हो सकते हैं जिन्हें एकीकृत नहीं किया जा सकता है, लेकिन इनके लिए पृथ्वी पर सभी लोगों में अंतर्निहित एकता है जिसका समान रूप से और आसानी से उपयोग और दुरुपयोग किया जा सकता है।

(iii) ये लोग प्रकृति, शास्त्रों और लोककथाओं की सराहना करने और अपने व्यक्तिगत व्यवहार में लाने के लिए काफी समझदार कहे जा सकते हैं, जिसे विभिन्न इंटरनेट साइटों पर उपलब्ध ज्ञान के माध्यम से आसानी से सराहा जा सकता है। ये अपने ईश्वर की प्रार्थना करते हैं जिसने उन्हें अपनी नितांत गोपनीयता में इतनी संपत्ति और शक्ति दी है ताकि दूसरे लोग उन्हें देखकर उनकी नकल न करें और फिर उन्हें हरा न दें या उन पर शासन न करें।

(1.डी) प्रकृति का तरीका: चाहे कोई कितनी भी चतुराई से घृणा, आतंक, दंगों के युद्ध आधारित अर्थशास्त्र पर अपने कृत्य और कर्मों को उचित ठहराए, लेकिन तथ्य यह है कि इन युद्ध के व्यापारियों और युद्ध के व्यापारियों द्वारा किए गए सभी विनाश, अंधाधुंध खनन और पेड़ों की कटाई के कारण समाप्त हुए जंगल, इन स्थानों को वन्यजीवों के लिए रहने योग्य नहीं बना पाए, अत्यधिक प्रदूषण और अंधाधुंध मछली पकड़ने/हत्या के कारण समुद्र और अन्य जल निकाय जलीय जीवन के लिए रहने योग्य नहीं बन पाए (या बन चुके हैं), उच्च तीव्रता वाले सिग्नल और पेड़ों के आवरण में कमी के साथ-साथ उन्नत विमानन ने मक्खियों और पक्षियों के लिए जीवन को भयानक बना दिया, और अंत में प्रत्येक चीज में व्यवसायिक रुझान ने मनुष्य को एक जीवित रोबोट जैसा बना दिया। यह प्रकृति और उसके मूल और शाश्वत धर्म के खिलाफ

इसलिए यह हम सभी के लिए समझदारी होगी कि हम एक साथ बैठें, चर्चा करें और उन तरीकों और साधनों को खोजें, जिनसे सभी लोग खुशी से रह सकें, अन्यथा रास्ते व्यापारिक गतिविधियों को बलपूर्वक बंद करने की ओर ले जाएंगे, जिससे युद्ध और उसकी आपूर्ति प्रणाली को भड़काया और उकसाया जा सकेगा।
एक बार फिर यह सभी के हित में है कि युद्ध में अनावश्यक व्यापारिक गतिविधियों से दूर रहा जाए और सभ्य दुनिया द्वारा आदिवासियों के मूल से अपनाए गए सरल फार्मूले का पालन किया जाए।

(2) बड़ी समस्या: जब तथाकथित शैतान और संत एक दूसरे से दूर की सहमति पर आते हैं और एक ही गंतव्य/भविष्य की ओर इशारा करते हैं, तो स्थिति को वास्तव में ध्यान देने और ध्यान देने योग्य कहा जा सकता है।

वर्तमान उथल-पुथल पर प्रकाश डालते हुए संतजन बड़े ही मधुर स्वर में कह रहे हैं कि सत्य का युग (सतयुग) आ रहा है, जो सुखद आश्चर्य लेकर आएगा तथा सभी को स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन प्रदान करेगा। संतजन कहते हैं कि सतयुग में पृथ्वी पर कुल तैंतीस करोड़ लोग होंगे और सभी देवता तुल्य होंगे, जिनके पास प्रचुर संसाधन होंगे।

थोड़े अलग ढंग से शैतान का कहना है कि पृथ्वी पर स्थिति रहने लायक नहीं रह गई है और पृथ्वी सात सौ करोड़ से अधिक जनसंख्या का भार सहन नहीं कर सकती, इसलिए अपने समुदाय के भरण-पोषण के लिए कम से कम नब्बे प्रतिशत जनसंख्या को समाप्त कर देना चाहिए, जिससे पृथ्वी पर केवल दस प्रतिशत अर्थात् लगभग सत्तर करोड़ लोग ही बचेंगे।

अगर हम शैतान और संतों के संस्करणों की तुलना करें, तो यह जानकर आश्चर्य होगा कि संत आने वाले दिनों में घटनाओं के और भी भयावह मोड़ की ओर इशारा कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में समाज क्या कर सकता है ताकि हम सभी एक स्थायी तरीके से खुशी से रह सकें? इसका समाधान क्या है?

आत्मनिरीक्षणात्मक अंतर्दृष्टि और भावी दूरदर्शिता वाले आध्यात्मिक गुरु सुझाव देते हैं कि एक व्यापक मंथन और "धर्म और धर्म संस्थान (धर्म और धार्मिक संस्थानों) का पुनरुत्थान" संतों और शैतान (शक्ति ब्लॉक) के भ्रातृहत्या/आत्मघाती कार्यों के पूर्वानुमान के अलावा एक व्यवहार्य विकल्प होगा, जो जनता को खत्म करने के लिए हर दूसरे तरीके से कोशिश कर रहे हैं।

ऐसे गुरुओं का कहना है कि समाज में व्यापक मंथन की आवश्यकता है क्योंकि न तो पुरानी बुद्धि गूगल, यूट्यूब, विकिपीडिया आदि के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकती है और न ही ये नव-शास्त्रीय तकनीकें और गैजेट दादा-दादी और गुरुओं की कहानियों के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकते हैं। ऐसे गुरुओं का कहना है कि मंथन इसलिए आवश्यक है ताकि सिस्टम में घुले जहर को हटाया जा सके और जीवित रहने के लिए सार को संतुलित किया जा सके।

(3) **<u>प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों में आम चर्चा थी</u>** :

(3.A). जीवन में संघर्ष तो चलता ही रहता है, हमारे शरीर में भी श्वेत कण वायरस और बैक्टीरिया से युद्ध करते रहते हैं, और ऐसे में शांति तभी मिलती है जब हम टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं यानी मृत्यु पर। अंततः खेल शक्ति/ताकत से तय होता है, अगर शक्ति ***शैतान** /राक्षस/असुर/दैत्य/दानव/वायरस" के पास है तो समाज मृत, भयभीत, अराजक, दबा हुआ आदि होगा और अगर शक्ति/ताकत अच्छाई के पास है तो समाज स्वस्थ, सुखी और अच्छाई से भरपूर होगा।

(3.बी). प्रकृति में विचित्र और विरोधाभासी घटनाएं होती रहती हैं और हमारे इतिहास में इसका पर्याप्त उल्लेख है। बुद्ध, महावीर और उनके असंख्य शिष्यों द्वारा अहिंसा के अतिशयोक्ति के बाद विश्वव्यापी अवनति (अस्वस्थ, अप्राकृतिक, इसलिए अधोगामी प्रवृत्ति) दिखाई दी, अब गांधी जी और उनके अनुयायियों द्वारा अहिंसा आंदोलन के बाद सुधार शुरू हुआ कहा जा सकता है। "जिस कारण से संसार में पतन शुरू हुआ, वही इस स्वस्थ और स्वाभाविक आगामी प्रवृत्ति का कारण कहा जा सकता है। सनातन धर्म कभी किसी को दुष्टों, दुष्टों, शैतान के सामने झुकना या झुकना नहीं सिखाता, बल्कि यह कहता है कि हमें दुष्टों को क्षमा करने और दुष्टों को दण्ड देने की शक्ति होनी चाहिए।

(3.सी) सभी लोग मजे के लिए हिंसा या हत्या का विरोध करते हैं, अल्लाह/ब्रह्मा/ईश्वर हमलावर से प्रेम नहीं करते, न ही धर्मात्मा लोग युद्ध शुरू करते हैं, हालांकि जब समाज का एक बड़ा समूह या विशेष वर्ग अधार्मिक-अप्राकृतिक प्रथाओं का पालन या समर्थन करना शुरू कर देता है, तो धार्मिक युद्ध एक आवश्यकता बन जाता है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि ऐसे युद्ध में भी शीर्ष नेता (राज्याध्यक्ष/ऋषि-मुनि) आमतौर पर अहिंसक रहते हैं और सभी उनसे जनता के प्रति ऐसा ही होने की अपेक्षा करते हैं; जबकि आम तौर पर लोग आम लोगों की अहिंसा और विशेष रूप से पुलिस और सेना की हिंसा का समर्थन करते हैं। जो आम तौर पर हासिल होता है वह लय है और हमें उसी को लक्ष्य बनाने की जरूरत है। व्यक्ति, उनके परिवार, समाज और सरकार को आंतरिक और बाहरी रूप से लय के लिए अपने प्रयासों पर एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।

(3.डी). समाज की सुरक्षा और संरक्षा: किसी भी जीवित व्यक्ति के जीवित रहने के लिए सुरक्षा बहुत जरूरी है; बच्चा मां के गर्भ में सुरक्षित रहता है, फिर माता-पिता के संरक्षण में और फिर समाज और उसकी व्यवस्था में सुरक्षा पाता है। जो हमें सुरक्षा का भरोसा देते हैं, हम उनका सम्मान करते हैं, जब हम सुरक्षित महसूस करते हैं, तो हम इसे प्यार से व्यक्त करते हैं और जब हम साहसिक कार्य में हिस्सा लेते हैं, तो हम दिखाते हैं कि सुरक्षा पक्की है। ज्यादा से ज्यादा कोई भी अपनी सुरक्षा को दांव पर लगाकर उसे खतरे में डाल सकता है।

हम अपनी ज्ञात सुरक्षा को अधिक से अधिक प्राप्त करके बढ़ाते हैं और हम अपनी अज्ञात सुरक्षा को बड़े से बड़े और अधिकतर सबसे बड़े सर्वशक्तिमान की प्रार्थना करके बढ़ाते हैं। चोर रात में सुरक्षा पाता है और अन्य लोग दिन में सुरक्षा पाते हैं और रात में उसके घर/घर में शरण लेते हैं। साधु हर जगह सुरक्षा पाते हैं और अधिकतर एकांत, शांति और एकांत में और प्राकृतिक परिवेश के सुख में रहते हैं।

किसी देश में, आम तौर पर हम सभी सुरक्षित महसूस करते हैं जब हम शारीरिक रूप से सुरक्षित, भावनात्मक और आर्थिक रूप से मजबूत और आध्यात्मिक रूप से जागृत होते हैं, और तब देश को सुरक्षित कहा जा सकता है। सुरक्षा काम करने का एक दृष्टिकोण है। लोग तब सुरक्षित महसूस करते हैं जब उनका घर और देश शारीरिक रूप से स्वतंत्र होता है, और इसकी सीमाएँ सुरक्षित होती हैं, और परिवार, समाज और देशों का अपने पड़ोसियों के साथ दोस्ताना या भाईचारे वाला रिश्ता होता है। एक समाज और देश के रूप में हमारी प्राथमिक जिम्मेदारी हमारी सामूहिक सुरक्षा और सुरक्षा को बनाए रखना और बढ़ाना है।

i) दूसरे देशों द्वारा डिजाइन और विकसित हथियारों और गोला–बारूद से सीमा की सुरक्षा करना भविष्य के लिए सुरक्षा की गहरी भावना प्रदान नहीं करता है। यह कहा जा सकता है कि शीर्ष श्रेणी के सुरक्षा बलों के लिए, हथियारों और गोला–बारूद का उत्पादन घरेलू उत्पादन से ही होना चाहिए। किसी बाहरी देश पर निर्भरता दूसरी श्रेणी की सुरक्षा प्रदान कर सकती है और यदि निर्भरता बहुपक्षीय है तो सुरक्षा को तीसरे दर्जे की सुरक्षा कहा जा सकता है, और ऐसे में एक के बाद एक देश अपने हथियारों और गोला–बारूद को डिजाइन करने और विकसित करने में अधिक प्रयास, अधिक पैसा लगाते हैं, कभी–कभी जीवन के अन्य पहलुओं को भी खतरे में डाल देते हैं।

(3.E) संत–शैतान तथा हिंसा–अहिंसा पर:

(अ). * [शैतान/राक्षस/असुर/दैत्य/दानव/वायरस को तोड़ने वाला कहा जा सकता है, जो आपके और आपके स्वभाव के बीच में अवरोध पैदा करता है, जो बुनियादी बातों से ज़्यादा हवा–हवाई बातें, दिखावटी बातें करता है? जो आपको पसंद करता है या जो आपको शांत अवस्था में रखता है (चाहे शराब, धन या हथियार की) उसे शैतान कहा जा सकता है। अगर लोगों का एक बड़ा हिस्सा ऐसे नियमों और विनियमों का पालन करता है (जैसा कि शैतान को पसंद है) और दो से तीन पीढ़ियों तक उसका पालन करता रहता है तो उनकी सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहा जा सकता है।

वे कहते हैं कि शैतान का असली चेहरा कोई नहीं देख सकता। आप जिसे शैतान या शैतानी के रूप में देखते हैं और उसका वर्णन करते हैं, वह मूल रूप से वह है जिसे शैतान ने खत्म करने के लिए त्याग दिया है। कई लोग कहते हैं कि शैतान संत के बिलकुल विपरीत है, शैतान प्रकृति से हवा, पानी, सूरज, प्रकाश और अंधकार, स्थान प्राप्त करता है। यह आश्चर्यजनक है कि शैतान मदद तो करता है, लेकिन केवल उन्हीं लोगों की जो दृढ़ इच्छाशक्ति वाले होते हैं और ईश्वर में आस्था रखते हैं, लेकिन यह ऐसे लोगों को अलग–थलग करने और सीमित करने के लिए है, ताकि उनका (शैतान) शासन दूसरे क्षेत्र में जारी रहे।] *

(ख) ** [**अहिंसा को** एक ऐसे कार्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो हिंसक नहीं है, जबकि **हिंसा इंद्रियों या मानदंडों का उल्लंघन है** या शारीरिक कृत्य या मौखिक दुर्व्यवहार या दिमाग के खेल द्वारा समझदार मानदंडों का उल्लंघन है। ग्रे कॉलर वाले लोग (पुरुष और महिला) आम तौर पर शारीरिक हिंसा का सहारा लेते हैं जबकि सफेद कॉलर वाले मानसिक हिंसा का सहारा लेते हैं। कई बार, यह मानसिक हिंसा होती है जो शारीरिक कार्रवाई को भड़काती है लेकिन क्योंकि शारीरिक हिंसा दिखाई देती है इसलिए इसके कर्ता–धर्ता हिंसक माने जाते हैं और अन्य उल्लंघनकर्ता (मानसिक) या तो निर्दोष या दयनीय माने जाते हैं।

हिंसा को एक ऐसी स्थिति के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है जब आपकी गतिविधि, विचार प्रक्रिया, आपका दृष्टिकोण, आपकी कार्रवाई उन सभी (व्यक्ति, पक्षी और पशु, वनस्पति और जीव, यहाँ तक कि पूरी प्रकृति) के खिलाफ निर्देशित और मोड़ दी जाती है जो आपकी वासना और लालच को पूरा करने में बाधा बनते हैं। और ऐसे लोगों को हिंसक कहा जा सकता है जैसे एक शेर को हिंसक तब कहा जाता है जब वह भोजन की आवश्यकता पूरी होने के बाद भी हत्या करना शुरू कर देता है। एक सेना को हिंसक तब कहा जाता है जब वह युद्ध जीतने के बाद हत्या करती है, या जब हमारे घर में महिलाएँ/पुरुष अपनी ज़रूरत पूरी होने के बाद भी बर्तन, फर्नीचर आदि तोड़ते हैं, तो उन्हें हिंसक कहा जा सकता है।

जो लोग शारीरिक रूप से अधिक शक्तिशाली हैं, वे अपनी हिंसा का प्रदर्शन बाहुबल से करते हैं, जैसे शेर, जंगली जानवर, सेना आदि। जो लोग मानसिक रूप से अधिक शक्तिशाली हैं, वे अपनी हिंसा का प्रदर्शन मानसिक खेलों से करते हैं, जैसे मौखिक गाली–गलौज, कूटनीति, दूसरों को नुकसान पहुंचाना (अनावश्यक उपवास के द्वारा) ताकि दूसरे लोग उनकी आलोचना और दबाव के लिए उनका पक्ष लें, भूख हड़ताल पर बैठना आदि।] **

(3.एफ). आतंकवाद और आतंकवादी: आतंकवाद किसी भी अन्य 'वाद' (जैसे साम्यवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और यहां तक कि धर्मवाद) की तरह है, लेकिन आतंकवादी एक अलग किस्म के होते हैं, वे आतंकवाद से प्रेरित हो सकते हैं या अकेले या अलग–थलग समूह में हो सकते हैं या एक छोटे समूह में हो सकते हैं, जो नरसंहार के स्तर तक पहुंच सकते हैं।

(i) 9/11 (वर्ष 2001 में) अमेरिका में हुआ और कई लोकतांत्रिक लोगों ने पूरे मुस्लिम भाइयों को आतंकवादी करार दिया, और अफगानिस्तान पर हमले किए, (तालिबान को मुख्य अपराधी बताते हुए), और बड़ी मुस्लिम आबादी वाले सभी देशों पर लगातार निगरानी रखनी शुरू कर दी। गांधी जी की हत्या (वर्ष 1948 में) की गई और उनकी शहादत के लिए पूरे आरएसएस को जिम्मेदार ठहराया गया, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या (वर्ष 1984 में) की गई और पूरे सिख समुदाय को हत्यारा करार दिया गया। क्या ऐसे विचारों को रखना सराहनीय हो सकता है?

• [*15 अगस्त 2021 से, कोई भी 9/11 और तालिबान के बारे में बात नहीं करता दिखाई दिया, आरएसएस भारतीय शासन का मुख्य वैचारिक मोर्चा बन गया (कम से कम 1977 से) जो हर दूसरे अवसर पर गांधी जी को माला पहनाता है और सिख समुदाय का सदस्य भारत का प्रधान मंत्री बन गया (2004 में)*]। *

(ii) मुंबई और भारत की संसद पर आतंकवादी हमले हजारों करोड़ के हथियारों की खरीद से सफल हुए हैं। सवाल उठता है कि क्या दो–तीन प्रतिशत धन खर्च करके और ऐसे फील्ड ट्रायल से हथियारों को वैध करके आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता।

(iii) ईंधन तेल भंडार, खनिज भंडार, हथियारों और गोला–बारूद की बिक्री से जुड़ी कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चाहती हैं कि आतंकवाद और आतंकवादी जारी रहें और उनके हितों की पूर्ति हो। यह एक खुला रहस्य है कि ऐसी कंपनियाँ न केवल हर संभव बहाने से लोगों के बीच नफरत और दुश्मनी को बढ़ावा देती हैं, बल्कि झड़पों, लड़ाई और यहाँ तक कि युद्ध को आयोजित करने के लिए धन भी जुटाती हैं।

(iv). लेकिन, जो भी हो, किसी के जीवन में सिर्फ़ दो ही महत्वपूर्ण लोग होते हैं, एक जो उसे दृश्यमान दुनिया में लाता है और दूसरा जो उसे दृश्यमान दुनिया से दूर ले जाता है (जो किसी के जीवन को समाप्त कर देता है)। आतंकवादी हत्या करते हुए, एक तरह से सर्वशक्तिमान–महा हत्यारे के काम में मदद कर रहे होते हैं। क्या ऐसे में आतंकवादी और प्रति–आतंकवादी हमारी घृणा के पात्र हो सकते हैं?

अक्सर ऐसा होता है कि ये आतंकवादी गतिविधियाँ और युद्ध सही सोच वाले और दयालु लोगों को एक साथ लाते हैं ताकि वे सद्भाव के लिए कड़ी मेहनत कर सकें। आइए प्रार्थना करें कि ये आतंकवादी और तथाकथित आतंकवाद विरोधी लोग साहस, स्वतंत्रता और प्रेम का पाठ समझें और जीवन का पूरा आनंद लें।

(3.जी) राजनीति का अपराधीकरण: "एक शक्तिशाली बुद्धिमान से बेहतर है", "एक शक्तिशाली से सैकड़ों बुद्धिमान डरते हैं, केवल शक्तिशाली ही अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है, अपने पैरों पर खड़े होकर, वह गुरु की सेवा करने में सक्षम हो जाता है, गुरु की सेवा करके वह गुरु के साथ बैठने में सक्षम हो जाता है, गुरु के साथ बैठकर वह श्रोता, विचारक, कर्ता बन जाता है और अंततः वह सचेत वैज्ञानिक (विज्ञानिक) बन जाता है"।

अगर कोई अपराधी है तो वह खुलेआम क्या कर रहा है? क्या यह न्याय व्यवस्था की अक्षमता को नहीं दर्शाता? क्या हम उसे खुलेआम रहने देकर खुद अपराधी नहीं हैं? क्या वह व्यक्ति अपराधी मानसिकता वाला है या असली अपराधी का विरोध करने पर उस पर अपराध का आरोप लगाया गया है? क्या यह बेहतर नहीं है कि तथाकथित अच्छे दिल वाले अपराधी आगे की सीट पर बैठें, बजाय पीछे से काम करने और वकीलों को सफेदपोशों के अपराध को सही ठहराने का मौका देने के? क्या हमें यह नहीं देखना चाहिए कि कोई अपराधी मानसिकता वाला है या साहसी, और ऐसे

अच्छे लोगों से सहयोग लेने के लिए आगे आना चाहिए, बजाय इसके कि राजनीतिक दल बुद्धिमान और सज्जन लोगों को टिकट बांटने दें, न कि बुद्धिमान और दयालु लोगों को।

(3.एच) जब हमारा शरीर कमजोर हो जाता है तो अनेक रोग हमें घेर लेते हैं। ऐसे अनेक दोष तब प्रकट होते हैं जब हम गुलाम बन जाते हैं, उदाहरण के लिए: जब हम व्यक्ति, परिवार या समाज के रूप में कमजोर होते हैं तो बेटियों और प्यारी बहनों की पवित्रता की रक्षा के लिए आप उनकी कम उम्र में शादी कर देते हैं, उन्हें घूंघट करने की अनुमति देते हैं या मजबूर करते हैं और धार्मिक स्थलों पर भी लड़कियों और महिलाओं के आने-जाने और काम करने पर प्रतिबंध लगाते हैं।

भारत और राष्ट्रमंडल के कई अन्य देश, लैटिन और मूल अमेरिका, अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया गुलाम बन गए और मानसिक रूप से गुलाम दिखाई देने लगे, क्योंकि उन्होंने यह स्वीकार कर लिया था कि अंग्रेजी श्रेष्ठ है और इसलिए प्रशासन, न्यायपालिका, मीडिया, चिकित्सा, आर्थिक और मशीनीकरण की अंग्रेजी प्रणाली को अपना लिया। भारत और कई राष्ट्रमंडल देशों की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था स्वतंत्रता-पूर्व युग की प्रणाली की निरंतरता है, जिसमें वही या समान राजनीतिक दल हैं, जिनकी कार्यप्रणाली कमोबेश अंग्रेजों जैसी ही है (जैसे काले अंग्रेज-काले अंग्रेज) और कमोबेश शासक और शासित के रूप में काम करने वाले समान निरंकुश नियम और विनियमन हैं। इन दलों के नेता अभी भी हीन भावना से ग्रस्त हैं और अंग्रेजी को श्रेष्ठ मानते हैं।

लेकिन, जब आपमें शक्ति आ जाती है और जब हम अपने कर्मों को ईश्वर को समर्पित कर देते हैं तो ये दोष और रोग स्वतः ही गायब होने लगते हैं, तथा सभी प्रकार की मुक्ति शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है।

(4) धार्मिक कटुता, युद्ध-प्रभुओं और व्यापारियों/युद्ध-महिलाओं का एक आसान हथियार:

धर्म (मूल धर्म) संपूर्ण है और जीवन में होने वाले सभी लेन-देन के प्रति समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, धर्म आधार है इसलिए धर्म संस्थानों (धार्मिक संस्थाओं) से समाज की सभी बुनियादी आवश्यकताओं की देखभाल करने के लिए कहें, लेकिन यह न तो खुद को व्यापार में शामिल करता है और न ही व्यापारिक संस्थाओं का समर्थन/पक्षपाती करता है और न ही यह राजनीतिक या शासक या विस्तारवादियों का गुर्गा, प्रचारक या मुखौटा संगठन बनता है। धर्म कभी किसी को यह वर्दी पहनने या उस तरह के बाल कटवाने, यह पढ़ने और वह देखने, इन उपदेशों को सुनने और उस प्रार्थना को दोहराने, इस तरह झुकने और उस तरह झुकने के लिए नहीं कहता है, धर्म मूल रूप से जीवन को स्वस्थ और पवित्र बनाने में लगा हुआ है।

तथ्य यह है कि ये सभी धर्म – हिंदू, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई – चाहे कितने भी समग्र होने का दावा करते हों, लेकिन तथ्य यह है कि इनमें से कोई भी धर्म अपने अनुयायियों को भी समान स्तर पर, स्थायी रूप से स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करने में सक्षम नहीं रहा है।

हैरानी की बात यह है कि प्रत्येक धर्म के प्रत्येक उपदेशक और पुजारी कहते हैं कि उनका ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली है और सर्वोच्च और अभिन्न है, फिर भी ऐसे मौलवी/पुजारी यह मान लेते हैं कि उनका तथाकथित ईश्वर उनके पड़ोसियों को आशीर्वाद नहीं देगा जो इस ईश्वर को दूसरे नाम से पुकारते हैं और अलग शैली और स्वरूप में प्रार्थना करते हैं। इसके अलावा हर धर्म के ऐसे मौलवी/पुजारी बेबुनियाद विश्वास के साथ कहते हैं कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर निश्चित रूप से उनके पड़ोसियों तक नहीं पहुंचेगा जो उनके ईश्वर के संस्करण का सम्मान नहीं करते, उन्हें नहीं समझते और उनका पालन नहीं करते और निश्चित रूप से उस व्यक्ति तक नहीं पहुंचेंगे और उसे आशीर्वाद नहीं देंगे जो उनके ईश्वर के संस्करण से अनभिज्ञ है। क्या इसका कोई मतलब है?

क्या कोई पुजारी/पादरी इस बात पर विचार कर सकता है कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर इतना छोटा कैसे है कि वह अपने पड़ोसी तक नहीं पहुंच पाता, जो उनके विचारों से सहमत नहीं है और ऐसे पड़ोसी को नास्तिक या गैर-धार्मिक या यहां तक कि शैतान घोषित किया जा सकता है और वह भयंकर सजा का हकदार है?

(4.A). प्राचीन काल से ही यह एक पवित्र कहावत और व्यापक समझ रही है कि स्वस्थ और खुशहाल तरीके से जीने के लिए, "ईश्वर के प्रति समर्पण करो और जिस तरह से तुम चाहो, उसी तरह प्रार्थना करो, और अपने पड़ोसी से उस तरह से प्रेम करो जिस तरह से वे हकदार हैं और तुम उन्हें उपकृत कर सकते हो"। यह समझ इतनी स्वाभाविक और आम हो गई कि इसने शाश्वतता (संस्कृत में सनातन) प्राप्त कर ली और इस प्रकार आज भी कम से कम संतों, साधुओं और ऐसे लोगों के बीच धर्म के मूल सिद्धांतों के रूप में जारी है।

(4.A.1) समस्या तब शुरू हुई जब बुनियादी सिद्धांतों में बदलाव होने लगे जैसे; "ईश्वर के सामने समर्पण करो, लेकिन नाम का उच्चारण वैसे ही करो जैसा बताया गया है और प्रार्थना उसी तरह करो जैसा पुजारी द्वारा दिखाया जा रहा है और " अपने पड़ोसियों से प्रेम करो", अगर पड़ोसी आपके ही धर्म का है"। अगर आपका पड़ोसी आपके प्रकार का नहीं है, तो अपने पड़ोसी को अपने प्रकार का बनाओ, किसी भी तरह से या सभी तरीकों से, क्योंकि अपने पड़ोसी से प्रेम करना एक धार्मिक आज्ञा है। यह प्रथा कम से कम बौद्ध धर्म के बाद से चली आ रही है, अगर पहले नहीं।

इसके अलावा, साथी शिष्यों को पहचानने के लिए विशेष वस्त्र पहनना या पूरी तरह से वस्त्र उतार देना, मुंह को ढकने के लिए मास्क पहनना या पूरा चेहरा ढककर सार्वजनिक स्थानों पर जाना, शरीर पर निशान या निशान न लगाना, सिर मुंडा लेना या बाल बिल्कुल न कटाना, विशेष टोपी, पगड़ी इन सभी धर्मों में आम बात हो गई।

(4.A.2) इसके अतिरिक्त, चूंकि प्रत्येक व्यक्ति एक उद्देश्य लेकर पैदा होता है, ईश्वर से प्रार्थना करने और अपने पड़ोसियों से प्रेम करने का उद्देश्य, इसलिए अनुयायियों का यह कर्तव्य और दायित्व दोनों है कि वे अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम फैलाएं।

चूंकि इस छोटी सी दुनिया में हर कोई पड़ोसी कहा जा सकता है, इसलिए धर्म के अनुयायियों को धर्म को पूरी दुनिया में फैलाना चाहिए। चूंकि प्रेम और युद्ध में सब कुछ जायज है, इसलिए ऐसे ईश्वर के आदेश का पालन करने के लिए, अपने पड़ोसी से प्रेम करने के लिए किसी को इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि वह अपने पड़ोसी को प्रेम के योग्य बनाने के लिए किस तरह के लहजे और रीति–रिवाजों और तरीकों का इस्तेमाल करता है, भले ही इसके लिए एक तरफ गाली–गलौज, टकराव, लड़ाई या युद्ध की जरूरत हो और दूसरी तरफ गुलामी या जबरन भीख मांगने और वेश्यावृत्ति की जरूरत हो।

(4.A.3) . वैसे तो ये सभी धर्म स्वतंत्रता की बात करते हैं, ताकि वे धर्म परिवर्तन कर सकें और अपने पड़ोसियों से प्रेम कर सकें, लेकिन अपने ही कुल के सदस्यों से यही स्वतंत्रता छीन लेते हैं, शायद इसलिए कि उनके सदस्य धर्म परिवर्तन न कर लें। ये धर्म न केवल अपने कुल के सदस्यों को ज्ञात या सर्वव्यापी, अज्ञेय और अदृश्य ईश्वर के नाम पर कठपुतली या मोहरा मानते हैं, बल्कि पर्याप्त आचार संहिता (जैसे कि धर्म के सदस्य किसी सेना का हिस्सा हों और किसी गुप्त मिशन पर हों) और आंखों पर पट्टी बांध देते हैं ताकि कम से कम धर्म का वर्तमान सदस्य विचलित न हो।

ये सभी धर्म जाने–अनजाने में अपने ही समुदाय में पुरुष और महिला के बीच पर्याप्त विभाजन पैदा करते हैं और न केवल महिलाओं को कमतर आंकते हैं बल्कि यह भी मानते हैं कि महिलाएं स्वतंत्रता बर्दाश्त नहीं कर सकतीं इसलिए उन पर निगरानी रखी जानी चाहिए और उनके साथ ऐसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। यह हर धर्म की एक पुरानी और साहसिक लेकिन व्याख्या की गई घोषणा है।

इस परिदृश्य में समस्या तब उत्पन्न होती है जब अपने पड़ोसियों से प्रेम करने के लिए प्रसिद्ध धर्म (बेशक उन्हें अपने धर्म में परिवर्तित करने के बाद) एक दूसरे से भिड़ जाते हैं, जिसका

स्वाभाविक परिणाम मौखिक झड़प, युद्ध और विश्व युद्ध हो सकता है , जिसे दुनिया ने भी देखा है।

(4.अ.4) इसके अतिरिक्त, कम से कम बौद्ध धर्म से लेकर आगे तक सभी धर्म अपने पड़ोसी से प्रेम करने तथा इस प्रकार के प्रेम से संबंधित अन्य गतिविधियों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे जीवन में आने वाले बुनियादी मुद्दों पर ध्यान देना भूल गए हैं या उनकी ओर ध्यान देने की जहमत नहीं उठाई है, जैसे अर्थव्यवस्था, रोजगार, मनोरंजन, ऊर्जा, पर्यावरण, नैतिकता, शिष्टाचार, प्रदूषण, जनसंख्या, गरीबी, वेश्यावृत्ति, सफाई, स्वास्थ्य और स्वास्थ्य, जबरन भीख मांगना तथा गुलामी।

(क) बल्कि इनमें से ज़्यादातर धर्म पेड़ों की वृद्धि को कम करने के अप्राकृतिक कृत्य में लग गए, जैसे बोनसाई बनाना, बैल को बधिया करके बैल बनाना, या नर और मादा को (शारीरिक या मानसिक रूप से) बधिया करके उन्हें बौना, ट्रांसजेंडर या ब्रह्मचारी बनाना। इसके अलावा ये धर्म बकरे, भैंस, बछिया, गाय, ऊँट और मानव शिशु की बलि देने लगे, इस बुनियादी बात को भूल गए कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ईश्वर इरादे को जानता है और इस तरह की बलि से मूर्ख नहीं बनाया जा सकता।

(ख) जब कुछ क्षेत्रों में छोटे बच्चों की बलि देने की प्रथा प्रचलित थी, तब यह प्रश्न उठता था कि इस प्रकार की बलि से स्वयं को तथा छोटे बच्चों को कैसे बचाया जाए। इस समस्या का समाधान इस प्रकार की बलि की मुख्य शर्त से था कि "बलि की वस्तु में कोई शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए अन्यथा अपेक्षित सुख के स्थान पर देवता का श्राप मिलेगा" पुरुष खतना तथा एफजीएम– महिला जननांग विकृति के रूप में [वर्तमान में (वर्ष 2022 में) विश्व में एफजीएम के कम से कम बीस करोड़ महिला मामले हैं]? परिणामों की सत्यता का अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि कई पुजारियों ने ऐसे पुरुष और महिलाओं की ओर से प्रार्थना करने से इनकार कर दिया।

(ग) यह आश्चर्य की बात हो सकती है, लेकिन तथ्य यह है कि हिंदुओं से लेकर यहूदियों तक, बौद्धों से लेकर जैनों तक, ईसाइयों से लेकर मुसलमानों तक, सिखों से लेकर बहाई तक किसी भी धर्म ने समुदाय में सामान्य क्षेत्र की सफाई के तरीके और सफाई के प्रावधान के बारे में बात नहीं की है? किसी भी धर्म ने यह नहीं समझा है कि, "सामान्य क्षेत्र की सफाई कौन करेगा, वह ऐसा क्यों करेगा, इसके साधन क्या होंगे? इसके साथ क्या पारिश्रमिक और सम्मान जुड़ा होगा? यदि शारीरिक सफाई उचित नहीं है, जो कि दिखाई देती है और कुछ हद तक करना आसान है,

तो मन और हृदय की माध्यमिक सफाई और तृतीयक सफाई के बारे में क्या कहा जा सकता है? ऐसे धर्मों पर बने राष्ट्र संघर्ष और अंतर्कलह में रहने के लिए बाध्य हैं।

इन सभी धर्मों में इस तरह की कमी के कारण, जो हुआ वह यह कि इसके सदस्य बाजार के राक्षसों और चालाक कला के उस्तादों के आसान शिकार बन गए। इन सभी धर्मों की इस बुनियादी कमी के कारण, इसके सदस्य बाजार की ताकतों, पाखंडियों (अंदर से डरपोक लेकिन साहसी होने का दिखावा करने वाले) और स्पष्टता की कमी के लिए आसानी से इस्तेमाल किए जाने वाले या हेरफेर किए जाने वाले पाए गए। हालाँकि इन सभी धर्मों ने शांति का दावा किया है, लेकिन अंततः मानवता को प्रकृति की क्षमता से अधिक टुकड़ों में काटने के अपराध में भागीदार बन गए हैं।

(4.बी) लगभग सभी धर्म आधुनिक दिनों की बीमारियों के हमले के आगे झुक गए हैं और हाल के लॉकडाउन के हमले को बर्दाश्त नहीं कर सके, और अपने विश्वासियों/अनुयायियों को कठिन परिस्थितियों के दौरान अपने तरीके खोजने के लिए मझधार में छोड़ कर निराश कर दिया और उन्हें एक अद्वितीय संकट के दौरान मौत के नृत्य का सामना करने के लिए अकेला छोड़ दिया ।

स्थिति तब और भी चिंताजनक हो जाती है जब लोगों को लगता है कि प्रार्थना के कई महत्वपूर्ण स्थलों पर भी ताला लगाया जा सकता है और वे भी आपातकालीन स्थिति में सांत्वना नहीं दे सकते। जब वेटिकन, मक्का-मदीना, यरुशलम जैसे आस्था-पूजा के लगभग सभी केन्द्रों पर ताले लगे हैं तो आम लोगों की आस्था कैसे बची रहेगी?

ये वही धर्म हैं जो अपने अनुयायियों से न केवल अपनी आय में हिस्सा देने को कहते हैं, बल्कि विशेष पोशाक/वर्दी/पोशाक पहनने, अद्वितीय और आसानी से पहचाने जाने योग्य/पहचानने योग्य चेहरे और बाल रखने (जैसे कि आस्तिक/अनुयायी किसी बटालियन या व्यापारिक संगठन या बच्चों के स्कूल का हिस्सा हों) बल्कि जिस धर्म से वे जुड़े हैं, उससे जुड़े नाम, स्थान और गौरव को बचाने के लिए अपनी जान देने को भी कहते हैं।

ऐसी स्थिति में, जहां हर धर्म अपने वर्तमान स्वरूप में हाल की परिस्थितियों से निपटने में अक्षम साबित हुआ है, अब किसी का भी अपने आप को उसका ठेकेदार बताकर यह कहना कि उसका धर्म सर्वश्रेष्ठ है, बेकार और मूर्खतापूर्ण है कि वह उसके नाम पर अपनी जान जोखिम में डाले या दूसरों की जान ले।

इस घटना के बाद लोगों, खासकर युवाओं की आस्था दूसरे धर्मों के प्रति नहीं बल्कि अपने धर्म के प्रति बुरी तरह से डगमगा गई है। इस समय लोगों को सामूहिक प्रार्थना के बजाय अकेले में या परिवार के सदस्यों के साथ या समूह के साथ ऑनलाइन प्रार्थना करना सीखना पड़ा।

(4.बी.1) ये सभी धार्मिक केंद्र/संस्थाएं/स्थान किसी भी बाजार में दुकानों की तरह ही व्यवहार करते थे। हालांकि ये तथाकथित धार्मिक स्थल फिर से खुल गए और अपनी सामान्य धार्मिक गतिविधियां शुरू कर दीं, लेकिन लोगों के मन में इन केंद्रों की उपयोगिता/प्रभावशीलता, विश्वसनीयता और समग्र भविष्य के बारे में एक स्थायी छाप छोड़ी और साथ ही इन केंद्रों द्वारा व्यक्त की जाने वाली आस्था के बारे में भी।

ये सभी मंदिर–मस्जिद, मठ और चर्च बंद हो गए हैं और ताले में बंद कर दिए गए हैं, जिससे यह संदेश गया है कि इन पूजा केंद्रों और इनके प्रचारकों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, ये अप्रासंगिक हो गए हैं और इन केंद्रों की पवित्रता और निरंतरता पर ही नहीं बल्कि इन केंद्रों के जारी रहने और इनमें होने वाले सांसारिक अनुष्ठानों पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। इस परिदृश्य के बाद कई युवा खुद को यह कहते हुए पाते हैं कि ऐसी अधार्मिक संस्थाओं और उनके संचालकों को कबाड़खाने में जाने दो, जिन्होंने ज़रूरतमंदों की मदद नहीं की।

ऐसी स्थिति में क्या यह हम सभी के लिए विवेकपूर्ण नहीं होगा कि हम इस मुद्दे पर खुले दिमाग और बड़े दिल से विचार करें और निर्णय लें कि क्या ऐसे केंद्रों को छोड़ दिया जाना चाहिए या स्थायी रूप से बंद कर दिया जाना चाहिए या सम्मानपूर्वक नष्ट कर दिया जाना चाहिए या उन्हें इतिहास और पर्यटन के लिए संग्रहालयों सहित अन्य उद्देश्यों के लिए छोड़ दिया जाना चाहिए।

(4.सी) ये सभी धर्म अपनी आंतरिक शक्ति से कम बल्कि दूसरों के डर और अपने ही लोगों के बीच किसी या सभी तुच्छ मुद्दों पर भावनाओं को भड़काने और उकसावे के विभिन्न कृत्यों पर अधिक जीवित पाए गए। एकांत, एकांत में रहने के इन अंतर्निहित नुकसानों के कारण, ये सभी धर्म और इसलिए इसके पुजारी चालाक कला और काले विज्ञान के स्वामी के लिए आसान शिकार हैं।

(4.डी) सामान्यतः यह देखा गया है कि प्रत्येक धर्म का पुजारी स्वयं को आतंकवादियों, चोरों, लुटेरों, धोखेबाजों, लुटेरों तथा तथाकथित शैतानी ताकतों के वर्ग और उनकी गतिविधियों से अलग कर लेता है, लेकिन समाज में भय फैलाने तथा घृणा और शत्रुता पैदा करने का अधार्मिक कार्य करता रहता है।

जब हम लगभग सभी धार्मिक दक्षिणपंथियों द्वारा सभी प्रकार के भेदभाव और विचलन का उपदेश देखते हैं, तो यह एक बड़ी चिंता का विषय बन जाता है, खासकर तब जब दुनिया बहुत तेजी से घटनाओं को देख रही है। कुछ साल पहले पूरी दुनिया में किसी ने भी अपने सबसे अजीब सपने में भी लॉकडाउन और उसके बाद के चरणों के बारे में नहीं सोचा था, इसलिए अगर हममें से कुछ लोगों को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुए नरसंहार की पुनरावृत्ति का अजीब एहसास

हो रहा है और यह कि इसे प्रारंभिक क्षेत्रीय, धार्मिक और क्षेत्रीय दंगों के माध्यम से फिर से सक्रिय किया जा सकता है, तो यह नरसंहार के पूर्ण घातक संस्करण, इकोसाइड (पर्यावरण हत्या), एथनोसाइड (जातीय हत्या– विशिष्ट कीटनाशक, कीटनाशक और शाकनाशी के साथ) या यहां तक कि यूएफओ, क्षुद्रग्रहों और एलियंस के हमलों की अफवाहों के माध्यम से पर्याप्त आतंक पैदा करना तय है। इस भयावह स्थिति में क्या यह हमारे लिए विवेकपूर्ण नहीं होगा कि हम आगे आएं और भय, घृणा और शत्रुता पैदा करने वाले इन बुरे धार्मिक प्रचारकों पर भरोसा करने के बजाय पुनरुत्थान के लिए अपना पूरा प्रयास करें। ऐसा कहा जाता है कि युद्ध के खेल को नियंत्रित करने वाले लोग अपना मुख्यालय एक ही स्थान पर बनाए रखते हुए अपना परिचालन आधार बदलते रहते हैं।

(4.ई). धार्मिक विवादों की गंभीरता को न केवल द्वितीय विश्व युद्ध में धार्मिक नरसंहार द्वारा विश्व स्तर पर देखा जा सकता है, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी स्थिति की गंभीरता को धार्मिक घृणा की कई घटनाओं और उसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर हत्याओं द्वारा दर्शाया जा सकता है, यहाँ तक कि भारतीय उपमहाद्वीप में भी। भारत का अलग होना, थाईलैंड, श्रीलंका, म्यांमार, पाकिस्तान और बांग्लादेश में संघर्ष और जातीय सफाया और हाल ही में अफ़गानिस्तान में हुई घटनाएं भारतीय उपमहाद्वीप में हुई कुछ दिल दहलाने वाली घटनाएं हैं। ये सभी जातीय हत्याएं और सफाया कोई छिटपुट और अकेली घटनाएं नहीं हैं, बल्कि खुद पुजारियों द्वारा न केवल दूसरे धर्म के खिलाफ बल्कि अपने ही धर्म के विभिन्न संप्रदायों के बीच नस्लीय और नस्लीय भेदभाव, जाति, वर्ग और रंगभेद के रूप में धार्मिक घृणा का चरम परिणाम हैं।
जो लोग कहते हैं कि धर्म कुछ नहीं सिखाता या उपदेश नहीं देता या वे शत्रुता बढ़ाने में संलिप्त हैं, जबकि वर्तमान विश्वव्यापी परिदृश्य में कई धार्मिक उपदेशक और पुजारी न केवल भय उत्पन्न करने और घृणा फैलाने में संलिप्त पाए गए हैं, बल्कि वास्तव में एक या दूसरे धर्म के विरुद्ध अपराध को बढ़ावा देने में भी संलिप्त पाए गए हैं, उदाहरण के लिए म्यांमार और अफगानिस्तान में, तो वे शुतुरमुर्ग का जीवन जी रहे हैं।

इस परिदृश्य को देखते हुए क्या कहा जा सकता है कि हम कहां जा रहे हैं?
क) नरसंहार के साथ एक और विश्व युद्ध?
ख) प्रलय के दिन की ओर (उदाहरण के लिए – एक शक्तिशाली ब्लॉक का उपयोग यह कहने के लिए किया गया कि 21 दिसंबर, 2012 प्रलय का दिन होगा)।
ग) किसी व्यक्ति द्वारा प्रलय की योजना बनाकर स्वयं को मसीहा घोषित करने की स्थिति में बलि का बकरा बनने की ओर।
घ) क्या अब पृथ्वी छोड़कर मंगल ग्रह पर बसने का समय आ गया है?

ई) क्या यह बुराई के अंत और धार्मिकता के पुनरुत्थान का समय है? क्या यह धर्म और धर्म-संस्था के पुनरुत्थान का समय है?
पिछले तीन हज़ार सालों से चल रही अराजकता को देखते हुए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि धर्म की बुनियादी समझ धीरे-धीरे लगभग खत्म हो गई है। यह आसानी से माना जा सकता है कि धर्म की सार्वभौमिकता धीरे-धीरे कम होती गई है, पहले सार्वभौमिकता से मानवता, मानवता से धार्मिकता, धार्मिकता से क्षेत्रीय धार्मिकता, फिर स्थानीयता से लेकर अंततः व्यक्तिगतता तक, जो दर्शाता है कि न केवल परिवार, समाज का ताना-बाना खत्म हो गया है, बल्कि पूरा वातावरण ही अस्त-व्यस्त हो गया है। इसने हमारे अस्तित्व पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं।

(5). <u>समाधान का प्रतिमान:</u>

गरीब कहते हैं कि अमीर खुश है, अमीर कहते हैं कि राजपरिवार (राजा और रानी) खुश हैं, राजा और रानी कहते हैं कि चक्रवर्ती राजा और रानी (जो अपनी प्रजा पर नीतिपूर्वक और उदारतापूर्वक शासन करते हैं, और पूरे विश्व के विजेता हैं) खुश हैं, चक्रवर्ती राजा कहते हैं कि राजा इंद्र खुश हैं, राजा इंद्र कहते हैं कि भगवान राम खुश हैं और भगवान राम कहते हैं कि संत खुश हैं, जबकि संत कहते हैं कि खुशी, संतोष, संतुष्टि, भोज, शांति में निहित है।

कहते हैं कि राज करने या नाम, शोहरत और ताकत पाने की चाहत ही किसी भी टकराव, लड़ाई, युद्ध और यहां तक कि विश्व युद्ध की शुरुआत होती है। यह ऐसी चाहत है जो कभी पूरी नहीं होती, जब तक कि इस चाहत का फल न मिल जाए, हमेशा और अधिक पाने की भूख बनी रहती है और कभी खत्म नहीं होती, अगर यह पूरी धरती पर कब्ज़ा कर ले तो यह अपने पंख फैलाने के लिए चांद या शुक्र की तरफ देखेगा। इसलिए यह सभी बुराइयों में सबसे बुरी और दुष्ट है।

यह विचार प्रक्रिया हमें आत्म-विनाश के अलावा कहीं नहीं ले जाती है और इसलिए इन लोगों द्वारा तैयार की गई ऐसी प्रणालियों की निरंतरता को युद्धों के नियंत्रकों और प्रबंधकों सहित किसी के द्वारा भी सराहा नहीं जा सकता है, और यह संशोधित/सरलीकृत या समाप्त किए जाने योग्य है।

(5.A). सुरक्षा और संरक्षा एक मानसिक अवधारणा है, हमें यह देखना होगा कि सुरक्षा का न तो बहुत ज़्यादा प्रचार किया जाए और न ही इसका कम आंकलन किया जाए, ताकि हम जीवन के अन्य आयामों को जोखिम में डाले बिना इस पर सही मात्रा में खर्च कर सकें। इस प्रकार, किसी भी देश में भुखमरी, विवशता, वेश्यावृत्ति और भीख मांगने की कोई भी घटना किसी भी सभ्यता में स्वीकार्य नहीं है, चाहे वह समाज कितना भी गरीब क्यों न हो।

"अनेक खोजों में पाया गया है कि खुशी ही जीवन को बनाए रखने वाली एकमात्र शक्ति है और खुशी को वास्तविकता बनाए रखने के लिए सुरक्षा और संरक्षा का सुरक्षित और संरक्षित होना ज़रूरी है। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा शारीरिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और न्याय है। दूसरी सुरक्षा भोजन, पानी, आश्रय और कपड़ों की है, तीसरी सुरक्षा ऊर्जा, मनोरंजन, पर्यावरण और स्वास्थ्य और शिक्षा की है, और फिर लाभकारी रोज़गार और सम्मानजनक जुड़ाव की है।

बुनियादी मानसिकता के अनुसार महिलाएं आंतरिक सुरक्षा का प्रभार संभालने का निर्णय ले सकती हैं, जबकि पुरुष बाह्य सुरक्षा का प्रभार संभाल सकते हैं और तदनुसार मार्शल आर्ट और हथियार चलाने का प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

(5.A.1) सुरक्षित देश को सुरक्षित पड़ोसी की आवश्यकता होती है; अपने/अपने पड़ोसी की सुरक्षा का ध्यान रखना हमारी आवश्यकता के साथ-साथ हम सबकी नैतिक जिम्मेदारी भी है।

युद्ध तब लड़े और जीते जाते हैं जब किसी के पास हथियारों और गोला-बारूद के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए बेहतर धातुकर्म, औद्योगिक सुविधाएं हों। युद्ध जीतने के लिए हथियारों के लिए अनुसंधान और विकास की सुविधाएं होनी चाहिए।

वैश्विक परिदृश्य को देखते हुए, विभिन्न युद्धरत समूहों द्वारा मिनी, माइक्रो और नैनो परमाणु वारहेड और सहायक उपकरण विकसित करने की आवश्यकता है ताकि शक्ति संतुलन बनाया जा सके। इस परमाणु युग में, विरोधियों के परमाणु और अन्य विद्युत चुम्बकीय रूप से संचालित शस्त्रागार को रोकने, पुनर्निर्देशित करने, आत्म-विनाश करने के लिए सॉफ़्टवेयर और सिस्टम का विकास, भले ही वारहेड हवा में हो, तबाही से बचने और न केवल युद्ध जीतने के लिए सबसे महत्वपूर्ण होगा।

(5.A.2). सुरक्षा और संरक्षा के प्रतिमान में स्वतंत्र या उदासीन और अलग-थलग रहना निश्चित रूप से वश में होने का तरीका है। गुटनिरपेक्षता असहायता और मौत की भावना का एक अंधापन है। एकध्रुवीय शक्ति केंद्र रोमांचित नहीं करता है, बल्कि पागल हाथी की तरह लोगों को बेतरतीब ढंग से ड्रिल करना और मारना जारी रखता है। एकध्रुवीय दुनिया की उपस्थिति या तो अंत या एक नई विश्व व्यवस्था या प्रणाली की शुरुआत का संकेत है।

द्विध्रुवीय शक्ति ब्लॉक किसी भी देश पर बाहरी आक्रमण को बनाए रखता है और उसे न्यूनतम करता है, लेकिन यह शीत युद्ध की निरंतरता और इस परमाणु युग में तबाही के निरंतर खतरे के तहत होता है।

भविष्य में बहुध्रुवीय स्थिति में चौथे विश्व युद्ध और उसके बाद की किसी भी स्थिति में सभी को अपने समर्थन के लिए तैयार रहना चाहिए। तीसरा विश्व युद्ध चल रहा है और इसकी प्रकृति आर्थिक है। ऐसे सभी मामलों में धर्म (मूल धर्म) ही आगे बढ़ने के लिए हमारा सबसे अच्छा मार्गदर्शक हो सकता है।

(5.बी) यदि हम आदिवासियों (आदिवासियों – मूल निवासी – जो यहां शुरू से ही हैं) के बीच देखें तो हम पाएंगे कि जनजाति के प्रत्येक सदस्य को उन सभी पहलुओं का ध्यान रखने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है जिनका सामना पुरुष और महिलाएं अपने पूरे जीवन में कर सकते हैं, चाहे वह सुरक्षा हो, व्यापारिक लेन-देन हो, प्रशासन हो, पुरोहिताई हो, न्यायपालिका हो या सहायक नौकरियां हों।

कहा जाता है कि आदिवासी-मूलवासी ही मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर बनी हुई या मूलवासियों से प्रेरणा लेकर बनी हुई एक संरचना है। इसलिए जब संरचना जीर्ण-शीर्ण होने लगे तो मूल-आदिवासियों के पास जाना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है और उनसे पुनः संकेत/मार्गदर्शन लेना चाहिए कि कैसे इन आदिवासियों ने बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आश्रय) का ध्यान रखा है और कैसे प्रशासन, न्याय और अपने वंश का पालन-पोषण किया है, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा है और साथ ही अपनी पूजा-अर्चना भी की है जिससे वे युगों से अपने अस्तित्व को बचाए रखने में सक्षम हैं। क्या हमें किसी जादू और चमत्कार का इंतजार करना चाहिए या किसी नए देवता के आसमान से उतरकर हमारी समस्या का समाधान करने का इंतजार करना चाहिए? या हमें उस समय उठकर पुनरुत्थान के लिए काम करना चाहिए?

(5.बी.1), बस्ती-सभ्यता के आरंभ में यह सोचा गया था कि समाज को उन सभी नौकरियों का ध्यान रखना होगा जो आम तौर पर हर आदिवासी करता है और साथ ही उन नई नौकरियों का भी ध्यान रखना होगा जो बस्ती/सभ्यता के कारण आ सकती हैं।

कहा जाता है कि काफी मंथन के बाद यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई कि किसी बस्ती/समाज/सभ्यता को बनाए रखने के लिए किसी भी समाज को किसी भी समय, स्थान/स्थान और ऊर्जा के सामने आने वाले संपूर्ण कार्य को मोटे तौर पर चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है, वह भी समान स्तर पर: **(1).** सुरक्षा और संरक्षण, **(2).** शिक्षा, योजना और रणनीति, नया ज्ञान और तकनीक हासिल करना, उसे अपनाना और उसका प्रसार करना, नियम और कानून बनाना आदि। **(3).** सामग्री का संग्रह, सामग्री का भंडारण और समाज में उसका वितरण, **(4)** अन्य तीन श्रेणियों के साथ मिलकर समाज को दी जाने वाली अन्य सभी

सहायक सेवाएं जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, इंजीनियरिंग सेवा, सफाई और स्वच्छता का रखरखाव, मनोरंजन की व्यवस्था आदि।

(5.सी). कार्य वितरण के अध्याय में ऊपर **(2.एफ) में दिए गए सीमांकन के अनुसार,** भारत की एक सौ तीस करोड़ की आबादी का एक चौथाई हिस्सा यानी लगभग बत्तीस दशमलव पांच करोड़ लोगों को उनकी रुचि, अनुभव और आयु के अनुसार सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए, चाहे वह **(क)** . कक्षा शिक्षा या क्षेत्र प्रशिक्षण प्राप्त करना हो, **(ख)** . क्षेत्र ड्यूटी करना हो या सुरक्षा और संरक्षा से संबंधित विशेष कार्य में शामिल होना हो, **(ग)** . आवश्यकताओं की व्यवस्था और उचित प्रबंधन, खुफिया जानकारी की निगरानी और उसका विश्लेषण और प्रणाली का समग्र प्रशासन, **(घ)** . शिक्षा, प्रशिक्षण और विशेष कौशल प्रदान करना, सुरक्षा और संरक्षा से संबंधित विवादों में जूरी होना, अनुसंधान और विकास का समन्वय करना आदि।

यदि हम स्वस्थ और खुशहाल वातावरण में मनुष्यों की औसत आयु सौ वर्ष मानें, तो ऊपर बताए अनुसार पच्चीस वर्ष की आयु तक व्यक्ति शारीरिक रूप से विकसित हो सकता है, शिक्षा और प्रशिक्षण ले सकता है, फिर पच्चीस से पचास वर्ष की आयु तक जमीन पर काम कर सकता है, फिर पचास से पचहत्तर तक प्रबंधन कर सकता है और फिर पचहत्तर से सौ वर्ष की आयु तक प्रशासन, प्रशिक्षण देना और न्याय प्रदान करना शामिल है। **यदि हम इस वितरण को देखें, तो सुरक्षा के लिए मैदान में तैनात किए जाने वाले वास्तविक कर्मियों की संख्या जनसंख्या का सोलह गुणा एक होनी चाहिए, अर्थात 130 करोड़ जनसंख्या/16=8.125 करोड़ लोग** (वर्ष–2022 में जनसंख्या के अनुसार भारत में)।

(5.सी.1), सुरक्षा में लगे आठ करोड़ से अधिक लोगों की यह संख्या पूरी सेना, नौसेना, वायुसेना, अर्धसैनिक बल, रिजर्व पुलिस, राज्य सरकारों से जुड़ी पुलिस, ठेके पर तैनात निजी सुरक्षा गार्ड तथा मुफ्त में अपनी सेवाएं देने वाले सुरक्षा कर्मियों को मिलाकर कही जा सकती है। चूंकि स्थानीय सरकार द्वारा सुरक्षा की व्यवस्था स्थानीय भूगोल के अनुसार ही होगी, साथ ही इसमें राष्ट्रीय चरित्र भी होगा, इसलिए भारत की सुरक्षा व्यवस्था में विविधता होनी स्वाभाविक है, जिसमें बर्फीली चोटियों से लेकर समुद्र तट तक, उपजाऊ भूमि से लेकर जंगलों और रेगिस्तानों तक, पहाड़ों से लेकर महानगरों तक काम करने के लिए प्रशिक्षित सुरक्षा कर्मी होंगे, जिनमें घोड़े, खच्चर, हाथी, साइकिल और मोटर वाहन, नाव और जहाज जैसे स्थानीय परिवहन होंगे, साथ ही स्थानीय हथियार जैसे धनुष–बाण, तलवार, गुलेल के अलावा भूगोल और समय की आवश्यकता के अनुसार पुलिस कर्मियों द्वारा धारण किए जाने वाले हथियार भी होंगे।

(5.सी.2) इतनी बड़ी संख्या में सुरक्षा के प्रावधान से न केवल बच्चों, बुजुर्गों, बिकनी पहने लोगों से लेकर सजे-धजे लोगों, वनस्पतियों, पक्षियों, जानवरों और जलीय जीवों को चौबीसों घंटे सुरक्षित माहौल मिलेगा, बल्कि देश की बड़ी गरीबी भी दूर होगी। उपरोक्त सुरक्षा के प्रावधान से चोरी, डकैती, बाजार में गड़बड़ी, झपटमारी और छेड़छाड़ की गतिविधियों को रोका जा सकेगा, चाहे सुबह का समय हो या देर रात का। इतने बड़े पैमाने पर सुरक्षा के प्रावधान का मतलब यह भी है कि किसी भी उद्योग, संस्थान और वीआईपी या वीवीआईपी व्यक्ति को किसी निजी सुरक्षा को रखने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

सुरक्षाकर्मियों की इतनी बड़ी टुकड़ी दुनिया में बेमिसाल होगी और देश का मनोबल बढ़ाने वाली होगी तथा निश्चित रूप से विश्व राजनीति और कूटनीति में भारत को बढ़त और लाभ देगी। यह दुनिया में किसी भी अप्रत्याशित आपदा के समय भी मददगार साबित होगी।

(5.सी.3). समाज संचालित सुरक्षा की वित्तीय गणना:

(i), यदि हम पुलिस द्वारा बीट कांस्टेबल के माध्यम से नियमित रूप से रिश्वत के रूप में एकत्र की गई धनराशि (सभी व्यापारिक संस्थाओं (व्यापार के आकार पर ध्यान दिए बिना) से मासिक सुरक्षा शुल्क के रूप में, फिर व्यापारिक वाहनों से वसूली करें तथा उन लोगों से चुनिंदा रूप से वसूली करें जिन्हें इस या उस तरह से पुलिस से बातचीत करने के लिए मजबूर किया जाता है, तब भी समाज सुरक्षा कर्मियों की इस बड़ी टुकड़ी की लागत को वहन करने में सक्षम होगा।

(ii) वर्तमान में निजी सुरक्षा कर्मियों को शहर और शहर में स्थान तथा उन्हें जिस संस्थान में नियुक्त किया गया है, उसके आधार पर मोटे तौर पर चौदह हजार से चौबीस हजार रुपये प्रति माह का भुगतान किया जाता है।

(iii) इस व्यय को पूरा किया जा सकता है **(क)** बचत देश को विभिन्न संवैधानिक निकायों और इन निकायों के चुनावों को छोड़ने से होगी। **(ख)** लोगों की आय से समाज का हिस्सा। **(ग)** विभिन्न व्यक्तियों और संस्थाओं को कार्मिक सुरक्षा गार्ड की आपूर्ति से उत्पन्न होने वाली आय। **(घ)** समानांतर अर्थव्यवस्था से प्राप्त धन।

(5.सी.4). निम्नलिखित संक्षिप्त गणना है (सितंबर 2022 में इंटरनेट पर खुले डेटा के अनुसार):

(i) निजी सुरक्षा गार्ड का वर्तमान राष्ट्रीय औसत वेतन: स्थान के अनुसार 14000/माह,
(ii) मान लीजिए राष्ट्रीय औसत वेतन 15,000 रुपये प्रति माह है

(iii) आठ करोड़ सुरक्षाकर्मियों का वेतन (प्रस्तावित): 15000×8 करोड़ = 120,000 करोड़/माह

(iv) आठ करोड़ रुपये प्रति वर्ष वेतन: 120,000×12=14,40,000 करोड़ रुपये प्रति वर्ष।

(v) कुल व्यय: सरकार द्वारा 2022-23 के दौरान **39,44,909 करोड़ रुपये खर्च करने का अनुमान है।**

(vi) समान राशि की समानांतर अर्थव्यवस्था भी मौजूद है: 2022-23 के दौरान **39,44,909 करोड़ रुपये ।**

(vii) आठ करोड़ सुरक्षाकर्मियों के वेतन पर व्यय का प्रतिशत: **39,44,909 +39,44,909 = 78,89,818 करोड़ %** 14, 40,000 = **18.25%**

आठ करोड़ सुरक्षाकर्मियों को रोज़गार देने का यह प्रयास न केवल सुरक्षा प्रदान करेगा बल्कि रोज़गार की मांग को भी खत्म कर देगा। आर्थिक रूप से यह व्यवहार्य है और नैतिक रूप से यह शानदार है।

युद्ध की अर्थव्यवस्था, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध में दीर्घकालिक परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के विभिन्न गुरुओं के बीच धार्मिक, शैक्षिक और प्राकृतिक नियमों पर संवाद और उसके परिणामस्वरूप होने वाली कार्रवाइयों को खोलना समझदारी होगी। यह समय संतों और ऋषियों के लिए खुलकर योगदान देने और नकारात्मक मानसिकता वाले लोगों और ताकतों द्वारा दिए गए घावों को भरने का प्रयास करने का है। ***

8. पारिस्थितिकी तंत्र का अर्थशास्त्र : सौर (अग्नि), वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष

अर्थव्यवस्था का फलना-फूलना इस बात पर निर्भर करता है कि मूलभूत पांच तत्वों अर्थात सूर्य (अग्नि), वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष का समामेलन/अंतर्क्रिया (किसी निश्चित अवधि में) किस प्रकार हुई है, भले ही कोई स्थान कितना भी औद्योगिकीकृत या पर्यटन अनुकूल क्यों न हो।

प्रस्तुत है: पारिस्थितिकी तंत्रों के अर्थशास्त्र के संबंध में प्रस्तुति: सौर (अग्नि), वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष को चार भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1). मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2). पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा, (3). समस्या का प्रतिमान, (4), समाधान का प्रतिमान,

*For referral: Kaam ki baat- "काम की **बात**: जल, जमीन, जंगल पर शुद्ध जल, शुद्ध हवा और साफ़ ज़मीनकी समस्याओं, विसंगतियों और प्रबंधन पर वासठ खुले पत्रों का संग्रह "-

(1). Issues and its broader outline:

(1.A). गतिशील ऊर्जा एक भावना है। यह भावना ही है जो यह निर्धारित करती है कि कहाँ और कितनी ऊर्जा गतिशील होगी। किसी व्यक्ति, समाज, देश और विश्व का संपूर्ण अस्तित्व उसकी या हमारी भावनाओं का प्रतिबिम्ब कहा जा सकता है। हमारी भावनाओं की गहराई और इरादे की शुद्धता के आधार पर ऊर्जा की मात्रा एक वांछित दिशा में मुक्त होती है, जहाँ यह ऊर्जा पाँच मूल तत्वों अर्थात अंतरिक्ष/क्षितिज/आकाश, जल, अग्नि/ऊर्जा, वायु, पृथ्वी/भौतिक तत्वों को एक अपेक्षित अनुपात में मिलाकर एक भौतिक आकार प्रदान करती है।

हालांकि यह कहा जाता है कि, "मन पदार्थ को गति देता है और भविष्य को आकार देता है" या "हर निर्णय का एक रूप होता है" या "हर निर्णय का अपना रूप और संरचना होती है" लेकिन तथ्य यह है कि यह हमारी भावनाएँ (व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों) ही हैं जो व्यक्तिगत/सामूहिक मन को दिशा चुनने और हमारे व्यक्तिगत/सामूहिक भाग्य को आकार देने के लिए ऊर्जा दे रही हैं। इसलिए यह कहा जाता है कि "भावनाएँ हमारे अस्तित्व का केंद्र हैं"।

हमारे जीवन की दिशा और नियति के बारे में, कुछ लोग खुद को भगवान की तरह सर्वशक्तिमान मानना पसंद करते हैं, और कुछ अन्य लोग खुद को अमर मानना पसंद करते हैं, लेकिन हम में से अधिकांश लोग शायद अपना/अपना जीवन एक स्थायी रूप से स्वस्थ और खुशहाल तरीके से जीना चाहेंगे। इसके अलावा हममें से अधिकांश लोग अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों और

रिश्तेदारों के लिए भी इसी तरह की और हमेशा के लिए स्वस्थ और खुशहाल जीवनशैली देखना चाहेंगे।

बहुत कम लोगों को छोड़कर जो स्वयं को सर्वशक्तिमान और अमर मानते हैं, अन्य सभी इस बात की सराहना करते हैं कि जीवन भी जल चक्र के समान पैटर्न का अनुसरण करता है, यानी बादल, वर्षा, महासागर की ओर बहते हुए सभी प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं और फिर वाष्पित होकर पुनः बादल बन जाते हैं, इसलिए इस जीवन में (या किसी अन्य भविष्य के जीवन में यदि ऐसा आता है) जीवन का कोई अन्य अतिरिक्त उद्देश्य नहीं हो सकता है और होना भी नहीं चाहिए, सिवाय इसके कि व्यवस्था की अनंतता/शाश्वतता/सनातनता/निरंतरता/सनातनता को बनाए रखने में एक अभिनेता/चरित्र बने रहें। सराहना करने वाले अधिकांश लोगों के लिए, इसे एकमात्र धर्म/मज़हब (सनातन धर्म–सनातन धर्म) कहा जा सकता है और बाकी सभी जीवन की बुनियादी बातों की प्रस्तुति का एक क्षेत्रीय तरीका मात्र हैं, चाहे वह धर्म हिंदू, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख या बहाई हो।

(1.A.1) जब मूल धर्म में गिरावट/पश्चाताप/अपराधबोध होता है, तो आम लोग आलसी, गैरजिम्मेदार, पाखंडी और पलायनवादी बन जाते हैं, जिन्हें साफ करने की जरूरत है। ये सभी धर्म (जो अपनी उपस्थिति और श्रेष्ठता का जोरदार प्रतिध्वनि करते हैं) कर्मकांडों में इतने मग्न हो गए कि वे प्रकृति द्वारा प्रदान की गई व्यापक और एकीकृत आर्थिक तस्वीर को देखने से चूक गए, और इसे बाजार की ताकतों पर छोड़ दिया, (बाजार की ताकतें त्वरित और व्यक्तिगत लाभ पाने में इतनी व्यस्त हैं कि ये ताकतें दीर्घकालिक सामूहिक तस्वीर को देखने की जहमत भी नहीं उठाती हैं)।

नियमित और औपचारिक रूप से इसकी तुलना हमारे घर से की जा सकती है, जिसमें धूल/गंदगी/खरोंच/कचरा जमा हो जाता है और प्रत्येक सुबह/शाम सफाई की आवश्यकता होती है तथा नियमित सफाई गतिविधियों की समीक्षा/बहाली के साथ–साथ वर्ष में एक बार सफाई की आवश्यकता होती है।

(1.बी) धर्म और धर्म के मूल सिद्धांतों की सराहना में गिरावट के कारण लोग 'पारिस्थितिकी तंत्र के अर्थशास्त्र' के मूल सिद्धांतों को भी भूल गए हैं, कि सूर्य पृथ्वी को कुछ लाख करोड़ किलोवाट घंटे (यूनिट) बिजली के बराबर ऊर्जा देता रहता है, जिसका अगर सही तरीके से उपयोग नहीं किया गया तो पूरी पृथ्वी और पृथ्वी पर मौजूद हर चीज (मानव का दिमाग भी) गर्म हो जाएगी, जिससे हालात इतने खराब हो जाएंगे कि रहना असंभव हो जाएगा।

पृथ्वी का यह गर्म होना न केवल पर्यावरण में बल्कि मनुष्यों सहित प्रत्येक जीवित प्राणी के शरीर में वायु परिसंचरण, जल परिसंचरण को भी बाधित करता है। इस गर्मी के कारण जल (रक्त), श्वसन और पसीने के परिसंचरण में वृद्धि होती है, जिसके परिणामस्वरूप क्रोध, आक्रामकता,

हताशा और अवसाद जैसी भावनाओं में बड़े उतार-चढ़ाव होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आम तौर पर अधिक पागलपन, अधिक झड़पें, दंगे और युद्ध होते हैं।

(1.बी.1). वृक्ष आवरण और वन मानव शरीर पर केशिकाओं और बालों की तरह ही प्रकृति का उत्तर हैं, जो ग्रह पृथ्वी की ऊष्मा ऊर्जा को संतुलित करने के लिए है। इसके अलावा झीलें और नदियाँ, उनकी सहायक नदियाँ और सहायक नदियाँ मानव शरीर में नसों और धमनियों की तरह हैं, जो मिलकर पृथ्वी की नमी और तापमान को बनाए रखती हैं। वृक्ष आवरण और जल निकाय पृथ्वी के फेफड़े और हृदय की तरह हैं।

केश और बाल (बिना वैक्स या मुंडन के) किस प्रकार शरीर का तापमान बनाए रखने में मदद करते हैं तथा मन को शीतलता, त्वचा को नमी, समुचित पसीना, कीटाणुओं, फंगस, बैक्टीरिया और वायरस से सुरक्षा के साथ-साथ सौंदर्य को बनाए रखते हैं, इसे कोई भी नर-नारी और फिर त्वचा विशेषज्ञ, यदि नहीं तो साधु-संत अवश्य समझ सकते हैं।

इसी प्रकार पृथ्वी पर वन और वृक्ष आवरण पृथ्वी के तापमान और इसकी अभिव्यक्ति (पर्यावरण) की शीतलता को बनाए रखते हैं, पृथ्वी की त्वचा को नमी प्रदान करते हैं, ऑक्सीकरण प्रक्रिया को कम करते हैं, जिससे गंध कम होती है और सुगंध बनी रहती है, साथ ही पृथ्वी की सुंदरता बढ़ती है, जिसे एक नौसिखिया भी सराह सकता है।

मनुष्यों के दीर्घकालिक अवलोकन से यह पता चला है कि एक मानव शरीर (पुरुष और महिला दोनों) में केशिकाओं और बालों द्वारा आच्छादित कुल क्षेत्रफल लगभग सैंतीस प्रतिशत है, इसलिए पृथ्वी के लिए भी यही मानदंड होना चाहिए। जब पृथ्वी की सतह/भूपर्पटी का सैंतीस प्रतिशत क्षेत्र घने जंगल और बड़े पेड़ों से ढका होगा, तो पृथ्वी की ऊपरी परत नम रहेगी और चार-चार महीने की दो फ़सलें (प्रत्येक फ़सल के बाद दो महीने का अंतराल धरती माता को आराम देने, अन्य संबंधित काम और अगली फ़सल की तैयारी के लिए) आसानी से बिना किसी अतिरिक्त सिंचाई के की जा सकती हैं, यानी इससे नदी और बोरवेल सिंचाई से नहरों की ज़रूरत कम हो जाएगी।

साथ ही, यह विशाल वृक्ष आवरण और गहरा जंगल बरसात के मौसम में मिट्टी के कटाव को कम करेगा, जिससे नदियों/झीलों और अन्य जल निकायों में गाद जमने में कमी आएगी, जिससे अन्य बातों के अलावा सूखे और बाढ़ की घटनाओं में भी कमी आएगी। इसके अलावा, इतने बड़े वृक्ष आवरण के साथ भूजल स्तर में कमी और जल संचयन के परिणामस्वरूप होने वाले प्रचार की कोई समस्या नहीं होगी।

(1.बी.2) यह विशाल वृक्ष और वन क्षेत्र महानगरों और औद्योगिक क्षेत्रों में धुआँ और जानलेवा प्रदूषण तथा उसके परिणामस्वरूप होने वाले स्वास्थ्य संबंधी खतरों की किसी भी या सभी संभावनाओं को कम करेगा।

ऊर्जा के मामले में, इतने बड़े पेड़ और वन क्षेत्र सर्दियों में धरती की सतह के तापमान को बहुत कम नहीं होने देंगे और गर्मियों में बहुत अधिक नहीं होने देंगे, जिससे हीटिंग और कूलिंग के कारण बिजली/ऊर्जा की खपत में बचत होगी। उपजाऊ जमीन पर लगाए गए सौर पैनलों के माध्यम से ऊर्जा का उत्पादन पेड़ों को उगाने से मिलने वाली उपज से कम होता है। यह आसानी से साबित हो सकता है जब कोई दस से पंद्रह साल की अवधि के लिए लागत-लाभ की गणना कर रहा हो और इसके अलावा, इन पेड़ों के अलावा बहुत सारे अन्य लाभ हैं जो अब तक सौर पैनल नहीं देते हैं (यहां तक कि व्यावसायिक मोर्चे पर भी)।

हालांकि, वास्तविकता को और भी सहज बनाने के लिए, शायद हम शहरों और उद्योगों के बीच कुछ वित्तीय लेन-देन करना चाहेंगे जो काफी ज़्यादा प्रदूषण फैलाते हैं और गांवों और जंगलों के बीच जो ताज़गी लाते हैं। शायद स्थिरता बनाए रखने के लिए हम देश के विभिन्न क्षेत्रों और दुनिया के विभिन्न देशों के बीच (ताज़ी हवा उपलब्ध कराने के लिए) ये वित्तीय लेन-देन करना चाहेंगे।

(1.सी) उपरोक्त कार्यान्वयन करते समय, वन और वृक्ष आवरण के इतने बड़े पैमाने पर पुनर्स्थापन के लिए स्थान की उपलब्धता के बारे में प्रश्न उठ सकते हैं? लेकिन इसका उत्तर हमारी आदत में थोड़ा बदलाव करके मिल सकता है, दूध और चीनी के साथ चाय और कॉफी पीने की आदत।

एक मोटे अनुमान के अनुसार, वर्तमान में चाय और कॉफी खेती की जाने वाली भूमि का लगभग पंद्रह से बीस प्रतिशत हिस्सा ले लेती है, ताकि दूध देने वाली गायों और भैंसों के लिए चरागाह, चाय, कॉफी और चीनी की खेती, अदरक, इलायची और मसाला चाय में डाली जाने वाली अन्य चीजों के लिए कुछ जगह हो। इस आदत को सुधारने और वन और वृक्ष आवरण के प्रबंधन को सबसे अच्छे तरीके से प्रबंधित किया जा सकता है जब समाज आगे आए और राष्ट्रीय सरकार एक माध्यमिक और सहायक भूमिका निभाए। इन गतिविधियों से बहुत सारे रोजगार पैदा होंगे, जिसके लिए इस अध्याय में ही कुछ गणना दी गई है।

(1.D). "शरीर अन्न से बनता है, अन्न जल से उदभूत होता है, जल वर्षा से,

वर्षा यज्ञ के परिणाम में होती है और यज्ञ कर्म से होता है।("The body is made of food, food arises from water, water from rain, rain is the result of sacrifice and sacrifice is done by action).

प्रकृति पर विजय प्राप्त करने या कृत्रिम वर्षा कराने या वर्षा बाधित करने जैसे विचारों से कोई सफलता नहीं मिलती। प्रकृति एक है और एकीकृत इकाई है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमारे काम और काम की दिशा गड़बड़ा गई है, इसलिए अब जो हो रहा है वह है, " पानी , पानी में वर्षे , मानुष दून दून तरसे – **जल जल बरसा (सागर में), मानव बूँद बूँद को तरसता है"।**

यह बात ध्यान देने योग्य है कि अनियोजित विकास और जल निकायों पर राज्यों/देशों के हस्तक्षेप के कारण ताजी हवा और शुद्ध पानी की उपलब्धता और गुणवत्ता में गिरावट आई है।

वायु, जल और सूर्य का प्रकाश अपने आस–पास के प्रत्येक जीवित तथा मृत प्राणी के लिए समान है, ये कोई व्यक्तिगत या स्थानीय या राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय विषय नहीं हैं, बल्कि प्रकृति का विषय हैं।

(1.E). यदि हम प्रकृति के सामंजस्य को समझें और धरती को माता और आकाश को पिता मानें, तथा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की कभी न सोचें, तो यह हमारी पहली जिम्मेदारी है कि हम अपने पर्यावरण को सामंजस्यपूर्ण सह–अस्तित्व के लिए सही करें। हमें यह समझना चाहिए कि हिमालय से बर्फ पिघलने से आने वाली बाढ़ न केवल मालदीव या भारत के कुछ हिस्सों को बल्कि अन्य देशों के तटीय क्षेत्रों के कई हिस्सों को भी डुबो देगी। दिल्ली, लंदन और पेरिस से अत्यधिक कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन इसके पड़ोसी क्षेत्रों और देशों को प्रभावित करता है। जलवायु परिवर्तन और स्थिरता एक साथ चलते हैं, इसलिए इस पर न केवल संयुक्त राष्ट्र, पेरिस या भारत की संसद में बल्कि सामुदायिक स्तर पर भी चर्चा की जानी चाहिए और तदनुसार कार्य किया जाना चाहिए।

(1.एफ). बड़े पैमाने पर पेड़ों की कटाई के कारण बारिश के पानी को धरती की ऊपरी परत को नुकसान पहुंचाने और उसे काटने से पहले आने वाली सभी बाधाओं का सामना करना पड़ता है और वर्षा जल को जल निकायों (जैसे नदी) की ओर जाने में होने वाली बाधाओं में काफी कमी आई है, जिसके परिणामस्वरूप पानी का वेग बढ़ गया है और विनाशकारी बाढ़ आई है। बाढ़ और सूखे का कारण तालाबों, झीलों, नदियों और जलाशयों के तल पर बारिश के पानी के साथ मिट्टी का जमाव है, जिससे उनकी चौड़ाई और गहराई में कमी आती है, जिसके परिणामस्वरूप इनकी जल भंडारण क्षमता में कमी आती है।

(1.जी). बिना पर्याप्त वृक्ष आवरण के अत्यधिक खेती उपजाऊ मैदानों को रेगिस्तान में बदल रही है। पेड़ों को काटना और जमीन पर सब्जियां उगाना मूर्खतापूर्ण है, जिन्हें आसानी से दो फीट गहरी मिट्टी (छत पर, बहुस्तरीय ऊर्ध्वाधर खेती में राफ्ट/नावों पर) पर उगाया जा सकता है, जिससे बड़े और विविध पेड़ों के लिए जमीन खाली हो जाती है। कुल वन आवरण में कमी के साथ, बहुत कम पेड़ बचे हैं जो बादलों को आकर्षित कर सकते हैं।

(1.एच) अत्यधिक भूजल, जीवाश्म ईंधन और विद्युत ऊर्जा के उपयोग ने पृथ्वी की त्वचा को शुष्क और मृत्यु से पहले की अधिकतम सीमा तक ज्वरग्रस्त बना दिया है। यह कई लोगों को आश्चर्यचकित कर सकता है, लेकिन तथ्य यह है कि अस्सी-पचास प्रतिशत भूजल का उपयोग किसानों द्वारा किया जा रहा है और अस्सी-पचास प्रतिशत विद्युत ऊर्जा का उपयोग रेफ्रिजरेशन/हीटिंग में किया जा रहा है। क्या ऐसी खेती और ऐसी जीवनशैली को जारी रहने दिया जा सकता है? ऐसा लगता है कि या तो सरकारें संतुलन बनाए रखने में विफल रही हैं या फिर वे खुद ऐसी नासमझ खेती और लोगों की असामान्य/अप्राकृतिक जीवनशैली के अपराध में भागीदार बन रही हैं, जिससे पारिस्थितिकी तंत्र में गड़बड़ी हो रही है?

इसी तरह, गहरे पानी में पर्याप्त जलीय जीवन के बिना अत्यधिक मछली पकड़ना और अनियंत्रित मशीनी मछली पकड़ना जल निकायों को जहरीला बना रहा है। बड़ी मछलियों (जैसे व्हेल) को पकड़ना और तालाबों और झीलों में छोटी मछलियाँ पैदा करना मूर्खतापूर्ण है, जिन्हें आसानी से चार-पाँच फीट गहरे पानी में उगाया जा सकता है, जिससे तालाबों, झीलों और समुद्री निकायों को बड़े और विविध जलीय जीवन के लिए छोड़ दिया जाता है।

हमने कहावत सुनी है कि 'मछली मछली को खाती है' और बड़ी मछली छोटी मछली को खाती है, जो बहुत अधिक इंगित करती है, या तो यह पुष्टि करने के लिए कि मनुष्य मनुष्य को खाता है और मानवता मत्स्य पालन की तरह है या मनुष्य मनुष्य को नहीं खाता है इसलिए मनुष्य मछली तालाब से अलग हैं?

(2) **<u>पानी पर आम ग्रामीण चर्चा:</u>**

(2.A) एक पौराणिक कथा है कि, चातक -चकोरी (चातक – चकोरी: जैकोबिन कोयल) पक्षी पृथ्वी पर सभी पानी को प्रदूषित / अशुद्ध मानता है, इसलिए केवल बादलों से पानी पीता है, लेकिन मानवता के लिए, पवित्र गंगा सबसे पवित्र और शुद्ध जल प्रदान करती है, लेकिन अफसोस! यह भी इतनी प्रदूषित हो गई है कि कोई भी इसके किनारे-किनारे जल उपचार संयंत्रों की एक श्रृंखला देख सकता है।

औद्योगीकरण के अपेक्षित बड़े पैमाने पर फल से पैदा हुई अंधता ने नदियों को गंदा कर दिया। अनियोजित और बेतरतीब औद्योगीकरण से अपेक्षित स्वप्निल फल तो नहीं मिले और न ही मिलेंगे, लेकिन प्रदूषण जरूर आया जिसका असर हम सभी पर पड़ रहा है।

हम जो जल निकायों को पवित्र मानते थे, छोटे बच्चों को भी उनमें पेशाब करने की अनुमति नहीं देते थे, जब पहली बार पवित्र नदियों में सीवर डाला गया था, तब भी हम कुछ नहीं कर पाए थे, शायद राजा या औपनिवेशिक शासन के डर से, लेकिन अफसोस! हम अभी भी कुछ नहीं कर रहे हैं और नदियों और समुद्र/महासागर में सीवेज (उपचारित या अनुपचारित इससे कोई फर्क नहीं पड़ता) पानी बहाते रहते हैं। क्या करें? किसे दोष दें और किसे नहीं?

अधिकांश नदी/झीलें जो प्यासे लोगों को शुद्ध और स्वच्छ पानी देती थीं, समय के साथ गाद और सीवरेज, कचरे और अपशिष्ट से भर गईं और अब इन चीज़ों को आकर्षित कर रही हैं, जिसने कुल मिलाकर इन्हें बेकार और बेकार बना दिया है। ये सभी नदियाँ/झीलें गंदी हो गई हैं, बदबू दे रही हैं और यहाँ तक कि इन झीलों/नदियों के पानी का उपयोग करने वालों के लिए ही नहीं बल्कि इसके आसपास रहने वालों के लिए भी बीमारियाँ पैदा कर रही हैं।

(2.बी) एक घटना है, एक गांव में जहां सूखा पड़ रहा था और पानी के कुएं सहित अन्य जल स्रोत सूख रहे थे, वहां एक प्रतिनिधि ने हैंडपंप और बोरवेल लगाकर समाधान सुझाया।

इस पर गांव के लोग इकट्ठे हुए और प्रतिनिधि से पूछा, "यह तो समाधान लगता है, लेकिन हमें बताइए कि हम इतनी गहराई पर पानी कैसे भर पाएंगे और कर्ज कैसे चुका पाएंगे? और अगर सूखा जारी रहा, तो क्या होगा अगर ये हैंडपंप और बोरवेल भी हमारे मौजूदा पानी के कुओं की तरह सूख गए?"

जल पुनर्भरण के लिए जल संचयन तथा यदि सूखा जारी रहता है तो नए तथा और भी गहरे बोरवेल की खुदाई करने का सुझाव प्रतिनिधियों ने दिया। इस पर ग्रामीणों ने कहा कि जल संचयन से केवल दस मीटर नीचे तक ही जल पुनर्भरण होता है, जिसके लिए गांव में वृक्ष पर्याप्त हैं, यही कारण है कि परंपरागत गांवों में पानी के लिए केवल दस–पंद्रह मीटर (40–50 फीट) की गहराई वाले कुएं ही होते हैं।

लेकिन मुझे बताइए कि श्रीमान प्रतिनिधि महोदय, हम इतनी जल संपदा का कर्ज कैसे चुका पाएंगे? क्या धरती के प्रति इस कर्ज के कारण हमारी नींव भी खोखली नहीं हो जाएगी? प्रतिनिधि महोदय का ऐसा समर्पण धरती माता के साथ स्वस्थ संबंधों के लिए टिकाऊ नहीं पाया गया, इसलिए ग्रामीणों ने (जो कर्जदार नहीं रहना चाहते थे) अपने गांव में हैंडपंप और बोरवेल लगवाने से इनकार कर दिया।

(2.सी) कहा जाता है कि जैसा जल होगा वैसी ही वाणी होगी , पानी वासी वाणी – जैसा पानी, वैसी आवाज) यानी पानी की गुणवत्ता हमारी आवाज की गुणवत्ता निर्धारित करेगी। अगर पानी नरम, मीठा और सुखदायक है तो हम मधुर आवाज की उम्मीद कर सकते हैं, अगर पानी सादा है तो सामान्य आवाज होगी और अगर पानी में बहुत सारे रसायन घुले हुए हैं तो आवाज की जगह शोर होगा। इसलिए अगर हम दुनिया भर में इतनी सारी आवाजें देख रहे हैं तो यह निश्चित रूप से दर्शाता है कि पानी की बुनियादी गुणवत्ता खराब हो गई है और प्रदूषित हो गई है।

दीर्घकालिक समाधान की बात तो दूर, अल्पकालिक समाधान भी पैकेज्ड पानी में नहीं है। घरों में भी पैकेज्ड पानी की भरमार से शोर में असहनीय वृद्धि होगी और यह हम सभी के लिए शर्म की बात है। पैकेज्ड पानी उद्योग के मौजूदा कारोबार से कम मात्रा में पानी की गुणवत्ता में सुधार किया जा सकता है। क्या हम समाधान के लिए तैयार हैं?

(2.डी). जल निकायों में प्लास्टिक प्रदूषण के बारे में बहुत शोर-शराबा है क्योंकि इस्तेमाल किए गए प्लास्टिक के सामान के कारण नालियाँ, नदियाँ और समुद्र जाम हो जाते हैं और इससे जानवर मर जाते हैं। अगर हम भारतीय परिदृश्य को देखें तो भारत में वर्तमान में (वर्ष 2021-22) सालाना लगभग 14 मिलियन टन प्लास्टिक का उपयोग होता है, प्लास्टिक कचरे के प्रबंधन के लिए एक संगठित प्रणाली का अभाव है, जिसके कारण शहरों और जल निकायों में सड़कों पर बड़े पैमाने पर कूड़ा-कचरा फैला रहता है। अगर हम प्लास्टिक कचरे को करीब से देखें तो पाएंगे कि इसमें आमतौर पर इस्तेमाल की गई पानी की बोतलें, तंबाकू से बने उत्पादों के रैपर, पान के पत्ते और माउथ फ्रेशनर, प्लास्टिक की प्लेटें और अन्य सामान होते हैं जो आम तौर पर खाद्य, पेय और धूम्रपान की वस्तुओं की पैकिंग और वितरण के लिए बनाए जाते हैं।

पेट्रोल/डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पादों को पसंद करना लेकिन प्लास्टिक को नापसंद करना/नफरत करना कुछ ऐसा ही है जैसे चीनी/गुड़ खाना लेकिन पकौड़ी से परहेज करना"। जहाँ तक वर्तमान सभ्यता का सवाल है, पेट्रोल/डीजल/केरोसिन और अन्य पेट्रोलियम उत्पाद भी उतने ही नए उत्पाद हैं जितने कि इसके उप-उत्पाद प्लास्टिक। प्लास्टिक के बारे में सिर्फ़ एक बात है कि इसका प्रदूषण दिखाई देने लगा है, इसलिए इसे अन्य पेट्रोलियम उत्पादों की तुलना में मात्राबद्ध और लक्षित किया गया है, जो कि समान रूप से या उससे ज़्यादा प्रदूषण करते हैं।
(2.E) जीवन की शुरुआत समुद्र से हुई है, और गर्भावस्था के दौरान सभी गर्भों में समुद्री जल के समान तरल पदार्थ होता है। सभी भूमि के नीचे पानी है और सभी पानी के नीचे भूमि है। पीने के पानी की कोई कमी नहीं है, केवल प्रबंधन करना है।

यदि पूरी पृथ्वी गोल हो जाए तो इस पर हर जगह दो से तीन मीटर पानी होगा। नीचे की ओर किसी भी भंडारण के लिए आस-पास के क्षेत्र में ऊपर की ओर उतना ही जोर आएगा और यही समुद्र के पास पहाड़ों/पहाड़ियों का कारण है। इसलिए बड़े बांध बनाने से बचना चाहिए क्योंकि (ऐसे बांधों पर बड़े बिजलीघर बनने से) वे भूकंप और कंपन पैदा करेंगे और बड़ी खाइयों को दलदल में बदल देंगे।

सुनामी समुद्र/महासागर तल में परमाणु और अन्य शस्त्रागार के परीक्षण के कारण उत्पन्न होती है (आश्चर्यजनक रूप से 'सुनामी' शब्द स्वयं डिक्शनरी-ऑक्सफोर्ड शॉर्टर के अनुसार वर्ष उन्नीस सौ अट्ठावन में अस्तित्व में आया, अर्थात परमाणु बम, वैक्यूम बम के आविष्कार के बाद)।

(2.एफ). पर्यावरण- "वातवरण (वातावरण = वात (हवा /वायु) +आकृति) हवा का आवरण", हमारे रहन-सहन को उसी तरह दर्शाता है जैसे हमारा पहनावा और वर्दी हमें व्यक्तिगत रूप से दर्शाती है। यह हमारी प्रकृति है जो प्रकृति का निर्माण, रखरखाव और पोषण करती है और इसके विपरीत। जैसे-जैसे हम प्रकृति के साथ प्रयोग करते हैं, वैसे-वैसे हम भी किसी न किसी तरह से प्रकृति द्वारा प्रयोग किए जा रहे हैं।
जब किसी भी क्षेत्र या ग्रह का वातावरण जीवन के अनुकूल हो जाता है तो वह जीवन का निर्माण करता है और जब हम प्रकृति में परिवर्तन करते हैं और किसी भी प्रजाति के लिए उसे कठिन बनाते हैं तो वह भौतिक रूप में समाप्त हो जाती है और अपनी ऊर्जा तरंगें पर्यावरण में छोड़ जाती है। जब भी पर्यावरण वैसा ही हो जाता है तो वह फिर से उभर आती है। यह पृथ्वी के साथ-साथ चंद्रमा और मंगल के लिए भी सच है। ऐसे में बाघों को बचाने और भेड़ों को मारने के लिए किसी अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता नहीं है, हमें बस जंगलों को बहाल करना है- शेर, बाघ, तेंदुआ और साथ ही वन्यजीवों की सभी अन्य विशेषताएं फिर से दिखाई देंगी।

पर्यावरण की दीर्घायु, जीवंतता, विलासिता और सुंदरता इस बात पर निर्भर करती है कि प्रतिभागियों के बीच बातचीत कैसे होती है। किसी भी क्षेत्र में थोड़ी सी भी गड़बड़ी दूसरे क्षेत्रों में मामूली/छोटी लहर पैदा करती है, और किसी भी क्षेत्र में बड़ा हस्तक्षेप दूसरे क्षेत्रों में बड़ी गड़बड़ी का कारण बनता है और यह कभी-कभी सूखा, बाढ़, चक्रवात और भूकंप, सुनामी और निरंतर आधार पर प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के रूप में परिलक्षित होता है। पशुधन पर इसका प्रभाव कभी-कभार किसी बीमारी और लगातार तनाव, दबाव, तनाव और (रक्तचाप) के रूप में परिलक्षित होता है।

ऐसी घनिष्ठ व्यवस्था में यदि कोई देश अपने निकटवर्ती पर्यावरण की रक्षा के लिए सोचता और कार्य करता है, तथा इसके लिए हिमालयी क्षेत्र से वृक्ष खरीदता है, अपने तेल भंडार को बनाए रखता है तथा अन्य क्षेत्रों के ईंधन को अनावश्यक रूप से जलाता है, अपनी खदानों को आरक्षित रखता है तथा अन्य क्षेत्रों से अयस्क खरीदता है, तो वह अपने पर्यावरण की रक्षा नहीं कर सकता, बल्कि मूर्खता की दुनिया में जी रहा है।
जो लोग प्रकृति के सामंजस्य को समझते हैं और पृथ्वी को माता तथा आकाश को पिता मानते हैं तथा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की दिशा में कभी नहीं सोचते, उन्हें ही हमारे पर्यावरण को सही करने तथा सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए बड़े पैमाने पर विश्व का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी महसूस करने वाले पहले व्यक्ति कहा जा सकता है।

(3). <u>समस्या का प्रतिरूप</u> : हम पिछले कुछ वर्षों से एक परिदृश्य देख रहे हैं कि कैसे कुछ देशों की अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए मार्च-अप्रैल और अक्टूबर-नवंबर (वर्ष- 2022-23) के

कटाई के मौसम के दौरान आठ–दिन के लिए बारिश की व्यवस्था की जाती है ताकि अधिकांश पकी हुई फसल बर्बाद हो जाए, और फिर कैसे बुवाई के मौसम में बारिश में हेरफेर किया जाता है ताकि फसल ठीक से विकसित न हो।

कीटनाशकों, कीटनाशकों, कवकनाशकों और रासायनिक रूप से उत्पादित उर्वरकों के साथ–साथ दर्द निवारक दवाओं के छिड़काव से इन स्थानों पर संपर्क में आने वाले हमारे खाद्य भंडार, पानी और हवा को नुकसान पहुंचता रहा है।

(4), <u>समाधान का प्रतिमान:</u>

(4.ए) हमें अपने जल निकायों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए निम्न की आवश्यकता है:
(i), जल निकायों की मूलभूत सफाई और शुद्धिकरण ताकि जल निकाय शाश्वतता की ओर पुनः संरेखित हो सकें और पृथ्वी पर ताजा जीवन प्रदान करने के लिए पुनः आरंभ हो सकें।
(ii) जल क्षेत्र में या नदी/झील की सीमा में गंदगी, मैल, गाद, अपशिष्ट और कूड़े के प्रवाह को रोकना, चाहे इस रोक के लिए व्यक्ति या प्रक्रिया या प्रणाली में सुधार की आवश्यकता हो।
(iii) नदी/झील के अंतर्वाह चैनलों का पुनरुद्धार।
(iv) नदी/झील के साथ उचित संपर्क की अनुमति देने के लिए प्लेटफार्मों और सहायक सेवाओं का पुनरुद्धार या पुनर्निर्माण।

(v) उन सभी केन्द्रों/संस्थाओं का पुनरुद्धार या पुनर्निर्माण जो नदी/झील की निरन्तरता बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं, तथा साथ ही उन सभी संस्थाओं को बंद करना/छोड़ना/नष्ट करना जो समय के साथ स्थापित हो गईं तथा अब नदियों के समुचित रखरखाव में बाधा बन गई हैं, उदाहरण के लिए बोतलबंद पानी के बड़े पैमाने के उद्योग तथा पर्यटक रिसॉर्ट, जिनमें से अनेक जल निकायों को प्रदूषित करते पाए गए हैं।
(vi) नदियों को आपस में जोड़ना विनाशकारी है, हालांकि तालाबों को आपस में जोड़ा जा सकता है।
(vii) छोटे से मध्यम स्तर के जल उपचार संयंत्र जो कि रसोई के अपशिष्ट जल को उपचारित कर सकते हैं, उन्हें घरेलू और सामुदायिक स्तर पर स्थापित किया जाना चाहिए ताकि कम से कम शौचालय फ्लश में, बगीचों में पानी देने आदि के लिए इसका पुनः उपयोग किया जा सके।
(viii) शहरों में ओवर ब्रिज के आसपास, सड़क के पार, तालाब/झील/नदी के किनारे वर्षा जल संचयन आसानी से किया जा सकता है।
(ix) कागज की खपत में कमी (समाचार पत्रों और उसके पृष्ठों पर प्रतिबंध लगाकर,

कागज के थैलों, कार्डबोर्ड और हार्डबोर्ड के स्थान पर जूट या कपड़े के थैलों का प्रयोग, कागज और कलम के स्थान पर स्लेट और पेंसिल का प्रयोग, पुस्तकालयों को बढ़ावा देकर शिक्षा प्रणाली में पुस्तकों के मुद्रण को प्रतिबंधित करना तथा व्यक्तिगत पुस्तकों के स्थान पर स्कूल, कॉलेज और सोसायटी में पुस्तकों के साझा संग्रह की व्यवस्था करना।
(x) मूर्तियों, फूलों और यज्ञ के अवशेषों का धार्मिक विसर्जन जल निकायों में तभी किया जा सकता है जब इनमें मिट्टी की सामग्री और प्राकृतिक रंग शामिल हों, हालांकि इसके लिए समानांतर सामाजिक–धार्मिक चर्चा/पहल की आवश्यकता है।

(4.बी). प्रदूषण अवांछित चीजों का वांछित स्थान पर जमा होना या किसी ऐसी चीज का जमा होना है, जहां उसकी जरूरत नहीं है। ऐसा संचय चाहे वह हवा, पानी या जमीन में हो, न केवल हवा, पानी, धरती बल्कि अग्नि और मुक्त स्थान यानी समग्र पारिस्थितिकी तंत्र के प्राकृतिक संतुलन में भी गड़बड़ी पैदा करता है और इसे सुधारने के लिए, शायद हमें अपनी बुनियादी जीवन शैली को फिर से उन्मुख करने की आवश्यकता है, जिसके लिए निम्न की आवश्यकता है:

(i) सभी प्रकार के दहन में दक्षता में सुधार तथा ऑटोमोबाइल एवं विद्युत क्षेत्र में उपभोक्तावाद को बढ़ावा देना बंद करना जैसे ऋण की आसान उपलब्धता, मूल्य ह्रास लाभ तथा वाहन भत्ते। ऊर्जा क्षेत्र में ऊर्जा संरक्षण तथा केवल लागत/टैरिफ में वृद्धि करने के स्थान पर अपव्यय एवं उपयोग के अनुकूलन (न्यूनतमीकरण) को प्रोत्साहित करना होगा।

(ii) पेड़ों को काटने की अनुमति उन जगहों पर देनी होगी जहाँ इससे यातायात में बाधा उत्पन्न हो रही है और बदले में प्रदूषण बढ़ रहा है। उद्योग में विशेष निर्वहन के लिए विशेष पौधों/पेड़ों का पता लगाने के लिए अनुसंधान और विकास को प्रोत्साहित करना होगा। उद्योग में बाड़ और खंभों पर वृक्षारोपण की अवधारणा को प्रोत्साहित करना होगा।

(iii) ऑटोमोबाइल और अन्य हॉर्न की डेसिबल सीमा को विनिर्माण स्तर पर ही लागू करना होगा। हॉर्न/लाउडस्पीकर के अत्यधिक उपयोग को प्रतिबंधित करने की आवश्यकता है (मौद्रिक जुर्माने के माध्यम से)

(iv) नगर एवं ग्राम नियोजन में प्राकृतिक सूर्य प्रकाश, वायु संचार एवं सौर तापन के उपयोग के लिए वास्तुकला सेवा में सुधार करना होगा।

(v) परमाणु और एस्बेस्टस कचरे को किसी तीसरी दुनिया के देश या समुद्र या अंतरिक्ष में निपटाने की आवश्यकता नहीं है, इसे नो–मैन (बैरन) द्वीप में गहरी खुदाई करने और फिर सीमेंट कंक्रीट की परतें बनाने के बाद संग्रहीत किया जा सकता है।

(4.सी). यह गणना की गई कि हैदराबाद जैसे शहर के लिए, अतिरिक्त दस लाख पेड़ों का आवरण चरम गर्मियों के दौरान भी तीन डिग्री सेंटीग्रेड तापमान को कैसे संतुलित करेगा। यह भी देखा गया है कि अधिक पेड़ होने से चरम सर्दियों के दौरान तापमान उच्च स्तर पर बना रहता है।
एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत में प्रति जिले लगभग बीस लाख (अतिरिक्त) वृक्षों का आवरण, प्रकृति के प्रकोप के परिणामस्वरूप उत्पन्न पर्यावरणीय गड़बड़ियों या पर्यावरण को प्रभावित करने वाली तकनीकी प्रगति के कारण उत्पन्न किसी भी या सभी प्रतिकूल प्रभावों को कम करेगा, जैसे वर्षा, तूफान, बवंडर आदि की निगरानी और नियंत्रण।

इस स्तर के वृक्ष आवरण से हम पक्षियों, जानवरों और मनुष्यों के लिए ताजी हवा और शुद्ध पानी सुनिश्चित कर सकते हैं। अगर हम वनरोपण के संचालन और प्रबंधन पक्ष की ओर देखें, तो अगर एक व्यक्ति लगभग दो सौ पेड़ों की पूरी ज़रूरत को पूरा कर सकता है, तो **यह वनरोपण प्रति जिले दस हज़ार लोगों को रोज़गार/सगाई प्रदान करेगा, जो भारत के कुल सात सौ तिहत्तर जिलों में सत्तर पचास लाख से अधिक है।**
इस कार्य के लिए यह आवश्यक है कि समाज इस कार्य को अपने हाथ में ले और वन विभाग की समवर्ती व्यवस्था को बंद करने के बारे में सोचे। भारत को स्थायित्व प्रदान करने और भावी पीढ़ियों को आशा प्रदान करने का यही एकमात्र तरीका है।
(4.D). ज़रा सोचिए अगर लोग (पुरुष और महिला, लड़के और लड़कियाँ) अपने बैग/पर्स में खाली गिलास या धातु की पानी की बोतल या थर्मस फ्लास्क लेकर चलने लगें, तो क्या समाज उन्हें पीने का पानी मुहैया नहीं करा सकता? क्या समाज बाज़ारों, शॉपिंग सेंटरों, दफ़्तरों, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशनों और हवाई अड्डों पर उचित दूरी पर *पारंपरिक बर्तनों में रखा पीने का पानी उपलब्ध नहीं करा सकता?
सोचिए, इससे कितने फायदे होंगे? क्या रेलवे यात्री ट्रेन के हर डिब्बे में बीस लीटर से ज़्यादा पानी के डिस्पेंसर नहीं लगा सकता और उनका रखरखाव नहीं कर सकता, और अपनी प्लेट में डिस्पोजेबल प्लास्टिक की पानी की बोतलों का इस्तेमाल/बिक्री बंद नहीं कर सकता।
एक गणना: वर्ष 2023 के लिए भारत में पैकेज्ड पानी का अनुमानित कारोबार 403.5 बिलियन रुपये है, जबकि वैश्विक स्तर पर यह वर्ष 2023 के लिए 300 डॉलर/बिलियन था। ये आंकड़े सीधे नल और अन्य उपलब्ध पानी की गुणवत्ता की ओर इशारा करते हैं। ये पैकेज्ड पानी की बोतलें, जो मुख्य रूप से प्रदूषित पानी से बचने के लिए रखी जाती हैं, वास्तव में प्लास्टिक कचरे के रूप में पानी के प्रदूषण में योगदान देती हैं।

पैकेज्ड वाटर में स्टॉक कीपिंग यूनिट (एसकेयू) 15-20 लीटर, 5 लीटर जार और 1-2 लीटर, 500 मिली, 200 मिली बोतलें और 250 मिली पाउच हैं, जिसमें प्लास्टिक पानी की बोतलों का कारोबार पचहत्तर प्रतिशत है, यानी 2022-23 के लिए यह मोटे तौर पर 300 बिलियन रुपये या 30,000 करोड़ रुपये का होगा।

क्या सभी धार्मिक केंद्र मिलकर पूरे देश में सुरक्षित और स्वच्छ जल वितरण की जिम्मेदारी नहीं उठा सकते हैं, ताकि जनता/राष्ट्र का 30,000 करोड़ रुपया बर्बाद न हो, जो नालों और जल निकायों को प्रदूषित कर रहा है। इस कार्य से अकेलेपन से पीड़ित लोगों को सम्मानजनक रोजगार मिलेगा और समाज से उचित और सम्मानजनक पारिश्रमिक भी मिलेगा।

वैकल्पिक रूप से, 30,000 करोड़ के टर्नओवर को देखते हुए, यदि कोई व्यक्ति पैकेज्ड पानी के स्थान पर सुरक्षित पानी की आपूर्ति का पांच लाख रुपये प्रति वर्ष टर्नओवर करता है, तो यह छह लाख लोगों को रोजगार प्रदान करने के बराबर है, यदि मार्जिन कम रखा जाता है, तो भी पानी की यह बिक्री एक व्यक्ति के लिए सालाना न्यूनतम 50,000 रुपये की कमाई पैदा करेगी।

तांबे, पीतल, टिन, स्टेनलेस स्टील और मिट्टी के डिस्पेंसर (एल्युमिनियम को इसके कैंसरकारी गुणों के कारण टाला जा सकता है) को प्लास्टिक के जार के साथ-साथ इसके उपयोग के लिए बढ़ावा दिया जा सकता है। कामोद्दीपक और माउथ फ्रेशनर के लिए भी इसी तरह की गणना की जा सकती है, जिससे जल प्रदूषण कम होगा और बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार/सगाई मिलेगी। सबसे महत्वपूर्ण बात गुणवत्ता का आश्वासन है जिसे स्थानीय संस्थान आसानी से दे सकते हैं।

कहा गया है: **रहिमन पानी राखिये , बिन पानी सब सुन।**
पानी द न (रहीम कहते हैं ; पानी रखो, पानी **के** बिना सब कुछ सूना है, पानी के बिना मोती, आटा और आदमी नहीं **आ सकते) ।**
उपचारक (पांच तत्व, अर्थात अंतरिक्ष, जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी) को पर्यावरण और पारिस्थितिकी को बनाए रखने का आधार कहा जा सकता **है** ।

9. स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था तथा सफाई एवं स्वास्थ्यकर अर्थशास्त्र

निम्नलिखित प्रस्तुत है: अर्थव्यवस्था में सफाई और स्वच्छता की बुनियादी आवश्यकता के संबंध में प्रस्तुतीकरण चार भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2) पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा, (3). समस्या का प्रतिमान, (4), समाधान का प्रतिमान,

(1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा:

ईश्वर स्वच्छ और साफ-सुथरे व्यक्ति, परिवार, समाज और देश के हृदय में निवास करते हैं, यह बात सत्य है, लेकिन दूसरी बात यह है कि अच्छाई हमेशा गंदे और अस्वच्छ वातावरण को त्यागती है, टालती है और उससे दूर भागती है, चाहे वह व्यक्ति हो, परिवार हो, देश हो या समाज हो। इसलिए यदि कोई व्यक्ति जीवन की समृद्धि, विलासिता और सुख-सुविधाओं से ऊब गया है, तो वह व्यक्तिगत स्तर पर स्वच्छता और सफाई को त्यागना शुरू कर दे और परिवार और उसके आस-पास की स्वच्छता और सफाई को कम महत्व दे, तो बीमारी, परेशानी, गरीबी और यहां तक कि गुलामी भी अपने आप आ जाएगी।

इसके विपरीत यदि कोई व्यक्ति प्रकृति के सान्निध्य में स्वस्थ, सुखी और वैभवपूर्ण जीवन जीना चाहता है तो उसे पाखंड (अर्थात सफाई और स्वच्छता के संबंध में किसी धर्मग्रंथ का उपदेश रटना या रटना) त्यागना होगा, लेकिन वास्तव में उसे व्यक्तिगत स्तर पर स्वयं को साफ करना होगा, सफाई को प्राथमिकता देनी होगी, सुविधाएं प्रदान करनी होंगी और सम्मान देना होगा तथा परिवार, पड़ोस और समाज में दूसरों के साथ सहयोग करना होगा ताकि अन्य सभी लोग भी उसका अनुसरण करें।

बुनियादी और विशिष्ट शिक्षा की सफाई और स्वास्थ्य व्यवस्था को बनाए रखने के लिए, समाज के अन्य कार्यों के समान वेतन और भत्ते के साथ सफाई और स्वास्थ्य की अलग धारा, सुझाव और फीडबैक और अनुवर्ती सुधार, अनुसंधान और विकास में वित्त पोषण, अनुसंधान परियोजना का मूल्यांकन तंत्र शासन प्रणाली में शामिल किए जाने योग्य है।

जापान द्वारा विकसित 5S की प्रणाली, जो "हर चीज अपनी जगह पर और हर चीज के लिए जगह, हर समय और हर समय और उसके रिकॉर्ड किए गए मानकीकरण" को केवल भौतिक दुनिया तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि हमारे हर काम (कार्रवाई, भाषण और विचार) और प्रार्थनाओं में भी होना चाहिए। प्रकृति में चील ताजा खाती है जबकि गिद्ध मृत खाता है, समस्या तब शुरू होती है जब गिद्धों को मार दिया जाता है और शव सड़ने के लिए खुले रहते हैं। प्रकृति में हर कोई और हर चीज जब एक दूसरे के साथ बातचीत करती है तो हमारे काम/कार्रवाई,

विचार और प्रार्थना स्थिरता/दीर्घायु की ओर निर्देशित होने की हकदार होती है, जैसे जब हम कपड़े सुखा रहे होते हैं तो प्रार्थना हो सकती है "नदी का पानी नदी में जाने दें, हमारे कपड़े सूखने दें।"

पांच तत्वों अर्थात आकाश, जल, वायु, अग्नि और पृथ्वी का सम्मान करते हुए उपचारक को उपचारित करना, पर्यावरण और पारिस्थितिकी के साथ हमारी अंतःक्रिया का आधार होना चाहिए।

मुद्दे और उसकी व्यापक रूपरेखा पर निम्नलिखित प्रस्तुत है:

(1.A) ऐसा कहा जाता है कि हृदय (अर्थात प्रत्येक प्राणी में विश्वास) मन और शरीर के प्रत्येक भाग को रक्त (ऊर्जा देता है) की आपूर्ति करता है, यह रक्त परिणामस्वरूप मन को चलाता है जो शरीर के प्रत्येक भाग को गतिशील या गतिशील बनाता है।
वैज्ञानिक क्षेत्र में कहा जाता है कि: "मन पदार्थ को गति देता है", अर्थात, यह हमारा मन ही है जो हमारे हाथ, पैर और पूरे शरीर (पदार्थ) की गति/गति बनाता है, जो बदले में (हमारे शरीर की गति) आसपास की अन्य चीजों को स्थानांतरित कर सकता है ताकि व्यक्ति अपने मन और उसके नियंत्रक हृदय/आस्था (पसंद, नापसंद या अन्य योजना) के अनुसार खुद को, अपने परिवार, समाज और आसपास की अन्य चीजों को बदल सके।

उपसिद्धांततः यह कहा जा सकता है कि हम में से प्रत्येक का मन हमारे द्वारा की जाने वाली गतिविधियों, हमारे द्वारा किए जाने वाले कार्यों, हमारे द्वारा खेले जाने वाले नाटक से प्रतिबिम्बित होता है, अर्थात् यह कहा जा सकता है कि हम में से प्रत्येक के मन (विशेष रूप से हृदय/विश्वास) का आकलन हमारे द्वारा की जाने वाली गतिविधियों और हमारे द्वारा अभिव्यक्त भौतिक वास्तविकता से किया जा सकता है।

यदि हम चारों ओर गंदगी देख रहे हैं तो यह स्पष्ट है कि हम में से प्रत्येक का मन खराब हो गया है और हम में से लगभग सभी का विश्वास/हृदय हिल गया है, व्यक्तिगत रूप से भी और सामूहिक रूप से (परिवार, समाज, देश और उसकी व्यवस्थाएं)।
विश्वास खोने के परिणामस्वरूप, हममें से अधिकांश लोग जीवन में आशा खोना शुरू कर देते हैं और असहाय, निराश, आत्मघाती और हर नए वायरस, बैक्टीरिया और बीमारियों के प्रति अतिसंवेदनशील होते जा रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में, जो लोग अकेले हैं, उन्हें छोड़कर बाकी सभी न केवल सिस्टम की गंदगी/गंदगी से पीड़ित हैं, बल्कि बीमारी और रोग को बढ़ाने में भी योगदान दे रहे हैं।

हमारी सामूहिक पीड़ा और उसके परिणामस्वरूप पतन तब सबसे निचले स्तर पर पहुंच जाता है जब हमारे नेता, मीडिया और जन मंच लगातार स्थिति को देखते रहते हैं, पढ़ते-सुनते-लिखते रहते हैं और बीमारी और व्याधि के अलावा किसी और काम में हिस्सा नहीं लेते। इसके बजाय वे स्वास्थ्य, खुशी और स्वस्थता बढ़ाने वाले कामों में समय और ऊर्जा लगाते हैं। दुनिया के अधिकांश देशों में ऐसी ही स्थिति है।
क्या इससे यह संकेत नहीं मिलता कि अब समय आ गया है कि हम प्रार्थना करें और स्वयं में तथा प्रकृति में अपना विश्वास पुनः स्थापित करें?

(1.बी) संयुक्त राष्ट्र भले ही बेहतर स्वच्छता की बात करे, लेकिन मच्छर भगाने वाली दवाइयों, मच्छरों से बचाव वाली क्रीम, मच्छरदानी, फेस मास्क और सैनिटाइजर की बिक्री, हवा और पानी को शुद्ध करने वाले उपकरणों की बिक्री, दवाइयों, डॉक्टरों, प्रयोगशालाओं और अस्पतालों के बिलों में बढ़ती हुई वृद्धि, और परिणामस्वरूप गंभीर और मानसिक रोगियों की संख्या में वृद्धि, बेहतर स्वच्छता के किसी भी दावे के खिलाफ बहुत कुछ कहती है।

स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के संबंध में सामने आई समस्याओं और इससे जुड़े मुद्दों के समुचित समाधान के लिए यह आवश्यक है कि इस मुद्दे पर न केवल संयुक्त राष्ट्र महासभा और देश की संसदों में चर्चा हो, बल्कि शिक्षा केंद्रों में छात्रों, शिक्षकों और शोधार्थियों के बीच भी चर्चा हो तथा आम जनता के बीच भी इस पर चर्चा हो।

स्वच्छता और सफाई के लिए यह आवश्यक है कि हम न केवल गंदगी/कूड़ा-कचरा साफ करें, बल्कि गंदी मानसिकता और गंदी व्यवस्था से भी मुक्ति पाएं और जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह स्वच्छता और सफाई पर स्थायी कानूनों को पुनर्जीवित करें।

(1,सी)। यह सभी के लिए आश्चर्य की बात हो सकती है कि हिंदुओं से लेकर यहूदियों तक, बौद्धों से लेकर जैनों तक, ईसाइयों से लेकर मुसलमानों तक, सिखों से लेकर बहाई तक किसी भी धर्म में सार्वजनिक क्षेत्र की सफाई और उसके साधनों के बारे में बात नहीं की गई है या चर्चा नहीं की गई है, जैसे कि समाज में सफाई कौन करेगा, और वह ऐसा क्यों करेगा, वह किस उम्र में यह कार्य करने में सक्षम होगा और उसके साथ कैसा व्यवहार, सम्मान और पुरस्कार किया जाएगा। फिर लगभग सभी धर्म यह स्पष्ट नहीं करते कि व्यक्ति के जीवन में विभिन्न आयु में उसका अधिकार और उत्तरदायित्व क्या होगा, उसका हिस्सा और योगदान क्या होगा, समाज/सरकार से व्यक्ति क्या अपेक्षा कर सकता है और समाज और सरकार उससे क्या अपेक्षा कर सकती है, फिर अन्य पशु-पक्षियों, मछलियों, पेड़-पौधों, पर्यावरण और प्रकृति के प्रति व्यक्ति का अधिकार और उत्तरदायित्व क्या होगा, कम से कम स्वच्छ और स्वास्थ्यकर वातावरण बनाए रखने के

संबंध में, और इस तरह वह अपने ही अनुयायी को विकलांग बनाता है, जब उसे समग्रता में जीवन से निपटना पड़ता है।

तर्क दिया जाता है कि आस्था और प्रजनन हर प्राणी में जन्मजात होता है, जो मनुष्य सहित हर प्राणी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए अगर हम हर जगह गंदगी/मैलापन देख रहे हैं, तो यह निश्चित है कि धर्म और क्षेत्र से परे लोगों के एक बहुत बड़े वर्ग की आस्था डगमगा गई होगी। यह भी कहा जा सकता है कि ये सभी धर्म अपनी ऊर्जा खो चुके हैं और इनका प्रभाव काल समाप्त हो चुका है, जिसके परिणामस्वरूप ये अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं और अपने अनुयायियों को नियंत्रित करने, उनका मार्गदर्शन करने में असमर्थ हैं। ऐसे में सभी जगहों पर मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक गंदगी का दिखना स्वाभाविक है।

यह हमें एक बहुत ही बुनियादी सवाल उठाने के लिए कहता है: क्या ये सभी धर्म हमें आगे ले जाने में सक्षम हैं या हमें सामूहिक रूप से मूल धर्म/मज़हब पर फिर से विचार करना होगा जो स्वच्छता और स्वास्थ्य सहित समुदाय की सभी बुनियादी और स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा कर सके?

(1.डी) यदि हम अपने शिक्षा केन्द्रों की स्थिति देखें, जहां सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता और स्वास्थ्य का पाठ पढ़ाया जाता है तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इसकी महत्ता को दर्शाने के लिए विद्यालय में इसका चित्रण किया जाता है, तो यह निश्चित है कि वर्तमान में हमें निराशा ही हाथ लगेगी।

दरअसल, ज़्यादातर शिक्षा केंद्रों में सफ़ाई का काम कम वेतन वाले कर्मचारी या फिर ठेके पर काम करने वाले कर्मचारी को सौंपा जाता है। ये कर्मचारी या कर्मचारी फर्श साफ करते हैं, फर्श पोंछते हैं, शौचालय को रोज़ाना एक बार साफ करते हैं, लेकिन कमरे की चार दीवारें, छत और छज्जा, दरवाज़े और खिड़कियाँ, पंखे और एयर कंडीशनर, लाइटिंग के सामान, टेबल-कुर्सी के अंदर का हिस्सा, कचरे की बाल्टियाँ आदि कभी-कभार ही साफ करते हैं। इस तरह बहुत सारा काम अधूरा रह जाता है।

फाइलों और अन्य अभिलेखों से, पुस्तकालय में पुस्तकों से तथा स्टोर में रखे सामानों से धूल को शायद ही कभी साफ किया जाता है, फिर संस्थान के बगीचे में पौधों और पेड़ों की पत्तियों पर पानी छिड़कने या बौछार करने की तो बात ही क्या की जाए, ताकि व्यापक स्वच्छता का दिखावा किया जा सके।

अगर यह स्थिति शिक्षण संस्थानों की है, तो फिर सामान्य सफाई की अपेक्षा कैसे की जा सकती है, चाहे वह घर हो, दफ्तर हो या सार्वजनिक स्थान? अगर शारीरिक सफाई की स्थिति ठीक नहीं है (जो कि दिखाई देती है और करना भी कुछ हद तक आसान है), तो माध्यमिक सफाई और तृतीयक सफाई यानी मन और हृदय के स्तर के बारे में क्या कहा जा सकता है?

(1.इ) घर में माता, पिता, बड़े भाई–बहन छोटे बच्चों का मल साफ करते हैं और बच्चे का सम्मान अर्जित करते हैं तथा जीवन भर बच्चों के प्रति समर्पित और आदरपूर्ण रहते हैं। यह कहा जा सकता है कि जो नौकर बच्चे का मल साफ करता है, बच्चे की देखभाल करता है, वह भी बच्चे के लिए बड़े भाई–बहन, माता–पिता या चाचा–चाची के समान आदर का पात्र बन जाता है। ऐसा कहा जाता है कि जो कोई भी घर में बच्चे का मल साफ करता रहता है (बिना किसी गुप्त उद्देश्य के) वह बच्चे के बड़े भाई–बहन के बराबर सम्मान का पात्र है।

अगर कोई व्यक्ति न केवल एक छोटे बच्चे या शिशु का बल्कि पूरे परिवार और समाज का मल साफ कर रहा है, तो उसे कितना सम्मान मिलना चाहिए? क्या किसी भी मामले में घर या किसी भी घर या कॉमन एरिया में बच्चे का मल साफ करना एक छोटा काम माना जा सकता है और यह अपमानजनक व्यवहार है? शौचालय और बाथरूम की सफाई प्रार्थना स्थल में दीपक जलाने से कम महत्वपूर्ण नहीं है और इसे भी उतना ही महत्व दिया जाना चाहिए, जितना कि उससे अधिक। अगर हम घर के परिदृश्य को देखें और कॉमन एरिया में मल साफ करने और मल को साफ करने वालों को समान दर्जा/सम्मान दें, तो समाज एक जीता–जागता स्वर्ग बन जाएगा!

लेकिन अफसोस! कई भौगोलिक क्षेत्रों में सार्वजनिक क्षेत्र की गंदगी साफ करने और पेशाब के बर्तन को तोड़ने का काम शुरू में दासों या पकड़े गए कैदियों को सजा के तौर पर करने के लिए मजबूर किया जाता था, फिर यह उसी तरह जारी रहा, इसलिए उन्हें नीच समझा गया और इससे जुड़े लोगों को अछूत माना गया, खासकर उन भौगोलिक क्षेत्रों में, जहां उनका क्षेत्रीय धर्म सामूहिक सफाई के बारे में मौन है (इसके विपरीत जहां काम का वितरण व्यक्ति की पसंद, क्षमता और योग्यता के अनुसार, वह भी समान स्तर पर, स्पष्ट रूप से बताया गया था)।

(1.एफ) वर्तमान समय में, समाज में मच्छर भगाने वाली दवाओं और वाणिज्यिक माध्यमों के आविष्कार और परिचय के बाद समग्र सफाई में गिरावट गंभीर हो गई है। मच्छर भगाने वाली दवा निर्माता और इसके खुदरा श्रृंखला संचालक मच्छरों के उन्माद को बढ़ाने के लिए नगर पालिकाओं को बिना साफ किए, गंदे और सीवरेज को बंद करने के लिए रिश्वत देने में सक्षम थे। लोगों की आलस्य और विकल्पों की अनुपलब्धता के कारण सामान्य सफाई और भी खराब हो गई है,

सरल जीवनशैली और अनावश्यक कचरा पैदा न करने की प्रवृत्ति के कारण गांव और उसके निवासी अधिकांश शहरों और महानगरों और वहां के लोगों की तुलना में अधिक स्वच्छ नजर आते हैं, वह भी महंगी कचरा निपटान प्रणालियों के बाद भी। शहरों और महानगरों में कई बार एक हिस्से को साफ करने के चक्कर में बाकी सारे हिस्से गंदे हो जाते हैं। इन शहरों और महानगरों में कितना कचरा पैदा होता है, इसका अंदाजा कबाड़ के कारोबार से लगाया जा सकता है, कबाड़ के कारोबार की मात्रा का अंदाजा शहरों और महानगरों के हर मोहल्ले में सुबह से शाम तक कबाड़ खरीदने वालों द्वारा मचाए जाने वाले शोर से लगाया जा सकता है। कई लोगों को यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि हम वाकई इतना कचरा पैदा करते हैं कि कुछ कबाड़ विक्रेता अब दुनिया के सबसे अमीर लोगों में गिने जाते हैं।

(1.जी). हममें से बहुत से लोग जो सफाई और स्वच्छता के बारे में अधिक बात करते हैं, वे ऐसे उत्पादों, प्रक्रियाओं और सेवाओं को अपनाते पाए जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पहले से कहीं अधिक गंदगी और अस्वास्थ्यकर स्थितियाँ पैदा होती हैं। ऐसे चार उदाहरण नीचे दिए गए हैं:

(ए) इसका एक उदाहरण आधुनिक कमोड है जो आमतौर पर क्रोध को बढ़ाता है और इसलिए पेट गंदा रहता है। गंदा पेट सभी बीमारियों की जड़ माना जाता है, चाहे वह शारीरिक, मानसिक या भावनात्मक हो।

शहरी सीवेज प्रणाली का वर्तमान सामूहिक प्रकार जल निकायों (तालाब, नदी और समुद्र तल) और भूजल में अधिक प्रदूषण जोड़ रहा है।
आश्चर्य की बात यह है कि जल उपचार संयंत्र भी बाद के उपयोगकर्ताओं के लिए प्रदूषण बढ़ा रहे हैं, क्योंकि जल उपचार प्रक्रिया के दौरान उनमें रसायन और क्लोरीन गैस मिला दी जाती है।
बर्तनों, फर्शों, बाथरूमों, रसोईघर तथा नहाने के लिए हम जो भी सफाई एजेंट और डिटर्जेंट प्रयोग करते हैं, उनसे लाखों गैलन पानी प्रदूषित हो जाता है।

(ख) मोटापा, एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या है जो कि कुछ और नहीं बल्कि मन और शरीर के अंदर गंदगी का जमा होना है, जिसे पैकेज्ड फूड (सभी खाद्य पदार्थ जिनमें प्रिजर्वेटिव होते हैं, पेट में बहुत लंबे समय तक संरक्षित रहते हैं, यानी आसानी से पचते नहीं हैं, पाचन में बार-बार समस्या होना यानी अपच मोटापे का एक प्रमुख कारण है) का परिणाम कहा जा सकता है, जो कि मोटर वाहन, मोबाइल फोन और आधुनिक समय के कमोड और तंग बाथरूम हैं।

(ग) घरों में छत की ऊंचाई कम होने से अति आवश्यक वेंटिलेटर की आवश्यकता समाप्त हो गई है; परिणामस्वरूप, घर में हवा का प्रवाह और तापमान बनाए रखने के लिए आवासीय क्षेत्र में विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ गई है।

आवास क्षेत्र में निर्माण डिजाइन में और अधिक संशोधन के कारण सभी नए मकान सर्दियों में ठंडे और गर्मियों में गर्म हो गए हैं, जिसके परिणामस्वरूप बिजली का उपयोग बढ़ गया है, जिससे बिजली की मांग बढ़ गई है, जो कोयला, गैस, तेल, पानी या यहां तक कि हवा से उत्पादित होने पर प्रदूषण पैदा करती है और परमाणु स्रोत से उत्पादित होने पर भय पैदा करती है।

(घ) हम सभी एक ऐसा परिदृश्य देख रहे हैं, जहां रसोई में खाद्य पदार्थों को पीसने जैसे सामान्य यांत्रिक कार्य विद्युत चालित मशीनों और रोबोट संयंत्रों द्वारा किए जा रहे हैं और ब्रांडों द्वारा बेचे जा रहे हैं, जो बदले में आसानी से मानव हाथों से किए जा सकते हैं और विकसित दुनिया की सरकारों को अविकसित और विकासशील देशों में अकेलेपन और बेरोजगारी की समस्या से निपटने में मदद कर सकते हैं और बिजली की खपत और प्रदूषण को कम करने में भी मदद करेंगे, जो बिजली के उत्पादन में होता है।

(1.एच) स्वच्छता जिसे आसानी से परिवार और समाज के स्तर पर सुलझाया जा सकता है, एक अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है, जिसे इस तथ्य से समझा जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र ने हाल ही में (2013 से) स्वच्छता और स्वास्थ्य पर एक बहुत बड़ा कार्यक्रम शुरू किया था, जिसका शीर्षक था "टेक पू टू द लू" अर्थात शौचालय को शौचालय में ले जाएं, और कई देशों को शौचालयों के निर्माण और खुले में शौच (मनुष्यों द्वारा) को समाप्त करने के लिए वित्त पोषित किया। इसके परिणामस्वरूप करोड़ों शौचालयों का निर्माण हुआ और खुले में शौच की आलोचना करने वाले कई विज्ञापन जारी किए गए।

इस प्रमुख कार्यक्रम के बाद भी हमने दुनिया भर में वायरस और बैक्टीरिया की लहर देखी है, जो यह दर्शाता है कि यह कार्यक्रम न केवल बुरी तरह विफल रहा है, बल्कि इसने दुनिया में और अधिक गंदगी/कूड़ा-कचरा और अस्वास्थ्यकर स्थिति पैदा की है, जो वायरस और बैक्टीरिया के पनपने और फिर महामारियों और विश्वव्यापी महामारी के बढ़ने के लिए उपयुक्त है।

वायरस और उसके परिणामस्वरूप महामारी और वैश्विक महामारी (पिछले दो-तीन वर्षों में एक के बाद एक) के प्रसार को रोकने, नियंत्रित करने और समाप्त करने में इस सामूहिक संस्था (संयुक्त राष्ट्र) की विफलता इस संस्था और इससे जुड़े नेताओं की दुनिया का नेतृत्व करने में अक्षमता को दर्शाती है। यह स्वच्छता और अन्य बुनियादी मुद्दों के समाधान के लिए एक व्यावहारिक रास्ता प्रदान करने के लिए एक नए दृष्टिकोण, नई सोच और सामूहिक प्रयास की मांग करता है।

वायरस: 'वर्चुअल इंटेलिजेंस रिट्रीवल अंडर सीज' का संक्षिप्त रूप है, जो आम तौर पर गंदगी की वजह से बढ़ता है, विकसित होता है, फैलता है और फिर उत्परिवर्तित होता है। यह किसी भी मध्यस्थता से परे होगा कि बड़े पैमाने पर शौचालयों के निर्माण के बिना (जो पाइप्ड रसोई गैस की निर्बाध आपूर्ति, मुफ्त एलपीजी सिलेंडर, मुफ्त राशन और पैसे के लेन-देन के डिजिटलीकरण द्वारा प्रमाणित हुआ) कई देशों में लॉकडाउन संभव नहीं हो सकता था। क्या यह इस बात का संकेत नहीं है कि स्वच्छता एक ऐसा मुद्दा है जिस पर न केवल संयुक्त राष्ट्र बल्कि हम सभी को स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय स्तर पर अपने स्वस्थ और खुशहाल भविष्य के लिए विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है?

(1.के) यदि कोई कहता है कि संयुक्त राष्ट्र का स्वच्छता कार्यक्रम सफल है तो यह स्थिति गंभीर चिंताजनक कही जा सकती है तथा पर्याप्त संदेह पैदा होता है कि ऐसी महामारी और वैश्विक महामारी, बीमारियों के प्रकोप के नाम पर पुलिस और प्रशासन के माध्यम से लोगों को सम्मोहित, आतंकित और नियंत्रित करने की योजनाबद्ध कवायद है।

यह आम समझ है कि जो लोग वैक्सीन बना सकते हैं, वे वायरस भी बना सकते हैं और चालाक कला के वे माहिर लोग, जो दूसरों के दुखों से लाभ कमाना चाहते हैं, वे त्वरित परिवहन के विभिन्न साधनों, विज्ञापनों और विशेषज्ञों के पैनल द्वारा सशुल्क चर्चा के माध्यम से वायरस को आसानी से फैला सकते हैं तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से लोगों को बीमार होने के लिए राजी कर सकते हैं।

यह सर्वविदित है कि वायरस का आकार दो नैनोमीटर से लेकर चार सौ नैनोमीटर तक होता है और बैक्टीरिया का आकार एक माइक्रोमीटर होता है, जिसे किसी भी मास्क के माध्यम से लंबे समय तक फैलने से नहीं रोका जा सकता है, लेकिन दुर्भाग्य से कई विशेषज्ञ बीमारियों को रोकने के लिए मास्क पहनने की सलाह दे रहे हैं। मास्क पहनने के ऐसे तर्कों को प्राचीन काल से ही नंगे घूमने वाले साधु-संतों द्वारा खारिज किया जाता रहा है और कहा जाता है कि मानव शरीर संपूर्ण विकास का फल है और भगवान ने इसे सभी सुरक्षा तंत्र और अनुकूलन क्षमताएं सौंपी हैं और फिर भगवान हम सभी का ख्याल रखते हैं।

इसके अलावा मास्क पहनने का समर्थन करने वाले ये लोग सबसे बड़े अपराध का हिस्सा बन गए हैं जब उनके बहाने पुलिस और प्रशासन ने 'नग्न साधुओं' को मास्क पहनने के लिए मजबूर किया और मास्क न पहनने की स्थिति में जुर्माना वसूला, यह अपराध उस अपराध के बराबर है जो रावण के कर संग्रहकर्ताओं ने नागा साधुओं पर किया था, जब उन्होंने नग्न साधुओं (नागा

साधुओं) से कर राजस्व के रूप में उनका खून वसूला था। क्या किसी व्यक्ति, समूह और देश या फिर एक संयुक्त राष्ट्र से भी प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन किया जा सकता है?

पिछले दो-तीन सालों में देखा जा सकता है कि कई देशों के शीर्ष नेताओं ने बीमारी, मास्क, वैक्सीन आदि पर अपने बार-बार बदलते बयानों और हर फोन कॉल, सार्वजनिक घोषणा पर लगातार बकबक करने के कारण अपनी छवि और छवि खो दी है, जो अपने नागरिकों के लिए उनकी चिंता के बजाय किसी को खुश करने का प्रयास अधिक प्रतीत होता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि ऐसे कई नेताओं के चेहरे पत्थर (भावहीन), आवाज कर्कश और मुस्कान प्लास्टिक जैसी हो गई है, क्या इसकी सराहना की जा सकती है?

(1.एन.) पिछले सौ सालों में पूरी धरती की स्वच्छता इस हद तक कम हो गई है कि कुछ उच्च श्रेणी के लोग अपने धनी, राजघरानों और धार्मिक प्रमुखों और अन्य रक्त-पोतों के समूह के साथ अपने अंतरिक्ष यान कार्यक्रम के माध्यम से पृथ्वी से मंगल/बृहस्पति जैसे अन्य ग्रहों पर अपना आधार स्थानांतरित करने के बारे में सोच रहे हैं। इसके विपरीत कुछ अन्य उच्च श्रेणी के लोग सोचते हैं कि अन्य ग्रहों पर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है; हमें बस इतना करना है कि पृथ्वी से अस्सी-नब्बे प्रतिशत लोगों को खत्म कर देना है और शेष मनुष्यों को नियंत्रित करके पृथ्वी पर ही चीजों को पूरी तरह से सही करना है, जिसे ये तथाकथित उच्च श्रेणी के लोग मानते हैं कि वैश्विक पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा प्रबंधन के साथ लोगों को प्रबंधित करके आसानी से किया जा सकता है। वैश्विक पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा प्रबंधन जैसी प्रणाली के साथ कोई भी व्यक्ति आसानी से नियंत्रित कर सकता है: "लोगों की सहजता और बीमारियाँ, उनका मूड और मूड स्विंग, शरीर और एंटीबॉडी, जीवन और मृत्यु, जिन्हें पहले लोगों को एक या दूसरी बीमारी से संक्रमित करके और फिर निरंतर देखभाल प्रदान करने के बहाने, लोगों को एक या अधिक वैक्सीन (RFID-रेडियो फ्रीक्वेंसी प्रेरित डिवाइस) के साथ इंजेक्ट करके संचालित किया जा सकता है। स्वच्छता और सफाई संयुक्त राष्ट्र से कहीं ज़्यादा समाज का मुद्दा है और समाज द्वारा इसे उचित महत्व दिया जाना चाहिए।

(1.पी). ऐसा लगता है कि (दुनिया की) ज़्यादातर सरकारें लॉबिस्टों की मनमर्जी के हिसाब से योजना बनाती हैं, चाहे वह कच्चे तेल, बिजली (कोयला, तेल, गैस, हाइडल, पवन, सौर, परमाणु, हाइड्रोजन या बायोगैस आदि से) हो, ऑटोमोबाइल, सीमेंट, स्टील और दूसरी धातुएँ, अस्पताल और दवाइयाँ, खाद्य तेल, चीनी, खाद्यान्न और खाद्यान्न, न कि लोगों की ज़रूरतों के हिसाब से। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि लोकतांत्रिक देशों की लगभग सभी सरकारें जनता से शक्ति लेती हैं, लेकिन निजी लोगों के अधीन रहती हैं? ऐसे में यह बिलकुल स्पष्ट है कि देश

निजी लोगों के इशारे पर काम करते हैं और फिर उसे जनता पर थोपते हैं, भले ही उन्हें कुछ टॉफी, लॉलीपॉप और चॉकलेट दी जाएँ।

पिछले पचास सालों से ऐसी ज़्यादातर सरकारें अपनी अर्थव्यवस्था पर नज़र नहीं रख पाई हैं। विडंबना यह है कि एक तरफ़ तो कई देश हमेशा इस बात को लेकर चिंता जताते हैं कि उनके विदेशी भंडार का ज़्यादातर हिस्सा कच्चा तेल खरीदने में खर्च हो जाता है, लेकिन दूसरी तरफ़ वे अपने देश में कई गुना ज़्यादा डीज़ल/पेट्रोल से चलने वाली गाड़ियों और मशीनों को अनुमति देते हैं।

इलेक्ट्रिक वाहन पहली नज़र में वैकल्पिक लगते हैं, लेकिन जब कोई वाहन के निर्माण और नियमित चार्जिंग पक्ष पर जाता है, तो उसे ये भी उतने ही महंगे, प्रदूषण से भरे और विदेशी आश्रित प्रक्रियाएं मिलेंगी। ऐसे परिदृश्य में, क्या पारिस्थितिकी तंत्र का ख्याल रखने वाली आर्थिक कार्रवाई की उम्मीद की जा सकती है? हम (समाज) नियंत्रण और संतुलन स्थापित करने के लिए क्या कर सकते हैं ताकि हमारा पर्यावरण बेहतर हो?

(1.T) बुद्धिजीवियों के समूह, कुछ धनी लोगों, जैसे कि राजघरानों, स्वयंभू धार्मिक और राजनीतिक शक्ति केंद्रों द्वारा नियंत्रित, अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए, जाने-अनजाने में ऊर्जा, धन, ताजी हवा और पानी के सामान्य प्रवाह को बाधित करते हैं और इस तरह पूरी दुनिया को रहने लायक नहीं बनाते हैं। इस तरह की परिस्थितियाँ अधिकांश देशों में मुख्य रूप से इस अवधारणा के कारण प्रचलित हैं कि सरकार पूरी तरह से शक्तिशाली है और वह सब कुछ करेगी और अगर वह खुद कुछ करती है तो वह हस्तक्षेप है और दंडनीय कार्य है।
उदाहरण के लिए, कई देशों में, नगर निकाय ने लोगों की भागीदारी को खत्म कर दिया है, जबकि प्रशासनिक सेवा लोगों को विषय के रूप में संदर्भित करती है, और परिसर में काम को शासक और शासित, प्रबंधक और प्रबंधित के रूप में करती है, जबकि विभिन्न राज्य सरकारों के अस्तित्व ने कमोबेश वही सिलसिला जारी रखा है जो पहले रियासतों में प्रचलित था और इन तीनों ने मिलकर बुनियादी सफाई और स्वच्छता बनाए रखने में भी बाधा उत्पन्न की है, जिसे अन्यथा समाज आसानी से बनाए रख सकता है।
स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं को और अधिक समझने के लिए आप यह देख सकते हैं: (a). "सत्यमेव-जयते सीजन 2 | एपिसोड 3 | अपना कचरा बर्बाद न करें | पूरा एपिसोड (अंग्रेजी उपशीर्षक), 16 मार्च 2014 https://youtu.be/lS0_FCBzI_w,

(1.Z). लॉकडाउन के बाद, हम कई देशों को टूटते हुए देख रहे हैं, क्योंकि वे दूसरे देशों और अंतरराष्ट्रीय बैंकों से लिए गए ऋणों का ब्याज भी नहीं चुका पा रहे हैं। इस अनिश्चित वित्तीय

स्थिति का मतलब है कि इन देशों को भविष्य में पेट्रोलियम उत्पादों, रसोई गैस आदि सहित आवश्यक वस्तुओं के आयात पर भी रोक लगाने के लिए मजबूर होना पड़ेगा, जिससे परिवहन क्षेत्र और दवा, भोजन, रसोई गैस और अन्य आवश्यक वस्तुओं सहित पूरी आपूर्ति श्रृंखला टूट सकती है।

क्या उपरोक्त परिदृश्य यह संकेत नहीं देता कि, न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर भी जीवन शैली में उचित सावधानी बरतने के कारण हैं, विशेष रूप से श्रीलंका जैसे देश में ईंधन तेल, खाना पकाने की गैस के हाल के संकट को देखने के बाद, जहां एक वर्ष में पांच हजार मिमी वर्षा होती है और जहां घने जंगल और प्रचुर मात्रा में जलावन की लकड़ी होती है।

क्या यह परिदृश्य ऑटोमोबाइल की खरीद और रखरखाव के लिए प्रचार गतिविधियों को रोकने की मांग नहीं करता है, जैसे कि आसान ऋण, वाहनों का कर मुक्त रखरखाव भत्ता, बैलेंस शीट में मूल्यह्रास लाभ, किसी व्यक्ति, समाज और देश के लिए लागत लाभ विश्लेषण की अनदेखी करते हुए तुच्छ आधारों पर दस-पंद्रह वर्षों में ऑटोमोबाइल को अप्रचलित कर देना, ऑटोमोबाइल क्षेत्र के पक्ष में कानून में संशोधन, सड़क निर्माण के लिए वन कानूनों में छूट, पेट्रोलियम और संबंधित उत्पादों की खरीद और वितरण में कर के पैसे का बड़ा हिस्सा लगाना आदि।

हम, देश के मालिक, आम जनता कब तक इन लोगों की सनक और सनक के आगे झुकते रहेंगे या इन मुनाफाखोरों के हाथों का मोहरा बने रहेंगे, जो अंधे हो चुके हैं और अपने (उनके सहित) सामूहिक अंधकारमय और अंधकारमय भविष्य का आकलन करने में सक्षम नहीं हैं?

जब सवाल बुनियादी आजीविका और बुनियादी अस्तित्व का भी आता है, तो लोगों के लिए अपनी मांद में या निष्क्रिय अवस्था में रहने का कोई मतलब नहीं है। शायद हमें चूल्हे में जलाऊ लकड़ी और लकड़ी के कोयले का इस्तेमाल फिर से शुरू करना होगा। चूल्हे को बढ़ावा देने और जलाऊ लकड़ी की आपूर्ति के लिए वनरोपण से समग्र वनरोपण में भी मदद मिलेगी, क्योंकि जब मांग बढ़ेगी तो लोगों को जलाऊ लकड़ी के लिए पेड़ लगाने होंगे। यह स्पष्ट है कि जब जलाऊ लकड़ी की मांग बढ़ेगी, तो अधिक से अधिक पेड़ों की आवश्यकता होगी, जिससे रोजगार पैदा होगा और हरियाली बढ़ेगी

इसके अलावा इस तरह के संकटों में स्कूटर और मोटरसाइकिल की जगह साइकिल और घोड़ों को प्राथमिकता देने की भी ज़रूरत होती है। समाज को सिर्फ़ पानी ही नहीं बल्कि सभी दूसरी बुनियादी चीज़ों का प्रबंधन भी अपने हाथ में लेना चाहिए।

(2) **<u>प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा थी:</u>**

(2.A) दिल्ली जैसे महानगरों में लोग SMOG (धुआँ + कोहरा) और उसके दुष्परिणामों से पीड़ित रहते हैं, और दुनिया ग्लोबल वार्मिंग और बढ़ते समुद्र स्तर के बारे में बात करती रहती है और प्रोटोकॉल के बाद प्रोटोकॉल को आगे बढ़ाती रहती है, चाहे वह पेरिस प्रोटोकॉल हो या दावोस घोषणापत्र, लेकिन जब ऑस्ट्रेलिया या अफ्रीका या अमेज़न के जंगल जलकर राख हो जाते हैं और करोड़ों पक्षी और जानवर मर जाते हैं, तो हम शायद ही कोई आवाज़ सुनते हैं। ऐसा लगता है कि कई विश्व नेता गांधी जी के तीन बंदरों के नियम का पालन करते हैं "जब गंभीर पर्यावरणीय अपराध किया जाता है, तो कोई आग नहीं देखते, कोई रोने की आवाज़ नहीं सुनते और कोई शब्द नहीं बोलते। पिछले सौ वर्षों में यह देखा गया है कि कई बार गर्मी या अनजाने में हुई गलती के कारण आग लग जाती है, लेकिन ज़्यादातर बार जंगल में आग लकड़ी की चोरी के लिए जंगलों की अंधाधुंध कटाई को छिपाने के लिए शुरू की जाती है। कई बार जंगलों में आग बड़े और संस्थागत अपराध को शुरू करने के लिए लगाई जाती है ताकि खनन के लिए क्षेत्र को साफ किया जा सके और साथ ही खनन में किसी भी स्थानीय रुकावट से बचा जा सके।

(2.बी). स्वच्छता और स्वच्छता यानी पर्यावरण के प्रति चिंता दिखाने के लिए, देश दर देश करोड़ों पौधे लगाते हैं और उन्हें लुप्त होने देते हैं या मरने देते हैं ताकि अगले साल भी प्रकृति के प्रति यही चिंता दोहराई जा सके। उदाहरण के लिए, भारत सरकार का दावा है कि 37 प्रतिशत वृक्ष और वन क्षेत्र होने चाहिए, जबकि दस्तावेजी और प्रामाणिक आवश्यकताओं के अनुसार यह 21-22 प्रतिशत (वर्ष 2022 में) होना चाहिए, लेकिन बताया जाता है कि वृक्षों के काफी कम कवरेज का यह डेटा फर्जी है और देश में वास्तविक वृक्ष और वन क्षेत्र केवल 14 प्रतिशत है।

जो भी हो, वनों का नियंत्रण आदिवासियों से शहरवासियों के पास, शहरवासियों से राज्य/सरकार के पास जाने के बाद वन और वृक्ष आवरण की स्थिति खराब हो गई है? स्वतंत्र भारत में, हरित क्रांति के नाम पर वन आवरण को इकतीस प्रतिशत से घटाकर उन्नीस प्रतिशत कर दिया गया ताकि कृषि के लिए भूमि उपलब्ध हो सके, फिर इसे किसी न किसी कारण से कम किया गया, जैसे उद्योग स्थापित करना, सड़क, रेलवे लाइन का निर्माण, खनन, या सौर पैनल लगाकर हरित ऊर्जा प्रदान करना या सरकार/प्रधानमंत्री द्वारा भूमिहीन मजदूरों को कृषि के लिए भूमि प्रदान करना।

(2.सी). वास्तविकता को समझने के लिए कोई भी प्रामाणिक साहित्य देख सकता है कि कैसे एक के बाद एक आक्रमणकारियों को शक्तिशाली गंगा और गंगा बेसिन के घने जंगलों ने मगध साम्राज्य के केंद्र (पाटलिपुत्र-पटना) से दूर रखा। गंगा के इस सबसे उपजाऊ बेसिन में जहाँ घने

जंगल शेरों और अजगरों को प्राकृतिक रूप से प्रमुखता प्रदान करते थे, अब रेगिस्तान बनते हुए दिखाई देते हैं, जहाँ बकरियों और ऊँटों का बसेरा है। विभिन्न गणनाओं और शास्त्रों में दर्ज अभिलेखों के अनुसार वन और वृक्ष आवरण सैंतीस प्रतिशत है, जिसका वितरण मानव (पुरुष और महिला संयुक्त) शरीर में बाल और केशिकाओं जैसा हो सकता है।

सम्पूर्ण भारत का सबसे उपजाऊ क्षेत्र बहुत तेजी से रेगिस्तान बनता दिख रहा है, क्या इसे स्वस्थ और खुशहाल स्थिति कहा जा सकता है? क्या इस परिदृश्य में योजनाकार, राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था की भूमिका की कोई सराहना कर सकता है? शायद हमें बहुत मंथन करना होगा और समाज और उसके मूल धर्म को पुनर्जीवित करना होगा?

(2.D) जिन लोगों को हम ऊर्जा, मशीनें और यहां तक कि रोटी उपलब्ध कराकर मानवता की मदद करने वाला मानते हैं, वे ऐसा नहीं करते हैं, बल्कि मदद के नाम पर वे न केवल मानवता को बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

किसान एक ऐसा समुदाय है जिसके बारे में हमें विस्तार से चर्चा करनी होगी। वे गरीब क्यों हैं, जबकि यह आम बात है कि किसान बहुत मेहनत करते हैं?
यह किसानों का काम है – पागलपन का कर्म, शैतान जैसी क्रूरता जो किसानों को सबसे अधिक अभिशप्त समुदाय बनाती है, जिसके परिणामस्वरूप वे गरीबी से त्रस्त और दुखी होते हैं। यह विस्तार से कहा जा सकता है कि किसानों की दुर्दशा में कुछ भी असामान्य नहीं है, अगर हम इस मुद्दे को कारण और प्रभाव के दृष्टिकोण से देखें।

किसान पेड़ों को काटते हैं और बड़े पेड़ों को बढ़ने नहीं देते जिससे धरती प्यासी हो जाती है, वे बैलों को बधिया कर देते हैं, वे गायों का सबसे भयानक तरीके से इस्तेमाल करते हैं (कृत्रिम गर्भाधान, उन्हें मांसपेशियों को आराम देने वाली दवाई का इंजेक्शन देकर आसानी से मल्चिंग करवाना जिससे गाय जहरीली हो जाती है जिससे सभी गिद्ध मारे गए हैं – जो प्राकृतिक रूप से मैला ढोने वाले जीव हैं) और जब वह दूध देना बंद कर देती है तो उसे कूड़े के ढेर में कूड़ा खाने के लिए छोड़ देते हैं और खुद मर जाते हैं या कसाईखाने में चले जाते हैं। इन किसानों और दूध उत्पादकों को दूध में कास्टिक सोडा मिलाने और सब्जियों पर दर्द निवारक दवाई छिड़कने आदि से कोई गुरेज नहीं है।

हालाँकि किसान लोगों को उनके नाश्ते बनाने में मदद करते हैं, लेकिन उन्हें सभी साँपों को मारने में कोई आपत्ति नहीं है, जिससे ज़हर साँपों के सिर में जमा होने के बजाय धरती पर फैल जाता है। साँप किसी के दुश्मन नहीं हैं; वे हमारी स्थिरता के बराबर के भागीदार हैं।

शोध प्रयोगशालाओं में कीटनाशक, कीटनाशक और शाकनाशी बनाने वाले किसानों के साथ-साथ किसान भी धरती को ज़हर देने में बराबर के भागीदार पाए गए हैं। यह किसानों और समाज के रूप में हम सभी की अंधता है जो हमारे सामने आने वाली अधिकांश समस्याओं का कारण है। इसके विभिन्न पहलुओं को और अधिक समझने के लिए "सत्यमेव जयते S1 | एपिसोड 8 | विषाक्त भोजन | पूर्ण एपिसोड (हिंदी), 24 जून 2012, https://youtu.be/Fbc5K9EpTQw ," देखना पसंद कर सकते हैं।

(2.E) यह सर्वविदित तथ्य है कि स्वतंत्रता और प्रत्येक अवसर अपने साथ बहुत सारी जिम्मेदारियां लेकर आता है, और जो लोग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने में असफल होते हैं, वे स्वतंत्रता से वंचित हो जाते हैं और दुखी हो जाते हैं।
यह ध्यान देने योग्य बात है कि खेती के अलावा कहीं और उत्पादन लागत से कहीं ज़्यादा नहीं मिलता, किसान एक बीज बोता है और सैकड़ों बीज प्राप्त करता है। इस तथ्य ने कथित तौर पर किसानों को खुश और आलसी बना दिया है, जिससे उन्हें बड़े परिवार, धूमधाम और उत्सव मनाने की आदत पड़ गई है। इसे भारत जैसे देशों में बड़ी आबादी, गरीबी, पराधीनता और दुखों के मुख्य कारणों में से एक माना जा सकता है। बुनियादी नैतिकता की अनदेखी करके अत्यधिक खेती में शामिल होने वाले किसान और एजेंट बाढ़, सूखे, मिट्टी के कटाव, घटते भूजल स्तर, रेगिस्तानीकरण और अन्य सभी संबंधित समस्याओं और परिणामस्वरूप कृषि प्रधान देशों की बर्बाद अर्थव्यवस्था के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार हैं।

(2.एफ) हमने भले ही खाद्य सुरक्षा हासिल कर ली हो, लेकिन हमारे फलों की टोकरी काफी हद तक खाली हो गई, शायद इसका कारण खाद्यान्न को अत्यधिक महत्व और फलों के प्रति कम रुचि हो सकती है।

सवाल सिर्फ़ कॉन्ट्रैक्ट फ़ार्मिंग और जैविक खेती का ही नहीं है, बल्कि खेती कितनी, कहाँ और किस तरह की हो, सवाल यह भी है कि कृषि उपज, वनोपज और मैनुअल सेवा की बिक्री लागत औद्योगिक उपज और वकील, डॉक्टर और शैक्षणिक कोचिंग जैसी सलाहकार सेवाओं के मुक़ाबले कैसे तय की जाए। इसके अलावा सवाल यह भी है कि लोन, क्रेडिट कार्ड और बीमा सुविधाएँ और उनकी सेवा शुल्क और ब्याज दरें किसानों और कृषि से जुड़े लोगों को बहुत तकलीफ़ और पीड़ा पहुँचा रही हैं। ऐसा लगता है कि हम ज़मीनी स्तर से लेकर सबसे ऊपर तक व्यवस्था को बेधड़क तोड़ रहे हैं?

चूंकि कोई भी देश कृषि के बिना लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता है, इसलिए समाज को खेती और वानिकी के बीच प्राकृतिक संतुलन बनाने के बारे में सोचना होगा, भले ही इसके लिए

हमें अप्रिय कदम उठाने पड़ें और हम सभी को प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़े। ऋषि और कृषि (ऋषि और कृषि) तब तक सम्माननीय रह सकते हैं जब तक कृषि खुद को संस्कृति के रूप में बनाए रखती है, लेकिन एक बार जब यह प्राकृतिक लय के मूल सिद्धांतों को भूल जाती है और बैल को बैल में बदल देती है तो इसका पतन निश्चित है।

(2.जी). यह स्पष्ट है कि कच्चे माल के बचे हुए हिस्से गायों के लिए भोजन हैं और पके हुए माल के बचे हुए हिस्से कुत्तों, मेंढकों, बत्तखों, मुर्गियों आदि के लिए भोजन हैं, अगर उन्हें समय पर पहुँचाया जाए, अन्यथा अगले दिन वे कचरा बन जाते हैं। घर-घर जाकर कचरा इकट्ठा करने में नगर निगम के शामिल होने के कारण डंप यार्ड में उससे कहीं ज़्यादा कचरा जमा हो गया है, जितना वह साफ़ करने का दावा करता है। इस तरह हम सबसे पहले कचरा पैदा करते हैं और समाज में स्वच्छता और स्वच्छता की समस्याएँ पैदा करते हैं।

गांवों में लोग कहते हैं कि अगर हम समय रहते कच्चे खाद्य अपशिष्ट (जैसे सब्जियों के बचे हुए) को गायों, भैंसों को और पके हुए खाद्य अपशिष्ट को कुत्तों और गायों को दे दें तो बायोडिग्रेडेबल कचरा जमा ही नहीं होगा। इसके अलावा अगर हम प्लास्टिक या थर्मोकोल की वस्तुओं की जगह डिस्पोजेबल मिट्टी के कप, तश्तरी और पेड़ के पत्तों की प्लेट, दोबारा इस्तेमाल होने वाले थर्मस फ्लास्क/धातु की पानी की बोतल का इस्तेमाल करें तो गैर-बायोडिग्रेडेबल कचरा/स्क्रैप भी पहले स्थान पर कम हो जाएगा।

लेकिन गांव में वे खुद को उस गंदगी से निपटने में असमर्थ पाते हैं जिसे ये अखबार, मीडिया, नैतिक उपदेशक, अनगिनत चुनावी भाषण, धार्मिक संस्थाओं के लाउडस्पीकर और इंटरनेट लगातार युवाओं के दिमाग में फैला रहे हैं और प्रदूषित कर रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप लोग बीमार हो रहे हैं और सामान्य समय में भी ऊंची आवाज और गुस्से में बात करते देखे जा सकते हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां सरकार/समाज को सफाई पर ध्यान देना चाहिए।

(2.एच) यदि हम कई कस्बों, शहरों और महानगरों के रिहायशी इलाकों की भौतिक स्थिति को देखें तो यह कहा जा सकता है कि वे सीमेंट और कंक्रीट के जंगल में तब्दील हो चुके हैं, जिनमें से कई में तंग सड़कें, गलियाँ और उप-गलियाँ हैं जो मच्छरों, बैक्टीरिया और वायरस के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए पर्याप्त प्रजनन की सुविधा प्रदान करती हैं और उन्हें गंदा नहीं तो अस्वास्थ्यकर कहा जा सकता है। कई कॉलोनियों में खाली प्लॉट देखे जा सकते हैं जो गंदगी से भरे रहते हैं और मच्छरों के प्रजनन के लिए जगह बनाते हैं।

प्रशासनिक पक्ष की बात करें तो शायद हमें इस बात पर लाचारी जतानी पड़ेगी कि कई पुलिस स्टेशनों में न्यायिक प्रक्रिया पूरी न होने के कारण जब्त वाहनों का बहुत बड़ा भंडारण पाया गया, जिसे आधिकारिक तौर पर मच्छरों, बैक्टीरिया और वायरस के लिए प्रजनन स्थल कहा जा सकता है और वे खुद को बीमारी प्रदाता के रूप में पेश करते रहते हैं।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अधिकांश आवासीय क्षेत्रों में बुजुर्गों के चलने और बच्चों के खेलने के लिए पर्याप्त खुली जगह नहीं है, चाहे उनके पास उचित शौचालय हो या न हो या युवा और बूढ़े समान रूप से हों। यह भी ध्यान देने योग्य है कि सरकार द्वारा कल्याणकारी उपायों की शुरूआत ने वास्तव में सफाई के सबसे बुनियादी काम में जनता की भागीदारी को अलविदा कह दिया है।

इस परिदृश्य को देखकर 'यह महसूस किया जा सकता है कि न्यायिक और प्रशासनिक सेवाएं ऐसे लोगों का समूह साबित हो रही हैं, जिन्हें प्रदर्शन करने वाले और विनम्र के स्थान पर 'अचीवर्स और अभिमानी' कहा जा सकता है, जिन्होंने जनता (वास्तविक स्वामी) को अधीन बताकर या उन्हें प्रबंधित करके तथा उन्हें शासक या प्रबंधक बताकर अपना वर्चस्व बनाए रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। राज्य सरकार के अस्तित्व में आने के बाद भी कमोबेश वही चल रहा है, जो पहले से ही प्रचलित था, रियासतों में नगर निकाय ने लोगों की भागीदारी को खत्म कर दिया है, और इन तीनों ने मिलकर सफाई और स्वच्छता बनाए रखने और संक्रामक रोगों को फैलने से रोकने सहित अधिकांश कार्यों में बाधा उत्पन्न की है। परिदृश्य को देखते हुए यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि अंग्रेजों द्वारा शुरू की गई ये तीनों संस्थाएँ त्यागने योग्य/त्यागने योग्य/खत्म कर दिए जाने योग्य हैं। इस क्षेत्र में समाज को अधिक ध्यान देने और हमारे शहर और देश को सुधारने या पुनर्जीवित करने के लिए अधिक व्यय की आवश्यकता है।

(2.K). जीवाश्म ईंधन और बिजली के आविष्कार और हमारे दैनिक जीवन में इसके बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप के बाद बहुत कुछ बदल गया है। न केवल हवा, पानी और भूमि बल्कि शोर और अब अत्यधिक रोशनी (रात के दौरान) का अधिकांश प्रदूषण भी इनसे ही जुड़ा है। जिसे कभी 'कबीर' ने एक अजीब सपना माना था– "हमने नदी/समुद्र के ऊपर आग का एक चमत्कार देखा– कबीर)" – वह समुद्र में तेल रिसाव और अन्य जल निकायों में चिकनाई तेल के बह जाने के कारण वास्तविकता बन गया है?

चूंकि पानी में ऑक्सीकरण की प्रक्रिया धीमी होती है, इसलिए इन सभी जीवाश्म ईंधनों ने पृथ्वी की सतह की तुलना में जल निकायों और जलीय जीवन को अधिक नुकसान पहुंचाया है। गर्म क्षेत्रों (उष्णकटिबंधीय देशों) में तेज़ ऑक्सीकरण के कारण ठंडे देशों (पहाड़ों और ध्रुवीय क्षेत्रों) की तुलना में जल उपचार की समस्या कम है, इसलिए विश्व स्तर पर स्वच्छता और सफाई बनाए रखने के लिए हम सामूहिक रूप से हिमालय और अन्य पहाड़ों, साइबेरिया, अंटार्कटिका आदि की

कई चोटियों पर मानव बस्तियों को छोड़ना पसंद कर सकते हैं। साथ ही उष्णकटिबंधीय देशों को अपने द्वारा उत्पन्न कुल लाभ की तुलना में प्रदूषण का मूल्यांकन किए बिना आउटसोर्सिंग इकाइयों के रूप में पेश किए गए किसी भी उद्योग को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है।

शुद्ध और स्वच्छ जल, वायु और भोजन की उपलब्धता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब हम कोयला, गैस, तेल और बिजली के युग से पहले की जीवनशैली और जीवाश्म ईंधन के युग की जीवनशैली के बीच उचित सामंजस्य बिठाने में सावधानी बरतें। क्या हमें स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीना पसंद नहीं है; क्या कोई इससे इनकार कर सकता है?

(2.एन) सवाल उठता है कि हम समस्याओं से भागे बिना या डेटा सेंटरों द्वारा नियंत्रित हुए बिना खुशी से क्यों नहीं रह सकते। वाइज कहते हैं कि यह समय नकारात्मक शक्तियों के प्रदर्शन और उसके परिणामस्वरूप उनके उन्मूलन तथा सही शक्तियों के उत्थान का है; इसलिए चिंता करने की कोई बात नहीं है।

ऐसा कहा जाता है कि पिछले सौ सालों में, खासकर "चाय और कॉफी, पेट्रोलियम उत्पाद और उससे जुड़े इंजन, बिजली और उससे जुड़ी मशीनरी" के आविष्कार और प्रचलन के बाद हमारी आदतें बहुत बदल गई हैं और यही एक मुख्य कारण है जिसकी वजह से हमारी "पृथ्वी खोखली हो रही है, जंगल खत्म हो रहे हैं, जमीन, हवा और पानी प्रदूषित हो रहे हैं" और यह सब एक गंभीर स्थिति है जिसे पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में असमर्थ कहा जा सकता है। समझदार लोग इस पर बहुत चर्चा कर रहे हैं ताकि समाधान ढूंढा जा सके और व्यापक मंथन की ओर सुझाव दिया जा सके और निम्नलिखित बातें जोड़ी जा सकें:

(क) पूर्णता में सुधार की रत्ती भर भी गुंजाइश नहीं हो सकती (यदि सुधार किया जा सकता है तो भी वह पूर्णता नहीं होगी)। कहा जाता है कि एक बार प्राप्त की गई पूर्णता हर समय, स्थान और ऊर्जा में वैसी ही रहेगी, अर्थात पूर्णता को हटाया नहीं जा सकता (उदाहरण के लिए – यदि कोई परमाणु स्तर पर पहुंच गया है और उसने पाया है कि पानी के अणु में दो भाग हाइड्रोजन और एक भाग ऑक्सीजन (H2O) है तो यह तथ्य वही रहेगा और पानी के बारे में अर्जित ज्ञान/बुद्धि समुद्र में, या पहाड़ पर, जमीन के नीचे या जमीन के ऊपर, हर समय यानी आज, कल और हजारों साल आगे भी वही रहेगी। पानी की इस पूर्णता में यदि सुधार करने की कोशिश की जाए तो शायद यह H2O2 या H2O3 आदि बन जाए, लेकिन पीने के उद्देश्य और जीवित प्राणियों के लिए अन्य दिन-प्रतिदिन के उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं रहेगा (यानी पानी की आणविक संरचना में सुधार करने के लिए कड़ी मेहनत और अतिरिक्त प्रयास करने के बाद भी)।

यदि कोई कहता है कि पूर्ण चीजों या प्राणियों में भी सुधार की गुंजाइश हमेशा बनी रहती है, तो ये लोग भूलने की बीमारी या भ्रष्ट दुनिया में रहने वाले लोग हैं, आगे वे कहते हैं कि यदि कोई भी, व्यक्तिगत रूप से या समूह में, पूर्णता को बनाए रखने और बनाए रखने की कोशिश नहीं करता है तो वह व्यक्ति, समूह या देश और यहां तक कि पूरी सभ्यता निश्चित रूप से टूट जाएगी और ऊपर से नीचे (या चट्टान के नीचे या यहां तक कि चट्टान पर भी सेंध लगा सकती है) या रसातल में गिर जाएगी।

आध्यात्मिक जगत के लोग कहते हैं कि भारत और अन्य देशों के मामले में भी यही स्थिति है। एक बार ऊपर से गिरने या फिसलने के बाद यह स्पष्ट है कि शीर्ष पर वापस लौटने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा और समय, धैर्य और दृढ़ता की आवश्यकता होगी (कहा जाता है कि गिरना हमेशा उठने से आसान होता है)।

यह संभव हो सकता है कि गिरे हुए लोगों में से कुछ अपना सब कुछ खो दें और अपनी ऊपर की यात्रा को फिर से शुरू करें और उनमें से कुछ लोग पिछली सभ्यता के कुछ अवशेष खोजने में सक्षम हो सकते हैं और स्मृति के आधार पर अपनी यात्रा को फिर से शुरू कर सकते हैं। बुद्धिमान कहते हैं कि हालांकि ये बड़ी घटनाएँ हैं लेकिन दुनिया इसी तरह काम करती है और चक्र दोहराता है।

(ख) ऐसा कहा जाता है कि:
"हिंदी– हिंदू और हिंदुस्तान" संस्कृत– सनातन (धर्म) और संसार (भारत) का अपभ्रंश (भ्रष्ट संस्करण) है, जिसने मानवता के लिए अधिक समस्याएं पैदा की हैं, जितना कि इसका समाधान नहीं हुआ है, संस्कृत, सनातन धर्म और संस्कृति के इस अपभ्रंश (भ्रष्ट) संस्करण ने इसके लगभग सभी वर्गों से जिम्मेदारी का वाष्पीकरण कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप हम सभी अपने अधिकारों से वंचित हो गए हैं और असहाय होकर नैतिकता, शिष्टाचार और स्वच्छता और स्वच्छता के स्तर में निरंतर गिरावट देख रहे हैं।
धर्म जो विश्व की एकता को परिवार की तरह समझता है और घर में परिवार के प्रत्येक सदस्य की तरह योगदान देता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार ग्रहण करता है, वह वैयक्तिकता में विभाजित हो गया अर्थात सार्वभौमिकता का प्रतिमान वैयक्तिकता में चला गया। यह हमारे पाखंडी होने का एक मुख्य कारण है, न केवल घर में या कूड़े के ढेर में बल्कि अपने शरीर और मन में भी गंदगी जमा करने की प्रवृत्ति। शायद हम खड़े होकर सफाई करना चाहें।

(3). **<u>समस्या का प्रतिमान</u>** :

सफाई एवं स्वास्थ्य की समस्या के मूल को समझने के लिए निम्नलिखित उपसिद्धांत पर विचार किया जा सकता है:

जांच प्रक्रियाओं और न्याय की घोषणा में यह देखने की प्रक्रिया है कि क्या अपराध (शारीरिक चोट, चोरी और डकैती, जालसाजी, प्रतिरूपण, प्रलोभन, हत्या या इससे भी अधिक जघन्य अपराध) जिसकी रिपोर्ट या संचार या मीडिया में प्रकाशित किया गया है लेकिन आधिकारिक तौर पर कहीं भी रिपोर्ट नहीं की गई है, उसे अपराध माना जा सकता है या इसे ईश्वर/प्रकृति का कृत्य मानकर घटना के रूप में छोड़ दिया जा सकता है। यह स्थापित होने के बाद ही कृत्य को अपराध की श्रेणी में रखा जा सकता है और जांच शुरू होती है।

सभी जांचों में, पहली चीज जो एजेंसियां देखने का प्रयास करती हैं, वह यह देखना है कि क्या यह कृत्य आत्मरक्षा का परिणाम था, या यह केवल क्रोध के कारण हुआ था, या यह दुर्भाग्यवश किसी मानसिक रूप से विक्षिप्त और मानसिक रोगी के कारण हुआ था, या यह कृत्य किसी परपीड़क व्यक्ति की गतिविधि थी, या यह घटना एक सुनियोजित और ठंडे खून वाली कार्रवाई थी।

यदि कोई ऐसी रिपोर्ट (जांच और निर्णय) देख सकता है, तो वह समझ जाएगा कि भले ही अपराधी अपराध करते समय या अपराध के तुरंत बाद या जासूस एजेंट के नेटवर्क के माध्यम से या अन्य माध्यमों से पकड़ा गया हो, निर्णय रिपोर्ट हमेशा अपराध के लिए सभी संभावित कारणों पर विचार करती है, और प्रत्येक इरादे की संभावनाओं को खारिज करके रिपोर्ट किसी एक कार्य पर अंतिम निष्कर्ष पर पहुंचती है।

इस तथ्य से हर कोई सहमत होगा कि सुनियोजित और ठंडे खून वाले अपराध के मामले को छोड़कर सभी संभावनाओं में अपराधी/अपराधी का पता लगाना तुलनात्मक रूप से आसान काम है। सुनियोजित और ठंडे खून वाले अपराध में समस्याएँ इसलिए आती हैं क्योंकि ऐसे अधिकांश कृत्यों में जांचकर्ता को कोई प्रत्यक्ष साक्ष्य नहीं मिल पाता क्योंकि ऐसे अपराधी जो सुनियोजित, संगठित और ठंडे खून वाले होते हैं, आमतौर पर कोई भी सबूत नहीं छोड़ते।

अगर कोई विस्तृत जांच से वाकिफ है तो वह समझ सकता है कि ऐसे सभी मामलों में सबसे पहले यह पता लगाया जाता है कि अपराध से किसको लाभ मिला और उसे पैसे, नाम, शोहरत, सत्ता की स्थिति के मामले में क्या मिला, चाहे वह अल्पकालिक हो या दीर्घकालिक। इसी तरह, यह भी पता लगाया जाता है कि अन्य पीड़ित कौन हैं और उनकी पीड़ा का स्तर क्या है। इसके अलावा यह भी पता लगाने की कोशिश की जाती है कि क्या यह निर्मम अपराध पुरानी दुश्मनी का बदला लेने का नतीजा है या परिवारों, समाजों, देशों और दुनिया में नए सत्ता समीकरणों को भड़काने का। फिर यहां से आगे की जांच आगे बढ़ती है, जो शायद व्यापक विवरणों की ओर ले

जाए या नहीं और कभी-कभी ये जांच विवरण इतने गंभीर और खतरनाक होते हैं कि उन्हें उजागर नहीं किया जा सकता, इसलिए ये एक गोपनीय दस्तावेज बनकर रह जाते हैं।

उपरोक्त लेख यह बात सामने रखने के लिए लिखा गया है कि क्या परिवार, समाज और पूरे देश में बीमारियों, दुर्घटनाओं, असुविधाओं और आर्थिक नुकसानों को जन्म देने वाली अनुचित स्वच्छता और सफाई को अपराध माना जा सकता है? यदि ऐसा है, अर्थात यदि समाज इसका संज्ञान लेता है, तो यह प्रश्न उठेगा कि यहाँ दर्ज की जा रही इस प्राथमिकी से निपटने के लिए समाज की कार्यप्रणाली क्या हो सकती है, क्योंकि यहाँ समाज/देश को ही पीड़ित और संभवतः अपराधी के रूप में दर्शाया गया है।

इसका उत्तर कई हो सकते हैं, लेकिन ऐसे विशिष्ट मामले में जहां समाज/देश को ही पीड़ित और संभवतः अपराधी बताया जाता है, जांचकर्ता सबसे पहले लाभार्थियों की एक संभावित सूची तैयार करना चाहेंगे और समाज में बीमारी के प्रसार से धन, नाम, प्रसिद्धि, शक्ति की स्थिति, अल्पावधि के साथ-साथ दीर्घावधि में उनके संभावित लाभों का भी पता लगाना चाहेंगे।

यदि हम सामान्य रूप से भी देखें तो डॉक्टर, अस्पताल, दवा कंपनियां और उनसे जुड़ी प्रयोगशालाएं, अनुसंधान प्रयोगशालाएं और वैज्ञानिक, सैनिटाइजर, दस्ताने, फेस मास्क, विभिन्न प्रकार के मच्छर भगाने वाले उत्पाद, कीटनाशक, पीड़कनाशक और खरपतवारनाशकों के निर्माता और इन उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला अनुचित स्वच्छता और सफाई से लाभान्वित होते दिखाई देते हैं, जिसके कारण बीमारियां, दुर्घटनाएं और असुविधाएं होती हैं।

यदि स्वच्छता एवं सफाई की कमी के कारण बड़े पैमाने पर बीमारियां फैलती हैं, तो अतिरिक्त लाभार्थी नगर पालिकाएं एवं उसके कर्मचारी, पुलिस एवं प्रशासन, धर्मार्थ संस्थान, परोपकारी लोग, सामाजिक-राजनीतिक समूह एवं उनके नेता, सभी प्रकार के मीडिया नेटवर्क एवं अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म, कार्यालयों एवं बैंक लेनदेन के प्रबंधन में सहायता करने वाले लोग आदि हो सकते हैं।

* यदि हम उपरोक्त सूची को गंभीरता से देखें तो स्थिति भयावह प्रतीत होती है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि जब विश्व के प्रमुख परामर्शदाता एवं वैज्ञानिक संगठनों से बात की जाती है तो पता चलता है कि हाल ही में फैली बीमारी और उसके बाद वर्ष दो हजार उन्नीस से जारी वैश्विक लॉकडाउन के लिए कम से कम बीस वर्षों की तैयारी की आवश्यकता होती है, वह भी तब जब विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का समर्थन और असीमित धन प्रवाह उपलब्ध हो।

यह बात और भी भयावह हो जाती है जब पता चलता है कि दो विश्व युद्धों में शामिल लोग और उनकी संस्थाएँ आज भी मौजूद हैं और वे किसी भी इकाई, समूह या देश या यहाँ तक कि सभी पर उस युद्ध को दोहरा सकते हैं। इस तैयारी की झलक हॉलीवुड की कुछ फिल्मों, विभिन्न

वीडियो गेम्स, इस सहस्राब्दी की शुरुआत में सामने आने वाली विभिन्न विशेष वार्ताओं और वर्ष दो हज़ार अठारह में प्रसारित नई विश्व व्यवस्था पर कुछ विश्व नेताओं के साक्षात्कारों से देखी जा सकती है।

ऋषियों का कहना है कि गंदे और अस्वच्छ वातावरण से उत्पन्न होने वाली घटनाओं के उपरोक्त भयावह चित्रण में भी चिंता और भय की कोई बात नहीं है क्योंकि प्रकृति में चीजें इसी तरह से चलती हैं। ऋषियों का कहना है कि आमतौर पर नकारात्मक शक्ति ही क्रिया को आरंभ करती है और सकारात्मक शक्ति ही होती है जिसकी भागीदारी/क्रियाएं अपनी परिणति की तलाश करती हैं। जैसे:
"नकारात्मक – चरों के माध्यम से– सकारात्मक (में बदल जाता है),
अवचेतन के माध्यम से अचेतन स्वयं को चेतन के रूप में प्रकट करता है,
चरों के माध्यम से अव्यवस्था व्यवस्था में बदल जाती है", इत्यादि,

शायद हम, किसी की निंदा किए बिना, खड़े होकर स्वयं सफाई करना चाहेंगे और इस प्रकार एक स्वच्छ वातावरण बनाए रखना चाहेंगे।

(4), <u>समाधान का प्रतिमान:</u>

हम अपनी सफाई और स्वच्छता को उन्नत करने के लिए निम्नलिखित कार्य करना चाहेंगे:

(4.ए) पूर्व–पका हुआ खाद्य अपशिष्ट तथा पका हुआ अपशिष्ट दिन में कम से कम दो बार एकत्र करने से कचरे की समस्या का बहुत हद तक समाधान हो जाएगा, साथ ही गौवंश के लिए घास तथा पक्षियों, मत्स्यपालकों तथा अन्य पालतू पशुओं के लिए पूरक आहार की आवश्यकता कम हो जाएगी।
पहले से पकाए गए तथा सुबह और शाम/रात्रि भोजन के बाद पकाए गए खाद्य अपशिष्ट को एकत्र करने की इस गतिविधि से निम्नलिखित मोटे अनुमान के अनुसार पर्याप्त रोजगार पैदा होगा:
* यह कस्बों, शहरों और महानगरों में लागू होता है, यानी जहाँ नगरपालिकाएँ हैं। भारत में ऐसी आबादी चालीस प्रतिशत है, यानी बावन करोड़, अगर एक घर में चार लोग रहते हैं तो कुल घरों की संख्या जहाँ से खाद्य अपशिष्ट एकत्र किया जाना है = तेरह करोड़। आम तौर पर एक व्यक्ति चार घंटे की दो शिफ्ट में काम करके सौ घरों से खाद्य अपशिष्ट एकत्र कर सकता है, तो खाद्य अपशिष्ट संग्रह के लिए जनशक्ति की आवश्यकता: तेरह लाख प्रत्यक्ष रोजगार।
नये रोजगार की कुल संख्या = तेरह लाख – खाद्य अपशिष्ट संग्रह में पहले से ही काम कर रहे लोग

प्रत्येक कर्मचारी का पारिश्रमिक: कचरा संग्रहण, उसका पृथक्करण, डम्पिंग और निपटान की वर्तमान लागत तथा पशुओं के भोजन पर व्यय में बचत÷ कर्मचारियों की संख्या।

(4.बी) किसी भी सार्वजनिक स्थान जैसे– व्यस्त बाजार, शहर के केन्द्र, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय, सामुदायिक केन्द्र एवं धार्मिक स्थल, तालाब, झील एवं नदी के किनारे, समुद्रतट एवं कालोनियों में, बस स्टैण्ड, रेलवे स्टेशन एवं हवाई अड्डा टर्मिनल पर लड़के एवं लड़कियों, युवा पुरुष एवं महिला तथा वरिष्ठ नागरिक (पुरुष एवं महिला) के लिए स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर मूत्रालय, शौचालय एवं स्नानघर ढूंढना वास्तविक समस्या है, जिसमें क्लॉक रूम, धूम्रपान कक्ष, पीने के लिए ताजा पानी, हाथ धोने के लिए साबुन, सेनेटरी नैपकिन, तौलिया आदि की सुविधा हो।
इस मुद्दे को इन सभी स्थानों पर उपयोग और भुगतान मॉडल पर आधारित समाज द्वारा संचालित/अनुरक्षित बहुस्तरीय मूत्रालय, शौचालय और स्नानघर खोलकर सुलझाया जा सकता है।
इन जगहों पर अमोनिया निष्कर्षण, बायो गैस और जल उपचार के छोटे संयंत्र और प्रसाधन सामग्री, पीने का पानी आदि खरीदने के लिए दुकानें हो सकती हैं। प्रारंभिक वित्तपोषण समाज द्वारा स्वयं आसानी से व्यवस्थित किया जा सकता है। यह क्षेत्र अच्छे व्यवसाय के अवसर प्रदान करता है (बड़े ब्रांडों के लिए भी) और पर्याप्त रोजगार पैदा करेगा।

(4.सी) यदि हम कई कस्बों, शहरों और महानगरों के आवासीय क्षेत्रों की भौतिक स्थिति को देखें तो यह कहा जा सकता है कि वे सीमेंट और कंक्रीट के जंगल में तब्दील हो चुके हैं, जिनमें से कई में तंग सड़कें, गलियाँ और उप–गलियाँ हैं जो मच्छरों, बैक्टीरिया और वायरस के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए पर्याप्त प्रजनन सुविधा प्रदान करती हैं और उन्हें गंदा नहीं तो अस्वास्थ्यकर कहा जा सकता है। कई कॉलोनियों में खाली प्लॉट देखे जा सकते हैं जो गंदगी से भरे रहते हैं और मच्छरों के प्रजनन के लिए जगह बनाते हैं।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अधिकांश आवासीय क्षेत्रों में बुजुर्गों के चलने और बच्चों के खेलने के लिए पर्याप्त खुली जगह नहीं है, चाहे उनके पास उचित शौचालय हो या न हो या युवा और बूढ़े सभी के लिए समान हो। इस क्षेत्र को सुधारने या हमारे शहर और देश को पुनर्जीवित करने के लिए समाज के प्रमुख ध्यान की आवश्यकता है। ***

10. अर्थव्यवस्था के स्थायी संचालन के लिए कार्य वितरण

निम्नलिखित प्रस्तुत है: एक स्थायी समाज के लिए "एक अर्थव्यवस्था के स्थायी कामकाज के लिए कार्य वितरण" की बुनियादी आवश्यकता के संबंध में प्रस्तुति चार भागों में आगे रखी जा रही है : (1)। मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2)। उपलब्ध विकल्प और आगे का व्यावहारिक तरीका (3)। समाधान के प्रतिमान–पारिश्रमिक रोजगार और सम्मानजनक जुड़ाव के प्रमुख रास्ते, (4) **अनुलग्नक –1,** कार्य के वितरण से जुड़ी प्रणालियों और लोगों पर नोट्स (पुस्तक–मीता–लाइफ स्टाइल एजेंडा से अंश):

(1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा: क्या किसी भी प्रकार के किसी भी आर्थिक मॉडल का कोई भी अर्थशास्त्री एक भी गुलाम, भिखारी, निराश्रित, वेश्या की उपस्थिति को उचित ठहरा सकता है – गुलामी, भीख मांगने, आजीविका के लिए जबरन वेश्यावृत्ति की अनैतिक सामूहिक प्रस्तुति की तो बात ही छोड़िए?

(1.A). अगर हम राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को देखें, तो शायद हम दृढ़ता से कह सकते हैं कि वर्तमान स्थिति नाजुक/गंभीर/अनिश्चित है। नीचे जमीनी हकीकत (भारत जैसे बड़े लोकतांत्रिक देश की) के कुछ संकेत दिए जा सकते हैं, जो निस्संदेह दर्शाते हैं कि अर्थव्यवस्था अच्छी स्थिति में नहीं है और सिस्टम की व्यवस्थित विफलता की ओर अग्रसर है:

(क) संत/साधु/फकीर/पुजारी, स्वामी, बूढ़े और बुद्धिमान और जन नेता इन पर से विश्वास खो चुके हैं और वे खुद को कम से कम लोगों के बीच उम्मीद पैदा करने में सक्षम नहीं पा रहे हैं और इस तरह समाज में सम्मान खो चुके हैं, जिसके परिणामस्वरूप ये सभी लोग जिनके नाम पर पैसा और संसाधन बहते थे, अपने जीवनयापन के लिए धन इकट्ठा करने के लिए मजबूर हैं। दुनिया में इससे अधिक गंभीर स्थिति नहीं हो सकती कि कम से कम उम्मीद न हो।

(ख) अपने घर से दूर किसी स्थान पर विपत्ति आने पर छोटी–मोटी सहायता (जैसे भोजन और यात्रा व्यय के लिए धन) प्राप्त करने के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं है, इसी प्रकार छोटे–मोटे शोषण की शिकायत करने और तत्काल सांत्वना पाने के लिए भी कोई साधन नहीं है।

(ग) भारत में अस्सी करोड़ (भारत की साठ प्रतिशत जनसंख्या) लोग गरीब हैं और मुफ्त राशन के हकदार हैं, (भारत के राष्ट्रीय पोर्टल

https://www.india.gov.in/spotlight/pradhan-mantri-garib-kalyan-package-pmgkp के अनुसार)।

(घ) प्रत्येक चौराहे और प्रमुख सार्वजनिक स्थानों पर भिखारियों की संख्या।
(ई) देश की मुद्रा का लगातार घटता मूल्य, नेताओं का लगातार बदलता रुख और न्याय मिलने में काफी लंबा समय लगना।
(च) बीमारियों से उबरने और अदालतों से न्याय पाने पर स्वास्थ्य और स्वस्थ आदतों, मनोरंजन और उत्सवों की तुलना में अधिक धन खर्च किया जाता है।
(छ) शहरों में वन क्षेत्र का कम होना, जल निकाय और वायु प्रदूषण। **(ज)** कॉलोनियों, बाजार और धार्मिक स्थलों पर ध्वनि का स्तर बहुत अधिक होना।
(i) 'परिवार, समाज, योग, धर्म-निरपेक्षता, धर्मनिरपेक्ष, तथा विश्व एक बड़ा परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम)' जैसे मूल शब्दों के अर्थ की गलत व्याख्या।

(1.बी), कार्यशील अर्थव्यवस्था को एक ऐसी अर्थव्यवस्था कहा जा सकता है जिसमें सभी घटक पारिस्थितिकी-पर्यावरण को टिकाऊ तरीके से बनाए रखने के सामान्य लक्ष्य की दिशा में काम कर रहे हैं, यानी न केवल हम सभी को जीवन को बनाए रखने वाले संसाधन, सुविधाएं और जीने के अवसर मिलते हैं बल्कि हमारी युवा पीढ़ी और भावी पीढ़ियों को भी स्थायी रूप से प्रेमपूर्ण परिस्थितियां मिलती हैं।
प्रकृति में - हमारे पर्यावरण- पारिस्थितिकी- इको सिस्टम में हर घटक छोटे से छोटे सूक्ष्म जीव/बैक्टीरिया/वायरस से लेकर सबसे बड़े जलीय जीव व्हेल, सबसे बड़े जानवर हाथी, सबसे बड़े पेड़ बरगद, सबसे बड़े सरीसृप अजगर से लेकर सबसे बड़े पक्षी चील और गिद्ध तक बिना थके उसी तरह काम करते पाए जाते हैं जैसे उन्हें युगों से किसी विशेष कार्य (दूसरे जीवों को खाकर उनकी संख्या सीमित करने) के लिए बनाया गया है। ऐसा करते हुए सभी जीव मिलकर पर्यावरण और उसकी अर्थव्यवस्था में लेन-देन बनाए रखते हैं। कहा जाता है कि अर्थव्यवस्था में सबसे छोटे/सबसे छोटे (सूक्ष्म जीव-बैक्टीरिया-वायरस) न केवल जानलेवा होते हैं बल्कि पारिस्थितिकी के सबसे महत्वपूर्ण घटक होते हैं और पूरा क्षय, उत्पादन और प्रजनन इसके मैट्रिक्स पर निर्भर करता
यदि हम पर्यावरण क्षरण देख रहे हैं, तो यह निश्चित है कि कोई भी घटक या कई जीव पारिस्थितिक/आर्थिक लेन-देन में प्रभावी रूप से योगदान नहीं दे रहे हैं और समग्र परिदृश्य को खतरे में डाल रहे हैं, उदाहरण के लिए यदि चूहों की संख्या बढ़ रही है तो निश्चित रूप से सांपों की संख्या कम हो रही है, मेंढकों की संख्या घट रही है, यदि वायरस बढ़ रहे हैं तो निश्चित रूप से गिद्धों की संख्या कम हो गई है, यदि पानी प्रदूषित हो गया है तो मछलियां और मत्स्य पालन निर्दयतापूर्वक कम हो गए हैं, यदि वायु प्रदूषित हो गई है तो निश्चित रूप से मनुष्यों की जनसंख्या

बढ़ गई है और पेड़ों की संख्या कम हो गई है, जो कुल मिलाकर हमारे पर्यावरणीय अर्थशास्त्र को प्रभावित करते हैं।

इन सबके बीच, मनुष्य को पर्यावरण, पारिस्थितिकी और इसके लेन-देन में हस्तक्षेप करने और उसे प्रभावित करने की कुशलता प्रदान की गई है, इसलिए यदि हम चौतरफा पर्यावरणीय गिरावट, पारिस्थितिकी असंतुलन देख रहे हैं, तो यह कहा जा सकता है कि मनुष्य एकीकृत तरीके से काम नहीं कर रहे हैं या बल्कि संकीर्ण संकीर्ण और आत्म-पराजयकारी तरीकों से काम करना शुरू कर दिया है, अर्थात, मनुष्य स्थिरता और शाश्वतता के लिए काम करने के स्थान पर पूर्ण पतन और विनाश की ओर काम कर रहे हैं।

(1.बी.1) मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और इसे पृथ्वी पर संपूर्ण विकास का फल कहा जाता है। आस्था और प्रजनन हर जीव में जन्मजात पाया जाता है जबकि खुशी ही जीवित रहने के लिए एकमात्र जीवन शक्ति है। मनुष्य को अपने आस-पास के वातावरण में हस्तक्षेप करने की क्षमता प्रदान की गई है ताकि मनुष्य स्वस्थ और खुशहाल तरीके से अपने और अपने आस-पास के वातावरण को बनाए रख सके। इसलिए यह माना जा सकता है कि सभ्यता का पूरा प्रयास खुशी की इस बुनियादी ज़रूरत की निरंतर पूर्ति के लिए समर्पित है।

ऐसा कहा जाता है कि "ऋषि इसे समझते हैं, ज्योतिष इसकी घोषणा करता है, हस्तरेखा इसकी भविष्यवाणी करती है, रेकी इस तक पहुँचती है, टैरो इसके बारे में बताता है। व्यक्ति इन पर विश्वास करते हैं, सबकी सुनते हैं और अपने कर्तव्य/उद्देश्य की पूर्ति की ओर बढ़ते हैं। ऋषि जो पूरी चीज़ को समग्रता में देखते हैं, देखते हैं कि कहाँ समतल सतह है, कहाँ अवसाद है, कहाँ दमन है, कहाँ आक्रामकता है और कहाँ लक्ष्य है और लक्ष्य के बाद क्या है, वे समझते हैं कि समय गुज़ारना कितना कठिन है, और इस तरह हमारे (आँखों के) सामने पर्दे डाल दिए जाते हैं ताकि यह खेल चलता रहे और चलता रहे।

इसलिए इस समय में जब सुबह उठें तो इस निर्माता को याद करें और दिन के काम की शुरुआत में, फिर ब्रेक के समय, फिर दिन के काम खत्म होने के बाद और फिर आराम करने से पहले और फिर आराम के बाद और इसी तरह आगे भी याद रखें, और यह पर्याप्त है। हमारी सरल जीवनशैली हो सकती है - "प्रार्थना करें, खेलें और पार्टी करें", अकेले में प्रार्थना करें, खिलाड़ियों के साथ खेलें (काम करें) और साथियों के साथ पार्टी करें।

(1.सी). वास्तविक अर्थ में अर्थव्यवस्था वह है, जो पृथ्वी-पारिस्थितिकी और पर्यावरण से निकलती है ऐसा कहा जाता है कि अर्थशास्त्र "पर्यावरण में भौतिक (धन) स्थानांतरण की प्रक्रिया,

योजना और तरीकों का संग्रह है: और "अर्थशास्त्र संपूर्ण पृथ्वी, अर्थ–अर्जन, धन और धन कमाने के तरीकों और उसके अर्थ का विज्ञान है, जो किसी वस्तु या सेवा का मूल्य निर्धारित करता है, उसे बेकार या मूल्यवान या अमूल्य बनाता है"।

दुनिया की रचना करना उसका (अल्लाह–सब, ब्रह्म–ब्रह्मांडे (ब्रह्मांड), ईश्वर) समय व्यतीत करने का समय है। यहाँ हर अंग, हर व्यक्ति एक निश्चित लक्ष्य के लिए है, हर कोई जन्म लेता है, जीता है और फिर मर जाता है, उसी उद्देश्य की पूर्ति करता है। यहाँ हर अंग और हर अतिरिक्त अंग का उपयोग निश्चित समय और स्थान में किया जाता है, जिसे उस प्रतिमान में उचित मान्यता प्राप्त है। इस समय में अल्लाह/ब्रह्मा/सर्वशक्तिमान ईश्वर की धुन पर गाना और नाचना सबसे अच्छा है।

इस सृष्टि में समय चक्र कभी इधर तो कभी उधर चलता रहता है, और जो लोग अपना काम करते हुए अधिक याद रखते हैं, उन्हें नाटक में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है, और जो लोग लगातार याद रखते हैं और काम कर रहे हैं, वे सबसे महत्वपूर्ण बन जाते हैं, जो केवल काम करते हैं और जो केवल याद रखते हैं उन्हें अस्थायी महत्व मिलता है और जब ये लोग सामंजस्य खो देते हैं तो उन्हें किनारे कर दिया जाता है।

जब तक खेल सुचारू रूप से चलता है, तब तक सब कुछ सामान्य रहता है, जब लोग भटक जाते हैं, तो उसका कार्यवाहक पैगम्बर प्रकट होता है और जब खेल में व्यवधान आता है, तो उसे अधिकाधिक प्रयासों द्वारा ठीक किया जाता है। यदि हम सभी ओर से समस्याओं का सामना कर रहे हैं, तो निश्चित रूप से इसके सुधारात्मक उपाय भी अवश्य ही होने चाहिए।

(1.D). व्यस्त रहना ही बिज़नेस में रहना है, व्यस्त रहना तो ठीक है लेकिन हमेशा बिज़नेस में ही रहना ठीक नहीं है, आराम करना ज़रूरी है। हम उन लोगों की सराहना कर सकते हैं जो खुद को बिज़नेस मैन/वुमन कहते हैं; तनाव, थकान उन्हें घेर लेती है और उनका साथी बन जाती है और फिर उनके चेहरे और शरीर से झलकती है।
भ्रमित समाज में वाणिज्य सबसे ऊपर होगा, सेवा दूसरे नंबर पर होगी, खेती तीसरे नंबर पर होगी और भिक्षा चौथा और अंतिम उपाय होगा। जो समाज नीचे की ओर जाने लगता है, वह इसी स्थिति में रहता है और कुछ इस तरह से। लेकिन जो समाज विकास के शुरुआती चरण में होता है, वहां प्रवृत्ति इस तरह होती है, जैसे भिक्षा सबसे ऊपर, सेवा दूसरे नंबर पर, वाणिज्य (व्यवसाय) नीचे होता है और खेती अंतिम उपाय होती है।

हालाँकि पुराने और समझदार लोग कहते हैं कि– किसी भी काम में व्यस्त रहना शरीर को फिट रखने के लिए जरूरी है और यह सबसे ज्यादा तब मिलता है जब कोई स्वतंत्र होता है और प्रकृति के करीब होता है, इसके आधार पर वे कहते हैं कि: "सबसे अच्छा खेती, वानिकी और मत्स्य पालन है, मध्यम वाणिज्य (व्यवसाय) है, निम्न सेवा (दासता) है और भिक्षा अंतिम उपाय है"। मास्टर्स कहते हैं कि जब हम तय करते हैं कि हम कैसे बनना चाहते हैं और अपना लक्ष्य बनाते हैं, तो संसाधन उनका अनुसरण करते हैं और आँकड़े परिणाम दिखाना शुरू करते हैं।

(1.ई) घर पर जब कोई काम होता है, तो हर सदस्य अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार ट्रस्टी के स्तर और पद पर काम लेता है या लेता है, यही बात समाज/सरकारी क्षेत्रों में भी करने की जरूरत है, कि भागीदार ट्रस्टी हों, न कि केवल कर्मचारी जिन्हें अन्य वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा प्रबंधित या प्रशासित किया जाए। सभी प्रबंधन शैलियों को ट्रस्टी और परिवार (कम्यून) जैसे माहौल में डूबे रहने की जरूरत है ताकि हम अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक खुशी के लिए फिर से उठ सकें।

(1.E.1). व्यक्तिगत उद्यमी की शक्ति का विचार विकास और उन्नति की कुंजी है, ऐसे व्यक्ति को शुभकामनाएं और समर्थन प्रदान करना, पूंजीवादी शासन में विकास की कुंजी थी/है, देश के विकास के लिए इसे छीनना एक अन्य शासन के लिए महत्वपूर्ण था, समर्थन प्रदान करना और व्यक्तिगत विचार लेना, कंपनी के नाम पर इसे पेटेंट करना और तथाकथित खुले बाजार और मुक्त प्रतिस्पर्धा में उत्पाद को बढ़ावा देना, नए शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत के नवीनतम लेकिन असफल शासन की कुंजी थी।

विकास तभी आगे बढ़ेगा जब एक व्यक्तिगत उद्यमी के विचार, कल्पना और दृष्टि को समाज और सरकार द्वारा व्यापक रूप से मानव जाति के लाभ के लिए समर्थन और स्वीकृति मिलेगी। समरूप और सामंजस्यपूर्ण विकास तब होगा जब पूरे शरीर को पूरा सम्मान और उसका उचित हिस्सा मिलेगा, न कि केवल सिर को (बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट निकट भविष्य में खत्म हो जाएंगे)। हमें इसे खत्म करने में अग्रणी भूमिका निभानी होगी और एकीकृत तरीके से आगे बढ़ना होगा।

(1.E.2) समाज/सरकार क्षेत्र का लक्ष्य, सुविधा का सृजन करना, रोजगार का सृजन करना तथा अपने नेताओं के माध्यम से जनता (स्वामी) को रिपोर्ट करना प्रतीत होता है, जिसमें बेहतर समाज के लिए, उचित रखरखाव द्वारा गुणवत्ता, दक्षता तथा सेवा की निरंतरता और प्रावधान शामिल होना चाहिए। यदि समाज/सरकार का रवैया और व्यवहार व्यवसायिक है तो जनता

भिखारियों की तरह होगी। समाज/सरकार को नेता, सुविधा प्रदाता, प्रशासक, रक्षक की तरह व्यवहार करना चाहिए, लेकिन कभी भी व्यवसायी की तरह नहीं।

(1.E.3). छोटे स्तर पर प्रतिस्पर्धा और बड़े पैमाने पर प्रतिस्पर्धा से जीवन का स्वर्ग एक वास्तविकता बन जाएगा। मात्रा, गुणवत्ता, मूल्य निर्धारण और प्लेसमेंट, निरंतर तरीके से वस्तुओं और सद्भावना में सबसे अधिक लाभ पहुंचाते हैं। विविधता में एकता विकास और स्थिरता के लिए अच्छी है, व्यक्तियों के लिए छोटे क्षेत्र, संयुक्त उद्यमों के लिए मध्यम और सार्वजनिक भागीदारी के लिए बड़े क्षेत्र भविष्य के विकास और गौरव की कुंजी होंगे।
दूसरों के आने के लिए और हमारे बाहर जाने के लिए दरवाजे और खिड़कियां खुली होनी चाहिए, हमारा सिर और दिल इस बात का सर्वोत्तम मार्गदर्शन प्रदान करते हैं कि किसका स्वागत करना है और कहां जाना है, किस विदेशी का स्वागत करना है और किस विदेशी को यात्रा पर ले जाना है, व्यापार और अन्य संधियों को स्वीकार करना है या उससे अलग होना है, इसका निर्णय झेन, अर्थात ध्यान के मार्ग की तात्कालिकता द्वारा किया जाना चाहिए।

(1.ई.4) प्रथम दृष्टया सभी ईमानदार हैं, बेईमानी अपना रास्ता खो रही है, ईमानदारों का सम्मान करना और बेईमानों को हटाना तथा फिर उन्हें सुधारना विकास के लिए एक बड़ा स्वस्थ और सामंजस्यपूर्ण वातावरण प्रदान करेगा। भारत जैसे देशों के सरकारी क्षेत्र की निविदा/खरीद प्रक्रिया में सुधार की आवश्यकता है, वर्तमान निम्नतम, अल्पकालिक, ठेकेदार/आपूर्तिकर्ता उन्मुख, भ्रष्टाचार/प्रभाव प्रवण से दीर्घकालिक, उद्योग/उन्मुख, सेवा और सरल तक।

तीसरी दुनिया के देशों की सुस्त न्याय व्यवस्था के अनावश्यक हस्तक्षेप ने अस्वीकृत, निराश और अधिशेष नियमों, विनियमों और इससे जुड़े अधिकारियों/कर्मचारियों के संचय को जन्म दिया है, जिस पर व्यापक निर्णय और कार्रवाई की आवश्यकता है। यद्यपि कठोरता सही आधार प्रदान करती है, लेकिन कठोर होना मृतकों का काम है। नियम और विनियमन में जीवंतता, जीवंतता और गतिशीलता प्रेम और सद्भावना के भाव के दृढ़ आधार पर सबसे अधिक प्रदान करती है। इस पर काम करने का तरीका अद्भुत काम करेगा और इसे आदर्श होना चाहिए। **सामूहिक विकास और खुशी चर्चा का विषय हो सकता है।**

(1.एफ) आचार्य चाणक्य कहते हैं:
खुशी की जड़ धर्म :। धर्म का जड़ अर्थ :। अर्थ का जड़ राज्य का. राज्य का जड़ इन्द्रियजय :
That is: सुख का मूल है, धर्म। धर्म का मूल है, अर्थ। अर्थ का मूल है, राज्य।

राज्य का मूल है , इंद्रियां पर विजय। (सच्चे सुख का आधार धर्म है, सभी धर्मों का आधार अर्थ–साधन/धन/संपत्ति है। सभी अर्थ का आधार राज्य है। राज्य की स्थिरता का आधार इंद्रिय/इंद्रिय क्षमताओं पर नियंत्रण में निहित है।

(1.एफ.1). तथापि , श्लोकों में प्रतिबिंबित भावनाएं अर्थात **खुशी की जड़ धर्म : . धर्म का जड़ अर्थ : . अर्थ का जड़ राज्य का.** : सनातन धर्म के अनुसार यह सही नहीं पाया गया है। इसका उल्लेख पवित्र ग्रंथों में भी नहीं मिलता।
उपरोक्त श्लोकों से क्या हुआ कि राज्य और देश यह महसूस करने लगे कि वे समस्त अर्थव्यवस्था और धर्म के केंद्र में हैं और इसके केंद्र में एक राजा/प्रधान नेता है।
यद्यपि यह जांचने के लिए कोई तंत्र नहीं है कि राजा/प्रधान नेता ने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की है या नहीं, लेकिन इस श्लोक ने निश्चित रूप से यह मिसाल कायम कर दी है कि राज्य/देश में होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों की देखभाल करना राजा/रानी और राष्ट्र/राज्य का विशेषाधिकार है और ऐसा करना धर्म के अनुसार है।
यदि उपरोक्त श्लोकों को अनुभव की कसौटी पर या गहन चिंतन के आधार पर सत्य कहा जा सकता है या पाया जा सकता है, तो हम पिछले पच्चीस सौ वर्षों (यानी महान चाणक्य के बाद) में भारत और विश्व की स्थिति का हिसाब कैसे दे पाएंगे? पिछले पच्चीस सौ वर्षों के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मामले यह संकेत देते हैं कि हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हुआ हो जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की हो।

(1.F.2) कई लोगों का कहना है कि यह श्लोक व्यक्ति और समाज की स्वतंत्रता को कमजोर करता है और समाज की सामूहिक बुद्धि पर सवाल उठाता है। तथ्य यह है कि यह लोग ही हैं, जो समाज बनाते हैं और उसमें रहते हैं और यह वही लोग हैं जिन्होंने सबसे पहले राज्य का निर्माण किया, न कि इसके विपरीत। भगवान ने राजा–रानी, प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को देश/राज्य नामक फार्म हाउस के मालिक के रूप में नहीं बनाया है और उनके खेल के लिए जनता को बनाया है।

(1.F.3) लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व पूज्य बुद्ध, महावीर, चाणक्य, लाओत्से, कन्फ्यूशियस, पाइथागोरस, प्लेटो और सुकरात जैसे महापुरुषों का एक महान संगम हुआ, जिनका लेखन आज भी चल रहा है, लेकिन हम समस्याओं के बाद समस्याओं को देख रहे हैं, जिससे यह कहा जा सकता है कि विनाशकारी शक्तियां या आत्मघाती शक्तियां या राक्षसी शक्तियां और उनकी क्रूर व्यवस्था हावी है और दूसरी ओर वैध शक्तियां या जीवंत/संत शक्तियाँ और उनकी व्यवस्था या तो निष्क्रिय अवस्था में है या बुरी शक्तियों द्वारा पराजित/पराजित हो गई है, दो विश्व युद्धों और हाल ही में विश्वव्यापी तालाबंदी ने जोरदार ढंग से घोषणा की है कि हमें इन सबसे आगे

देखने की आवश्यकता है। विकल्प क्या है? वैध विकल्पों को कैसे लागू किया जा सकता है और इसके साधन क्या होंगे?

(1.जी). यह एक विडंबना है कि पिछले तीन हज़ार वर्षों की अवधि में, समाज ने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य राज्य/सरकार को सौंप दिए हैं, जिन्होंने बदले में इस कार्य को सरकारी अधिकारियों/सेवकों नामक कर्मचारियों को सौंप दिया है और इस प्रकार समाज और उसके लोग अपने ही किए के कैदी बन गए हैं। यह आश्चर्यजनक है कि सरकारी अधिकारियों/सेवकों (पुलिस कर्मियों और सेना) को हथियार रखने और निर्णय पारित करने सहित नियम और शर्तें तय करने की अनुमति है, लेकिन मालिक जो कि जनता है, को विपत्ति के मामले में भी हथियार रखने और खुद को सुरक्षित रखने से वंचित कर दिया गया है और इस प्रकार वे एक असहाय व्यक्ति बन गए हैं।
प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राजा–रानी (इंग्लैंड में) को छोड़कर सभी राजनेताओं के पास शक्ति नहीं है और वर्तमान में ऐसा लगता है कि सरकारी कर्मचारी देश के मालिक हैं (वे सभी वेतन, भत्ते, पेंशन, रिश्वत और यहां तक कि जबरन वसूली का आनंद लेते हैं)। ऐसा लगता है कि देश में समग्र कुप्रबंधन के कारण, असली मालिक 'जनता' कंगाल हो गई है जो अब देश के मुखिया (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राजा–रानी) और इन सरकारी कर्मचारियों की सेवा करने के लिए पैदा हुई कठपुतली की तरह दिखती है। क्या इस तरह के परिदृश्य की निरंतरता की सराहना की जा सकती है?

(1.एच) दुनिया की मौजूदा स्थिति काफी हद तक खतरनाक प्रतीत होती है। अगर कभी–कभार युवाओं की बढ़ती संख्या और उसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक संपत्ति का विनाश, धार्मिक प्रतिद्वंद्विता, अंधा मशीनीकरण (इससे जुड़ी बीमारियाँ जैसे युवाओं में भारी बेरोजगारी और बुजुर्गों में अकेलापन, कुपोषण और मोटापा, मनोवैज्ञानिक विकार, अकेलापन), मानव तस्करी (और इससे जुड़ी बीमारी जैसे जबरन भीख मांगना, वेश्यावृत्ति, पोर्नोग्राफी, ड्रग्स और नशीले पदार्थ), लगभग सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की अनुपलब्धता, बुनियादी नैतिकता और शिष्टाचार की घोर उपेक्षा यहाँ तक कि नेताओं और मीडिया कर्मियों द्वारा भी संकेत दिया जाता है कि स्थिति पूरी तरह से पतन या सर्वनाश की ओर बढ़ रही है।

कुछ अन्य लोगों का कहना है कि हम जो देख रहे हैं वह पिछले तीन हजार वर्षों की अवधि में व्यवस्था की व्यवस्थित विफलता है, जिसमें लोकतांत्रिक और स्वतंत्र देशों में एक के बाद एक राज्य और सरकारें अपने असली मालिक–नागरिक को बुनियादी सुविधाएं भी देने में विफल रहीं।

(1.एच.1) हम सभी प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहे हैं, क्योंकि या तो हमने जानबूझकर कार्यों के बुनियादी वितरण की अनदेखी की है या फिर अनजाने में ही हम ऐसी वितरण प्रणाली को खोजने का प्रयास नहीं कर रहे हैं, जो संपूर्ण जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा कर सके? यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हिंदुओं से लेकर यहूदियों, पारसियों, बौद्धों, जैनियों, ईसाइयों, इस्लाम, सिखों, बहाईयों तक किसी भी धर्म ने अपने अनुयायियों/आस्थावानों/शिष्यों के लिए स्वस्थ और सुखी जीवन जीने के लिए बुनियादी कार्य वितरण को आगे बढ़ाने की जहमत नहीं उठाई, इसलिए हम दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र और प्रत्येक धर्म में दुख देख रहे हैं।

(1.जे). विकसित और विकासशील देशों में बहुत सी समस्याएँ अत्यधिक मशीनीकरण के कारण हैं, इतनी अधिक कि पूरा देश बिजली आपूर्ति के पतन पर खड़ा है। दूसरे शब्दों में बिजली के साथ खिलवाड़ करके पूरे देश को बंधक बनाया जा सकता है, यह मशीनों की गुलामी का स्पष्ट संकेत है। यह बहुत ही आश्चर्यजनक है कि मशीनों का उपयोग वहाँ किया जाता है जहाँ जनशक्ति महंगी लगती है जैसे कि चाय/कॉफी वेंडिंग मशीनें और जनशक्ति का उपयोग वहाँ किया जाता है जहाँ मशीन महंगी होती है जैसे कि खनन उद्योग, स्क्रैप उद्योग, एस्बेस्टस और रेडियोधर्मी क्षेत्र, बिजली संयंत्रों में मिलिंग क्षेत्र से गर्म राख निकालना और कोयला जलाना आदि।

(1.जे.1) मशीनों का विकास और शुरुआत मनुष्य की कमजोरी और अनिश्चितता के कारण हुई है और इसलिए उनसे बचने के लिए। पहले मशीनीकरण एक ही तरह की चीजों को तेजी से बढ़ाने के लिए किया गया था और अब मशीनीकरण मनुष्य को कमज़ोर करने के लिए किया जा रहा है, यह लोगों को लुभा रहा है और फिर उन्हें गुस्सा दिला रहा है। यह न तो व्यक्तियों के लिए और न ही देश के लिए आरामदायक स्थिति है।

मशीनरी (स्वदेशी या आयातित) को समझदारी की कसौटी पर खरा उतरना चाहिए और उन्हें अंधाधुंध तरीके से बढ़ाने के बजाय अनुकूलित करने की आवश्यकता है। इन सबके साथ आप बड़े शहरों का खर्च उठा सकते हैं और आसानी से छोटे फ्लैटों में चार दीवारों के भीतर लोगों को समेट सकते हैं। ये जीवन को जटिल बनाने के तरीके हैं, जबकि ट्रेन, कार और बिजली के बिना भी जीवन का अधिक सरलता से आनंद लिया जा सकता है। कई मिलें उदाहरण के लिए बिजली/गैसोलीन से चलने वाले, आटा चक्की, खेत और खेती को सहारा देने वाले उद्योग, हालांकि अब आवश्यकता के दायरे में आते हैं, लेकिन इसके उपयोग को विशेष रूप से उन देशों में अनुकूलित करने की आवश्यकता है जहाँ प्रति व्यक्ति कृषि भूमि कम हो रही है और लोग अकेलेपन और काम की कमी से पीड़ित हैं। हमने औद्योगीकरण को बहुत देखा है और औद्योगीकरण के कारण होने वाली समस्याओं को भी देखा है, क्या हमें इसके अनुकूलन के बारे में नहीं सोचना चाहिए? ऐसा कहा जाता है कि चक्की , चरखा , चौका – चूल्हा , चट्टी , चट

, चारपाई , चौपाल , चिलम और चर्चा रोजगार/सगाई, अकेलेपन और अलगाव की हमारी अधिकांश समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है, साथ ही स्थायी समाज के लिए आवश्यक तत्व भी प्रदान करती है।

(1.के.) आर्थिक सुरक्षा एक ऐसी सुरक्षा है जो या तो पारिस्थितिकी (पर्यावरण–पारिस्थितिकी) प्रणाली में सभी के पास होगी या फिर पृथ्वी पर किसी के पास नहीं होगी। इस संबंध में, क्या यह नहीं कहा जा सकता है कि, जो अर्थव्यवस्था दृढ़ है , उसका ठोस आधार है या जो अर्थव्यवस्था केवल पृथ्वी की सतह पर आधारित है जैसे (कृषि वानिकी) वह टिकी रहती है, जबकि भूमिगत (तेल और गैस, पम्पिंग और खनन) या जमीन के ऊपर (एयरोस्पेस और उपग्रह) गतिविधि पर आधारित अन्य सभी गतिविधियाँ अल्पकालिक हैं और लंबे समय तक टिक नहीं पाती हैं? इसलिए क्या यह हमारे लिए विवेकपूर्ण नहीं होगा कि हम उस 'अर्थव्यवस्था' को और अधिक प्रोत्साहन दें जो दृढ़ है, चाहे वह ऊर्जा की आवश्यकता को पूरा करना हो, या रोजगार की, या मनोरंजन की, या शिक्षा की या प्रशासन और न्याय की व्यवस्था की?

क्या यह इस बात को प्रदर्शित नहीं करता कि परिवार, समाज और देश में काम और आय का तर्कसंगत और संतुलित वितरण सभी जरूरतमंदों (युवाओं और अन्य लोगों) के लिए स्थायी रोजगार की आसान उपलब्धता और सभी वरिष्ठ नागरिकों (अकेलेपन से पीड़ित या अन्य) के लिए सम्मानजनक कार्य के अवसरों का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

(1.एल). आर्थिक गड़बड़ी या पूर्ण अराजकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है क्योंकि अर्थव्यवस्था की परिभाषा ही गड़बड़ा गई है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था, शहरी अर्थव्यवस्था, औद्योगिक अर्थव्यवस्था, कृषि अर्थव्यवस्था, वन अर्थव्यवस्था, संगठित अर्थव्यवस्था और असंगठित अर्थव्यवस्था जैसे शब्दों का उपयोग करना अर्थव्यवस्था की परिभाषा और समझ का विचलन है, इस तरह के अनावश्यक सीमांकन और प्रक्रियाओं ने पहले विभाजन को जन्म दिया और फिर व्यवस्था में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया और इस तरह व्यवस्था को भ्रष्ट कर दिया।

(1.एल.1) सामान्यतः मितव्ययिता को जीवनयापन के लिए आधारभूत एवं केन्द्रीय माना जाता है, अतः यदि किसी व्यक्ति की मितव्ययिता गड़बड़ा जाती है तो उसका स्वास्थ्य गड़बड़ा जाता है और यदि मितव्ययिता अनियमित हो जाती है तो जाहिर है कि व्यक्ति का स्वास्थ्य भी अनियमित रूप से कार्य करेगा। यदि मितव्ययिता में गड़बड़ी एवं अनियमितता की यह स्थिति लम्बे समय तक बनी रहती है तो अंततः व्यक्ति का आंतरिक संतुलन एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता गड़बड़ा जाती है, जिससे व्यक्ति में शुगर लेवल में गड़बड़ी (मधुमेह), निराशा (हृदय रोग),

असहायता (कैंसर) जैसी बीमारियाँ उत्पन्न होती हैं तथा वह विभिन्न प्रकार के नए एवं अज्ञात विषाणुओं एवं जीवाणुओं द्वारा उत्पन्न बीमारियों का आसान शिकार बन जाता है।

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय चिकित्सा डेटा इस बात की पुष्टि करते हैं कि बीमारियाँ बहुत ही खतरनाक दर से बढ़ रही हैं। बीमारी की यह बढ़ती प्रवृत्ति यह भी दर्शाती है कि समाज में लोगों को आशा प्रदान करने वाली आर्थिक/वित्तीय एजेंसियाँ और साथ ही सरकारी/धार्मिक संस्थाएँ कम से कम इस मामले में विफल हो रही हैं। क्या समाज के लिए आशा की अनुपलब्धता से भी बदतर स्थिति हो सकती है? इस परिदृश्य को देखते हुए, क्या कहा जा सकता है कि हम कहाँ जा रहे हैं? आर्थिक युद्ध और उसके बाद विश्व युद्ध का बलि का बकरा बनते जा रहे हैं?

(1.एन) सभी अर्थशास्त्री और धर्म के स्वामी लोगों को सहायता प्रदान करने के बजाय स्वप्नों का प्रचार करने, व्यक्तिगत सफलताओं की तकनीकों का प्रचार करने, अपने मॉडल की श्रेष्ठता प्रदर्शित करने में व्यस्त रहे हैं, जिससे सामूहिक विकास और सद्भाव की बजाय असंतुलन ही अधिक उत्पन्न हुआ है।

अर्थव्यवस्था की संस्थाएँ क्यों विफल और अप्रासंगिक हो गई हैं, क्योंकि जब किसी को कोई समस्या होती है और वह किसी आर्थिक केंद्र में जाता है, तो उसे केवल उपदेश मिलते हैं, कुछ अर्थशास्त्रियों के उपदेश या तो उसके द्वारा स्वयं रचित या कुछ तथाकथित पवित्र ग्रंथों के अंश और मामला वहीं समाप्त हो जाता है, बिना किसी वास्तविक, दृश्यमान और व्यवहार्य समाधान और समर्थन के। उसे फिर से उसी स्थिति का सामना करने के लिए खाली हाथ आना पड़ता है, चाहे वह बुनियादी भूख, कपड़ा या आश्रय की हो या शांतिपूर्ण वातावरण खोजने के लिए आवश्यक समर्थन की हो या अपनी रचनात्मक खोज को व्यक्त करने के लिए जगह की हो। तथ्य यह है कि अब तक विकसित सभी आर्थिक मॉडल बुरी तरह विफल रहे हैं, लेकिन तुच्छ मुद्दों और इसलिए भी कि हम वैकल्पिक उपाय नहीं खोज सके, जीवित पाए गए हैं। क्या हम इसे एक खुशहाल और स्वस्थ स्थिति कह सकते हैं?

(1.पी.) पिछले दो सौ सालों में, खासकर 'चाय और कॉफी', 'पेट्रोलियम उत्पाद और उससे जुड़े इंजन', 'बिजली और उससे जुड़ी मशीनरी' के आविष्कार और प्रचलन के बाद से लगभग सभी लोगों की आदतें काफी बदल गई हैं और इसे सबसे बड़ा कारण कहा जा सकता है, जो हमारी "धरती को खोखला, जंगलों को खत्म, जमीन, हवा और पानी को प्रदूषित" बना रहा है। क्या संसाधनों का इस तरह बड़े पैमाने पर दोहन आर्थिक नियोजन की अक्षमता और/या अप्रभावीता को नहीं दर्शाता है? धरती जो इतने लंबे समय से अपने प्राकृतिक प्रवाह की प्रणाली के साथ बची

हुई है, उसके लिए क्या इसे एक गंभीर स्थिति नहीं कहा जा सकता है और यह हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक ध्यान और विवेकपूर्ण कार्रवाई की मांग नहीं करता है?

देश में समस्या सिर्फ़ अच्छे अर्थशास्त्रियों की उपलब्धता ही नहीं है, बल्कि बहुत सारे अर्थशास्त्रियों, कई और एक दूसरे से जुड़े आर्थिक केंद्रों की भी है, जो सामूहिक रूप से ज़िम्मेदारी को कम करने, कुप्रबंधन, लागत में वृद्धि और यहां तक कि अराजकता का कारण बनते हैं। आर्थिक निकायों की संख्या को तर्कसंगत बनाने की तत्काल आवश्यकता प्रतीत होती है–शायद हम कई संस्थानों को पूरी तरह से त्यागना चाहेंगे जैसे कि राज्यों या क्षेत्रीय स्तर पर सभी वित्त मंत्रालय। क्या यह जनता का कर्तव्य और विशेषाधिकार नहीं है कि वह चिंता के मुद्दों पर चर्चा करे और आवश्यक बदलाव लाए?

(1.टी)। हम यह जानना चाहेंगे कि "इंग्लैंड ने वर्ष दो हज़ार अठारह में एक नया मंत्रालय, "अकेलेपन का मंत्रालय" खोला, ताकि अपने नागरिकों द्वारा तीव्र अकेलेपन के कारण सामना की जाने वाली समस्या पर ध्यान दिया जा सके। इंग्लैंड में अकेलेपन के मंत्रालय ने अपने आंकड़ों में पुष्टि की है कि इसकी बारह प्रतिशत से अधिक आबादी यानी लगभग नब्बे लाख लोग अकेलेपन से पीड़ित पाए जाते हैं, जिसमें सभी उम्र के लोग (पुरुष और महिला दोनों) शामिल हैं, लेकिन ज़्यादातर वरिष्ठ नागरिक हैं जिनके पास पैसे हैं और आम तौर पर पूरी तरह से बीमाकृत हैं। ऐसे नागरिकों के पास व्यावहारिक रूप से कोई रोज़गार नहीं है और कोई ऐसा काम नहीं है जो उन्हें व्यस्त रख सके और उनके पास बात करने के लिए कोई नहीं है।

(1.T.1), इन लोगों की तस्वीर से पता चलता है कि ये लोग अच्छी तरह से योग्य और पर्याप्त रूप से अनुभवी हैं (चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री तक, चौकीदार से लेकर चेयरमैन तक, वेश्या से लेकर पुजारी तक, वकील से लेकर तथाकथित जज तक, इसके अलावा साधारण गृहिणी और गृह पति आदि), इनके पास पर्याप्त पेंशन और बैंक बैलेंस है, लेकिन किसी भी व्यवसाय, सामाजिक या धार्मिक संस्थाओं में कोई उपयुक्त रोजगार/सगाई नहीं मिल पा रही है (यहां तक कि बिना किसी पारिश्रमिक के जो कि एक निःशुल्क सेवा/दान के रूप में है), ताकि वे खुशी से अपना समय बिता सकें और सम्मानपूर्वक रह सकें। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अकेलेपन के कारण ये लोग बीमार हो रहे हैं और सभी प्रकार की मनोवैज्ञानिक और जीवनशैली संबंधी बीमारियों जैसे मधुमेह, हृदय रोग, कैंसर और सभी प्रकार के वायरस और बैक्टीरिया जनित रोगों के नए रूपों से ग्रस्त हैं।

यह स्थिति न केवल यह दर्शाती है बल्कि बिना किसी संदेह के यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करती है कि इंग्लैंड की समस्त आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संस्थाएँ अकेलेपन से पीड़ित

इन नागरिकों को कोई सहायता प्रदान करने में विफल रही हैं। इन लोगों को अनौपचारिक रूप से अवांछित व्यक्ति घोषित कर दिया गया है, इसलिए परिवार के सदस्य, समाज, धार्मिक संस्थाएँ और सरकार द्वारा उन्हें बोझ बना दिया गया है। यह देखा गया है कि अकेलेपन की जड़ में राज्य और सरकार का अत्यधिक हस्तक्षेप है। परिवार और सामाजिक मामलों में सरकार के अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण आम नागरिकों द्वारा जिम्मेदाराना व्यवहार समाप्त हो गया है। कल्याणकारी सरकार की अवधारणा ने परिवार, समाज और देश के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारी को अलविदा कह दिया है।

(1.टी.2) अकेलेपन से पीड़ित लोगों की संख्या के मामले में भारत की स्थिति इंग्लैंड से बेहतर नहीं है। बल्कि भारत में स्थिति और भी भयावह है क्योंकि अकेलेपन से पीड़ित इन लोगों में से अधिकांश के पास बैंक बैलेंस भी नहीं है। भारत में अकेले लोगों की स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि देश अपनी साठ प्रतिशत आबादी (अस्सी करोड़ से अधिक आबादी) को मुफ्त राशन पाने के लायक समझता है। दुनिया के अन्य देशों में भी स्थिति अलग नहीं है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, सभी क्षेत्रों के अधिकांश बुद्धिजीवियों ने इंग्लैंड की सरकार का मजाक उड़ाया और इस मुद्दे पर अपनी राय दी, लेकिन दुर्भाग्य से वे केवल अच्छी और सुंदर बातें करने तक ही सीमित रह गए।

(2) उपलब्ध विकल्प और आगे का व्यावहारिक रास्ता:

लोग (माँ–बाप) सुबह कहते हैं कि याद रखो कि इस दुनिया में कर्म ही मुख्य है और हम जो भी करते हैं, हमें वैसा ही परिणाम मिलता है और काम करना शुरू कर दो और रात को याद रखो कि जो भी करोगे उसका परिणाम वही होगा जो राम/भगवान/अल्लाह चाहेंगे और इसलिए चर्चा, मनमुटाव/तनाव का कोई मतलब नहीं है और शांति से सो जाओ। एक खुशहाल समाज में यह था और यह आदर्श होना चाहिए।

(2.ए) यह उम्मीद की जाती है कि देवियो और सज्जनो, लड़के और लड़कियां भी इन मुद्दों पर चर्चा और मंथन करना चाहेंगे और अर्थव्यवस्था से संबंधित निम्नलिखित प्रश्नों के अपने उत्तर ढूंढना चाहेंगे:

(क) जब बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, अकेलापन, न्याय मिलने में देरी, काम और आय का असमान वितरण हो, तो इससे कैसे निपटा जाए? ऐसे परिदृश्य को देखने वाले आम लोगों से क्या उम्मीद की जानी चाहिए?

ख) हम स्वस्थ, खुशहाल जीवनशैली कैसे अपना सकते हैं और उसे कैसे बनाए रख सकते हैं? हम सभी को बिना किसी संदेह के समय पर स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय कैसे मिल सकता है और सिस्टम में अपना विश्वास कैसे बहाल कर सकते हैं?

(ग) हम सभी को स्वतंत्र और निष्पक्ष तरीके से उचित और भरोसेमंद जानकारी एवं मार्गदर्शन कैसे मिल सकता है?

(घ) हम सभी के लिए शारीरिक, वित्तीय, भावनात्मक, जातीय और आध्यात्मिक सुरक्षा कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं?

(ई). हमारे जीवन में व्यापार करने का सबसे अच्छा तरीका क्या हो सकता है? हम इसे कैसे कर सकते हैं? और प्रकृति और उसकी प्राकृतिक अर्थव्यवस्था का तरीका क्या है? सबसे अच्छी टाउन और कंट्री प्लानिंग और इसकी स्थापना क्या हो सकती है?

(च) वर्तमान आर्थिक अराजकता से बेहतर अर्थव्यवस्था (वैकल्पिक अर्थव्यवस्था का सुझाव) की ओर निर्बाध स्थानांतरण के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं, जो असहयोग आंदोलन, विरोध प्रदर्शन, हड़ताल, पुतले जलाने और सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करने के स्थान पर शांतिपूर्ण तरीके से उठाए जा सकने वाले तात्कालिक कदम हों?

(iii), क्या नस्ल, धर्म और क्षेत्र, या जाति, पंथ और रंग से उत्पन्न होने वाली कट्टरता को केवल व्यक्तिगत और निजी प्रार्थनाओं (अपने घर पर, जैसा कि हाल के लॉकडाउन के दौरान किया जा रहा है) करके दूर नहीं रखा जा सकता है, क्या इससे दुनिया के पुनर्निर्माण का रास्ता नहीं खुलेगा?

(iv), क्या (लोकतंत्रों में) युवाओं के लिए मतदान की आयु सीमा बढ़ाने तथा लोगों के लिए चुनाव लड़ने की अधिकतम आयु सीमा तय करने के साथ-साथ राज्य सरकारों, नगर पालिकाओं जैसे अनेक संवैधानिक निकायों को समाप्त करने से, प्रशासन को सुव्यवस्थित करने तथा समाज को मजबूत बनाने के द्वारा, किसी भी उपयोगी कार्य को जोखिम में डाले बिना धन तथा अन्य संसाधनों की बर्बादी नहीं रुकेगी?

(v), क्या दूध से बनी चाय और कॉफी का सेवन बंद करने या कम करने तथा नंदी बैल का बधियाकरण बंद करने से गौवंश पर अत्याचार कम हो सकते हैं तथा लोगों की शक्ति, सहनशक्ति और सांस्कृतिक चरित्र पुनः स्थापित हो सकते हैं?

(2.बी). हमें (सरकार को) सामान्य और प्राकृतिक अर्थशास्त्रियों के साथ-साथ विभिन्न आर्थिक सिद्धांतों के समर्थकों का एक समूह बनाना होगा, ताकि प्रत्येक सिद्धांत का मूल्यांकन किया जा सके और भविष्य के लिए नए आर्थिक सिद्धांत और अभ्यास तैयार किए जा सकें। इस अराजक दौर में, जहाँ हर बड़ी संस्था बाकी सभी को लूटना चाहती है, और जहाँ छोटी संस्थाएँ खुद को बचाने के लिए बेतरतीब ढंग से भाग रही हैं, स्टॉप गैप व्यवस्था भी शामिल है।

(2.सी). "हर जीव को मातृ भंवर के गहरे गर्त में गिरा दिया गया है", हर जीव में जन्मजात आस्था और प्रजनन इसकी मूल प्रतिबिम्ब हैं। इस आधार पर धर्म की परिभाषा इस प्रकार की गई है कि वह हर जीव को अपने में समाहित करता है (जैसे मृत्यु हम सभी को अपने में समाहित करती है। पूरी दुनिया एक है लेकिन एक बड़ा परिवार धर्म की सबसे बुनियादी समझ है, जिसे अब तक कई धर्मों ने पहले स्थान पर स्वीकार करने में अनिच्छुक पाया जब तक कि उन्होंने सभी पंथों और रंगों के लोगों को धर्म के अपने संस्करण को स्वीकार करते नहीं देखा।

अब, बीमारी के प्रकोप और दुनिया भर में तालाबंदी ने संदेह से परे साबित कर दिया है कि दुनिया एक है, अगर दुनिया एक नहीं होती, तो एक बीमारी संभवतः पृथ्वी पर पूरे बिरादरी को प्रभावित करने में सक्षम कैसे हो सकती थी। इसलिए प्रकृति के सभी मूल सिद्धांतों को भूलने और हर क्षेत्र और धर्म को ईंट-पत्थर मारने में व्यस्त होने के बजाय, समाधान के लिए मूल बातों पर लौटने के बारे में सोचें। ऐसा कहा जाता है कि आदिवासी (आदिवासी/मूलवासी) मूल हैं, इसलिए जब सभ्य दुनिया टूटी हुई दिखाई देती है, तो मूल-आदिवासी को फिर से देखना और इनसे सुराग/नेतृत्व/दिशा लेना आवश्यक है, इस तरह जनजातियों ने खुद की देखभाल की है, जो उन्हें युगों से बनाए रखने के लिए परिपूर्ण बनाता है।
समाधान की तलाश करते समय हमें यह देखना होगा कि आदिवासी किस प्रकार अपनी बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आवास) का ध्यान रखते हुए प्रशासन, न्याय और अपने कबीले का पालन-पोषण करते हैं, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखते हैं और साथ ही अपनी पूजा-अर्चना करते हैं, जिससे वे अभी भी प्रकृति के एक आदर्श साथी बने हुए हैं (तथाकथित सभ्य और धार्मिक दुनिया के विपरीत)।

(2.डी) कार्य वितरण:
मूलतः दो प्रकार के- आंतरिक कार्य, बाह्य कार्य, या पुरुषार्थ कार्य, स्त्रीत्व कार्य,
प्रत्येक श्रेणी में संचालन के लिए दो पिच हैं - उच्च और निम्न।

(ए)। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य के जीवन में सामान्यतः बारह वर्ष के आठ प्रमुख चक्र होते हैं। इसमें छह-छह वर्ष का एक उपचक्र तथा तीन-तीन वर्ष का एक उप-उपचक्र होता है। कार्य वितरण की सुविधा के लिए दो चक्रों को मिलाकर चौबीस वर्ष की एक श्रेणी बनाई गई है। इस प्रकार रुचि/उपयुक्तता/चयन के अनुसार कार्य को चौबीस वर्ष की चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है। इस प्रकार संपूर्ण कार्य को निम्न प्रकार से विभाजित किया जा सकता है:
मानव-1×2(नर-मादा) =2,
2× 2(आंतरिक-बाह्य) =4,
4×4(चार ब्लॉक, प्रत्येक चौबीस वर्ष का) =16 विविधता/कला रूप,

16×2 (प्रत्येक ब्लॉक में दो चक्र होते हैं) =32 भिन्नता,
32×2(प्रत्येक चक्र में दो चरण होते हैं) =64, सम्पूर्ण जीवन कार्य को चौसठ श्रेणियों में समाहित कहा जा सकता है।

(ख) पुरुषोचित कार्य–स्त्रियोचित कार्य

प्रत्येक धर्म ने महिलाओं की तुलना धरती से की है, इसलिए सभी सांसारिक मामलों को महिलाएं अच्छी तरह से संभाल सकती हैं, और पुरुष की तुलना आकाश से की है, इसलिए सभी बाह्य मामलों को पुरुष अच्छी तरह से संभाल सकता है।

(ग) आंतरिक कार्य–बाह्य कार्य:

आंतरिक कार्य: ब्राह्मण और उसके सद्रिस्य (जिसे बाद में शूद्र कहा गया): शिक्षा, योजना और उसकी सहायक सेवाएं–सफाई और स्वास्थ्य, पाक कला, कला रूप, संगीत, गायन, नृत्य, मनोरंजन और सभी कार्य जिनके लिए आंतरिककरण या आंतरिक अभ्यास की आवश्यकता होती है,

बाह्य कार्य: क्षत्रिय और वैसाही (जो बाद में वैश्य हो गया) इसकी तरह ही इसकी सहायक सेवा–व्यापार, वाणिज्य और व्यापार, बिक्री और विपणन, सेना–पुलिस
(सदृष्य–जैसे, अपभ्रंश–शूद्र),

(2.E) समाज में समस्याएं तब शुरू हुईं जब समाज ने इस बुनियादी आधार को नजरअंदाज कर दिया कि आस्था ही आधार है और धर्म ही आधार है, जिस पर अर्थव्यवस्था और राजनीति का ढांचा खड़ा होता है।

धर्म को आधार मानने की इस परिभाषा को देखते हुए, यह वह धर्म होना चाहिए जो सम्पूर्ण समाज की अर्थव्यवस्था के सम्पूर्ण आधारभूत और स्थानीय कार्यों का ध्यान रखे, अर्थात् धर्म को सम्पूर्ण जीवन शैली का निर्देशन करना चाहिए तथा सम्पूर्ण सुरक्षा (शारीरिक, आर्थिक और भावनात्मक), रोजगार और व्यस्तता, शिक्षा और स्वास्थ्य, ऊर्जा और मनोरंजन, पारिस्थितिकी और पर्यावरण, प्रशासन और न्याय के सम्पूर्ण आयाम के साथ–साथ अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए तैयारी का ध्यान रखना चाहिए।

बदलाव की जरूरत है, यह समय समाज के लिए उठकर जिम्मेदारी अपने हाथ में लेने का है। समाज को स्थानीय सुरक्षा, सभी प्रकार के न्याय (जूरी प्रणाली द्वारा), स्थानीय नियोजन और राष्ट्रीय नियोजन में योगदान, धार्मिक आवश्यकता, स्वास्थ्य और शिक्षा स्थानीय मीडिया, मनोरंजन, पर्यावरण के अलावा अन्य स्थानीय आर्थिक गतिविधियों की पूरी जिम्मेदारी अपने

हाथ में लेने की जरूरत है। समाज को करों के संग्रह, अपने आस–पास के उद्योगों को चलाने और स्थानीय आपदाओं से बचाव के उपायों में भी खुद को शामिल करने की जरूरत है।
देश का प्रबंधन राष्ट्रीय सरकार, उसके शाखा कार्यालयों और समाज द्वारा संचालित स्थानीय सरकार द्वारा बहुत अच्छी तरह से किया जा सकता है। राष्ट्रीय सरकार को संवैधानिक न्यायालय, रिजर्व पुलिस और सेना, अंतर्संबंध, आपदा प्रबंधन, राष्ट्रीय त्योहारों का उत्सव, अनुसंधान और विकास में योगदान, विदेशी मामलों और अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए विभागों का ध्यान रखना चाहिए।

(2.ई–1)। इसके अलावा राजनीति (सरकार) जो एक अधिरचना है, उसे सामूहिक सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय विकास, सुरक्षा (रिजर्व पुलिस और सेना), अंतर्संबंध, अनुसंधान और विकास, सुझाव और प्रतिक्रिया के लिए सुविधा, राष्ट्रीय त्योहारों के उत्सव के साथ–साथ संविधान द्वारा स्थापित और लचीली प्रणाली के माध्यम से देश के मार्गदर्शक और विवेक के रक्षक और संवैधानिक न्यायालय का ध्यान रखना चाहिए। यह परिभाषा यह भी बताती है कि भारत में राज्य सरकारों और सहयोगी कार्यालयों जैसी किसी भी मध्यस्थ संरचना की आवश्यकता नहीं है, और इसे समाप्त किया जा सकता है।
यह समय समाज के लिए उठकर जिम्मेदारी अपने हाथ में लेने का है। भारत स्थानीय धार्मिक निकायों, जिला परिषदों, कुछ क्षेत्रीय कार्यालयों और राष्ट्रीय सरकार (निर्वाचित सांसदों द्वारा संचालित) के माध्यम से खुद को बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित कर सकता है।

(2.एफ) यदि हम आदिवासियों (आदिवासी – मूल निवासी – जो यहां मूल रूप से, शुरू से ही हैं) के बीच देखें तो हम पाएंगे कि जनजाति के प्रत्येक सदस्य को उन सभी पहलुओं का ध्यान रखने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है जिनका सामना पुरुष और महिलाएं अपने पूरे जीवन में कर सकते हैं, चाहे वह सुरक्षा और संरक्षण हो, व्यापारिक लेन–देन, प्रशासन, पुरोहिताई, न्यायपालिका, या सहायक नौकरियां।

कहा जाता है कि आदिवासी–मूलवासी ही मूल हैं और सभ्य दुनिया उन पर बनी हुई या मूलवासियों से प्रेरणा लेकर बनी हुई एक संरचना है। इसलिए जब संरचना जीर्ण–शीर्ण होने लगे तो मूल–आदिवासियों के पास जाना ही एकमात्र विकल्प रह जाता है और उनसे पुनः संकेत/मार्गदर्शन लेना चाहिए कि कैसे इन आदिवासियों ने बुनियादी सुरक्षा (भौतिक सुरक्षा, खाद्य सुरक्षा और आश्रय) का ध्यान रखा है और कैसे प्रशासन, न्याय और अपने वंश का पालन–पोषण किया है, बुनियादी स्वास्थ्य, शिक्षा, मनोरंजन और पर्यावरण संरक्षण का ध्यान रखा है और साथ ही अपनी पूजा–अर्चना भी की है जिससे वे युगों से अपने अस्तित्व को बचाए रखने में सक्षम हैं। क्या हमें किसी जादू और चमत्कार का इंतजार करना चाहिए या किसी नए देवता के आसमान से उतरकर

हमारी समस्या का समाधान करने का इंतजार करना चाहिए? या हमें उस समय उठकर पुनरुत्थान के लिए काम करना चाहिए?

(2.एफ–1), बस्ती–सभ्यता के आरंभ में यह सोचा गया था कि समाज को उन सभी नौकरियों का ध्यान रखना होगा जो आम तौर पर हर आदिवासी करता है और साथ ही उन नई नौकरियों का भी ध्यान रखना होगा जो बस्ती/सभ्यता के कारण आ सकती हैं।

कहा जाता है कि काफी मंथन के बाद यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई कि किसी बस्ती/समाज/सभ्यता को बनाए रखने के लिए किसी भी समाज को किसी भी समय, स्थान/स्थान और ऊर्जा के सामने आने वाले संपूर्ण कार्य को मोटे तौर पर चार प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है, वह भी समान स्तर पर: (**1).** सुरक्षा और संरक्षण, **(2).** शिक्षा, योजना और रणनीति, नया ज्ञान और तकनीक प्राप्त करना, उसे अपनाना और उसका प्रसार करना, नियम और कानून बनाना आदि। **(3).** सामग्री का संग्रह, सामग्री का भंडारण और समाज में उसका वितरण, **(4).** अन्य तीन श्रेणियों के साथ मिलकर समाज को अन्य सभी सहायक सेवाएं जैसे स्वास्थ्य सेवाएं, इंजीनियरिंग सेवा, सफाई और स्वच्छता का रखरखाव, मनोरंजन की व्यवस्था आदि।

(2.एफ–2)। इसके अलावा, व्यक्तिगत स्तर पर निम्नलिखित कार्य वितरण स्वीकार्य और टिकाऊ पाया गया:

जन्म से चौबीस वर्ष की आयु तक: शिक्षा, प्रशिक्षण, कौशल विकास, घर और विद्यालय में विभिन्न कार्यों में सहायक के रूप में कार्य करना। चौबीस वर्ष की आयु से अड़तालीस वर्ष की आयु तक: खेत, कार्यालय, कारखानों में शारीरिक रूप से कार्य करना, विवाह, बच्चों की सहायता, माता–पिता, समाज और देश की सेवा में योगदान देना।

अड़तालीस वर्ष की आयु से बहत्तर वर्ष की आयु तक: खेत, कारखानों, कार्यालय में मनो–शारीरिक रूप से कार्य (प्रबंधकीय) तथा समाज और देश में शारीरिक रूप से कार्य करना।

बहत्तर वर्ष की आयु से छियानबे वर्ष की आयु तक: आध्यात्मिक रूप से खेत में काम करना, कारखानों, कार्यालयों में मार्गदर्शन देना, तथा प्रशासक/प्रबंधकीय/सुविधाकर्ता के रूप में मानसिक–शारीरिक रूप से सहयोग करना, समाज और देश में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना, मार्गदर्शन, सुझाव और प्रतिक्रिया देना, न्याय प्रदान करने में शामिल होना, तथा शारीरिक रूप से समाज के पर्यवेक्षक के रूप में काम करना। ऐसा कहा जाता है कि छियानबे वर्ष की आयु के बाद व्यक्ति अतिथि (अतिथि) बन जाता है। देवो भवः) तथा देवता के समान आदर योग्य है। ऐसा कहा जाता है कि धनात्मक पक्ष में छः वर्ष का अंतर रखा जा सकता है, तथा आयु को 24, 48, 72 तथा 96 वर्ष के स्थान पर 25, 50, 75 तथा सौ तक पूर्णांकित किया जा सकता है।

***

11. लाभकारी रोजगार और सम्मानजनक कार्य–संयोजन के प्रमुख अवसर

औद्योगीकरण के लिए औद्योगीकरण ने कई देशों को बर्बाद कर दिया है और मनुष्यों को उनकी बुनियादी गतिविधियों से वंचित कर दिया है और उन्हें समाज के निचले स्तर पर बेरोजगार और अकेला बना दिया है, जबकि बहुत अधिक मशीनों ने लोगों को अस्वस्थ, अपंग बना दिया है और समाज के उच्च आय वर्ग के लोगों को अलग–थलग कर दिया है।

मशीनों के उपयोग के संबंध में देश और समाज स्तर पर कुछ बुनियादी और दृढ़ सीमांकन की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, पीसने, काटने, टुकड़े करने और उसके वितरण के सभी कामों को मशीनों के लिए प्रतिबंधित किया जा सकता है। विद्युत और गैसोलीन से चलने वाली मशीनों के उपयोग में चुनिंदा प्रतिबंध लगाने के सचेत और सामूहिक निर्णय से हम युवाओं के लिए बड़ी संख्या में रोजगार और अकेलेपन से पीड़ित लोगों के लिए सम्मानजनक रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं, पारंपरिक तरीकों के लिए क्षेत्रों को फिर से खोलकर।

एक पुरानी कहानी: ग्रामीण इलाकों में घूमने गए एक यात्री को एक किसान मिला, जो दो युवा लड़कों के साथ मिलकर कुएँ से पानी लाने के लिए अपने हाथों से एक पर्शियन चाक चला रहा था। चूँकि यह काम सरासर पिछड़ापन या मज़दूरों के साथ बंधुआगिरी और दुर्व्यवहार का स्पष्ट मामला लग रहा था, इसलिए यात्री ने किसान से इसका कारण पूछा और पूछा? क्या आप कुएँ से पानी लाने के आधुनिक साधनों से अवगत नहीं हैं, तो आप खच्चर/बैल/भैंस या हवा या सौर ऊर्जा से चलने वाली मोटर या आम तौर पर इस्तेमाल होने वाले डीज़ल जनरेटर सेट आदि जैसे आधुनिक साधनों के बजाय इन दो युवा लड़कों का उपयोग क्यों कर रहे हैं?

किसान ने कहा, ये दोनों लड़के मेरे अपने बेटे हैं। हम कृषि क्षेत्र में हुए सभी विकासों के बारे में जानते हैं और इसके बेहतरीन तरीकों के बारे में भी सुना है, लेकिन चूंकि मैं और मेरे दोनों बेटे अपनी बुढ़ापे की ऊर्जा और उनकी युवा ऊर्जा का उपयोग करने का कोई वैकल्पिक तरीका नहीं खोज पाए हैं, इसलिए हमने जानबूझकर खुद ही यह काम करने का फैसला किया और जब तक हम अपनी ऊर्जा के लिए कोई लाभदायक वैकल्पिक रास्ता नहीं खोज लेते, तब तक हम ऐसा ही करते रहेंगे।

हम जानते हैं कि खाली बैठे रहने से हम सिर्फ़ इडियट बॉक्स (टेलीविजन, वीडियो, मोबाइल इत्यादि) देखेंगे या बेकार की बातों में व्यस्त रहेंगे या मोटरों में घूमेंगे और अपनी कमर बढ़ा लेंगे और मेडिकल बिल भरेंगे, फिर शायद हम अपनी काया को बनाए रखने के लिए व्यायामशाला में कसरत करने चले जाएँगे। हमें काम में शामिल होना ज़्यादा बेहतर लगता है, यानी अपने हाथों

और पैरों से काम करते हुए, अपने दिमाग को लगाते हुए और खुद का आनंद लेते हुए, बजाय मशीनों का इस्तेमाल करके मोटे और आलसी बनते हुए व्यायामशाला में कसरत करने और मशीनीकृत ट्रेडमिल पर कसरत करने के।

प्राथमिक कार्य भौतिक होना चाहिए, द्वितीयक कार्य अर्ध/आंशिक रूप से यंत्रीकृत होना चाहिए, तृतीयक कार्य तकनीकी रूप से संचालित होना चाहिए और अन्य उन्नत चरण स्वचालित होना चाहिए (उदाहरण के लिए कृषि और कपड़ों के लिए धागा बनाना भौतिक होना चाहिए, खाद्य प्रसंस्करण अर्ध यांत्रिक होना चाहिए, पैकिंग तकनीकी रूप से संचालित होनी चाहिए। जबकि कोई भी विशेष और उन्नत परीक्षण (उदाहरण के लिए मृदा परीक्षण), निष्कर्षण, मिश्रण, संचार स्वचालित किया जा सकता है।

(3.A) जरा सोचिए, अगर हम चावल, दालों और गेहूं जैसी खाद्य वस्तुओं की बिजली/गैसोलीन से चलने वाली पीसने और चमकाने वाली मशीनों के इस्तेमाल को छोड़ दें या पूरी तरह से प्रतिबंधित कर दें, साथ ही आयातित उत्पादों की बिक्री पर भी प्रतिबंध लगा दें, तो कितने रोजगार पैदा हो सकते हैं।
एक मोटे अनुमान (सितंबर 2022 के आंकड़ों के अनुसार) से पता चलता है कि, इस अभ्यास से ही भारत दो करोड़ से अधिक लोगों को न्यूनतम सात हजार रुपये प्रति माह के पारिश्रमिक के साथ रोजगार/कार्य प्रदान करने में सक्षम होगा, इसके अलावा इस अभ्यास से देश के समग्र स्वास्थ्य में भी सुधार होगा।

(3.A.1) गेहूं के आटे के लिए एक सरल और मोटा हिसाब: पीटीआई के अनुसार डेटा, दिनांक 09 मई 2022 की खबर, वर्ष 2021–22 के लिए गेहूं की सरकारी खरीद दर 1975 है जबकि 2022–23 के लिए यह 2015 प्रति सौ किलोग्राम होगी। खुदरा बाजारों में गेहूं के आटे की औसत कीमत 32.91 रुपये प्रति किलोग्राम और आटे की अधिकतम कीमत 59 रुपये प्रति किलोग्राम थी, 09 मई 2022 को। 20121 के आंकड़ों से पता चलता है कि आटे की औसत कीमत 29.14 रुपये प्रति किलोग्राम थी और 08 मई 2021 को आटे की अधिकतम कीमत 52 रुपये प्रति किलोग्राम थी, 2021–22 में भारत में कुल गेहूं की खपत 103.5 मिलियन मीट्रिक टन है, वर्ष 2020–21 में गेहूं की खपत मात्रा 102.2 मिलियन मीट्रिक टन थी, जैसा कि 30 मई 2022 की रिपोर्ट में बताया गया है।

मैं)। गेहूं की सरकारी खरीद दर = मान लीजिए, **बीस रुपये प्रति किलोग्राम** ।
ii). गेहूं के आटे का औसत बिक्री मूल्य = **बत्तीस रुपये प्रति किलोग्राम** ।

iii. गेहूं की औसत मात्रा जिसे कोई व्यक्ति हाथ से पीस सकता है = **बीस किलोग्राम प्रतिदिन** (चार–पांच घंटे काम करने पर)।

चतुर्थ. प्रति व्यक्ति औसत कमाई/बचत = बीस किलोग्राम × (आटा का विक्रय मूल्य बत्तीस रुपये प्रति किलोग्राम - गेहूं का क्रय मूल्य बीस रुपये प्रति किलोग्राम) = 20 × (32–20) ⇒ **240 रुपये प्रतिदिन** (दो सौ चालीस प्रति व्यक्ति/दिन) ⇒ 240 × 30 दिन = **7200 रुपये/माह** ⇒ 7200 × 12 = **रु.86400/वर्ष/प्रति व्यक्ति** .

वी भारत में 2021–22 में **कुल गेहूं की खपत = 103.5 मिलियन मीट्रिक टन ।**

vi . इतनी मात्रा में गेहूँ पीसने के लिए आवश्यक मानव दिवसों की संख्या, यह मानते हुए कि औसत मनुष्य प्रतिदिन बीस किलोग्राम पीस सकता है, ⇒ 103.5 मिलियन मीट्रिक टन ÷ 20 किग्रा × 365 दिन ⇒ 103.5 × 10,00000 × 1000 ÷20 × 365 = 141780822 मानव दिवस ⇒ 141780822 **मानव दिवस ÷ 12 =11815068** ,
उपरोक्त गणना से पता चलता है कि इस व्यवस्था से लगभग 11815068 लोगों (एक करोड़ अठारह लाख से अधिक लोग) को नियमित रोजगार या पारिश्रमिक वाली नियुक्ति आसानी से मिल सकती है, जिनकी औसत आय प्रति व्यक्ति प्रति माह सात हजार रुपये होगी।

vii. रोजगार/संलग्नता प्रदाताओं के अलावा, बिजली/गैसोलीन से चलने वाली आटा मिलों से हाथ से पीसने वाली गेहूं पीसने की इस प्रक्रिया से करने वाले और खाने वाले दोनों को ही जबरदस्त स्वास्थ्य लाभ होते हैं। चूंकि हाथ से चलने वाली गेहूं की आटा चक्की (चक्की) कम RPM (प्रति मिनट क्रांति) वाली ठंडी पीसने वाली मशीन है, इसलिए उच्च RPM वाली बिजली से चलने वाली आटा मिलों की तुलना में आटा पीसने की प्रक्रिया में किसी भी खनिज और विटामिन को नहीं खोएगा। ऐसा कहा जाता है कि गेहूं की आटा चक्की पीसने से अग्न्याशय सक्रिय रहता है, इसलिए आटा चक्की चलाना मधुमेह से पीड़ित लोगों के लिए उपयुक्त पाया गया है।

viii. इतनी बड़ी संख्या में हस्तचालित चक्कियों के संचालन से इस मशीन (चक्की) के निर्माण और इसके रखरखाव के लिए कुछ लाख लोगों की मांग उत्पन्न होगी।

ix. यह बिलकुल स्पष्ट है कि ये लोग जो गेहूं और अन्य आटा उपलब्ध कराने में शामिल होंगे, वे कच्चे माल के साथ–साथ तैयार माल का भी कुछ मात्रा में भंडारण करना चाहेंगे, जिससे ऐसे उत्पादों की खरीद, भंडारण और बिक्री के संबंध में राष्ट्रीय सरकार का बोझ कम होगा। यह कार्य लोगों और देश की आत्मनिर्भरता की ओर ले जाएगा।

x. अन्य खाद्य पदार्थों जैसे चना, जौ, मक्का, मक्का, चावल आदि के लिए हाथ से पीसने के लिए भी इसी तरह की गणना की गई है। मल्टीग्रेन आटा और दालों से **पता चलता है कि** अगर हम देश में बिना किसी संदेह के, बिना किसी देरी के, बिजली/गैसोलीन से चलने वाली खाद्य पीसने वाली मशीनों को बंद करने में सक्षम हो जाते हैं, तो कुछ मिलियन अतिरिक्त नौकरियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। कुल मिलाकर, अगर हम हर क्षेत्र में शारीरिक काम के मामले में मशीनों का उपयोग करने में विवेकपूर्ण तरीके से काम करते हैं, तो इस प्रयास में कम से कम छह प्रतिशत आबादी शामिल होगी, यानी लगभग आठ करोड़ लोगों को रोजगार/सगाई मिलेगी (भारत में वर्ष–2022 में जनसंख्या के अनुसार)।

(3.बी). "युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध" अध्याय के अनुसार , और "अर्थव्यवस्था के स्थायी कामकाज के लिए कार्य वितरण" अध्याय के अनुसार, भारत की एक सौ तीस करोड़ की आबादी का एक चौथाई यानी लगभग बत्तीस दशमलव पांच करोड़ लोगों को उनकी रुचि, अनुभव और उम्र के अनुसार सुरक्षा के विभिन्न पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए, चाहे वह **(क) हो** । कक्षा शिक्षा या क्षेत्र प्रशिक्षण प्राप्त करना, **(ख)** . क्षेत्र ड्यूटी करना या सुरक्षा और सुरक्षा से संबंधित विशेष कार्यों में शामिल होना, **(ग)** . आवश्यकताओं की व्यवस्था और उचित प्रबंधन, खुफिया जानकारी की निगरानी और उसका विश्लेषण और प्रणाली का समग्र प्रशासन, **(घ)** . शिक्षा, प्रशिक्षण और विशेष कौशल प्रदान करना, सुरक्षा और सुरक्षा से संबंधित विवादों में जूरी होना, अनुसंधान और विकास का समन्वय आदि।
यदि हम स्वस्थ और खुशहाल वातावरण में मनुष्यों की औसत आयु सौ वर्ष मानें, तो ऊपर बताए अनुसार पच्चीस वर्ष की आयु तक व्यक्ति शारीरिक रूप से विकसित हो सकता है, शिक्षा और प्रशिक्षण ले सकता है, फिर पच्चीस से पचास वर्ष की आयु तक जमीन पर काम कर सकता है, फिर पचास से पचहत्तर वर्ष की आयु तक प्रबंधन और फिर पचहत्तर से सौ वर्ष की आयु तक प्रशासन, प्रशिक्षण देना और न्याय प्रदान करना)। **यदि हम इस वितरण को देखें तो सुरक्षा के लिए मैदान में तैनात किए जाने वाले वास्तविक कर्मियों की संख्या जनसंख्या का सोलह गुणा एक होनी चाहिए, अर्थात 130 करोड़ जनसंख्या/16=8.125 करोड़ लोग** (वर्ष–2022 में भारत की जनसंख्या के अनुसार)।

आठ करोड़ सुरक्षाकर्मियों को रोजगार देने का यह प्रयास न केवल सुरक्षा प्रदान करेगा, बल्कि रोजगार की मांग को भी खत्म कर देगा। जैसा कि युद्ध के अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध के अध्याय में कहा गया है, यह आर्थिक रूप से व्यवहार्य और नैतिक रूप से उत्कृष्ट है।

(3.सी) मीडिया की अर्थव्यवस्था और मीडिया द्वारा अर्थव्यवस्था के प्रबंधन पर अध्याय के बिंदु संख्या (5.ए) के अनुसार : सही जानकारी और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए प्रति सौ लोगों में कम से कम एक पुरुष और एक महिला की आवश्यकता होगी, यानी दो प्रतिशत लोगों को पूरे समाज के साथ-साथ आगंतुकों/पर्यटकों को चौबीसों घंटे प्रभावी सही और गुणवत्तापूर्ण जानकारी और ईमानदार सलाह देने के साथ-साथ यथासंभव मदद करने के लिए नियोजित/नियोजित किया जाना चाहिए। **इस प्रकार सही जानकारी और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए लगभग दो करोड़ पचास लाख लोगों** (वर्ष-2022 में जनसंख्या के अनुसार भारत में) को प्रत्यक्ष रोजगार/नियोजित किया जाएगा।

अतिरिक्त **बिन्दु संख्या (5.बी) के अनुसार: मनोरंजन सुरक्षा का प्रावधान कम से कम छह प्रतिशत आबादी को रोजगार/सगाई प्रदान करेगा। उदाहरण के लिए भारत में मनोरंजन से लगभग आठ करोड़ लोगों को प्रत्यक्ष रूप से रोजगार/सगाई प्रदान होने का अनुमान लगाया जा सकता है** (वर्ष 2022 में भारत में जनसंख्या के अनुसार)।
ऐसा कहा जाता है कि "शाम का मनोरंजन अगली सुबह अच्छी ऊर्जा लेकर आएगा, इसलिए मनोरंजन सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण है जो समाज और राष्ट्र अपने नागरिकों को प्रदान कर सकते हैं। मनोरंजन के वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए हम भारत और अन्य जगहों पर इस पर आवश्यक चर्चा और सुधारात्मक कार्रवाई करना चाहेंगे।

(3.डी). "जल सुरक्षा और अर्थव्यवस्था" अध्याय के अनुसार , समाधान के प्रतिमान के बिंदु संख्या 4- "वनीकरण का संचालन और प्रबंधन पक्ष" , **यदि एक व्यक्ति लगभग दो सौ पेड़ों की पूरी ज़रूरत को पूरा कर सकता है, तो यह वनीकरण प्रति जिले दस हज़ार लोगों को रोज़गार/सगाई प्रदान करेगा, जो कि भारत में कुल सात सौ तिहत्तर जिलों में सत्तर पचास लाख से अधिक** (वर्ष 2022 में जनसंख्या के अनुसार) है। इस कार्य के लिए, यह आवश्यक है कि समाज इस कार्य को अपने हाथ में ले और वन विभाग की समवर्ती व्यवस्था को बंद करने के बारे में सोचे। भारत को स्थिरता प्रदान करने और भावी पीढ़ियों को आशा देने का यही एकमात्र तरीका है।

(3.ई). " स्वच्छ एवं स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था तथा सफाई एवं स्वास्थ्यकर अर्थशास्त्र" अध्याय के बिन्दु संख्या (4) के अनुसार , समाधान का प्रतिमान,

(i) पहले से पका हुआ भोजन और पका हुआ भोजन का कचरा दिन में कम से कम दो बार इकट्ठा करने से कचरे की समस्या काफ़ी हद तक हल हो जाएगी, साथ ही इससे गायों के लिए घास और पक्षियों, मछलियों और अन्य पालतू जानवरों के लिए पूरक आहार की ज़रूरत कम हो जाएगी। इस गतिविधि से देश में लगभग दस लाख नौकरियाँ पैदा होंगी (यह हिसाब लगाते हुए कि एक

व्यक्ति लगभग एक हज़ार की आबादी की ज़रूरतें पूरी कर सकता है। इसलिए अगर हम पहले से पका हुआ और शाम को/रात के खाने के बाद भी पका हुआ भोजन इकट्ठा करना शुरू करें तो दस लाख लोगों की ज़रूरत होगी)।

(ii) महिलाओं के लिए उपयुक्त मूत्रालय ढूँढना एक वास्तविक समस्या है, जिसे सार्वजनिक स्थानों जैसे– व्यस्त बाजार, शहर के केंद्र, कॉलेज और विश्वविद्यालय, धार्मिक स्थान, तालाब और नदी के किनारे स्नान घाट, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डे के टर्मिनलों पर बहुस्तरीय शौचालय और बाथरूम खोलकर हल किया जा सकता है, जहाँ क्लॉक रूम की सुविधा हो, लड़के और लड़कियों, महिलाओं और पुरुषों, बुजुर्गों और लोगों के लिए अलग–अलग सुविधा हो। इन स्थानों पर अमोनिया निष्कर्षण, बायो गैस और जल उपचार के छोटे संयंत्र और प्रसाधन सामग्री, पीने का पानी आदि खरीदने के लिए दुकानें हो सकती हैं। यह क्षेत्र पर्याप्त रोजगार और व्यापार के अवसर पैदा करेगा। ***

12. टिकाऊ अर्थव्यवस्था के लिए शासन, प्रशासन और उसका अनुकूलन

निम्नलिखित प्रस्तुत है: "शासन, प्रशासन और एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए इसका अनुकूलन" के संबंध में प्रस्तुतीकरण तीन भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1). मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2). पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा । (3) **शासन–प्रशासन–** प्रबंध पर व्यापक दृष्टिकोण :

(1) **<u>मुद्दे और उसकी व्यापक रूपरेखा</u>** :

इस अध्याय अर्थात् "शासन, प्रशासन और एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए इसका अनुकूलन" को पढ़ते समय, इसमें दी गई सामग्री की सराहना करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों का संदर्भ लेना उचित होगा: अध्याय–1. सामाजिक सुरक्षा की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था की सामाजिक सुरक्षा, अध्याय–7, स्वच्छ और स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था तथा सफाई और स्वच्छता का अर्थशास्त्र, अध्याय – 8, कार्यशील अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था में कार्य वितरण, अध्याय – 10. आर्थिक गतिविधियों का धार्मिक आधार, अध्याय – 11. अर्थव्यवस्था में आय का शाश्वत रूप से इष्टतम वितरण,

(1.A) हम निम्नलिखित को मुख्य कारण मान सकते हैं कि हममें से अधिकांश लोग यानि साठ प्रतिशत से अधिक आबादी गरीब है।

"लोग गरीब और भूखे क्यों हैं?
क्योंकि धर्म गरीबों और गरीबी का महिमामंडन करता है
क्योंकि धार्मिक केंद्र भावनाओं से छेड़छाड़ करके दान जुटाते हैं,
क्योंकि सरकार करों में हेराफेरी करके पैसा खा जाती है,
राजनेता विधानसभाओं और चुनावों में, हथियारों और सेना में पैसा बर्बाद करते हैं,
सरकारी कर्मचारी वेतन, भत्ते, रिश्वत, जबरन वसूली और पेंशन में पैसा खा जाते हैं।
बिचौलिए मांग और आपूर्ति में हेराफेरी करके पैसा खा जाते हैं।
भौतिकवादी नियमों में हेर–फेर करके पैसा खा जाता है,
विद्रोही अपने सदस्यों के दिमाग में हेर–फेर करके धन को नष्ट कर देते हैं।

लोग आत्महत्या क्यों करते हैं या आत्मघाती हमलावर क्यों बनते हैं?
क्योंकि समाज और धर्म जनता की आजीविका को बनाए रखने में विफल रहे हैं,
क्योंकि समाज और धर्म जीवन से बहुत अधिक की मांग करते हैं,
जीने के लिए कुछ नहीं, विश्वास करने के लिए कुछ नहीं,
लोगों को लगता है कि जीवन को बहुत अधिक महत्व देने की अपेक्षा मर जाना बेहतर है।

दुनिया में एक आधिकारिक जल्लाद होता है।
सरकार को दमनकारी और जल्लाद की भूमिका से बचना चाहिए।

सरकार के लिए यह आवश्यक है,
स्थानीय जीवन जियें, स्थानीय लोगों का ध्यान रखें,
पड़ोसी पर नज़र रखें, पड़ोसी का समर्थन करें,
वैश्विक सोचें, वैश्विक के लिए चिंतित रहें।"

शायद हम अपने समग्र व्यक्तिगत और सामूहिक कल्याण के लिए कई नियमों को उलटना चाहेंगे या यहां तक कि नियम पुस्तिका को ही पुनः लिखना चाहेंगे।

(1.बी), जनता की गरीबी ईश्वर की कृपा नहीं है, बल्कि इसे कुछ लोगों द्वारा राज्यों की शक्ति के माध्यम से सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध, लागू और बनाए रखा जाता है। गरीबी को चालाकी से तैयार की गई थीम के तहत बढ़ावा दिया गया था कि, "चूंकि अधिकांश लोग गरीब हैं और उनकी देखभाल करना राज्य का कर्तव्य है और एक आवश्यक अग्रदूत के रूप में राज्य को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि दैनिक उपयोग की वस्तुएं (फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स–एफएमसीजी) और सेवाएं सभी के लिए सस्ती होनी चाहिए, इसलिए उन्हें कम कीमत/सस्ता रखा जाना चाहिए और सभी के लिए आसानी से उपलब्ध होना चाहिए।
यदि हम चारों ओर देखें तो हर कोई इस बात को समझेगा कि सत्तर से अस्सी प्रतिशत समय हमें ऐसी वस्तुओं और सेवाओं की आवश्यकता होती है जो बुनियादी और नियमित प्रकृति की हों, और सत्तर से अस्सी प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जो या तो इन वस्तुओं के उत्पादन में या इन सेवाओं को प्रदान करने में लगे होते हैं।
यह एक बुनियादी सवाल है: अगर इन बुनियादी वस्तुओं का उत्पादन करने वाले और इन बुनियादी सेवाओं को प्रदान करने वाले सत्तर से अस्सी प्रतिशत लोगों के श्रम की अंतिम कीमत/लागत कम/सस्ती रखी जाए तो ये लोग गरीबी से कैसे बचेंगे? इन उत्पादनों या सेवाओं में शामिल सत्तर–अस्सी प्रतिशत लोगों को गरीब होना चाहिए और वे गरीब ही रहेंगे।

इसके अलावा यह भी योजना बनाई गई है कि बाकी बीस से तीस प्रतिशत वस्तुओं और सेवाओं को, जिनका कभी–कभार इस्तेमाल होता है, उच्च स्तर पर रखा जा सकता है और इन वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य निर्धारण पर राज्य को निगरानी या नियंत्रण करने की बहुत अधिक आवश्यकता नहीं है। हालांकि, राज्य को इनकी उपलब्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करनी चाहिए और ऐसी व्यवस्थाएं रखनी चाहिए, जिनके माध्यम से राज्य आवश्यकता पड़ने पर हस्तक्षेप कर

सके। इस योजना और इसके क्रियान्वयन के कारण कोई भी व्यक्ति इन बीस–तीस प्रतिशत लोगों की समृद्धि को देख सकता है।

यदि हम उपरोक्त (चालाक) नियोजित पद्धति को बरकरार रखते हैं तो यह बात मायने नहीं रखती कि प्रधानमंत्री किसी बड़े अर्थशास्त्री को वित्त मंत्री बनाएं या खुद कोई उच्च योग्यता वाला अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री बने, सत्तर से अस्सी प्रतिशत आबादी को गरीब ही रहना पड़ेगा। केवल मंत्री और प्रधानमंत्री को बदलने के बजाय इस परिकल्पना को बदलने की आवश्यकता बनी हुई है।

(1.सी) कुछ लोग कहते हैं, "यदि एक बाल्टी छलक रही है तो दूसरी सूखी रहेगी"।
कहा जाता है कि अकाल खराब प्रबन्धन का परिणाम है, इसी प्रकार गरीबी के बारे में भी कहा जा सकता है, अन्यथा प्रकृति ने जीवन निर्वाह के लिए आवश्यकता से कहीं अधिक दिया है।

यह सबसे पहले व्यापक गरीबी और अमीरों और आम लोगों के बीच का भारी अंतर है, जो किसी भी समाज की गुलामी का कारण बनता है, और आगे चलकर उसकी व्यापक गरीबी को बढ़ाता है। यह आम धारणा के विपरीत है कि समाज की गुलामी ही गरीबी का कारण बनती है।

स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए गरीबी और गरीबी पैदा करने वाली घटनाओं को कम करना या हटाना आवश्यक है, चाहे वह धार्मिक हो (जैसे कि यह पिछले जन्म में किए गए बुरे कर्मों का परिणाम है, या भगवान के दरवाजे गरीबों के लिए हैं, या दान देना अच्छा है या दान लेना राजसी है, जैसा कि राजा गौतम बुद्ध और राजा महावीर ने माना है) या सामाजिक हो (धन बोझ है, और यह गरीब ही है जो अच्छी नींद सो सकता है)। भिक्षा लेने वाले–भिखारी शायद ही कभी अमीर बन पाए हों। जो लोग भिक्षा, दान और सब्सिडी पर निर्भर हैं, वे मुश्किल से एक सभ्य जीवन जी पाते हैं।

यह देखा गया है कि मध्यम वर्ग, अमीर और यहां तक कि अरबपति भी इन सब्सिडी, दान का लाभ उठाते हैं और हेरफेर करके अपनी संपत्ति में और वृद्धि करते हैं, जिससे गरीब और गरीब हो जाते हैं।

i. हमें इस अवधारणा को मिटाने के लिए चर्चा करने की आवश्यकता है कि गरीबी किसी का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है और मृत्यु नियति है। हमें यह देखने की आवश्यकता है कि किसी भी क्षेत्र (सरकारी या निजी) में शीर्ष और निचले स्तर के कर्मचारियों के बीच आय में अंतर पंद्रह गुना से अधिक नहीं बढ़ना चाहिए। इस अंतर को या तो कम करके या कम करके या दोनों तरीकों से कम करना होगा और यह क्षेत्र दर क्षेत्र अलग–अलग हो सकता है। इसके अलावा गरीबों या गरीबों द्वारा शोषण से बचने के लिए हमें स्थानीय लोकपाल की व्यवस्था करने की आवश्यकता है।

हमें सामंजस्यपूर्ण समाज के लिए जीवन जीने की कला और जीवन जीने के तरीके को बढ़ावा देना होगा, जैसा कि कहा गया है: गरीबी के समान कोई दुःख नहीं है और संतों के साथ रहने जैसा कोई सुख नहीं है।

(1.D) हम समझ सकते हैं कि चाणक्य (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध साम्राज्य और अर्थशास्त्र के संस्थापक) द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित कथाएँ मुख्य कारणों में से एक हैं कि क्यों राजा/रानी/राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री अपनी मर्जी और मनमर्जी से काम करते रहते हैं, इस तथ्य की अनदेखी करते हुए कि अधिकांश लोग (किसी भी देश के वास्तविक मालिक) यानी देश के साथ-साथ विश्व की साठ प्रतिशत से अधिक आबादी अभी भी गरीब है और उन्हें मोबाइल, मोटरसाइकिल/कार और मंगल/बृहस्पति में कॉलोनी से अधिक बुनियादी सामाजिक सुरक्षा की आवश्यकता है।

महान आचार्य चाणक्य ने कहा है:
खुशी की जड़ धर्म :। धर्म का जड़ अर्थ :अर्थ का जड़ राज्य का. राज्य का जड़ इन्द्रियजय :
वह है:
सुख का मूल है, धर्म। धर्म का मूल है, अर्थ।
अर्थ का मूल है, राज्य।राज्य का मूल है, इन्द्रियों पर विजय।
The basis of true pleasantness is dharma (religion), the basis of all dharma is Arth-means/money/wealth. The basis of all Arth is Rajya/State. The basis for the stability of the State lies in control over the indriya/sense faculties.

क), तथापि श्लोकों में भाव प्रतिबिंबित होते हैं अर्थात् धर्मस्य मूलं अर्थ : । अर्थस्य मूलं राजस्य । राज्स्य मूलं इन्द्रियजय : सनातन धर्म के अनुसार यह सही नहीं पाया गया है। पवित्र ग्रंथों में भी इसका उल्लेख नहीं मिलता। उपरोक्त श्लोकों के साथ क्या हुआ कि राज्य (राज्य और देश) यह महसूस करने लगे कि वे सभी अर्थव्यवस्था और धर्म के केंद्र में हैं और इसके केंद्र में एक राजा/प्रधान नेता है जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की हो या नहीं।

यद्यपि यह जांचने के लिए कोई तंत्र नहीं है कि राजा/प्रधान नेता ने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की है या नहीं, लेकिन इस श्लोक ने निश्चित रूप से यह मिसाल कायम कर दी है कि राज्य/देश में होने वाली सभी आर्थिक गतिविधियों की देखभाल करना राजा/रानी और राष्ट्र/राज्य का विशेषाधिकार है और ऐसा करना धर्म के अनुसार है।

यदि उपरोक्त श्लोकों को अनुभव की कसौटी पर या गहन चिंतन में सत्य पाया जा सकता है, तो हम पिछले पच्चीस सौ वर्षों (यानी महान चाणक्य के बाद) में भारत और विश्व की स्थिति का हिसाब कैसे दे पाएंगे? पिछले पच्चीस सौ वर्षों के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर नज़र डालने से क्या यह संकेत मिलता है कि हमारे पास शायद ही कोई ऐसा राष्ट्राध्यक्ष रहा हो जिसने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त की हो?

ख). कई लोगों का कहना है कि यह श्लोक व्यक्ति और समाज की स्वतंत्रता को कमजोर करता है और समाज की सामूहिक बुद्धि पर सवाल उठाता है। तथ्य यह है कि यह लोग ही हैं, जो समाज बनाते हैं और उसमें रहते हैं और यह वही लोग हैं जिन्होंने सबसे पहले राज्य का निर्माण किया था, न कि इसके विपरीत। भगवान ने राजा–रानी, प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को देश/राज्य नामक फार्म हाउस के मालिक के रूप में नहीं बनाया है और उनके खेल के लिए जनता को बनाया है।

लगभग पच्चीस सौ वर्ष पूर्व पूज्य बुद्ध, महावीर, चाणक्य, लाओत्से, कन्फ्यूशियस, पाइथागोरस, प्लेटो, सुकरात तथा इनके बाद कुछ अन्य महान् महापुरुषों का एक महान संगम हुआ, जिनकी वाणी आज भी चल रही है, किन्तु दो विश्व युद्धों तथा हाल ही में विश्वव्यापी लॉकडाउन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि हमें इन सबसे आगे देखने की आवश्यकता है।

सी) कहा जाता है कि धर्म/आस्था ही सभी चीजों का आधार है, हर प्राणी में समाहित है, इसलिए सभी आर्थिक गतिविधियों की देखभाल करना और विभिन्न घटकों के बीच काम और आय का सीमांकन करना धर्म और धर्म संस्थान (धर्म और धार्मिक संस्था) का विशेषाधिकार है, यानी स्थानीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय सरकार। आर्थिक गतिविधियों की शर्तें तय करना सरकार (राज्य/देश) का काम नहीं है।

(1.E) हम निम्नलिखित कविता की सराहना कर सकते हैं जो मूलतः "ताओ ते चिंग (लाओ त्ज़ु द्वारा 400 ईसा पूर्व के आसपास लिखा गया एक चीनी क्लासिक ग्रंथ)" की एक कविता का पुनरावलोकन है, जो संक्षेप में समाज, देश और दुनिया की समवर्ती स्थिति को निर्दिष्ट करती है:

"जब धर्म को भुला दिया जाता है, तब वाद उत्पन्न होता है,
जब ऋषियों की उपेक्षा होती है, तब ब्रह्मचर्य उत्पन्न होता है,

जब बूढ़े और बुद्धिमान लोग किनारे कर दिए जाते हैं, तो जानकारी सामने आती है,
जब स्वास्थ्य को भुला दिया जाता है, तब औषधि उत्पन्न होती है,
जब तालमेल टूट जाता है, तब योग उत्पन्न होता है,

जब नैतिकता की उपेक्षा की जाती है, तो भ्रम और अराजकता पैदा होती है,

जब धार्मिक संस्थाएं समाप्त हो जाती हैं, तो राज्य और उसकी अधिनायकवादिता उत्पन्न होती है,
जब सामंजस्य और लय टूट जाती है, तो कूटनीति और संक्षिप्तता पैदा होती है,
और वफादार सेनाओं और मंत्रियों के समूह तैयार करो।
क्या विभिन्न गुणों का प्रकट होना, बड़े क्रम का लुप्त होना नहीं है?

(से: धार्यते इति धर्म पुस्तक डॉ. कल्पना सेंगर द्वारा)

दुनिया की मौजूदा स्थिति काफी हद तक खतरनाक प्रतीत होती है। अगर कभी-कभार युवाओं की बढ़ती संख्या और उसके परिणामस्वरूप सार्वजनिक संपत्ति का विनाश, धार्मिक प्रतिद्वंद्विता, अंधाधुंध मशीनीकरण (इससे जुड़ी बीमारियाँ जैसे युवाओं में भारी बेरोजगारी और बुजुर्गों में अकेलापन, कुपोषण और मोटापा, मनोवैज्ञानिक विकार, अकेलापन), मानव तस्करी (और इससे जुड़ी बीमारी जैसे जबरन भीख मांगना, वेश्यावृत्ति, पोर्नोग्राफी, ड्रग्स और नशीले पदार्थ), लगभग सभी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा की अनुपलब्धता, बुनियादी नैतिकता और शिष्टाचार की पूरी तरह से अवहेलना यहाँ तक कि नेताओं और मीडिया कर्मियों द्वारा भी संकेत मिलता है कि स्थिति पूरी तरह से पतन या सर्वनाश की ओर बढ़ रही है।

कुछ अन्य लोगों का कहना है कि हम जो देख रहे हैं वह पिछले तीन हजार वर्षों की अवधि में व्यवस्था की व्यवस्थित विफलता है, जिसमें लोकतांत्रिक और स्वतंत्र देशों में एक के बाद एक राज्य और सरकारें अपने असली मालिक-नागरिक को बुनियादी सुविधाएं भी देने में विफल रहीं।

यदि हम समस्याओं का सामना कर रहे हैं और सामूहिक रूप से मुद्दों का समाधान करने में कठिनाई महसूस कर रहे हैं, तो यह निश्चित है कि उन धर्मग्रंथों, नियम पुस्तकों और संविधान पर गौर करने का समय आ गया है, जो सामाजिक क्षेत्रों, प्रशासन, अर्थशास्त्र, धार्मिक संस्थानों और न्यायपालिका में लोगों का मार्गदर्शन कर रहे हैं और उन्हें स्वस्थ, खुशहाल और समग्र तरीके से समाज और उसके पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने की ताकत दे रहे हैं।

(1.F). यह एक विडंबना है कि पिछले तीन हज़ार वर्षों की अवधि में, समाज ने अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य राज्य/सरकार को सौंप दिए हैं, जिन्होंने बदले में इस कार्य को सरकारी अधिकारियों/सेवकों नामक कर्मचारियों को सौंप दिया है और इस प्रकार समाज और उसके लोग अपने ही किए के कैदी बन गए हैं। यह आश्चर्यजनक है कि सरकारी अधिकारियों/सेवकों (पुलिस कर्मियों और सेना) को हथियार रखने और निर्णय पारित करने सहित नियम और शर्तें तय करने

की अनुमति है, लेकिन मालिक जो कि जनता है, को विपत्ति के मामले में भी हथियार रखने और खुद को बचाने से वंचित कर दिया गया है और इस प्रकार वे एक असहाय व्यक्ति बन गए हैं।

प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राजा–रानी को छोड़कर सभी राजनेताओं के पास शक्ति नहीं है और वर्तमान में ऐसा लगता है कि सरकारी कर्मचारी देश के मालिक हैं (वेतन, भत्ते, पेंशन, रिश्वत और यहां तक कि जबरन वसूली का आनंद ले रहे हैं)। ऐसा लगता है कि देश में समग्र कुप्रबंधन के कारण, असली मालिक 'जनता' कंगाल हो गई है जो अब देश के मुखिया (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति/राजा–रानी) और इन सरकारी कर्मचारियों की सेवा करने के लिए पैदा हुई कठपुतली की तरह दिखती है। क्या इस तरह के परिदृश्य और ऐसी व्यवस्था की निरंतरता की सराहना की जा सकती है?

(1.जी). हम यह जानना चाहेंगे कि "इंग्लैंड ने वर्ष दो हज़ार अठारह में एक नया मंत्रालय, "अकेलेपन का मंत्रालय" खोला, ताकि अपने नागरिकों द्वारा तीव्र अकेलेपन के कारण सामना की जाने वाली समस्या पर ध्यान दिया जा सके। इंग्लैंड में अकेलेपन के मंत्रालय ने अपने आंकड़ों में पुष्टि की है कि इसकी बारह प्रतिशत से अधिक आबादी यानी लगभग नब्बे लाख लोग अकेलेपन से पीड़ित पाए जाते हैं, जिसमें सभी उम्र के लोग (पुरुष और महिला दोनों) शामिल हैं, लेकिन ज़्यादातर वरिष्ठ नागरिक हैं जिनके पास पैसे हैं और आम तौर पर पूरी तरह से बीमाकृत हैं। ऐसे नागरिकों के पास व्यावहारिक रूप से कोई रोज़गार नहीं है और कोई ऐसा काम नहीं है जो उन्हें व्यस्त रख सके और उनके पास बात करने के लिए कोई नहीं है।

इन लोगों की तस्वीर से पता चलता है कि ये लोग अच्छी तरह से योग्य और पर्याप्त रूप से अनुभवी हैं (चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री तक, चौकीदार से लेकर चेयरमैन तक, वेश्या से लेकर पुजारी तक, वकील से लेकर तथाकथित जज तक, इसके अलावा साधारण गृहिणी और गृह पति आदि), इनके पास पर्याप्त पेंशन और बैंक बैलेंस है, लेकिन किसी भी व्यवसाय, सामाजिक या धार्मिक संस्थाओं में कोई उपयुक्त रोजगार/सगाई नहीं मिल पा रही है (यहां तक कि बिना किसी पारिश्रमिक के जो कि एक निःशुल्क सेवा/दान के रूप में है), ताकि वे खुशी से अपना समय बिता सकें और सम्मानपूर्वक रह सकें। यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अकेलेपन के कारण ये लोग बीमार हो रहे हैं और सभी प्रकार की मनोवैज्ञानिक और जीवनशैली संबंधी बीमारियों जैसे मधुमेह, हृदय रोग, कैंसर और सभी प्रकार के वायरस और बैक्टीरिया जनित रोगों के नए रूपों से ग्रस्त हैं।

यह स्थिति न केवल यह दर्शाती है बल्कि किसी भी संदेह से परे स्पष्ट रूप से साबित करती है कि इंग्लैंड की सभी सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संस्थाएँ अकेलेपन से पीड़ित इन नागरिकों को कोई सहायता प्रदान करने में विफल रही हैं। इन लोगों को अनौपचारिक रूप से

अवांछित व्यक्ति घोषित कर दिया गया है, इसलिए परिवार के सदस्य, समाज, धार्मिक संस्थाएँ और सरकार द्वारा उन्हें बोझ बना दिया गया है। समस्या की सत्यता और गंभीरता को देखते हुए, अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय बुद्धिजीवियों ने इस मुद्दे पर अपनी राय दी, लेकिन दुर्भाग्य से इंग्लैंड की सरकार का मज़ाक उड़ाने के अलावा केवल अच्छी और सुंदर बातें ही कीं।

यह देखा गया है कि अकेलेपन की जड़ में राज्य और सरकार का अतिशय भोग है। परिवार और सामाजिक मामलों में सरकार के अतिशय भोग के कारण आम नागरिकों में जिम्मेदाराना व्यवहार खत्म हो गया है। कल्याणकारी सरकार की अवधारणा ने परिवार, समाज और देश के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारी को अलविदा कह दिया है।

(1.जी.1) अकेलेपन से पीड़ित लोगों की संख्या के मामले में भारत जैसे देश की स्थिति इंग्लैंड से बेहतर नहीं है। बल्कि भारत (इन देशों) में स्थिति और भी भयावह है क्योंकि अकेलेपन से पीड़ित इन लोगों में से अधिकांश के पास बैंक बैलेंस भी नहीं है। भारत में अकेले लोगों की स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि देश अपनी साठ प्रतिशत आबादी (अस्सी करोड़ से अधिक आबादी) को मुफ्त राशन पाने के लायक समझता है। दुनिया के अन्य देशों में भी स्थिति अलग नहीं है।

(1.एच) उपरोक्त अनुच्छेदों में वर्णित सभी समस्याओं और दुखों से गुजरते समय, गीता में निम्नलिखित बातों से सांत्वना मिल सकती है:
" कब कब नमस्ते धर्म का अफसोस है भारत।
अधर्म का उदय यही तो आत्म है मैं बना रहा हूं ॥ 4-7 ॥
मोक्ष के लिए संतों का विनाश की ओर एफ शैतानी दस्तावेज।
धर्मसंस्थापार्थया संभवत: युग युग. ॥ 4-8 ॥ "
("यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर् भवति भारत,
अभ्युत्थानं धर्मस्य तदद्मनं सृजामयम् । 4-7,
परित्राणाय साधूनं विनाशाय च दुष्कृतम्।
धर्म-संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे-युगे । 4-8)

हे भारत (अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध, संपूर्ण विश्व), जब-जब धर्म (प्राकृतिक धर्म) की दुनिया में गिरावट (दोष / बेहोशी / उदासी / आलस्य / पश्चाताप / पश्चाताप) होती है, तब-तब मैं धर्म की पुनर्स्थापना के लिए, साधुओं (सज्जनों) की रक्षा के लिए, दुष्टों / बुरे कर्म करने वालों के विनाश के लिए खुद को पुनर्जीवित करता हूं और युगों में धर्म की संस्थाओं की स्थापना / पुनरुत्थान को संभव बनाता हूं।

(2) **प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा थी:**

* ऐसा कहा जाता है कि सूर्य, जीवित और सबसे अधिक दृश्यमान देवता (त्रिदेव – निर्माता, पालक और विध्वंसक) सभी योग (जीवन के मैट्रिक्स का सत्य) के ज्ञाता हैं, क्या यह हमारे लिए बुद्धिमानी नहीं होगी कि हम सूर्य को नमन करें, क्योंकि वे हमें बेहतर अर्थव्यवस्था–पारिस्थितिकी तंत्र के मार्ग की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

इसके अलावा आदिवासी मूल निवासी हैं। ऐसा कहा जाता है कि अगर किसी को रोज़मर्रा के कामों में परेशानी हो रही है तो मूल को देखना या मूल को फिर से देखना हमेशा बेहतर होता है, यह देखने के लिए कि वे किस तरह से आस्था/धर्म का पालन करते हैं, इसे व्यवहार में लाते हैं और कैसे सांत्वना पाते हैं।

(2.A) अगर भारत कई समस्याओं से जूझ रहा है, जिनका समाधान करना हर स्तर पर नेताओं के लिए मुश्किल है, तो यह तय है कि अब समय आ गया है कि हम उसी धर्मग्रंथ को देखें जिसके नाम पर ये नेता अपनी ताकत पा रहे हैं। अगर हम (और हमारे सच्चे नेता भी) नियमों और विनियमों के कारण शिथिल हो रहे हैं, तो अब समय आ गया है कि हम अपने मूल संविधान (हमारे नियम पुस्तिका) पर ही पुनर्विचार करें।

(क) हर चीज को मिलाकर बनाया गया व्यंजन कूड़े के ढेर में या फिर खिचड़ी के ढेर में ही सबसे अच्छा हो सकता है, जो मृतक का भोजन है। पूरी दुनिया से सबसे अच्छी चीजें इकट्ठा करके बनाया गया कोई भी व्यंजन विश्वकोश और संग्रहालयों में ही सबसे अच्छा हो सकता है, जो कि 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे खेल तमाशे को छोड़कर छात्रों और आम आदमी के लिए शायद ही कोई मददगार हो। दुनिया के अधिकांश संविधान में भी यही भावनाएँ प्रतिध्वनित होती हैं।

(ख) कोई भी संविधान, जिसे न्यायालय द्वारा पुनर्परिभाषित किया जा सकता है तथा जो संसद और सर्वोच्च न्यायालय में जिम्मेदारियों और अधिकारों के स्पष्ट आवंटन पर मतभेद पैदा कर सकता है, उसे बहु–अर्थक कथनों वाला संविधान माना जा सकता है। ऐसा बहु–अर्थक संविधान न तो अपने घटकों की मदद कर सकता है, न ही प्रकृति के साथ प्रतिध्वनित हो सकता है और ताजा रह सकता है।

(ग) भारतीय दंड संहिता, कराधान, प्रशासन, कानून जैसे कई नियम अभी भी कई देशों में गुलामी की क्रूर भावना को प्रतिध्वनित करते हैं, फिर भी संविधान खुद को संप्रभु और स्वतंत्र राष्ट्र (जैसे–भारत) की स्वतंत्रता का संरक्षक कहता है, इसमें संशोधन की नहीं बल्कि स्पष्टता की आवश्यकता है।

(घ) तथाकथित पवित्र लेकिन लगातार संशोधित, स्पष्ट लेकिन नियमित रूप से पुनर्परिभाषित, अच्छी तरह से वितरित लेकिन शायद ही कभी संदर्भित संविधान, चाहता है कि लोग इसका सम्मान करें लेकिन इसे कभी भी उनका प्रत्यक्ष आदेश नहीं मिला, हमें एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा; और यदि संभव हो तो हमें विभिन्न स्वतंत्र समूहों को एक नया संविधान तैयार करने के लिए एक साथ आने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। बदलते परिदृश्य बताते हैं कि हमें एक छोटा और सरल, दृढ़ता से स्थापित लेकिन लचीला प्रणाली, वैश्विक लेकिन स्थानीय अनुप्रयोग, अच्छा और मार्गदर्शक संविधान तैयार करना चाहिए, जिसमें जनमत संग्रह के माध्यम से नागरिकों का खुला आदेश हो।

(2.बी). शासन, प्रशासन और उसका अनुकूलन (भारत का उदाहरण): वैचारिक रूप से यह गलत धारणा और अनुमान है कि भारत एक संघीय गणराज्य या राज्यों का संघ है। परंपरागत रूप से प्राचीन काल से ही यह भौगोलिक क्षेत्र, जिसके पीछे विशाल हिमालय है और एक ओर सिंधु (इंदु–हिंदू) और ब्रह्मपुत्र नदियां हैं, तथा दूसरी ओर महासागर है, हिंदुस्तान या भारत के नाम से जाना जाता है और इसकी संतानें हिंदू और ब्रह्मपुत्र हैं। इसके अलावा, इस क्षेत्र के लोगों द्वारा मानवता के लिए मशाल वाहक बनने के बड़े प्रयास के कारण, इसे भारत की उपाधि भी मिली और फिर इसके निवासियों को भारती, भारतीय के नाम से जाना जाने लगा।

(2.बी.1) प्राचीनतम साहित्य में इस क्षेत्र का नाम जम्मू द्वीप, भरतखण्ड (जम्मू द्वीप) बताया गया है। द्वीप भारत - खंडे)" और इसे भारत का सबसे पुराना उपयोग कहा जाता है और भगवत गीता में भी इसका उल्लेख किया गया है, इस अर्थ को अभी भी इस स्थान को संबोधित करने के लिए विशेष प्रार्थना में सुनाया जाता है। यहाँ भी, इस क्षेत्र को एक माना गया है न कि कई क्षेत्रों/राज्यों का संघ।

यह बुनियादी समझ समझने में कुछ बाधा उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि भारत के थाली में बहुत सारा भोजन है, अर्थात् रेगिस्तानों से लेकर उपजाऊ घाटियों तक, घाटियों से लेकर महान पर्वतों तक, विविध क्षेत्र और विविध प्रकार के भोजन, विविध प्रकार की कलाएं और साहित्य, नृत्य और संगीत, विज्ञान और रहस्यमय विज्ञान, भाषा और अभिव्यक्ति, प्रार्थना और पूजा के तरीके, लेकिन जब इस देश का नागरिक दुनिया के दूसरे हिस्से में जाता है, तो उसे केवल भारत से और हिंदुस्तानी/भारतीय या भारत से और भारतीय के रूप में जाना जाता है, अन्यथा नहीं।

(क) भारत जो यह समझता है कि विश्व एक बड़ा परिवार है, उससे यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि उसके मूल भौगोलिक क्षेत्र में यह समझ की विभिन्न धाराएं हों कि भारत एक इकाई नहीं बल्कि अनेक इकाइयों/राज्यों का संघ है, अतः तर्कपूर्ण रूप से भारत–इंडिया एक है। यह कहना

कि भारत एक संघीय गणराज्य है, कुछ धूर्त कला के महारथियों की चाल प्रतीत होती है जो जाने-अनजाने इस क्षेत्र को यथासंभव अनेक बहानों से विभाजित रखने की नीति पर काम कर रहे हैं, ताकि उनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष वर्चस्व बना रहे और वे तथा उनके अनुयायी इस क्षेत्र से लाभ उठाते रहें।

(बी)। हम पुस्तक - डिविनक्रेसी (दिव्य लोकतंत्र) के अध्याय 9, "भारत की स्थिति: रेलवे और अन्य संचार" का संदर्भ लेना पसंद कर सकते हैं, जिसमें यह स्पष्ट है कि भारत एक विचार के रूप में एक था, न कि राज्यों का संघ या राज्यों का संघ। "अंग्रेजों ने हमें विभाजित किया है", काले और सफेद में एक साहसिक कथन है, अब यह हमारे अधिकार क्षेत्र में है कि हम भारत के कई देशों और प्रत्येक देश के कई राज्यों में विभाजन के घाव को कैसे भरना चाहते हैं।

(ग) स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों में यानी पंद्रह अगस्त उन्नीस सौ सैंतालीस से पहले देश में पाँच सौ पचास से ज़्यादा रियासतें थीं, जिनमें से लगभग सभी ने अपनी इच्छा से आपस में विलय करके वर्तमान भारत का निर्माण किया। अगर स्वतंत्रता-पूर्व के दिनों में कोई कहता कि भारत रियासतों का संघ है तो उसकी सराहना की जा सकती थी, लेकिन अगर स्वतंत्रता और इन रियासतों के विलय के बाद भी कुछ लोग यह कहते रहते हैं कि भारत राज्यों का संघ है तो इसे गंभीर गलतफहमी ही माना जा सकता है।

स्वतंत्र भारत ने प्रशासन में आसानी के लिए इन अट्ठाईस राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का निर्माण किया। अगर कोई कहता है कि "भारत इन अट्ठाईस राज्यों की सहमति से अस्तित्व में आया और भारत को एक संघीय गणराज्य घोषित किया गया" तो ऐसे लोगों को क्या कहा जा सकता है?

(घ) भाषाओं के आधार पर राज्य का विभाजन उसी प्रकार की गलती है [या अच्छी बात है (यदि यह है) जैसा कि धर्म के आधार पर विभाजन है (जिसे भारत ने विभाजन से प्रेरित स्वतंत्रता के दौरान देखा था)। क्षेत्र और धर्म, जाति, पंथ और रंग, पढ़ने, लिखने और बोलने की आदत आदि के आधार पर कोई भी विभाजन उन लोगों के विकास और उन्नति के लिए अवरोध है जिनके विचार में यह विभाजन किया जा रहा है।

पाकिस्तान की स्थिति को देखा जा सकता है जो धर्म के आधार पर अलग हुआ था, जबकि वर्तमान भारत ने धर्म-निरपेक्षता (धार्मिक स्वतंत्रता) को बनाए रखा है। इसलिए बुद्धिमान कहते हैं कि कोई भी विभाजन नकारात्मक परिणाम लाएगा, सिवाय उन लोगों के जो कनेक्टिविटी और संचालन में आसानी के लिए किए गए हैं।

इस दृष्टि से, इन राज्य सरकारों का अस्तित्व ही उस राज्य और पूरे देश के लोगों के दीर्घकालिक विकास के लिए हानिकारक है और इसलिए इन्हें समाप्त कर दिया जाना चाहिए। एक सामान्य

व्यवहार के रूप में लोग अपना अधिकतम ध्यान स्थानीय निकायों और फिर राष्ट्रीय निकायों पर देते हैं। लोग सभी मध्यस्थ संस्थाओं से बचना चाहते हैं, इसलिए लोगों के सामान्य व्यवहार पैटर्न के अनुसार भी, राज्य सरकार का निर्माण और अस्तित्व तर्कसंगत नहीं लगता है।

(2.बी.2). भारत का राष्ट्रीय परिदृश्य फटी हुई पैंट और शर्ट, बिना बनियान, कटे हुए बाल, चेहरे पर बहुत सारी क्रीम और बेशक सोने और हीरे के आभूषणों जैसा हो गया है, ऐसा बेमेल सिर्फ इस एक वजह से हुआ है कि भारत एक संघीय गणराज्य है। विभिन्न प्रत्यक्ष और गुप्त कारणों से राज्यों को चुनिंदा केंद्रीय वित्त पोषण के कारण असमान विकास और भी बढ़ गया है। असमान विकास पैटर्न को हेलीकॉप्टर या सैटेलाइट तस्वीरों से हवाई दृश्य से भी देखा जा सकता है।

(क), लगभग सभी राज्यों की स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि प्रधानमंत्री को स्वच्छता, शौचालय, मुफ्त राशन के अलावा पिछले पचहत्तर वर्षों में आम आदमी के लिए सैकड़ों योजनाएं शुरू करनी पड़ रही हैं, जिनकी देखभाल उस राज्य की सरकार को करनी चाहिए जिसमें वह रहता है। आंकड़ों की बात करें तो देश में अस्सी करोड़ लोग (कुल एक सौ तीस करोड़ आबादी का – साठ प्रतिशत) इतने गरीब हैं कि उनके लिए मुफ्त राशन मिलना भी दयनीय है।

(ग), सुरक्षा के मामले में, चूंकि पुलिस राज्य सरकार के अधीन है, इसलिए केंद्र सरकार केवल आश्चर्य से देखती रहती है, यहां तक कि जब केंद्रीय मंत्री गिरफ्तार होते हैं।

(2.बी.3) एक बार एक प्रधानमंत्री ने अपनी सादगी और शालीनता में कहा कि जब हम (केन्द्र सरकार) जनता को एक रुपया देते हैं तो उसके पास केवल दस पैसे ही पहुंचते हैं, तब सभी ने इस पर टिप्पणी की, कुछ लोग आश्चर्यचकित हुए, कुछ ने उनका मजाक उड़ाया और कुछ ने तो उनकी सरकार को पूर्णतः भ्रष्ट सरकार तक कह दिया, लेकिन किसी ने और किसी संस्था ने इस पर गंभीरता से विचार करने, इस कथन की सत्यता जानने की परवाह नहीं की कि यह सच है या झूठ?

अगर हाँ, तो फिर यह कैसे संभव है? कौन लोग हैं जो इस नब्बे पैसे (केंद्र के नब्बे प्रतिशत पैसे) को बीच में ही खा जाते हैं? कौन लोग हैं जो नियमित रूप से इस नब्बे पैसे (केंद्र के नब्बे प्रतिशत पैसे) को लेन–देन में खा जाते हैं, जिसके लिए प्रधानमंत्री भी कुछ नहीं कर सकते हैं?

साधारण तौर पर देखने पर ऐसा लगता है कि प्रधानमंत्री (केन्द्र सरकार) को जब नकद सब्सिडी या किसी योजना के रूप में जनता को पैसा देना जरूरी लगता है, तो वह पैसा मुख्यमंत्रियों (राज्य सरकार) को दे देते हैं, जो (राज्य सरकार की व्यवस्था) जनता तक पैसा पहुंचाने के चक्कर में 90 प्रतिशत पैसा खा जाते हैं। ऐसा भी लगता है कि प्रधानमंत्री को भी इस बात का पता है, लेकिन वे इस बर्बादी/लूट को रोकने में खुद को असमर्थ/अक्षम पाते हैं और अपनी लाचारी जाहिर करते हैं।

इससे एक बुनियादी सवाल उठता है: यदि राज्य सरकार और उसकी व्यवस्था ही दोषी है, तो फिर हम इस राज्य सरकार से छुटकारा क्यों नहीं पा लेते, जो साधारण लेन-देन के निष्पादन के लिए सरकारी खजाने (मूलतः जनता का पैसा) का नब्बे प्रतिशत धन (संसाधन) खा जाती है या उसे इसकी जरूरत होती है?

आखिर ये राज्य सरकारें क्यों थीं? इन राज्य सरकारों के अस्तित्व का कोई वैध कारण नहीं है। अगर कोई देश चाहता है कि लेन-देन में नब्बे पैसे (नब्बे प्रतिशत धन) का नुकसान न हो, तो देश (भारत) को इन सभी राज्य सरकारों से दूर होना होगा और अगर संसद खुद को ऐसा करने में सक्षम पाती है, तो यह जरूरी है कि देश जनमत संग्रह कराए।

(2.बी.4) देश में समस्या सिर्फ़ अच्छे नेताओं की उपलब्धता ही नहीं है, बल्कि बहुत सारे नेता, कई और एक दूसरे से जुड़े हुए सत्ता केंद्र भी हैं, जो सामूहिक रूप से ज़िम्मेदारी को कम करते हैं और लागत को बढ़ाते हैं। यह एक खुला रहस्य है कि विधान सभा के एक सदस्य के हर चुनाव का खर्च देश के लिए 'दस करोड़' (वर्ष 2022-23) से ज़्यादा आता है, जबकि संसद सदस्य (एमपी) के हर चुनाव का खर्च देश के लिए पचास करोड़ (वर्ष 2019) से ज़्यादा है।

(2.बी.5) भारत में स्थिति चिंताजनक है, जिसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि देश के शीर्ष नेतृत्व ने यह विचार व्यक्त किया था कि देश में सभी चुनाव (राज्यों और केंद्र के) एक साथ होने चाहिए ताकि सभी दलों के राजनीतिक नेता विकास के मुद्दों पर पर्याप्त समय दे सकें, लेकिन आठ साल बीत जाने के बाद भी यह संभव नहीं हो सका।

(2.सी) संवैधानिक निकायों की संख्या को तर्कसंगत बनाने की तत्काल आवश्यकता प्रतीत होती है-शायद कई संस्थाओं को पूरी तरह से त्यागना चाहें जैसे कि सभी राज्य सरकारें और विधान परिषदें, नगर निगम, पंचायत और सरकार द्वारा नियंत्रित सहकारी समितियाँ। यह ध्यान देने योग्य है कि संवैधानिक निकायों, पदों और प्रधानमंत्री, भारत के राष्ट्रपति की शक्तियों को तर्कसंगत बनाने का यह कार्य संसद या न्यायपालिका या संयुक्त रूप से संभव नहीं है, बल्कि जनमत संग्रह के माध्यम से भारत के नागरिकों द्वारा किया जा सकता है।

(2.सी.1) हम देख रहे हैं कि स्वतंत्रता के बाद भारत में विदेशी शासकों के स्थान पर भारतीय शासकों का अत्याचार अधिक है, ऐसा इसलिए है क्योंकि शासन की संरचना (पुलिस और प्रशासन, नियम और कानून, न्यायपालिका प्रणाली, शिक्षा, स्वास्थ्य प्रणाली और बिचौलिया) वही रही।

भारत में वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था स्वतंत्रता-पूर्व युग की प्रणाली की निरंतरता है, जिसमें वही या समान राजनीतिक दल हैं, जिनकी कार्यशैली कमोबेश अंग्रेजों जैसी ही है (जैसे काले अंग्रेज-काले अंग्रेज) और शासक और शासित की प्रथम दृष्टया समान निरंकुश कार्यशैली है। इन

दलों के नेता अभी भी हीन भावना से ग्रस्त हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि उनमें ताकत, सहनशक्ति और साहस तथा पुनरुत्थान की इच्छाशक्ति खत्म हो गई है।

(2.डी). प्रतिमान परिवर्तन आवश्यक है, ऐसा प्रतीत होता है कि, अब समय आ गया है कि समाज उठ खड़ा हो और जिम्मेदारी अपने हाथ में ले। समाज को स्थानीय सुरक्षा, सभी प्रकार के न्याय (जूरी प्रणाली द्वारा), रोजगार,
स्थानीय नियोजन और राष्ट्रीय नियोजन में भागीदारी, धार्मिक आवश्यकता, स्वास्थ्य और शिक्षा, मीडिया और मनोरंजन, पर्यावरण और स्थानीय आर्थिक गतिविधि, करों का संग्रह, अपने आसपास के उद्योगों को चलाने में भागीदारी और अन्य स्थानीय मुद्दे। दूसरी ओर राष्ट्रीय सरकार संवैधानिक न्यायालय, रिजर्व पुलिस और सेना, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संपर्क (एक ओर सड़क, रेल, जल और वायु और दूसरी ओर ऑडियो, वीडियो और डेटा), आपदा प्रबंधन और राहत अभियान, राष्ट्रीय त्योहार और समारोह, अनुसंधान और विकास में योगदान, विदेशी मामले और अंतर्राष्ट्रीय विकास के लिए विभाग आदि को संभालने तक ही खुद को सीमित रखेगी। देश को राष्ट्रीय सरकार (चुने हुए संसद सदस्यों के माध्यम से) कुछ क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों और समाज द्वारा संचालित जिला केंद्रों (स्थानीय सुविधा सह संसाधन केंद्रों सहित) के साथ बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, चूंकि प्रकृति ने कोई भी खुले–अंत वाला नेटवर्क और प्रणाली प्रदान नहीं की है, इसलिए प्रकृति में सभी प्रणालियां कमोबेश बंद लूप वाली होती हैं, कुछ छोटे लूप का अनुसरण करती हैं जबकि अन्य लंबे लूप का अनुसरण करती हैं, जैसे जल चक्र और जीवन चक्र, इसलिए हमारे लिए यह विवेकपूर्ण होगा कि हम जीवन और जीवन चक्र के सुचारू संचालन के लिए जांच और संतुलन, फीडबैक और सुधारात्मक तंत्र की अंतर्निहित सुविधाएं रखें।

कहा जाता है कि स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आती है; यह इसके विपरीत है, जब कोई जिम्मेदार होता है, तभी वह स्वतंत्रता का लाभ उठा सकता है। आइए हम एक व्यक्ति के रूप में, एक परिवार के सदस्य के रूप में, एक आम नागरिक के रूप में, एक अर्थशास्त्री, न्यायाधीश, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आदि के रूप में अपने हर कार्य (गलत काम या कृत्य) के लिए जिम्मेदार बनें और जिम्मेदार बने रहें। तभी हम स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं और स्वतंत्रता को बनाए रख सकते हैं तथा स्वस्थ और खुश रह सकते हैं।

(3). शासन–प्रशासन–प्रबंध पर व्यापक दृष्टिकोण :

(3.A). अगर कोई अपना काम खुद कर सकता है, तो इससे बढ़िया कुछ नहीं है। बड़े काम के लिए, बड़ी मात्रा में, और विभिन्न परिस्थितियों में, साधन संपन्न व्यक्ति (शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से), समाज और सरकार दूसरों का योगदान/सेवाएँ लेते हैं। आम तौर पर, दूसरों का योगदान/सेवाएँ निम्नलिखित में से किसी एक (या संयोजन में) तरीके से ली जाती हैं:

(i) दूसरों को प्रोत्साहित करना और उनका मार्गदर्शन करना, या,
(ii) आवश्यक क्रम में लोगों, मशीनों और सामग्रियों की सुविधा/व्यवस्था करके, या
(iii) मानव मशीन, धन, सामग्री और बाजार का प्रबंधन करके, या
(iv) वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए मानव, मशीन, धन, सामग्री और विपणन का प्रबंधन करके,

यदि हम उपरोक्त चार श्रेणियों पर बारीकी से नजर डालें, तो हम समझ सकते हैं कि श्रेणी क्रमांक एक, हृदय और उद्देश्य में उदार एक वास्तविक नेता की है, जो परिणाम के लिए सामूहिक प्रयास की इच्छा रखता है।

श्रेणी दो उस व्यक्ति से संबंधित है जो परिणाम के लिए व्यक्तियों और वस्तुओं की व्यवस्था करता है और उसे संयोजक या सुगमकर्ता या प्रबंधक कहा जाता है।

तीसरी श्रेणी मैनेजर की है, जो सिर्फ चीजों, वस्तुओं और व्यक्ति का प्रबंधन करता है। चूंकि ये मैनेजर फिर से प्रबंधित किए जा रहे हैं, इसलिए मैनेजर का उन्मुखीकरण किसी भी तरह या किसी भी तरह से कार्य को पूरा करना है।

चौथी श्रेणी प्रशासक की है, जो प्रशासन से काम करवाने का काम करता है। चूंकि इन वर्गों को भी व्यवस्था मिलती है, इसलिए स्व–दासता और उसका प्रचार इसी श्रेणी से होता है।

हम, जनता द्वारा और जनता के लिए सरकार, को तब विश्वास होता है जब चीजें समाज की या सरकार की होती हैं, किसी निजी की नहीं; संदेह तब उत्पन्न होता है जब चीजें विदेशी होती हैं और यह संदेह तब और बढ़ जाता है जब चीजें बहुराष्ट्रीय और विवादास्पद होती हैं।
जबकि घबराहट तब शुरू होती है जब सरकारी नियम एक सक्शन पंप की तरह काम करते हैं जो आम लोगों से पैसा लेता है और इसे जेट की तरह अमीरों तक पहुंचाता है, यानी अमीरों की सरकार अमीरों द्वारा और अमीरों के लिए, या सरकारी कर्मचारी की सरकार सरकारी कर्मचारी द्वारा और सरकारी कर्मचारी के लिए।

व्यक्तिगत रूप से हम चाहते हैं कि घर का खजाना भरा रहे और सामूहिक रूप से हम चाहते हैं कि समाज और सरकार का खजाना भरा रहे। घर का खजाना व्यक्ति को सुरक्षा और विश्वास देता है और समाज और सरकार का खजाना जनता और समाज को सुरक्षा और विश्वास देता है। हम घर पर परिवार को उपयोगी कार्यों से जुड़ने और उन्हें साकार करने के लिए समय और धन लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। सामूहिक रूप से समाज और सरकार ये काम करते हैं और उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे स्थायी सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समय, धन और ऊर्जा का निवेश करें।

हम घर पर जब किसी कार्य में लगे होते हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार कार्य लेता है या पाता है और परिवार के ट्रस्टी के स्तर पर प्रतिफल प्राप्त करता है, यही बात समाज (बड़े परिवार) में भी करने की आवश्यकता है, जिसमें भागीदार ट्रस्टी होते हैं, न कि केवल कर्मचारी जिन्हें अन्य वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा प्रबंधित या प्रशासित किया जाता है।

प्रबंध शैली पारिवारिक संबद्धता की हो सकती है, जिसमें पारस्परिक विश्वास और सम्मान डूबा हो, जो व्यक्तिगत और सामूहिक सुख के लिए सर्वोत्तम हो सकती है।

(3.बी) प्रशासन–प्रबंधन पर विवादास्पद मुद्दे और विविध विचार:

(क) यद्यपि कठोरता उचित आधार प्रदान करती है, किन्तु कठोरता मृतकों के लिए है, नियम और विनियमन में सजीवता, जीवंतता और गतिशीलता प्रेम और सद्भावना भाव के दृढ़ आधार पर सबसे अधिक प्रदान करती है।

सरकार की प्रथम दृष्टया यह धारणा कि सभी चोर हैं (इसलिए सख्त व्यवस्था), इसके स्थान पर सभी ईमानदार हैं (इसलिए उजली व्यवस्था) ने प्राकृतिक मानदंडों का उल्लंघन करने वालों को ईमानदार होने के लिए पर्याप्त पीड़ा और पर्याप्त अवसर प्रदान किया है। पहली व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले ईमानदार को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि दूसरी व्यवस्था का उल्लंघन करने वाले भ्रष्ट/चोरों को दंडित किया जाता है, हालांकि अराजक स्थितियों में ईमानदार को दंडित किया जाता है और चोर और जोड़–तोड़ करने वाले पुरस्कार और इनाम पाने में कामयाब हो जाते हैं।

सरकारी क्षेत्रों में सौ प्रतिशत नौकरी की सुरक्षा, निचले कैडर में कर्मचारियों का गैर–स्थानांतरण और छोटी–मोटी गड़बड़ियों के लिए कोई दंड न मिलने से उनकी सेवाओं के प्राप्तकर्ताओं को भारी पीड़ा हुई है। इसके अलावा कड़ी मेहनत और ठेकेदारों द्वारा ठेका श्रमिकों का लगातार शोषण, सही प्रबंधकों/प्रशासकों पर अनावश्यक तनाव और साथ ही सरकार को औपनिवेशिक रूप देना। चूंकि गुणवत्ता, दक्षता और सेवाओं की निरंतरता लक्ष्य नहीं थी; इसलिए अधिकांश सरकारी उद्यम विफल हो गए और विफल हो रहे हैं।

(बी) भारतीय प्रबंध संस्थान – भारतीय प्रबंध संस्थान (भारतीय प्रबंधन संस्थान) अंग्रेजी और हिंदी में एक ही अर्थ नहीं दोहराता है, प्रबंध – प्रबंध का अर्थ है व्यवस्था या सुविधा। इसके अलावा ये सभी संस्थान सिर्फ व्यवसाय पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और बीबीए–एमबीए (बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन के स्नातक या परास्नातक) जैसी डिग्री जारी कर रहे हैं, जो समाज या देश के लिए आवश्यक अन्य सभी प्रबंधन को छोड़ देते हैं। यह हमें वर्तमान जेब में बंद विकास के स्थान पर सर्वांगीण विकास के मापदंडों को फिर से परिभाषित करने के लिए कहता है।

(सी) यह कहा जाता है कि, "व्यक्तिगत उद्यमी विचारों की शक्ति वृद्धि और विकास की कुंजी है"। ऐसे व्यक्ति को शुभकामनाएं और समर्थन प्रदान करना, पूंजीवादी शासन में विकास की कुंजी थी/है, देश के विकास के लिए इसे छीनना एक अन्य शासन के लिए महत्वपूर्ण था, व्यक्तिगत विचार को समर्थन प्रदान करना, कंपनी के नाम पर पेटेंट करना और तथाकथित खुले बाजार और मुक्त प्रतिस्पर्धा में उत्पाद को बढ़ावा देना नए शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत के नवीनतम लेकिन असफल शासन की कुंजी थी।

विकास तभी आगे बढ़ेगा जब एक व्यक्तिगत उद्यमी के विचार, कल्पना और दृष्टिकोण को समाज और सरकार द्वारा समर्थन और स्वीकृति मिलेगी, ताकि यह सभी मानव जाति के लिए लाभकारी हो। समरूप और सामंजस्यपूर्ण विकास तब होगा जब पूरे शरीर को पूरा सम्मान और उसका उचित हिस्सा मिले, न कि केवल सिर को। इस तरह बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट को खत्म करना होगा ताकि हम एकीकृत तरीके से आगे बढ़ सकें।

(घ) हम समाज में जो देख रहे हैं, वह लगभग सभी द्वारा भेदभाव और विचलन का उपदेश है, चाहे वे सामाजिक प्रेरक हों, धार्मिक दक्षिणपंथी हों या राजनीतिक प्रचारक। यह देखा गया है कि परिवार और समाज नामक दो सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं को व्यवस्थित रूप से पिछवाड़े में धकेल दिया गया है। परिवार और समाज को पीछे धकेलने की प्रक्रिया लगभग तीन हज़ार साल पहले व्यक्तियों की व्यक्तिगतता और सफलता की निरंतर और निरंतर बयानबाजी द्वारा शुरू हुई थी, चाहे वह आध्यात्मिक क्षेत्र में हो या भौतिक/आर्थिक क्षेत्र में " **अपने मालिक खुद बनो, अपना प्रकाश खुद बनो" जैसे उपदेशों द्वारा।** इस मनोवैज्ञानिक बदलाव ने परिवारों और समाजों की मूल ताकत को तोड़ दिया है, जिसके परिणामस्वरूप अराजकता है जिसे हम चारों ओर देख रहे हैं। इसके लिए बड़े पैमाने पर मंथन की आवश्यकता है और हमें अपनी मांद से उठकर व्यवस्था में अपेक्षित बदलाव लाने की आवश्यकता है।

(ई) अगर आप किसी व्यक्ति या समुदाय को तोड़ना चाहते हैं, तो उनकी आस्था को तोड़ें, और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है उनके आस्था केंद्रों को तोड़ना या उन्हें निष्क्रिय/निष्क्रिय बनाना। और अगर हम किसी व्यक्ति या समुदाय को एकजुट करना चाहते हैं तो उनके आस्था केंद्रों को सक्रिय और क्रियाशील बनाएं यानी उनके धार्मिक केंद्र का पुनर्निर्माण करें।

समाज के धार्मिक केन्द्र की स्थिति से उस समाज के व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की स्थिति का पता चलता है। यदि धार्मिक स्थल की स्थिति गंदी और जीर्ण–शीर्ण है, तो उस समाज की स्थिति भी वैसी ही होगी। यदि धार्मिक केन्द्र की स्थिति सामंजस्य, लय, समन्वय और ऊर्जायुक्त है, साथ ही स्वच्छ (जो कि मूलभूत आवश्यकता है) है, तो वहां आने वाले लोगों की स्थिति भी अच्छी होगी और इसी प्रकार उन्हें अच्छा मार्ग भी दिखाएगी।

ये दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं और सीधे आनुपातिक हैं यानी अगर समुदाय की स्थिति सुधरती है, या अगर पूजा स्थल की स्थिति सुधरती है तो दूसरे की स्थिति भी सुधरेगी। वाइजमैन हमें छोटे कदम उठाने के लिए कहते हैं यानी पूजा स्थल की स्थिति सुधरेगी, देश और समाज की स्थिति अपने आप सुधर जाएगी।

परन्तु जिनके लिए कर्म ही पूजा है, उनके लिए उनका कार्य–स्थल ही मन्दिर है, संतों और साधुओं के लिए प्रत्येक स्थान मन्दिर है और आनन्द के लिए वे स्वयं ही मन्दिर बन जाते हैं।

(च) ऐसा कहा जाता है कि: प्रार्थना व्यक्तिगत है और इसे निजी स्थान पर निजी तौर पर किया जाना चाहिए, काम स्पष्ट है और इसे निर्दिष्ट कार्य स्थान पर किया जाना चाहिए जैसे हम घर पर अन्य परिवार के सदस्यों के साथ काम करते हैं (जहां हर कोई अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार योगदान देता है और अपनी आवश्यकता और आवश्यकताओं के अनुसार भाग लेता है) जबकि पार्टी/उत्सव वैकल्पिक है लेकिन इसे भागीदारों और दोस्तों के साथ सार्वजनिक स्थान पर किया जाना चाहिए।

अफ़सोस! हम जो देख रहे हैं, वह बिलकुल उल्टा है, सार्वजनिक स्थानों पर वर्दी पहनकर प्रार्थना की जा रही है, काम एक उदासीन माहौल में गुलाम या मशीन की तरह किया जा रहा है और पार्टी करना बिलकुल बंद हो गया है या फिर खुद को लाड़–प्यार करने या ज़्यादा से ज़्यादा अपने करीबी लोगों के साथ पार्टी करने जैसा हो रहा है। इससे समाज में उथल–पुथल मच रही है और अराजकता फैल रही है, जिससे हमें सावधान रहने की ज़रूरत है।

(3.सी) चयन/चुनाव प्रक्रिया: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सामान्य विषयों की परीक्षा में विद्यार्थी पैंतीस प्रतिशत अंकों पर उत्तीर्ण होते हैं, जबकि मेडिकल शिक्षा की परीक्षा में विद्यार्थी पचास प्रतिशत अंकों पर उत्तीर्ण होते हैं (यह देखते हुए कि मेडिकल ऐसा क्षेत्र है, जहां गलतियां किसी की जान जोखिम में डाल सकती हैं), तथा प्रथम प्रयास में किसी भी असफलता के लिए पूरक परीक्षाएं सामान्य बात हैं। आश्चर्य की बात है कि लोकतंत्र में चुनावों में उम्मीदवार को बिना यह देखे कि उसे कितने प्रतिशत वोट मिले हैं, विजेता घोषित कर दिया जाता है? यह अधिक गंभीर क्षेत्र है तथा मेडिकल कॉलेज की परीक्षा उत्तीर्ण करने से भी अधिक कठोर प्रक्रिया की आवश्यकता है। यह देखा गया है कि एक स्तर तक उम्मीदवार/प्रतिनिधि का चयन सर्वोत्तम परिणाम देता है,

लेकिन उच्च स्तर पर चयन और चुनाव की प्रक्रिया को मिलाना पड़ता है, अर्थात पहले कुछ का चयन करना तथा उनमें से एक का चुनाव करना।

सामान्य मतदान (वर्तमान में प्रचलित) के साथ–साथ, भविष्य में बैंक खाते से सत्यापित पासवर्ड के माध्यम से इंटरनेट द्वारा मतदान पर विचार किया जा सकता है। इंटरनेट संचालित मतदान में कोई विकल्प नहीं है और पूरी तरह से अलग विकल्प शामिल किए जाने चाहिए। जब इंटरनेट मतदान शुरू होता है, तो उन लोगों से कुछ जुर्माना काटा/लगाया जाना चाहिए जिन्होंने मतदान नहीं किया है।

(i) विजेता सब कुछ ले लेता है और हारने वाला सब कुछ खो देता है, वाली मौजूदा व्यवस्था में बदलाव की जरूरत है। खेल की तरह यह व्यवस्था कहती है कि पहले स्थान पर रहने वाले को स्वर्ण, दूसरे को रजत और तीसरे को कांस्य मिलता है। इसे राजनीति/राजनीतिक क्षेत्र सहित जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी लागू किया जा सकता है, जिसमें प्रत्येक के लिए अलग–अलग स्तर की जिम्मेदारी होगी।

(ii) हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था में अच्छे नेताओं की समस्या उतनी नहीं है, जितनी कि बहुत अधिक नेताओं की है, जो ऐसी समस्याएं पैदा कर रहे हैं, जैसे कि, "बहुत अधिक रसोइये न केवल भोजन को खराब कर देते हैं, बल्कि भोजन पकने से पहले ही खत्म हो जाता है, भूखे को भोजन परोसने की तो बात ही क्या करें", जिसका समाधान किया जाना आवश्यक है।

(iii) प्रकृति में व्याप्त भ्रष्टाचार ही विकास और क्रांति, वृद्धि और क्षय के लिए जिम्मेदार है। सभी जीव, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, भोजन और उत्सव में भ्रष्टाचार के कारण ही बढ़ते हैं।

जैसे–जैसे व्यक्ति, समाज और देश आगे बढ़ता है, भ्रष्टाचार का चरण विशुद्ध शारीरिक से मानसिक में बदल जाता है। मौलिक और भौतिक स्तर पर, अविकसित देश सबसे अधिक भ्रष्ट हैं, विकासशील कम भ्रष्ट हैं, और विकसित और भी कम भ्रष्ट हैं; जबकि उन्नत स्तर पर विकसित देश आमतौर पर अविकसित और विकासशील देशों की तुलना में मानसिक रूप से अधिक भ्रष्ट हैं।

यह बात समझनी चाहिए कि मानसिक भ्रष्टाचार ज़्यादातर दूसरे भ्रष्टाचारों का कारण होता है। आम तौर पर, किसी देश में अगर मुखिया/प्रधानमंत्री भ्रष्ट है तो उसे अपने ट्रस्टी/मंत्री को भी भ्रष्ट और अधीनस्थों को ईमानदार रखना होगा। इससे आगे चलकर ऐसी स्थिति पैदा होगी कि मंत्री भी अपने ट्रस्टी को भ्रष्ट मानेगा और अपने अधीनस्थ को ईमानदार रखना चाहेगा और इस

तरह यह सिलसिला चलता रहेगा। इसी तरह, अगर मुखिया/प्रधानमंत्री अक्षम है तो वह अपने मंत्रियों में से अक्षम मंत्रियों को चुनेगा, अक्षम मंत्री अपने सचिवों में से अक्षम लोगों को चुनेगा और अक्षम सचिव अक्षम चेयरमैन, निदेशक, जिला प्रशासक आदि को चुनेंगे।

ऊपर बताए गए दोनों ही तरीकों से, चाहे शीर्ष नेता भ्रष्ट हो या अक्षम, व्यवस्था ध्वस्त हो जाती है। इस तरह की परिस्थितियाँ तब और बढ़ जाती हैं जब धर्मी लोग पीछे हट जाते हैं और अनुभवहीन और भ्रमित लोगों को नेतृत्व करने देते हैं। धर्मी लोगों के पीछे हटने से भ्रष्टाचार (यानी भोजन में नमक) का महीन संतुलन बिगड़ जाता है और अराजक स्थितियाँ पैदा होती हैं।

ये संकेत देते हैं कि हमें स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव/चयन के लिए अपनी चुनाव/चयन प्रक्रिया को मजबूत करना होगा ताकि यह समाज और देश को सर्वश्रेष्ठ नेता दे सके। बेहतर भविष्य के लिए हमें एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है जिसमें मुखिया का चयन ऋषि (प्रबुद्ध लोगों के समूह) द्वारा किया जाता है, जो निर्वाचित सदस्यों में से हो सकता है या यदि आवश्यक हो तो अनिर्वाचित सदस्यों में से भी हो सकता है।

यह दर्शाता है कि हमें लोकतंत्र के एक बेहतर संस्करण की ओर आगे बढ़ने की आवश्यकता है जो हमें स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर शासन और प्रशासन की समस्याओं से मुक्त कर सके।

(3.डी) चयन/चुनाव प्रक्रिया पर व्यय:

हर कोई जानता है और समझता है कि किसी भी संगठन और संगठनात्मक गतिविधि के लिए जनशक्ति और धन की आवश्यकता होती है, और यदि गतिविधि बड़ी हो, जिम्मेदारियां अधिक हों और जनशक्ति बड़ी हो तो आवश्यकता तेजी से बढ़ जाती है।

वर्तमान अप्रत्यक्ष फंडिंग के तरीके में राजनीतिक दल भी बड़े दानदाताओं/योगदानकर्ताओं के प्रति कृतज्ञ महसूस करते हैं और जीतने के बाद सरकारी खरीद, अनुबंध, पट्टे और आवंटन, कराधान में संशोधन, विशेष अवसरों पर पुरस्कार और पुरस्कार देने के रूप में इसे चुकाने के लिए मजबूर महसूस करते हैं। यह सब करने और निर्दोष और ईमानदार दिखने के लिए राजनीतिक दलों को विभाजन प्रथाओं का उपयोग करने और पिछले दरवाजे से पारदर्शिता लाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। फंडिंग का यह अप्रत्यक्ष तरीका किसी भी देश के करदाताओं और नागरिकों के लिए बहुत महंगा है।

ऐसा कहा जाता है कि सकल घरेलू उत्पाद के एक प्रतिशत के बराबर व्यय से सभी राजनीतिक/राजनीतिक दलों के चुनावों और सभी वास्तविक गतिविधियों का आसानी से प्रबंधन

किया जा सकता है, जिसे कोई भी देश आसानी से वहन कर सकता है। राजनीतिक दलों की ज़रूरतें, प्रत्यक्ष वित्तपोषण के लाभ, प्रत्यक्ष वित्तपोषण की जाँच और संतुलन की लगातार समीक्षा की जानी चाहिए।

(3.ई) नेतृत्व विकास:

राष्ट्र का निर्माण संसद और विधानसभाओं में नहीं बल्कि घरों और स्कूलों में होता है। चूंकि राष्ट्र छोटे-छोटे बच्चों के पैरों पर चलता है, इसलिए हमें सही तरह की शिक्षा और प्रशिक्षण के साथ जमीनी स्तर पर शुरुआत करनी होगी, जिसमें सही तरह के अनुभवी शिक्षक (जिनमें सेवानिवृत्त राजा-रानी, प्रधानमंत्री-राष्ट्रपति, मंत्री, चेयरमैन-वैज्ञानिक-सेना के जनरल आदि शामिल हो सकते हैं) शामिल हों, जैसे भारत के राष्ट्रपति डॉ. एपीजे कलाम एक विश्वविद्यालय से जुड़े और विभिन्न व्याख्यान दिए।

सत्तर वर्ष से अधिक की आयु में जीवन के सभी पहलुओं को पर्याप्त रूप से देख चुके इन शिक्षकों से बिना किसी अपेक्षा के अपने विद्यार्थियों और प्रशिक्षुओं को पढ़ाने और प्रशिक्षित करने की उम्मीद की जा सकती है। ऐसे शिक्षक का एक प्रसिद्ध कथन यहाँ प्रस्तुत है: - "पिछले पच्चीस वर्षों से पढ़ाने के बाद भी मेरे पास एक भी अनुयायी नहीं है, ऐसा नहीं है कि लोग यहाँ पढ़ने नहीं आते थे, यहाँ आम आदमी से लेकर राजकुमार/राजकुमारी तक आते हैं, लेकिन चूँकि मैं स्वतंत्रता का पाठ पढ़ाता हूँ और फिर अनुयायी होना यह दर्शाता है कि मैंने पाठ अच्छी तरह से नहीं पढ़ाया है"।

(2). कुछ लोग कहते हैं कि किसी भी देश की सर्वोच्चता उसके विश्वविद्यालय पर निर्भर है और वे यूरोप और अमेरिका के ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज और हार्वर्ड जैसे विश्वविद्यालयों का उदाहरण देते हैं। ये लोग चाणक्य को उद्धृत करते हैं जिन्होंने कहा था कि विश्वविद्यालय की तुलना में साम्राज्य बनाना आसान है। हालाँकि, यह देखा गया है कि एक देश और उसके विश्वविद्यालयों की स्थिति एक साथ चलती है, एक दूसरे को शक्ति देता है। ये लोग कहते हैं कि अगर कोई देश सफल होना चाहता है तो उसे एक अच्छा विश्वविद्यालय बनाना होगा, एक ऐसा विश्वविद्यालय जो दुनिया भर से अच्छे शिक्षकों और भावी अच्छे छात्रों को आकर्षित कर सके। संस्कृत में विश्वविद्यालय को विश्व-विद्यालय कहा जाता है (जिसका विपरीत अर्थ वैश्विक विद्यालय है) - और एक संस्थान के रूप में परिभाषित किया जाता है जो सार्वभौमिकता सिखाता है, कि दुनिया एक एकल इकाई है। ऐसा कहा जाता है कि व्यक्तिवाद घृणा पैदा करता है और शैतानी है

(3). कुछ लोग कहते हैं कि "जन्मजात नेता होते हैं और फिर पत्राचार पाठ्यक्रम लेने वाले लोग होते हैं"। कुछ अन्य कहते हैं कि "प्राकृतिक हीरे होते हैं और फिर प्रयोगशाला/उद्योग में बनाए

गए हीरे होते हैं"। फिर कुछ लोग कहते हैं कि हीरे का मूल्य उसके शोधन से बढ़ाया जा सकता है जिसे लोग उसके कट, शिल्प, कैरेट, रंग के अनुसार पसंद करते हैं। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि इसी तरह जन्मजात नेताओं को उचित शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रदर्शन और परीक्षा द्वारा महान नेता बनाया जा सकता है।

लेकिन "पंचतंत्र की कहानी" में एक बड़ा रहस्योद्घाटन यह है कि एक सामान्य शिक्षित राजकुमार भी राजा–रानी, राष्ट्रपति–प्रधानमंत्री आदि जैसी बड़ी चुनौती लेने के लिए तैयार हो सकता है।
(3). कुछ लोग कहते हैं कि "जन्मजात नेता होते हैं और फिर कुछ ऐसे होते हैं जो पत्राचार पाठ्यक्रम लेते हैं"। कुछ अन्य कहते हैं कि "कुछ हीरे प्राकृतिक लगते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो प्रयोगशाला/उद्योग में बनाए जाते हैं"। फिर कुछ लोग कहते हैं कि हीरे का मूल्य उसके शोधन से बढ़ाया जा सकता है जिसे लोग उसके कट, शिल्प, कैरेट, रंग के अनुसार पसंद करते हैं। बुद्धिमान लोग कहते हैं कि इसी तरह जन्मजात नेताओं को उचित शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रदर्शन और परीक्षा द्वारा महान नेता बनाया जा सकता है।
लेकिन "पंचतंत्र की कहानी" में एक बड़ा रहस्योद्घाटन यह है कि एक सामान्य शिक्षित राजकुमार भी राजा–रानी, राष्ट्रपति–प्रधानमंत्री आदि की बड़ी चुनौती लेने के लिए तैयार हो सकता है।

(4). हमारे सामने एक अजीब स्थिति है, क्योंकि हमारे पास समाधान तो हैं लेकिन हम अभी भी समस्याओं से जूझ रहे हैं। उदाहरण के लिए: राजनीतिक हलकों में, हर राजनीतिक दल अनुभवहीन युवा वर्ग और बड़ी संख्या में बुजुर्गों की समस्या से जूझ रहा है, जो किसी अच्छे एग्जिट प्लान की अनुपलब्धता के कारण अपनी सीटों पर ही टिके हुए हैं।

इसी तरह, देश ऊर्जावान और अच्छे नेताओं की समस्या का भी सामना कर रहे हैं जो मंत्रियों का प्रभार संभाल सकें, जिसके कारण सत्ता में राजनीतिक दलों को सचिवों की मदद लेने और उन्हें मंत्री बनाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। ऐसी समस्या का समाधान नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम खोलकर आसानी से किया जा सकता है, जिसमें सभी सम्मानित वरिष्ठ मंत्रियों को एक सभ्य और सम्मानजनक निकास योजना के रूप में नए और अनुभवहीन लोगों को पढ़ाने की पेशकश की जा सकती है।

वरिष्ठ राजनेताओं, व्यवसायिक नेताओं द्वारा उभरते नेताओं को समग्र बुनियादी कक्षा शिक्षण और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए मौजूदा कॉलेजों के साथ इसी तरह के प्रयास किए जा सकते हैं, इससे न केवल दोनों छोर पर समस्याएं हल होंगी, बल्कि देश और समाज को कई अन्य लाभ भी होंगे। कार्य का वितरण यह सुझाव देता है कि चौबीस वर्ष की आयु तक शिक्षा और बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त करने में शामिल होने की आवश्यकता है और फिर बहत्तर वर्ष की आयु से व्यक्ति

को अपने जीवन के अनुभव को साझा करने और आवश्यक और योग्य लोगों को आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण प्रदान करने में शामिल होने की आवश्यकता है।

(5) जो नेता जिले या देश की मुख्य कमान संभालने जा रहा है, उसे भावना के स्तर पर भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, यानी जब कोई ऊंची आवाज में या सामान्य आवाज में या दर्द और दुख में कुछ कहता है और फिर बिना आवाज के यानी पूरी तरह से खामोशी या दबी हुई आवाज में कुछ कहता है, तो लोगों की भावना की सराहना करनी चाहिए। उन्हें यह भी प्रशिक्षित किया जाना चाहिए कि जब कोई अपराध या गलती न की गई हो, तो सजा मिलने पर कैसा महसूस होता है।

अफसोस! अब राजनेताओं को कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जा रहा है। अब राजनेताओं को अपने से वरिष्ठों को देखकर या अपनी सफलताओं और गलतियों से ही सीखना पड़ता है। प्रशिक्षण के अभाव के कारण लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित व्यवस्था में शासन सरकारी कर्मचारियों के रहमोकरम पर चल रहा है, जो कि यथास्थिति बनाए रखने के लिए प्रशिक्षित हैं। ऐसे में राजनेताओं की कोई भी अच्छी बात या तो दुर्घटनावश या फिर कोई विकल्प न होने पर लिए गए निर्णय के रूप में कही जाती है। पिछले ढाई हजार वर्षों में भारत की जो दुर्गति हुई है, उसका संबंध विभिन्न विश्वविद्यालयों के पतन (लूट, बुलडोजर या आगजनी या फंड की कमी के कारण बंद होना) और स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में शिक्षकों/शिक्षण के स्तर में गिरावट से है। उनका कहना है कि इन्हें शिक्षा संस्थान और विश्वविद्यालय कहना भी उचित नहीं है, जो केवल एक इलाके या एक शहर या अधिक से अधिक एक क्षेत्र की सेवा कर रहे हैं और सार्वभौमिकता के स्थान पर व्यक्तिवाद, क्षेत्रवाद और राष्ट्रवाद का प्रचार कर रहे हैं।

ऐसा कहा जाता है कि कोई भी शिक्षा और प्रशिक्षण तब सर्वोत्तम परिणाम दे सकता है जब वह नियंत्रण (किसी राज्य या देश की सरकार और किसी विशेष क्षेत्र और धर्म के) से मुक्त हो, तथा विश्व पर सतत दृष्टि रखता हो और समुदाय तथा पूर्ववर्ती छात्रों (अनुग्रह और कृतज्ञता के रूप में) द्वारा वित्तपोषित हो।

इससे हमारी सभ्यता का गौरव पुनः स्थापित हो सकता है ।

13. पर्यटन की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था का भ्रमण

निम्नलिखित प्रस्तुत है: स्वस्थ, सुखी और टिकाऊ समाज के लिए "पर्यटन की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था का भ्रमण" के संबंध में प्रस्तुति चार भागों में प्रस्तुत की जा रही है : (1). मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2). पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच चर्चा,

(1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा:

(1.A). पर्यटन मुख्य रूप से एक समय बिताने की गतिविधि है जिसमें व्यक्ति अपने घर से दूर किसी बेहतर जगह पर शरण लेने की इच्छा रखता है, कम से कम कुछ समय के लिए ताकि नियमित गतिविधि से बच सके और/या तरोताजा हो सके। आम तौर पर, पर्यटन का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र अनुभव को समृद्ध करना होता है, जबकि व्यक्ति नए भूगोल, नए स्थानों, नई संस्कृति और परंपराओं, लोगों और उनकी जीवनशैली से परिचित होता है।

पर्यटन को शिक्षा और प्रशिक्षण का विस्तार, पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और विशेष स्थानों पर प्रार्थना करने के अलावा विशेष स्थानों और अस्पतालों में इलाज कराने के रूप में भी कहा जा रहा है, जिसे अभी तक पर्यटन नहीं कहा जा सकता। चिकित्सा पर्यटन एक बीमार मानसिकता है जो लोगों को दूसरों की बीमारी/बीमारी/परेशानी से कमाई करने के लिए उकसाती है और मूल धर्म के खिलाफ है; हालांकि, हर तरह की बीमारी के इलाज के लिए दरवाजे हमेशा खुले रहने चाहिए।

(क) आम तौर पर तीर्थस्थल ऋषियों, साधुओं, फकीरों, संन्यासियों, साधकों, गुरुओं के निवास स्थान होते हैं, न कि स्व-निर्मित ब्रह्मचारी या मजबूर ब्रह्मचारी) और इस तरह की शांति के लिए, अधिक से अधिक पर्यटकों को आकर्षित करने के बजाय क्षेत्र में शांति स्थायी महत्व रखती है। इससे पता चलता है कि किसी भी स्थान को वैश्विक धार्मिक पर्यटन स्थल बनाने की कवायद क्षेत्र की समग्र शांति और सद्भाव के लिए हानिकारक हो सकती है।

(बी) समाज और सरकार को सभी बुनियादी ढांचे का समर्थन प्रदान करना होगा, जैसे कि हरा-भरा वातावरण, भिखारी मुक्त वातावरण, धोखाधड़ी मुक्त होटल, जगह की स्वच्छता बनाए रखना और अच्छी तरह से जुड़े और आरामदायक परिवहन की व्यवस्था करनी होगी। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए हमें कॉरपोरेट और औद्योगिकीकरण से ज़्यादा जंगल और वानिकी की ज़रूरत है।

(2) प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों के बीच चर्चा:

(2.A) पर्यटकों से होने वाली आय पर निर्भर रहना चर्च, मस्जिद, मंदिर के पुजारियों और इन संस्थाओं के बाहर बैठे भिखारियों के लिए तो अच्छा हो सकता है, लेकिन समाज और देश के लिए

नहीं। दूसरों के दुख, अज्ञानता और बीमारियों से सीखना घिनौना है, क्योंकि ये ही वे लोग हैं जो पर्यटन पर जाते हैं।
विदेशी समुद्र तट, ताजगी देने वाली मदिरा, ग्रामीण इलाकों में भांग और ताजी पकी हुई मछलियाँ अच्छी लगती हैं, लेकिन कई देशों में इस तरह के पर्यटन के बारे में बहुत बुरा अनुभव है; धर्म, शिक्षा, स्वास्थ्य/चिकित्सा पर आधारित कोई भी पर्यटन विकास एक पाखंडी समाज और देश का निर्माण करेगा और स्थानीय लोगों में जटिलताएं (हीनता या श्रेष्ठता) पैदा करेगा और भीख मांगने और व्यापार को बढ़ावा देगा या आकर्षित करेगा।

पर्यटन पर आधारित अर्थव्यवस्था आधारित बजट बनाना एक गलत विचार है और श्रीनगर, श्रीलंका या स्विटजरलैंड हो या फिर जल्दी या बाद में, इसमें दोष आने की पूरी संभावना है और इसे देश स्तर पर खारिज किया जाना चाहिए। पर्यटन पर आधारित अर्थव्यवस्था हमेशा दूसरों पर निर्भर रहेगी, यह कभी भी आत्मनिर्भर/निर्भर नहीं बन सकती। काम और मनोरंजन से जुड़ी सुविधाओं जैसे होटल, पार्क, थिएटर, खेल स्टेडियम आदि का निर्माण अलग–अलग चीजें हैं और इन्हें बजट के मद में नहीं रखा जा सकता। बम विस्फोट, अपहरण, दुर्व्यवहार और बीमारियों का फैलना और उसके बाद पर्यटन से होने वाली आय में कमी आना एक छोटी सी बात है, मुख्य मुद्दा मानसिकता है जो नियति को आकार देती है। यह सभी देशों को पर्यटन के बारे में अपनी योजना पर फिर से विचार करने के लिए कहता है।

पर्यटन और धन प्रेषण पर आधारित अर्थव्यवस्था जल्द ही ध्वस्त होने वाली है। पुराने ज़माने के समझदार लोग कहते हैं कि यह सोचना अजीब है कि बजट इस उम्मीद पर बनाया गया है कि हमारे बच्चे दूसरे देश में जाकर हमें पैसे (धन प्रेषण) भेजेंगे और फिर दूसरे देशों के बच्चे हमारे देश में पर्यटक बनकर आएंगे और हमें पैसे देंगे। कई देशों की आर्थिक बर्बादी इसी सोच का नतीजा है, न कि सिर्फ़ भाई–भतीजावाद, साम्राज्यवाद और कुप्रबंधन का।

(2.बी) धार्मिक पर्यटन:

ए) कहा जाता है :
तीरथ चाले दोइ जन , चित चंचल मन चोर।,
एक पाप उबरे नहीं, दस नये लाये बांध।।
(तीर्थयात्रा मुख्यतः दो प्रकार के व्यक्ति करते हैं – एक जिनका ध्यान डगमगाता रहता है और दूसरे जिनके मन में चोर रहता है, ऐसे लोग जब तीर्थयात्रा पर जाते हैं तो अपना एक पाप तो धो

नहीं पाते लेकिन दस नए पाप ले आते हैं)। बड़े संघर्ष या युद्ध के समय किसी का पक्ष लेने से बचने वाले लोग भी तीर्थयात्रा पर जाते हैं, लेकिन ये दुर्लभ घटनाएँ हैं।
उनका कहना है कि तीर्थयात्राएँ अधिकतर उपरोक्त प्रकार के लोग ही करते हैं, इसलिए ऐसे लोगों के लिए योजना बनाना और उनसे कमाई की योजना बनाना या शहर या देश का पूरा व्यवसाय मॉडल तैयार करना उचित नहीं है, क्योंकि इस प्रकार की कमाई को आमतौर पर गिद्ध के समान माना जाता है, जो हमेशा दूसरों की मौत के बारे में सोचता रहता है, ताकि उसे खा सके। धार्मिक और चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देना सामाजिक पतन का संकेत है और इसलिए इसे किसी भी शहर–देश के लिए अच्छा प्रस्ताव नहीं माना जा सकता।

(बी) इसमें गंगा नदी (गंगा नदी जिसे माँ या माँ गंगा के रूप में सम्मान दिया जाता है) के **साथ बातचीत दिखाई देती है ।**

भक्त : माँ गंगे, ऐसा कहा जाता है कि आपकी महान आत्मा लोगों के पापों को धोती है; क्या आप सचमुच लोगों के पापों को धोती हैं?

माँ गंगा : हाँ.

भक्त: – ओह! सचमुच माँ, तब तो आपने ढेरों पाप जमा कर लिए होंगे, माँ, पीढ़ियों से जमा हुए पापों का आप क्या करती हैं?

मां गंगा : लोगों को कुछ भी छोड़ने में बहुत कठिनाई होती है और लेने में बहुत आसानी होती है, इसलिए लोग अपने पाप धोने के लिए यहां आते हैं लेकिन उनमें से अधिकांश अतिरिक्त पापों के साथ लौटते हैं, उनमें से कई चालाक कला के उस्तादों से नई चालें भी सीखते हैं जो उन्हें धोखा देते हैं, उन्हें लूटते हैं और यहां तक कि मेरे नाम पर सभी प्रकार की वर्दी और प्रतीकों का उपयोग करके उनके साथ बुरा व्यवहार करते हैं लेकिन इन सभी गतिविधियों की अच्छी बात यह है कि मैं स्वयं पाप मुक्त रहती हूं।
मेरे स्थान पर ऐसे सच्चे भक्त होना बहुत दुर्लभ है जिनके पाप मेरे जल में धुल जाते हैं, लेकिन फिर मैं लगातार बहता रहता हूं और उनके सभी पापों को समुद्र में छोड़ देता हूं, जो इसे बादल में भेज देता है और फिर बादल इसे उन लोगों पर बरसा देते हैं जो पाप करना चाहते हैं या जो नया पाप करने की कोशिश करना चाहते हैं और इस तरह मैं स्वयं पाप मुक्त रहता हूं।
हालाँकि असली भक्त मेरे कथन का पालन करता है: मन चंगा तो कथोटी में गंगा (पवित्र लोगों के लिए, सब कुछ पवित्र है) और शायद ही कभी मेरे पास आते हैं और एक तरह से मेरी सफाई में योगदान देते हैं, क्योंकि वे सभी जानते हैं कि सभी जीवित प्राणी मुझसे पानी पीते हैं, ये लोग अपने–अपने स्थान पर रहते हैं और अपने स्थान को तीर्थयात्रियों की तरह बनाने की कोशिश करते हैं। शायद हमें पवित्र स्थानों पर यात्रा / पिकनिक पर प्रतिबंध लगाना चाहिए।

(ग) प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों और बुद्धिमान लोगों के बीच संवाद:

बुद्धिमान: यह सब क्या है? बुद्धिमान पूछते हैं, अगर परिवार में कोई झगड़ा करता है, या अगर कोई इलाके में नया आया है, तो वह मंदिर में जाकर प्रार्थना करता है, माथा टेकता है, परिक्रमा करता है, पवित्र जल और प्रसाद लेता है या फिर भगवान से भीख मांगता है और फिर वापस परिवार में आकर उसी माहौल में रहने से हमारी समस्या और अन्य मुद्दे हल हो जाते हैं।
जनता चार धाम की तीर्थ यात्रा, यह तीर्थ यात्रा वह तीर्थ यात्रा , गंगा सागर तीर्थ यात्रा सदियों से करती और सुनती चली आ रही, लेकिन धरातल पर इस सबसे कोई अंतर तो दिखाई देता नहीं , तब यह सब क्या और क्यों? (People have been doing and listening to pilgrimage of four abode, this pilgrimage, that pilgrimage, Ganga-Sagar pilgrimage for centuries, but there is no difference visible on the ground, then what and why is all this?)

बुद्धिमान: अभी तो आप जो कह रहे हैं वह ठीक प्रतीत होता है, लेकिन ऊपर जो **कहा** गया था वह इस बात का संकेत था कि धार्मिक संस्था में मनुष्य के जीवन काल में और उसके बाद भी आवश्यक सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए।
' जीवन के स भी जीवन के :क भी ,
परिवार के स भी , परिवार के 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... भी ,
कहा जाता है: धर्म आधार है और राजनीति इस आधार पर निर्मित अधिरचना है, इस आधार या उचित धर्म के बिना राजनीति आधारहीन, निराश और असहाय हो जाती है और राजनीति के बिना धर्म गति नहीं कर सकता अर्थात दबा हुआ रहता है। कहने का तात्पर्य यह है कि सभी बुनियादी सुविधाओं का ध्यान धर्म संस्थान-धार्मिक संस्था द्वारा तथा व्यापक मुद्दों का ध्यान राजनीति द्वारा रखा जाना चाहिए।

(घ) हाल ही में गुजरे वर्ष 'दो हजार बीस (2020) **' ने** भारत में देवी-देवताओं, ईश्वर के पुत्र या ईश्वर के दूत या गया (मुक्तिधाम) जैसे स्थानों पर भी वायरस और बैक्टीरिया की सर्वोच्चता स्थापित करने की कोशिश की है, इस तथ्य ने स्पष्ट रूप से स्थापित किया है कि पर्यटन, इसके द्वारा समर्थित उद्योग और सेवाओं को कभी भी बंद किया जा सकता है और इस पर निर्भर लोगों के जीवन को खतरे में डाला जा सकता है और इस पर निर्मित बुनियादी ढांचे को नष्ट किया जा सकता है। हालांकि कश्मीर या केरल, सिक्किम या स्विट्जरलैंड में पर्यटन अलग हैं और वे मनोरंजन और प्रकृति की प्रशंसा के लिए किए जाते हैं, लेकिन वर्ष दो हजार बीस में उनका भी बंद होना देखा गया है - जो किसी भी नए प्रस्ताव पर विचार करते समय अतिरिक्त सावधानी बरतने का संकेत देता है।

आश्चर्य की बात यह है कि इन स्पष्ट और चिंताजनक संकेतों के बावजूद, यदि कोई विकास प्राधिकरण ऐसे लोगों से क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने का साहस कर रहा है, जो अधिकांशतः भगवान से भीख मांगने आते हैं, अर्थात ऐसे भिखारियों द्वारा स्वयं दिए गए दान, अंशदान या खर्च में से हिस्सा आधारित अर्थव्यवस्था – जो मूलतः भिखारियों द्वारा, स्वस्थ लोगों और मजबूत लोगों की अर्थव्यवस्था है, इस प्रकार भगवान के स्थान पर भिक्षावृत्ति आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया जा रहा है।

जैसे को तैसा, भीख मांगने से भिखारी आकर्षित होते हैं और भिखारी जैसी मानसिकता वाले लोग, यह बात दुनिया के लगभग सभी धर्मों के धार्मिक स्थलों पर देखी जा सकती है, फिर सवाल उठता है कि जब भगवान ने इतना कुछ दिया है तो भीख मांगने को बढ़ावा क्यों दिया जाए? किसी भी स्थान को वैश्विक पर्यटन केंद्र बनाने और बढ़ावा देने की प्रक्रिया को रोकने के लिए उपरोक्त पर्याप्त कारण हैं ।

14. कृषि विज्ञान – कृषि–संस्कृति या सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का अर्थशास्त्र

भारत जैसे देश में अर्थव्यवस्था का फलना–फूलना कृषि उपज पर निर्भर करता है, भले ही उससे सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर से कितनी भी आय क्यों न उत्पन्न हुई हो।
निम्नलिखित प्रस्तुत है: कृषि विज्ञान के संबंध में प्रस्तुतीकरण – कृषि–संस्कृति या सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का अर्थशास्त्र तीन भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1). मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2). पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा, (3). समाधान का प्रतिमान,

* "कृषि विज्ञान – कृषि–संस्कृति या सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था" पर इस अध्याय को पढ़ते समय, इसमें दी गई सामग्री की सराहना करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों का संदर्भ लेना उचित होगा: **सामाजिक सुरक्षा की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था की सामाजिक सुरक्षा** , स्वच्छ और स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था और सफाई और स्वच्छता की अर्थव्यवस्था, **कार्यशील अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था में कार्य वितरण** , पारिस्थितिकी तंत्र का अर्थशास्त्र – सौर (अग्नि), वायु, जल, पृथ्वी और अंतरिक्ष, " **गोमांस की बढ़ती अर्थव्यवस्था और गायों और बधिया किए गए बैलों की अर्थव्यवस्था** ", लाभकारी रोजगार और सम्मानजनक जुड़ाव के रास्ते और " **परिवार, समाज और सरकार में सदस्यों के बीच आय का वितरण** "।*

*For referral: Kaam ki baat– "कामकी **बात**: जल, जमीन, जंगल पर शुद्ध जल, शुद्ध हवा और साफ़ ज़मीन की समस्याओं, विसंगतियों और प्रबंधन पर वासठ खुले पत्रों का संग्रह "–

(1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा:

(1.A). भारत की (और यहाँ तक कि दुनिया के अधिकांश भाग की) संस्कृति को कृषि कहा जा सकता है। जब तक कृषि एक संस्कृति थी, तब तक यह समाज और राज्य/देश की अर्थव्यवस्था में मुख्य योगदानकर्ता थी। हमारे सभी उत्सव कृषि के समय के अनुसार होते हैं। कृषि की संरचना चार महीने की दो फसलों के लिए की गई है, जिनमें से प्रत्येक फसल के बाद दो महीने का आराम होता है। यहाँ अधिकांश ग्रामीण अपना भोजन स्वयं उत्पादित करके और तैयार करके आनंद प्राप्त करते हैं। यह कहने जैसा है, "केक भी खाओ और केक भी खाओ"।

यद्यपि संस्कृति के साथ जुड़ाव लगभग पच्चीस सौ वर्ष पहले कम होने लगा था, जब किसानों ने खेतों में सांपों को मारना और बैल तथा भैंसों को बधिया करना शुरू कर दिया था, लेकिन अपनी संस्कृति (कृषि–संस्कृति) के साथ जुड़ाव औद्योगिक क्रांति के बाद इतना कम हो गया कि गाय,

बैल, भैंस, खेत, पेड़, फसल इन सभी के साथ पहले के पारिवारिक व्यक्तिगत जुड़ाव की जगह एक वस्तु/वस्तु बन गए।

यह सरल है कि यदि हमारे पास बैल है, तो हममें दूसरों को धमकाने (करना या न करना अलग बात है), बैलगाड़ी आदि का उपयोग करने की शक्ति है, यदि नहीं तो दूसरों द्वारा धमकाए जाने की संभावना हमेशा खुली रहती है। यदि हमने बैलों, भैंसों को अपनी इच्छा और इच्छानुसार उपयोग करने के लिए बधिया कर दिया है, तो हमारे मन में यह बिल्कुल स्पष्ट होना चाहिए कि हमने बैलों और भैंसों के साथ मिलने-जुलने की ताकत, सहनशक्ति और सद्भावना खो दी है। समाज के समझदार लोगों को यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जन्मजात ट्रांसजेंडर और बधियाकरण की प्रक्रिया से ट्रांसजेंडर बनाए गए व्यक्ति (पुरुष या महिला) के बीच बहुत अंतर होता है। आश्चर्यजनक रूप से इतिहासकार, मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री संकेत देते हैं कि मानव जाति द्वारा बैलों, भैंसों, बकरियों आदि को बधिया करना शुरू करने के बाद से समाज में ट्रांसजेंडरों की संख्या में वृद्धि हुई है।

इसके अलावा जब हमारे खेत में साँप होते हैं, तो हमारे पास अपने खेत को कीड़ों, कीटों आदि से मुक्त करने की शक्ति होती है। अगर ऐसा नहीं होता है, तो हमारी फसलें/फल कीड़ों और कीटों द्वारा खाए जाने/नष्ट होने की संभावना हमेशा बनी रहती है। यह सरल है कि अगर हमारे खेत में साँप हैं तो ज़हर केंद्रित रहता है और अगर नहीं तो यह बिखर जाता है जो मानव जाति के दिमाग सहित हर चीज़ को ज़हर देता है।
जब मानव जाति का मन विषाक्त हो जाता है, तो अशांति से लेकर बीमारियों तक, अव्यवस्था से असंतुलन और यहां तक कि आपदा से लेकर धीमी मौत तक सब कुछ नकारात्मक रूप से सामने आने की उम्मीद की जा सकती है, व्यक्तियों, परिवारों और समाजों की एक अनियमित और असंगत तस्वीर का समग्र चित्रण देखा जा सकता है।

यह सब इसलिए होता है क्योंकि जब हमारा मन विचलित या विषाक्त हो जाता है, तो हम जिम्मेदाराना व्यवहार खो देते हैं अर्थात हम गैर जिम्मेदार बन जाते हैं। कोई भी गैर जिम्मेदार व्यक्ति, चाहे वह व्यक्ति हो, परिवार हो, समाज हो या देश हो, वह स्वतंत्रता को कायम नहीं रख सकता और वह खानाबदोश या गुलाम बनकर रह जाता है, तथा स्वतंत्रता छीनने वालों द्वारा बनाए गए हर कानून के आगे झुक जाता है, भले ही नियम मनमाने और मनमाने क्यों न हों। (विदेशी शासकों के मनमाने आदेश का एक उदाहरण नील की खेती थी, जो इतनी भयंकर थी कि किसानों ने खेती छोड़नी शुरू कर दी और मरना पसंद किया। कहा जाता है कि चंपारण में श्री एम.के. गांधी ने किसानों और अंग्रेजों के बीच समझौता कराने के लिए जोरदार प्रयास किया था ताकि किसान खेती न छोड़ें। यद्यपि श्री गांधी के इस कार्य ने उन्हें राष्ट्रीय नायक बना दिया,

लेकिन किसानों की लूट जारी रही, यद्यपि शुरुआती दौर में थोड़ी कम हुई, जो पूर्ण रूप से नारीवाद के स्तर तक बढ़ गई, जिसने भारत के सबसे संसाधन संपन्न बिहार और बंगाल के किसानों सहित करोड़ों लोगों की जान ले ली)।

इसके अलावा, किसी को भी बधिया करना कोई छोटी बात नहीं है। इसकी सजा निश्चित रूप से, गुप्त रूप से लेकिन कड़ी होती है, इसी तरह जिस पालतू जानवर का दूध पिया हो, उसका मांस खाने की भी सजा निश्चित रूप से, गुप्त रूप से, कड़ी और लंबी अवधि के लिए होती है। वैसे तो हम सभी इस अपराध में भागीदार हैं, लेकिन उन क्षेत्रीय और धार्मिक समुदायों को अधिक भयंकर सजा मिलती है जो खेत और पालतू जानवरों को वस्तु की तरह समझते हैं और गोमांस खाते हैं, जिन्हें भटकते हुए पुरुषों की संख्या के हिसाब से दयनीय माना जा सकता है और महिलाएं अपने क्षेत्र और धर्म के वेश्यालयों में असमानता और उससे भी अधिक पीड़ा झेल रही हैं।

कहा जाता है कि जो नुकसान हाथी, शेर, बाघ और तेंदुआ जंगलों के लिए हैं, वही नुकसान भैंस, बैल, घोड़ा और लंगूर मैदानों के लिए हैं। शेर और बाघों की हत्या ने जंगलों को जो नुकसान पहुंचाया है, वही नुकसान बैल, भैंस और घोड़ों की हत्या ने मैदानों को पहुंचाया है। हाथी, शेर, बाघ और तेंदुओं की हत्या ने जंगलों को नष्ट कर दिया है, जबकि मैदानों में हत्या और बधियाकरण ने खेती को नहीं बल्कि पूरी कृषि संस्कृति को नष्ट कर दिया है। इन कृत्यों ने मूल रूप से पूरी चीजों को नष्ट कर दिया है, जिसका अंदाजा भेड़ और ऊंटों को स्वतंत्र रूप से घूमते और सहजता से रहते हुए देखकर लगाया जा सकता है, जो गंगा, कृष्णा, कावेरी और अन्य नदी घाटियों (जैसे पंजाब, बिहार, बंगाल, अधिकांश पाकिस्तान और लैटिन अमेरिका, अफ्रीका आदि के अन्य देश) की सबसे उपजाऊ भूमि में भी रेगिस्तान की प्रजातियाँ हैं।
इसके अलावा जब हमने खेतों में पेट्रोल या बिजली से चलने वाली मशीनों का उपयोग करना शुरू किया, तो खेतों और अन्य जीवित प्राणियों के साथ हमारा सारा व्यक्तिगत संबंध समाप्त हो गया और एक तरह से हमने स्वयं अपनी कृषि-संस्कृति को खो दिया और व्यापारियों और राज्य/सरकार के कर्मचारियों को फार्म, खेती और किसान जैसे शब्दों का उपयोग करने या उनका दुरुपयोग करने का रास्ता दे दिया। (भारत के पंजाब जैसे क्षेत्र में भूजल सिंचाई के माध्यम से चावल की साल में दो-तीन फसलें लेने का एक उदाहरण दिया जा सकता है)।

यह बहस का विषय हो सकता है कि क्या हुआ या साजिश रची गई, लेकिन तथ्य यह है कि अब तक कृषि क्षेत्र को समर्थन प्रदान करने के बाद भी, न केवल औपनिवेशिक शासन और गुलामी के तहत बल्कि भारत जैसे स्वतंत्र और स्वतंत्र देश में भी किसानों की स्थिति साल दर साल खराब होती जा रही है। कोई यह देख सकता है कि अगस्त-1947 (स्वतंत्रता दिवस) से मार्च 2023 तक गेहूं/चावल/दाल/चीनी की बिक्री मूल्य में सालाना आधार पर वृद्धि करके, सामान्य

सहायक, प्रशासनिक प्रभारी और संसद सदस्य के वेतन के साथ एक सामाजिक और आर्थिक सीमांकन कैसे बढ़ा है, जिसे भारत सरकार द्वारा तय और नियंत्रित किया जा रहा है। इस सीमांकन में यह भी देखा जा सकता है कि सरकारी कर्मचारियों और संसद सदस्यों के वेतन में अंतर 1991 के बाद से काफी बढ़ गया है जब देश ने अपनी अर्थव्यवस्था को खोल दिया था।

भारत यह देख रहा है कि प्रत्येक राजनीतिक दल, चाहे वह सत्ता में हो या विपक्ष में, तथा प्रत्येक सरकार ने किसानों के प्रति पूरी चिंता दिखाई है (सिवाय कुछ सरकारों के, जिन्होंने किसानों की मदद के नाम पर ट्रैक्टर तथा अन्य नए कृषि उपकरणों की खरीद पर छूट दी), लेकिन तथ्य यह है कि विभिन्न राज्यों तथा पूरे देश में सरकार द्वारा किसानों के ऋण माफ करने के बाद भी किसानों ने आत्महत्या का सहारा लिया है, जबकि कुल ऋण माफ किए गए थे, जिनकी कुल राशि भारतीय रुपयों में कुछ लाख करोड़ से अधिक थी।
भारत जैसे कृषि प्रधान देश की वर्तमान स्थिति यह है कि इसकी साठ प्रतिशत आबादी गरीब है और उसे लगभग एक हजार रुपये प्रति माह मुफ्त राशन प्राप्त करने के योग्य माना जाता है तथा लगभग चार करोड़ किसान इतने गरीब हैं कि उन्हें छह हजार रुपये प्रति वर्ष मानदेय मिल सकता है। ऐसी स्थिति को कोई कैसे समझ सकता है, ताकत के रूप में, सहानुभूति के रूप में या दयनीय रूप में?

यदि कोई तथाकथित विकसित देशों तथा भारत के विभिन्न राजनीतिक दलों के घोषणापत्रों पर नजर डाले तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संघ तथा भारत में नीति आयोग की रिपोर्टों पर नजर डाले तो निराशा के अलावा कुछ नहीं मिलता, क्योंकि इनमें किसानों तथा गरीबों की निरंतर जारी दुर्दशा से राहत दिलाने वाली कोई बात दूर-दूर तक नजर नहीं आती।

भारत जैसे देश में समस्या अधिक स्पष्ट है क्योंकि एक तरफ सरकार कहती है कि व्यापार करना सरकार का काम नहीं है और दूसरी तरफ भारत सरकार घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी खाद्यान्नों, दालों और खाद्य तेलों की सबसे बड़ी खरीदार, आयातक और पुनर्विक्रेता है, लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह है कि सरकार अपने द्वारा तय की गई दरों पर खरीद करती है और यह मूल कहावत भूल जाती है कि यदि सरकार व्यापार का सहारा लेगी तो जनता भिखारी (समान) बन जाएगी।

अधिकांश लोकतंत्रों में लोग गरीब इसलिए हैं क्योंकि बहुसंख्यक जनता को उनके उत्पादों और सेवाओं के लिए कम पैसे दिए जाते हैं, इस जादुई नारे के तहत कि बुनियादी ज़रूरत की वस्तुओं और सेवाओं को वहनीय होना चाहिए, इसलिए सस्ता होना चाहिए। इसी सोच ने उन लोगों को गरीब बना दिया है जो इन वस्तुओं के उत्पादन और इन सेवाओं को प्रदान करने में लगे हुए हैं।

दुर्भाग्य से, भारत और अन्य जगहों पर सत्तर प्रतिशत आबादी इस तरह के काम में लगी हुई है, इसलिए हमारी सत्तर प्रतिशत आबादी गरीब है।

देश पूरा दोष किस पर डाल सकता है? शायद सरकार, यानी न्यायपालिका और प्रशासन की पूरी व्यवस्था को अपनी आजादी से पहले की हैंगओवर से बाहर आने की जरूरत है और खुद को लोगों और उनके देश के भरोसे के एक भुगतान किए गए ट्रस्टी के रूप में पेश करना चाहिए।

(2) <u>प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों में आम चर्चा थी</u> :

(क) किसानों को खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों से आय के बहुविध स्रोतों को बढ़ावा देने की भी आवश्यकता है, ताकि वे विपत्तियों के समय असहाय न हों और उन्हें चरम कदम उठाने से रोका जा सके (जैसे कि इस गलत धारणा के तहत भाग जाना या आत्महत्या करना कि 'मृत्यु सभी ऋणों का भुगतान कर देती है और सभी जिम्मेदारियों से मुक्त कर देती है')।
इसके अलावा, ये किसान और असंगठित क्षेत्र के अन्य लोग प्रायः छोटे-मोटे शोषण के शिकार होते हैं, जिसके लिए पुलिस, प्रशासन, न्यायपालिका के साथ-साथ बड़ी संख्या में निर्वाचित सदस्यों की समवर्ती प्रणाली अप्रभावी पाई जाती है, जिस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

साहूकारों द्वारा दिए गए पैसे और विभिन्न क्रेडिट कार्डों पर ब्याज दर और उनके द्वारा बकाया राशि वसूलने के तरीके को तर्कसंगत बनाना आवश्यक है (भले ही इसके लिए खुफिया जानकारी और ग्राहकों को गुमराह करने की आवश्यकता हो) क्योंकि यह किसानों और निम्न आय वर्ग के लोगों के उत्पीड़न का मूल कारण बन गया है, जिसके कारण वे आत्महत्या तक कर लेते हैं। हमें सावधान रहने की आवश्यकता है क्योंकि एशियाई देशों में किसानों और निम्न आय वर्ग के लोगों की आत्महत्या की शुरुआत संक्रामक है और यह पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले सकती है।

मध्यम वर्गीय परिवार के विद्यार्थियों के साथ भी यही स्थिति है, जहां शिक्षा में असफलता को जीविकोपार्जन में असफलता माना जाता है और इस प्रकार माता-पिता के तथाकथित झूठे अभिमान में कमी आती है (कक्षा 12 में असफल होने और आत्महत्या करने से कोई मुक्त नहीं होता, केवल एक बात यह है कि अगले जन्म में उसे पुनः कक्षा एक से पढ़ना पड़ता है, जो कि असफलता का सामना करने और सुधार के लिए पुनः प्रयास करने से भी अधिक कठिन कार्य है)।

(बी), खाद्य भ्रष्टाचार और खाद्य अपव्यय को कम करने के लिए भारतीय खाद्य निगम जैसी संस्थाओं की बड़ी परिचालन लागतों के अलावा, हम बहुत कम आय वर्ग के लोगों को फसल के समय खाद्यान्न खरीदने के लिए छोटे ऋण प्रदान करने के बारे में सोच सकते हैं (डाकघर या धार्मिक केंद्रों के माध्यम से)। इससे कई तरह से मदद मिलेगी, जैसे प्रति व्यक्ति जोत में वृद्धि,

अलग–अलग भंडारण जो पीडीएस–सार्वजनिक वितरण प्रणाली को समाप्त करने में मदद करेगा, विनाशकारी प्रबंधन में आसानी आदि।

(ग). कोई भी देश कृषि को आधार बनाए बिना सौ साल से ज़्यादा नहीं चल सकता। अच्छे मानसून के बिना औद्योगिक क्रांति फीकी पड़ जाती है (औद्योगीकरण कुछ ही सालों में अपने चरम पर पहुँच जाएगा)। हमें इस तरह से काम करना चाहिए कि किसान फिर से उस स्तर तक पहुँच जाए जहाँ वे सहज महसूस करते हैं और उन्हें लगता है कि वे राष्ट्रीय कर में योगदान दे रहे हैं।

बैसाखी के रूप में काम करने वाली सभी सहायता को समाप्त किया जाना चाहिए। किसानों की मदद के लिए ट्रैक्टरों पर सब्सिडी एक मजाक है। वर्तमान में ट्रैक्टरों की संख्या इतनी है कि अगर भारत में ही नहीं बल्कि खेती के अधिकांश हिस्से में अगले दस वर्षों तक कोई ट्रैक्टर न भी आए तो भी शायद ही कोई बाधा उत्पन्न होगी। अब ट्रैक्टरों की बिक्री जबरन, हेरफेर और अनावश्यक है।

हरित क्रांति के दौरान पेड़ों को काटकर भूमि का विस्तार किया गया और जंगलों ने नकारात्मक प्रभाव डालना शुरू कर दिया – रेगिस्तान का क्षेत्र बढ़ने लगा, मिट्टी का कटाव बढ़ गया और नदी के तल (चौड़ाई और गहराई में) की कमी हो गई, जिसके परिणामस्वरूप लगातार अकाल, बाढ़, भूजल स्तर में कमी आई। वन क्षेत्र और जल क्षेत्र का अनुपात खेती और मानव निवास के लिए क्षेत्र से तीन गुना अधिक होना चाहिए।

(घ) केन्द्रीकृत सार्वजनिक वितरण प्रणाली को बंद करना होगा। कृषि उत्पादों को ई–मार्केटिंग, पेट्रोल पंप, किसान चौपाल आदि के माध्यम से क्षेत्रीय स्तर और आपातकालीन स्थिति में राष्ट्रीय स्तर तक स्वतंत्र रूप से बेचना होगा। धार्मिक संस्थाओं के माध्यम से स्थानीय सार्वजनिक वितरण शुरू करना होगा। खाद्य पदार्थों की बड़े पैमाने पर जुआ खेलने को किसी प्रचार की आवश्यकता नहीं है।
डाकघर, पेट्रोल पंप, बैंक, धार्मिक संस्थाओं आदि के पास सस्ती दरों पर भंडारण की सुविधा उपलब्ध करानी होगी। छोटे–छोटे चेकडैम बनाने के लिए किसानों को सहयोग या अंशदान देना होगा।
कृषि पर पूरा नज़रिया सिर्फ़ आर्थिक न होकर सांस्कृतिक होना चाहिए, और हम सभी समझते हैं कि संस्कृति और ज़मीन हमारे अस्तित्व और हमारी पहचान का मूल है। सिर्फ़ कृषि ही देश को बेहतर बना सकती है और अपना खोया हुआ गौरव वापस पा सकती है।

(ई) कुछ ऐसे देश हैं जहाँ भूमि प्रचुर मात्रा में है, मशीनीकृत खेती के बाद तथा भूमि से कम लगाव के कारण सस्ते खाद्य पदार्थ मिल सकते हैं। इसे उदाहरण मानकर कुछ अर्थशास्त्रियों ने कहना शुरू किया कि खाद्य पदार्थ सस्ते होने चाहिए, तथा चूँकि इन देशों में जनशक्ति कम थी, इसलिए यहाँ के किसान शुरू में आजीविका चला सकते थे, बाद में इन देशों ने प्रत्यक्ष नकद सब्सिडी का सहारा लिया।
बिना आंतरिक तथ्यों का विश्लेषण किए ही कई देशों और ड्राइंग रूम के अर्थशास्त्रियों ने यह भावना दोहरानी शुरू कर दी कि बुनियादी खाद्य पदार्थ सस्ते होने चाहिए। चूंकि ये तथाकथित महान अर्थशास्त्री अच्छे विश्वविद्यालयों से अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण हुए हैं, इसलिए उनकी आवाजों का प्रभाव हेरफेर करने वाला है। इस पूरी परिघटना का परिणाम यह हुआ कि जो लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़े हैं, वे गरीब हो गए और बने हुए हैं, यानी देश की साठ–सत्तर प्रतिशत आबादी केवल इसी गिनती के कारण गरीब है (यह शर्म की बात है कि ऐसे अर्थशास्त्री वर्तमान तथ्य को सस्ते आलू और बीस गुना महंगे चिप्स/वेफर्स को सही ठहराते हैं, जबकि इसे आलू की कीमत से दो से तीन गुना कीमत पर आसानी से बेचा जा सकता है।

इन वर्गों की आवाज दबाने और खुद को सांत्वना देने के लिए इन अर्थशास्त्रियों ने विभिन्न सुधारकों के साथ मिलकर अप्रत्यक्ष रूप से मदद देने की अवधारणा शुरू की। इन तथाकथित महान अर्थशास्त्रियों ने 'बैसाखियों' की बात करना शुरू किया और कभी–कभी तो बैसाखियां भी प्रदान कीं, लेकिन इन अर्थशास्त्रियों ने कभी भी अपनी मांद से बाहर निकलकर वास्तविकता को देखने और सच्चाई सामने लाने की जहमत नहीं उठाई।

अन्य लोग, जो चिंतित हैं, दुर्भाग्य से इन तथाकथित महान अर्थशास्त्रियों और उनकी डिग्री और विभागों के वजन से दबे हुए हैं, उन्होंने शायद ही कभी लगातार आवाज़ उठाई हो, लेकिन किसी न किसी तरह से सब्सिडी की व्यवस्था को स्वीकार किया है। अप्रत्यक्ष होने के कारण सब्सिडी ने वास्तविक ज़रूरतमंदों से बचने के कई अप्रत्यक्ष तरीके खोजे हैं, और इस तरह छोटे और मध्यम वर्ग, कृषक और अन्य सेवा वर्ग पर और बोझ डाला है। अपने सिद्धांत और भयावह गरीबी के विपरीत परिणाम को देखते हुए, अर्थशास्त्रियों (तथाकथित) ने विशेष रूप से गरीबों और सबसे गरीब लोगों के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली का सुझाव दिया, जिसने निचले तबके के विकास को और कम कर दिया।

(च) हमने खाद्य सुरक्षा तो हासिल कर ली, लेकिन खाद्यान्नों को अत्यधिक महत्व दिए जाने तथा स्वतंत्रता–पूर्व के निराशाजनक वन कानूनों के कारण हमारी फलों की टोकरी काफी हद तक खाली हो गई।

सवाल सिर्फ़ कॉन्ट्रैक्ट फ़ार्मिंग और जैविक खेती का नहीं है, बल्कि कितनी खेती, कहाँ और किस तरह की खेती हो, सवाल यह भी है कि कृषि उपज, वनोपज और मैनुअल सेवा की बिक्री लागत औद्योगिक उपज और वकील, डॉक्टर और शैक्षणिक कोचिंग जैसी सलाहकार सेवाओं के मुक़ाबले कैसे तय की जाए। इसके अलावा सवाल यह भी है कि लोन, क्रेडिट कार्ड और बीमा सुविधाएँ और उनकी सेवा शुल्क और ब्याज दरें किसानों और निम्न आय वर्ग के लोगों को बहुत तकलीफ़ और पीड़ा पहुँचा रही हैं। ऐसा लगता है कि व्यवस्था को हर स्तर पर बिना किसी रोक-टोक के तोड़ा गया?

(छ) सभी संस्कृतियाँ चाहे प्रयोगशाला में रक्त और मूत्र की हों या किसी भी क्षेत्र या क्षेत्र या धर्म में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक हों, तभी विकसित हो सकती हैं जब उन्हें उपयुक्त परिस्थितियाँ (जैसे तापमान, हवा, नमी यानी मौसम और भूगोल) और पर्याप्त अलगाव प्रदान किया जाए। भारत में कृषि (कृषि) की शुरुआत सबसे पहले ऋषियों (संत और ऋषियों) ने बैल की मदद से की थी।
ऋषि और कृषि (ऋषि और कृष (ऋषि और कृषि) तब तक सम्मानजनक रह सकता है जब तक कृषि संस्कृति के रूप में बनी रहे, लेकिन एक बार जब यह प्राकृतिक लय के मूल सिद्धांतों को भूल जाता है और बैल को बैल में बदल देता है तो इसका पतन होना तय है। चूंकि कोई भी देश कृषि के बिना लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता है; इसलिए समाज को खेती और वानिकी के बीच प्राकृतिक संतुलन बनाने के बारे में सोचना होगा, भले ही इसके लिए हम सभी को अप्रिय कदम उठाने पड़ें और प्रतिकूलता का सामना करना पड़े।

3. <u>समाधान का प्रतिमान</u> :

(क) कृषि संस्कृति की शुरूआत, सभी से स्वस्थ, खुश और पवित्र रहने की प्रार्थना और यह भावना पैदा करना कि दुनिया एक है जहाँ हर कोई एक दूसरे का रिश्तेदार है (मानव, पक्षी, जानवर, मछलियाँ और पेड़) यह गहन शोध का परिणाम था और हमारे पूर्वजों ऋषियों और ऋषियों की कोई मनमौजी या सनकी धारणा नहीं थी। यह सिर्फ यह बताने के लिए है कि अगर प्रलय आने वाला है तो हम सभी को भी विनाश का सामना करना पड़ेगा, इसलिए यह हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक जिम्मेदारी है न कि केवल किसानों और उनके परिवारों की कि हम यू टर्न लें। नीचे की दिशा से ऊपर की दिशा में यू टर्न लें और अनावश्यक पीड़ाओं से उबरें।

यदि हम आय/संसाधनों के वितरण और हमारे सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक और राजनीतिक गतिविधियों के प्रबंधन भाग को देखें तो हम समझेंगे कि कृषि-संस्कृति का प्रबंधन राष्ट्रीय सरकार या अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष या संयुक्त राष्ट्र की एजेंसियों की तुलना में स्थानीय

समाज/निकाय का अधिक कार्य और उत्तरदायित्व है, इसलिए स्थानीय निकाय/समाज या धार्मिक संस्था का यह विशेषाधिकार और कर्तव्य है कि वे कृषि और वानिकी की सभी गतिविधियों को देखें और अन्य को केवल प्रमुख सहायता और आपदा प्रबंधन तक ही सीमित रखें।

(ख) भारत जैसे देशों में यदि हम किसानों की समस्याओं पर नजर डालें तो हम पाएंगे कि किसान निजी साहूकारों के दबाव, क्रेडिट कार्ड की ऊंची ब्याज दरों, प्रति व्यक्ति भूमि की घटती जोत और उसकी उर्वरता, तथा तथाकथित अधिकृत मंडी में संपूर्ण उपज बेचने की मजबूरी के कारण परेशान हैं, इसके अलावा किसान मिट्टी की स्थिति, उचित और प्राकृतिक कीटनाशक, उर्वरक और अन्य संबंधित ज्ञान/सूचना के लिए उचित प्रयोगशाला की अनुपलब्धता और फिर उपज बेचने, बीज और कृषि उपकरण आदि खरीदने के लिए उचित स्थानीय सहायता प्रणाली की कमी से भी पीड़ित हैं।

(ग) जब हम परिवार और समाज में काम और आय के समुचित वितरण को देखते हैं तो यह स्पष्ट है कि समाज का यह कर्तव्य है कि वह किसानों को उपरोक्त सभी सेवाएं प्रदान करे, जिसमें किसानों, उनके परिवार और उनकी फसलों के लिए मुफ्त बीमा जैसी सुविधाएं, आसान ऋण की व्यवस्था, मार्गदर्शन, सलाह, प्रयोगशाला सुविधाएं, खरीद–बिक्री में सहायता, किसानों और उनके परिवार के सदस्यों के बीच सहकारी समितियों का गठन आदि शामिल हैं।

(घ) जैसा कि ऊपर बताया गया है कि कृषि भूमि और वृक्ष आवरण के बीच संतुलन काफी कम हो गया है, जिससे भूजल की प्राकृतिक पुनःपूर्ति, मिट्टी की नमी, क्षारीयता/अम्लता, उर्वरता, पक्षियों, सूक्ष्म जीवों को आश्रय, बाढ़ और तेज हवा के प्रतिरोध के कारण मिट्टी के कटाव में कमी आई है, इसलिए समाज की जिम्मेदारी होगी कि वह देखे कि विभिन्न प्रकार के पेड़ लगाए जाएं, संरक्षित किए जाएं और उन्हें बढ़ने और बनाए रखने की अनुमति दी जाए।

(ई) राष्ट्रीय सरकार को अपने कृषि, सार्वजनिक वितरण और वन मंत्रालयों की भूमिका और जिम्मेदारियों को सीमित और पुनर्परिभाषित करना होगा। राष्ट्रीय सरकार अपने जल संसाधन, पर्यावरण मंत्रालयों पर भी पुनर्विचार करना चाहेगी और कृषि–संस्कृति और कृषि विज्ञान के संबंध में अन्य परस्पर जुड़े मंत्रालयों की भूमिका और जिम्मेदारियों को पुनर्परिभाषित करना चाहेगी।

(च) जैसा कि ऊपर बताया गया है कि किसान शीर्ष नौकरी से नीचे की ओर, समाज और देश में शीर्ष कमाने वाले और करदाताओं से कर्ज, ऋण और अन्य बैसाखियों पर जीने वाले व्यक्ति तक गिर गए हैं, यानी किसान एक अभिशप्त जीवन जी रहे हैं जो बैल, भैंस और सांपों पर उनके द्वारा किए गए अत्याचारों और आदिवासियों (हमारे आदिवासी और किसान सौतेले भाई) के साथ किए

गए संदिग्ध व्यवहार का परिणाम है। यह देखना समाज की जिम्मेदारी है कि बैल, भैंस, पक्षियों, जल निकायों, वृक्ष आवरण और जंगल के साथ सम्मानजनक व्यवहार हो, भले ही इससे दूध और डेयरी उत्पादों में कमी आए, परिणामस्वरूप दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी।

(छ) कई देशों ने विभिन्न अयस्क/खनिजों को बेचना बंद कर दिया है, इस आधार पर कि संसाधित अयस्क या धातु को बेचना बेहतर है, इसी तरह समाज इनके बजाय साधारण अनाज के रूप में गेहूं/चना/चावल का आटा बेचने के बारे में सोच सकता है। इसके अलावा समाज विभिन्न रूपों और प्रारूपों में बेचने के बारे में भी सोच सकता है।

(ज) ऐसा कहा जाता है कि प्राथमिक सुधार के लिए प्रार्थना है, क्योंकि हमारी सामूहिक सुधार तभी आ सकती है जब हमारा भोजन बेहतर हो जाए (जैसा भोजन वैसा मूड), पानी नरम हो जाए (जैसा पानी वैसी आवाज) और हवा ताजा और प्रदूषण रहित हो जाए (जैसी हवा वैसा ही हमारा मेला/दिशा और सबसे महत्वपूर्ण हमारी कामोद्दीपक ताजा, स्वच्छ और सड़ांध रहित हो (जैसा नशा वैसी दशा – जैसा नशा वैसी दशा) और महत्वपूर्ण बात यह है कि ये सभी कृषि से आते हैं, इसलिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपनी कृषि संस्कृति को पुनर्स्थापित करें। ***

15. स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय का अर्थशास्त्र

"अगर हमारे बीच कोई भी व्यक्ति जीवन के किसी भी समय/क्षण में कमज़ोर, धनहीन और असहाय, निराश्रित या हताश हो जाए, तो उस समय समाज और सरकार से हमारी क्या अपेक्षाएँ होंगी? जो समाज और सरकार उस समय हमारी अपेक्षाओं (मूलभूत भोजन, पानी, कपड़ा, आश्रय, चिकित्सा उपचार, सुरक्षा मार्गदर्शन और न्याय) को पूरा करने में सक्षम है, उसे एक अच्छा समाज और सरकार कहा जा सकता है।"

प्रस्तुत है: "स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय का अर्थशास्त्र" के संबंध में प्रस्तुतीकरण तीन भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2) पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा । (3) स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय पर विविध दृष्टिकोण।

* [इसके अलावा, इस अध्याय अर्थात "स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय का अर्थशास्त्र" को पढ़ते समय, इसमें निहित विषय-वस्तु को समग्र रूप से समझने के लिए निम्नलिखित अध्यायों का संदर्भ लेना उचित होगा: अध्याय-17, अर्थव्यवस्था में आय का शाश्वत इष्टतम वितरण, अध्याय-18, धार्मिक संस्थानों से अर्थशास्त्र का प्रबंधन-एक अहस्तक्षेप।] *
** **संदर्भ हेतु: पुस्तक, "डिविंक्रेसी (ईश्वरीय लोकतंत्र),** अध्याय-11, भारत की स्थिति: कानूनी व्यवस्था, अध्याय-12 भारत की स्थिति: स्वास्थ्य व्यवस्था, अध्याय-18 शिक्षा, **

(1) **<u>मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा:</u>**

(1.A) " प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में आम तौर पर ऐसी स्थिति का सामना करता है, जिसमें उसे न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन एवं शिक्षा जैसी उचित सेवाओं की आवश्यकता होती है।" यदि यह सही है, तो सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली ये सेवाएँ यदि पूरी तरह से निःशुल्क और आसानी से सुलभ नहीं रखी जातीं, तो इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि जरूरतमंद और योग्य उम्मीदवार इन बुनियादी सेवाओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाएँ।

ऐसे व्यक्तियों, उनके परिवारों और समूह/समाज की स्थिति की कल्पना बहुत अच्छी तरह से की जा सकती है जो न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन/शिक्षा जैसी बुनियादी सेवाओं का लाभ उठाने से किसी न किसी कारण से वंचित हो जाते हैं, जिसमें उनके पास धन/संसाधनों की अनुपलब्धता भी शामिल है। यह निश्चित है कि इस स्थिति को स्वस्थ और खुशहाल देश और समाज का संकेत नहीं माना जा सकता है। इसलिए यह वकालत की जाती है कि इन सेवाओं को अतिथि और आगंतुक सहित सभी के लिए निःशुल्क और उच्चतम मानक रखा जाना चाहिए। स्वास्थ्य क्षेत्र में, हाल ही में विश्व व्यापी महामारी के प्रकोप और उसके परिणामस्वरूप लॉकडाउन ने हर आम व्यक्ति के दिमाग में एक बात बहुत स्पष्ट रूप से स्पष्ट कर दी है कि कैसे एक अकेला मरीज

पूरे परिवार, कॉलोनी, शहर, देश और शायद पूरी दुनिया में बीमारी फैलाने के लिए पर्याप्त है, इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि गुणवत्तापूर्ण उपचार सभी को उपलब्ध होना चाहिए, चाहे उनकी जाति, पंथ, रंग, लिंग, बीमाकृत या गैर–बीमाकृत और धनवान या गरीब कोई भी हो।

यह समझ आस्था के मूल सिद्धांतों के साथ जुड़ गई कि "जो देता है, उसे मिलता है (जो देता है, वह पैदा करता है)" इसलिए न्याय, स्वास्थ्य और शिक्षा की ये तीन बुनियादी सेवाएं समाज द्वारा दिए गए धन से चलती रहीं और लाभार्थी द्वारा दिए गए आभार के संकेत के रूप में भुगतान के बाद। सुदूर अतीत में ये तीनों (न्याय, स्वास्थ्य और शिक्षा) सेवाएं इसी तरह रखी जाती थीं और समाज का आदर्श थीं।
उपरोक्त मनोवृत्तिपरक सेवाओं के अभ्यास ने व्यक्तियों, परिवारों और समाज को ऐसा व्यक्ति बना दिया है जो विश्व को अपना सर्वश्रेष्ठ देता है और दूसरों पर विश्वास करता है तथा बदले में उसे सर्वश्रेष्ठ मिलता है तथा सर्वश्रेष्ठ बने रहने का आशीर्वाद मिलता है।

(1.A.1) दुनिया में एक और नस्ल है, जो सोचती है कि ये केवल तीन सेवाएं हैं जिनकी हर किसी को अपने जीवनकाल में निश्चित रूप से आवश्यकता होगी और जब किसी को आवश्यकता होती है, तो वह अधिक भुगतान करने से भी गुरेज नहीं करता (अन्य सेवाओं की तुलना में), इसलिए यदि कोई व्यक्ति या कोई समूह/समाज अधिक कमाना चाहता है, तो इन क्षेत्रों को सबसे अच्छा भुगतानकर्ता और लाभ कमाने वाला कहा जा सकता है।

यह समझ और हर किसी के मन में यह बुनियादी संदेह कि कोई भी पैसे वापस नहीं करेगा, इसलिए, इन तीनों सेवाओं का पूरी तरह से व्यवसायीकरण कर दिया गया, जो कभी–कभी अनैतिक, धोखाधड़ी, लूटपाट, धोखाधड़ी और यहां तक कि दिनदहाड़े डकैती भी प्रतीत होता है। उपरोक्त मनोवृत्तिगत व्यवहार के अभ्यास ने व्यक्तियों, परिवारों और समाज को इस तरह की सोच वाला बना दिया है, जो दुनिया से सर्वश्रेष्ठ लेना चाहता है और दूसरों पर संदेह और अविश्वास करता है।
(1.A.2) दुनिया में एक और नस्ल है जो जरूरतमंदों और गरीबों को मुफ्त स्वास्थ्य सेवाएं देने का दावा करती है और निजी पेशेवरों को सरकारी सहायता या बीमा के माध्यम से धनी लोगों की सेवा करने की अनुमति देती है, लेकिन न्याय के लिए बीमा भी नहीं है। ये सभी देश जहां स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय के मामले में मुफ्त और शुल्क की समानांतर व्यवस्था होने की उम्मीद थी, वे दयनीय स्थिति में हैं और उनके नागरिक और राजनीतिक नेता दयनीय और असहाय स्थिति में हैं।

(1.A.3)। लोग अपनी मूल आस्था के कारण ऊपर (1.A) में बताए गए अनुसार बनना चाहते हैं, लेकिन वर्तमान में (1.A.1) में बताए गए चलन का पालन करने और (1.A.2) में बताए गए तरीके से जीने के लिए बाध्य हैं। क्या सही है या नहीं, यह व्यक्तिगत निर्णय का विषय होगा, लेकिन पूरे समाज और देश को यह चुनना होगा और उसका पालन करना होगा, उसके बाद हमें सचेत और सामूहिक निर्णय लेने होंगे (या तो हमारी आस्था के अनुसार या मौजूदा बाजार के रुझान के अनुसार) जो संसद और अदालत में नहीं बल्कि देशव्यापी जनमत संग्रह द्वारा लिया जा सकता है।

(1.बी). क्या किसी व्यक्ति को न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन सह शिक्षा की उचित सेवाओं का लाभ उठाने से वंचित करना स्वस्थ और खुशहाल समाज का संकेत माना जा सकता है? क्या किसी नागरिक, अतिथि या यहाँ तक कि आगंतुक के पास वित्त की उपलब्धता या अनुपलब्धता के कारण इन तीनों सेवाओं की गुणवत्ता, मात्रा और समय में कोई अंतर उचित ठहराया जा सकता है? क्या इस तरह का अंतर एक अस्वस्थ और दुखी समाज के निर्माण का कारण नहीं बनेगा?

दुर्भाग्य से, वर्तमान में लगभग सभी धर्म, सभी क्षेत्र और सभी आर्थिक प्रणालियाँ न्याय, स्वास्थ्य और मार्गदर्शन सह शिक्षा जैसी उचित सेवाओं के प्रावधान के प्रति उदासीन पाई जाती हैं या इन तीन सबसे ज़रूरी सेवाओं से लाभ कमाने के विचार के आगे झुकी हुई पाई जाती हैं। कुछ धर्म और कुछ तथाकथित अग्रणी अर्थव्यवस्थाएँ तो इन सेवाओं का उपयोग अपनी प्रमुखता फैलाने के लिए करती हुई पाई जाती हैं और आधिकारिक तौर पर इसमें शामिल भी हो जाती हैं, जबकि तथाकथित पिछड़े और विकासशील देश अभी भी इस उलझन में हैं कि क्या करें और इस मुद्दे को कैसे सुलझाएँ।

(1.सी) समाज में समस्याएं तब शुरू हुईं जब समाज ने इस बुनियादी आधार को नजरअंदाज कर दिया या छोड़ दिया कि विश्वास/धर्म वह आधार है जिस पर राजनीति – शासन की अधिरचना खड़ी होती है।

धर्म को आधार मानने की इस परिभाषा को देखते हुए, यह वह धर्म होना चाहिए जो सम्पूर्ण समाज के सम्पूर्ण बुनियादी और स्थानीय कार्यों का ध्यान रखे, अर्थात धर्म को सम्पूर्ण जीवन शैली का निर्देशन करना चाहिए और समग्र सुरक्षा (शारीरिक, आर्थिक और भावनात्मक), रोजगार और व्यस्तता, शिक्षा और स्वास्थ्य, ऊर्जा और मनोरंजन, पारिस्थितिकी और पर्यावरण, प्रशासन और न्याय के सम्पूर्ण आयाम के साथ-साथ अप्रत्याशित परिस्थितियों के लिए तैयारी का ध्यान रखना चाहिए।

इसके अलावा राजनीति (सरकार) जो एक अधिरचना है, उसे सामूहिक सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, अंतर्राष्ट्रीय विकास, सुरक्षा (रिजर्व पुलिस और सेना), अंतर्संबंध, अनुसंधान और विकास, सुझाव

और प्रतिक्रिया के लिए सुविधा, राष्ट्रीय त्योहारों के उत्सव के साथ-साथ संविधान (दृढ़ता से स्थापित और लचीली प्रणाली) और संवैधानिक न्यायालय के माध्यम से देश के मार्गदर्शक और विवेक के रक्षक का ध्यान रखना चाहिए। यह परिभाषा यह भी बताती है कि भारत में राज्य सरकारों और सहयोगी कार्यालयों जैसे किसी भी मध्यस्थ ढांचे की कोई आवश्यकता नहीं है, और इसे समाप्त किया जा सकता है।

यह समय समाज के लिए उठकर जिम्मेदारी अपने हाथ में लेने का है। भारत स्थानीय धार्मिक निकायों, जिला परिषदों, कुछ क्षेत्रीय कार्यालयों और राष्ट्रीय सरकार (निर्वाचित सांसदों द्वारा संचालित) के माध्यम से खुद को बहुत अच्छी तरह से प्रबंधित कर सकता है।

(2) **प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा थी**:

(2.A). यह बहुत ही आश्चर्यजनक, विचित्र और विरोधाभासी है कि "डॉक्टर, वकील और न्यायाधीश, शिक्षक और उपदेशक" को कई बार भगवान के बराबर माना जाता है, क्योंकि वे व्यक्ति को दूसरा जीवन प्रदान करते हैं और एक तरह से पूरे समाज का भला करते हैं, लेकिन व्यावसायीकरण के बाद डॉक्टर, वकील या शिक्षक एक पेशा बन गए हैं, फिर सेवाओं के विक्रेता को सेवाओं के खरीदार/प्राप्तकर्ता के सामने भगवान के बराबर कैसे माना जा सकता है? इसके अलावा ये डॉक्टर, वकील और शिक्षक (पेशेवर) अपनी गोपनीयता में विपरीत प्रार्थना करते पाए जाते हैं, यानी डॉक्टर और दवा कंपनियां अधिक रोगियों के लिए (यानी समाज में अधिक बीमारियों के लिए), वकील और न्यायाधीश अधिक ग्राहकों के लिए (यानी समाज में अधिक अपराध और अन्याय) और शिक्षक और उपदेशक अधिक छात्रों/शिष्यों के लिए (यानी समाज में अधिक अज्ञानता) फिर इन व्यवसायों को सम्मानजनक कैसे माना जा सकता है?

उपरोक्त जैसी स्थिति तभी हो सकती है जब धर्म के मूल सिद्धांतों को पीछे छोड़ दिया गया हो या वे पीछे हट गए हों और समाज खुद को संभाल न सके और इन बुनियादी सेवाओं का व्यवसायीकरण होने दे। पिछले कुछ हज़ार सालों से जो चल रहा है, उसे देखते हुए यह भी माना जा सकता है कि धर्म की बुनियादी समझ के साथ-साथ क्या खाना चाहिए, क्या पीना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए, इसकी समझ भी गड़बड़ा गई है, अन्यथा लोग बीमार नहीं पड़ते, बेवजह अपराध करने के लिए अपना विवेक नहीं खोते और अपनी अज्ञानता नहीं दिखाते, जिसके लिए डॉक्टरों, वकीलों, जजों और शिक्षकों और उपदेशकों की सेवाओं की आवश्यकता होती है।

*(यह सिद्ध तथ्य है कि जैसा भोजन वैसा ही भाव, जैसा जल वैसा ही स्वर और जैसा धुआं, वैसी ही इन्द्रियाँ होती हैं, इसलिए धर्म व्यक्ति को सावधानी बरतने की सलाह देता है, जैसे रासायनिक रूप से उपचारित कामोद्दीपक पदार्थों के सेवन से बचें, सड़े हुए फल और अनाज के पेय से बचें

और मानव मांस (नरभक्षण) से बचें, और जो आकार में बड़े हैं (पशु–मत्स्य) जिनमें हाइड्रोकार्बन की उच्च–बड़ी आणविक श्रृंखला होती है) से आनुवंशिक गड़बड़ी हो सकती है, और गिद्ध और सूअर का मांस खाने से बचें क्योंकि ये मैला खाते हैं, फिर कुत्ते का (क्योंकि कुत्ते को मनुष्य का मित्र माना जाता है), फिर उन जानवरों का जिनका दूध मनुष्य पीता है चाहे वह बकरी हो या गाय या भैंस आदि (क्योंकि दूध माँ का होता है) आदि। इन संस्थाओं के साथ कोई कैसे व्यवहार करता है, यह न केवल उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है बल्कि इन लोगों, उनके परिवार और उनके पूरे समाज के भविष्य का भी पूर्वानुमान लगाता है

पेय, भोजन और कामोद्दीपक में परिवर्तन के साथ, परिवारों और समाजों में क्या बदलाव आते हैं? यह सामान्य है कि ये चीजें (पेय, भोजन और कामोद्दीपक) समाज में कोई भी बदलाव लाने के लिए पर्याप्त हैं, अच्छाई से बुराई, बुरे से बदतर, राजत्व से गुलामी और इसके विपरीत।)*

(2.बी) जब से मूल धर्म को भुला दिया गया है और इसके क्षेत्रीय मतभेदों ने धर्म के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, तब से समस्याएँ उभरने लगी हैं। यह देखकर आश्चर्य होगा कि प्रत्येक धर्म के सभी धार्मिक गुरु अपने कुल, अनुयायियों और समर्थकों को ये बुनियादी सेवाएँ (स्वास्थ्य, न्याय और शिक्षा) प्रदान करने के बजाय मृत्यु के बाद जीवन के सपने दिखाने, अपने अनुयायियों में भय पैदा करने, अपने धर्म की श्रेष्ठता और दूसरों को हीन दिखाने में व्यस्त रहे और समाज में शांति और सद्भाव की जगह घृणा और शत्रुता को और अधिक बढ़ाया। इन सभी धार्मिक गुरुओं ने मिलकर अपने लगभग सभी अनुयायियों के साथ–साथ पूरे समाज की आस्था को हिला दिया है।

चूंकि आस्था/धर्म प्रत्येक जीव के लिए जन्मजात और केंद्रीय (हृदय) है, इसलिए जब आस्था हिलती है/टूटती है/टुकड़ों में विभाजित होती है तो यह स्पष्ट है कि केंद्र (हृदय) अनियमित रूप से कार्य करेगा। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो यह अंततः व्यक्ति के आंतरिक संतुलन और प्रतिरक्षा को बिगाड़ देती है, जिससे जाहिर तौर पर शुगर लेवल (मधुमेह), निराशा (हृदय रोग), असहायता (कैंसर) होती है और वह सभी प्रकार की अन्य बीमारियों का आसान शिकार बन जाता है।

चिकित्सा डेटा पुष्टि करते हैं कि बीमारियाँ बहुत खतरनाक दर से बढ़ रही हैं जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि समाज में इन सेवाओं को प्रदान करने वाली एजेंसियां (धार्मिक संस्थाएँ) बुरी तरह विफल हो रही हैं। समाज के लिए इससे बदतर स्थिति नहीं हो सकती कि कम से कम अपने चुने हुए धर्म/ईश्वर के धार्मिक व्यक्ति और स्थान से इन सेवाओं को पाने की उम्मीद न हो।

(2.सी) विज्ञान के रूप में शरीर विज्ञान और कला के रूप में पाक कला दो मुख्य और बुनियादी विषय हैं जिन्हें समाज के सभी लोगों के साथ साझा/सिखाया/समझाया जाना चाहिए और अगर इन्हें अच्छे से किया जाए तो समाज में स्वास्थ्य संबंधी कोई बड़ी समस्या नहीं होगी। लेकिन समाज में मौजूद समस्याओं से पता चलता है कि इस बुनियादी समझ को उन लोगों ने अनदेखा/अनदेखा किया जो मामलों के शीर्ष पर थे, चाहे वह धर्म का क्षेत्र हो या राजनीति का।

(2.डी) यह देखा गया है कि व्यक्ति की व्यक्तिगतता और सफलता के बारे में लगातार और निरंतर बयानबाजी करके, चाहे वह आध्यात्मिक क्षेत्र में हो या भौतिक/आर्थिक क्षेत्र में, " **अपने मालिक स्वयं बनो, अपना प्रकाश स्वयं बनो" जैसे उपदेशों द्वारा, परिवार और समाज नामक दो सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं को व्यवस्थित रूप से पिछवाड़े में** धकेल दिया गया है, जिसने अब तक परिवारों और समाजों में सामूहिकता और एकरूपता को बिगाड़ दिया है।

(2.E). खुशी को जीवन को बनाए रखने वाली एकमात्र शक्ति कहा जा सकता है। यह मापने के लिए कि कोई व्यक्ति, परिवार, समाज और देश खुश है या नहीं, इसे केवल आर्थिक रूप से कुछ निश्चित व्यय पैटर्न द्वारा मापा जा सकता है और इसे सकल खुशी अनुपात द्वारा दर्शाया जा सकता है।

इस प्रकार सकल प्रसन्नता अनुपात (जीएचआर) को = ए/बी जैसे अनुपात के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें ए: बुनियादी ढांचे, शक्ति निर्माण और रखरखाव, भोजन और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट, परोपकार आदि पर सरकार और जनता का कुल व्यय और बी: स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, और तथाकथित नैतिक उपदेश, संकट प्रबंधन और शवगृह व्यवसाय पर सरकार और जनता का कुल व्यय। बढ़ा हुआ सकल प्रसन्नता अनुपात हम सभी को अधिक मात्रा में जीवनदायी शक्ति प्रदान करेगा।

जब प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है, तो स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, धर्मोपदेश और शवगृह व्यवसाय में वृद्धि होती है, जबकि जब प्रवृत्ति ऊपर की ओर होती है, तो बुनियादी ढांचे, खाद्य और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट आदि में वृद्धि होती है।

(2.F). किसी भी समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए न्याय की प्राप्ति सबसे महत्वपूर्ण है, इसलिए उच्चतम स्तर की न्याय व्यवस्था बनाए रखना समाज का विशेषाधिकार और जिम्मेदारी है। न्याय को प्रलय के लिए छोड़ देने से पूरा समाज बर्बाद हो जाता है, जिसकी सराहना नहीं की जा सकती। इसके अलावा हाल ही में देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान, सभी धार्मिक संस्थानों के साथ-साथ सभी अदालतें बंद रहीं, इसलिए कहा जा सकता है कि आम लोगों और देश में आने वाले आगंतुकों को सांत्वना और न्याय प्रदान करने के लिए इसकी प्रासंगिकता खत्म हो गई है।

(2.एफ. 1) न्याय समाज की जिम्मेदारी है और माना जाता है कि इसे वरिष्ठ नागरिकों के एक समूह (प्रत्येक मामले के लिए न्यूनतम पांच सदस्य) के साथ एक लोकपाल द्वारा बनाए रखा जाना चाहिए, जो किसी व्यक्ति के चोर या लुटेरे बनने के मूल कारणों पर भी विचार कर सकता है और फिर उपचारात्मक उपाय सुझा सकता है। स्वस्थ और खुशहाल रहने की इच्छा रखने वाले समाज कथित तौर पर न केवल अपराध के दंड वाले हिस्से पर बल्कि क्षमा और पुनर्वास के मुद्दों पर भी ध्यान देते हैं।

न्याय प्रदान करना उन सम्मानित व्यक्तियों का विषय है जो पर्याप्त आयु और अनुभव प्राप्त कर चुके हैं, पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त हो चुके हैं, सभी प्रकार की स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं ताकि वे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के समाज के सभी सदस्यों को समान दृष्टि से देख सकें।

(2.एफ.2) सरकारी कर्मचारियों द्वारा किराए के वकीलों की दलीलों पर न्याय करना हास्यास्पद है और इसे केवल गुलाम देश या गुलाम/अधीन या उपनिवेश बने रहने की चाह रखने वाले देश के लिए ही सराहा जा सकता है। कागज के आधार पर न्याय का कारोबार और न्याय देना किसी भी सभ्यता के पतन की पराकाष्ठा कही जा सकती है। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा संसद में जून 2022 में दिए गए उत्तर के अनुसार, भारत के विभिन्न न्यायालयों में लगभग चार करोड़ मामले लंबित हैं और भारत के सर्वोच्च न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट) में नब्बे हजार से अधिक मामले लंबित हैं। दुर्भाग्य से, अदालतों में लंबित इतने बड़े मामलों के लिए किसी को भी यह पता नहीं है कि क्या करना है और क्या नहीं करना है?

(2.एफ.3) आश्चर्य की बात है कि भारत के आदिवासी अपने समुदाय के भीतर न्याय के मामले में तथा अन्य आदिवासी समुदायों के साथ व्यवहार में किसी भी प्रकार का विवाद नहीं रखते हैं। शायद आदिवासियों की निंदा करने के स्थान पर हम उनसे न्याय का पाठ पुनः सीखना चाहें। भारत में (यहाँ तक कि विश्व में भी) शासन में सर्वोच्च सत्ता जनता की ही मानी जाती है, इसलिए यदि एक साधारण चपरासी से लेकर प्रधानमंत्री तक तथा एक मूर्ख (एक साधारण नागरिक को अब इसी नाम से जाना जाता है) से लेकर प्रथम नागरिक महामहिम तक सभी को देश की न्याय व्यवस्था की अक्षमता का पता है, तो इसे ठीक करना जनता की सीधी/परिपत्र जिम्मेदारी है।

(2.G). हम इंसानों के अंतिम संस्कार के लिए श्मशान में गुंबदों की आवश्यकता होती है। हिंदुओं में गुंबद होना कोई व्यवसायिक प्रस्ताव नहीं है, जब भी कोई अंतिम संस्कार करना होता है तो गुंबद आते हैं और तब वे समाज में सामान्य काम करते थे जैसे खेती या सहायक काम।

अगर कल को श्मशान घाट का विज्ञापन किया जाए और उसका महिमामंडन किया जाए जैसे कि "इस श्मशान घाट पर और इस गुंबद के पास दाह संस्कार करने से व्यक्ति सीधे स्वर्ग जाएगा या जैसे, यह श्मशान घाट आपके अंतिम संस्कार का ध्यान रखेगा, तो कोई क्या कहेगा? हालांकि, यह देखकर आश्चर्य होगा कि कुछ धार्मिक स्थलों/श्मशान घाटों में जगह एक व्यापार योग्य वस्तु बन गई है, लोगों ने इसे अपने लिए आरक्षित करने के साथ–साथ दूसरों को उपहार देने के लिए भी जगह खरीदना शुरू कर दिया है।

डॉक्टर्स की जरूरत तो डोम्स की तरह ही है, लेकिन डॉक्टर्स का व्यावसायिक प्रचार और महिमामंडन समाज में डोम्स के प्रचार जैसा ही है। डॉक्टर्स और मेडिकल व्यवसाय का प्रचार एक बीमार मानसिकता है और मेडिकल टूरिज्म और अस्पतालों और डॉक्टरों का विज्ञापन इसकी पराकाष्ठा है।

आधुनिकतम अस्पताल में जो हो रहा है वह यह है कि अस्पताल का प्रशासन प्रबंधन पेशेवरों द्वारा प्रबंधित किया जा रहा है और ये तथाकथित पेशेवर मरीजों को ग्राहक कहते हैं तथा मरीजों के साथ वैसा ही व्यवहार करना शुरू कर देते हैं जैसा कोई ग्राहक के साथ करता है।

दुनिया में कुछ देश इतने पतित हैं कि अपनी उच्च निवेश जांच, निदान और डॉक्टर की टीम को जीवित रखने के लिए उन्हें नए–नए वायरस, बैक्टीरिया, रोग और सिंड्रोम बनाने की जरूरत है और अंतरराष्ट्रीय स्वास्थ्य संगठनों सहित विशेषज्ञों की सेवाओं का उपयोग करके मीडिया में समाचार और विचारों, पैनल चर्चा के माध्यम से अपने विनाश का विज्ञापन करना पड़ता है।

यह देखा गया है कि डॉक्टर और उनके नजदीकी परिवार और मित्र समाज के किसी भी सामान्य व्यक्ति की तुलना में अधिक दवाइयों का सेवन करते हैं। डॉक्टरों के परिवार के सदस्य आम तौर पर ICU, ICCU, रेस्पिरेटर के आइसोलेशन में मरते हैं, जबकि सामान्य परिवार के सदस्य अपने प्रियजनों के बीच गीता, कुरान आदि सुनते हुए और गंगा/पवित्र जल पीते हुए मरते हैं।

(3) <u>स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय पर विविध दृष्टिकोण</u> :

(3.ए). न्याय: हम जानते हैं कि कहावत है कि जब बिल्ली रोटी के लिए लड़ती है और अपने झगड़े को सुलझाने के लिए बंदर के पास जाती है, तो क्या होता है, आमतौर पर बंदर पूरी रोटी छीन लेता है, इसके अलावा, बंदर के पास जाकर बिल्लियों ने बिल्ली पर बंदर के अधिकार को पुख्ता किया है, इसी तरह का मामला अंग्रेजी द्वारा स्थापित कानून न्यायालयों का है और कई देशों में उनका जारी रहना है। अंग्रेजी न्यायिक सेवा और कानून कई देशों की गुलामी को लंबे समय तक बनाए रखने में सक्षम थे। स्वतंत्र देशों में इस साम्राज्यवादी न्यायिक प्रणाली के जारी रहने से अपने ही लोगों की मानसिक गुलामी हो रही है। विडंबना यह है कि श्री गांधी और भारत

के कुछ प्रधानमंत्रियों की हत्या के मामलों में मुकदमा वर्षों तक चला, क्या कोई सामान्य व्यक्ति ऐसी स्थिति में न्याय की कल्पना कर सकता है?

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में, कई वकील अग्रणी थे और अब स्वतंत्रता के बाद कई वकील समवर्ती प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रवक्ता हैं, भारत ने उनकी सेवा के साथ जो हासिल किया है वह यह है कि पहले भारत कई देशों में विभाजित हो गया, प्रत्येक देश कई राज्यों में विभाजित हो गया।

यह विरोधाभासी है कि वकील और डॉक्टर जो न्याय में सहायता करके और स्वास्थ्य प्रदान करके लोगों की सेवा करते दिखते हैं, वे मूल रूप से (एक दुकानदार की तरह) चाहते हैं कि समाज अन्याय और अस्वस्थता से भरा हो, ताकि उनका व्यवसाय फल-फूल सके। वकील और डॉक्टर भी इंसान हैं, इसलिए जो कुछ भी ऐसा लगता है कि उन्होंने अच्छा किया है, वह उनकी जन्मजात मानवता के कारण है, न कि उनके पेशे के कारण।

(3.ए.1). न्याय व्यवस्था (न्यायिक व्यवस्था):

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इक्कीसवीं सदी में भी न्याय का पालन इस तरह से किया जाता है कि "अंधकार छा जाए, राजा हत्यारा और विष महान है। प्रकाश लुप्त हो जाए, अंधकार का साम्राज्य छा जाए), और, अफसोस! यह सब कानून और व्यवस्था के नाम पर होता है!

(क) न्याय का अर्थ जस्टिस-आइस (बर्फ जैसा) हो गया है या शायद इसे इसी तरह से डिजाइन और पेश किया गया है, जबकि न्याय के लिए संस्कृत शब्द "न्याय व्यवस्था" की मूल ध्वनि नवीनता-न्याय की ध्वनि देती है, और इसी तरह से व्यवहार करने का प्रस्ताव करती है। परिवार, समाज और सरकारों के सामंजस्यपूर्ण कामकाज के लिए न्याय प्रदान करना हमारी मूल जिम्मेदारी हो सकती है।

(ख) यह माना जा सकता है कि समाज और सरकार का निर्माण लोगों की सामूहिक बुद्धि है, जो अपनी पसंद, क्षमता और योग्यता के अनुसार काम बांटते हैं और स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीते हैं। इसलिए यह उचित रूप से कहा जा सकता है कि न्याय का प्रावधान सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए है, न कि इसके विपरीत। यह न्याय और इससे जुड़े लोगों को समय, स्थान और ऊर्जा के साथ तालमेल रखने के लिए कहता है, यानी न्याय को स्थिर रहने की जरूरत नहीं है और उसे न्यायपूर्ण (समय, स्थान/भूगोल ऊर्जा/आयु/लिंग पर निर्भर) होना चाहिए, जिसमें गतिशीलता और लचीलेपन के लिए पर्याप्त गुंजाइश हो।

(ग) न्याय से जुड़े लोगों की चिंता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि इन लोगों का चयन एक प्रक्रिया के माध्यम से किया जाए और फिर समाज के वरिष्ठ नागरिकों द्वारा सर्वसम्मति से पांच से दस साल की अवधि के लिए चुना जाए। इसके अलावा, जनप्रतिनिधि के सर्वोच्च स्तर को मासिक आधार पर न्यायिक समीक्षा करनी चाहिए, जो भारत जैसे देश के लिए राष्ट्रपति हो सकता है (परिस्थिति की गंभीरता के अनुसार संसद की सिफारिश के साथ या बिना)।

(घ) औपनिवेशिक शासन में न्याय का अर्थ जानबूझकर और जानबूझकर न्याय–बर्फ में बदल जाता है ताकि चिंता प्रकट की जा सके और उपनिवेश को बनाए रखा जा सके। जब न्याय (बर्फ) बर्फीली हो जाती है, तो देरी और अंधेरा (देर भी अंधेर भी) उसका स्वाभाविक परिणाम है। वर्तमान में, राजनेता न्याय व्यवस्था के खिलाफ मुंह खोलने से डरते हैं, लेकिन देश को यह समझना चाहिए कि वर्तमान न्यायाधीश सरकार के वेतनभोगी कर्मचारी हैं – एक मात्र सरकारी सेवक, और उन्हें सुधारात्मक कार्रवाई करने से डरना नहीं चाहिए। यदि संसद सुधारात्मक कार्रवाई नहीं करेगी तो संभव है कि लोग न्याय के लिए स्थानीय गुंडों का सम्मान करना शुरू कर दें।

(ई) पहला कदम न्याय की देवी से काली पट्टी हटाना है। हमें जजों और वकीलों की वर्दी से कालापन (अंधकार का प्रतीक) हटाना होगा। सुप्रीम कोर्ट को केवल अंग्रेजी भाषा से हटाकर संस्कृत, हिंदी और कुछ क्षेत्रीय भाषाओं को जोड़ना होगा।

(च) सभी प्रकार की जेलों के अंदर और सभी प्रकार के कैदियों के साथ मानवीय व्यवहार होना चाहिए तथा आत्म–सुधार को बढ़ावा देना चाहिए।

(छ) कागज और दस्तावेजों पर आधारित न्याय को प्रत्यक्ष एवं सक्रिय न्याय व्यवस्था तथा गुप्तचर (खुफिया) न्याय व्यवस्था की ओर स्थानांतरित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

(ज) न्याय/न्याय सरकार की जिम्मेदारी है और इसलिए यह पूरी तरह से सरकार पर निर्भर है कि अपराध का पता लगाने के लिए जांच ही सही तरीका है, अपराधी की बात सुनना सिर्फ सजा की सीमा का पता लगाने के लिए है, जो दी जा सकती है, ऐसे में पीड़ित और वकीलों की आवश्यकता नहीं होती है।

(i) सरकार का गठन मनुष्य की बाह्य गतिविधियों तथा सुरक्षा के लिए किया जाने वाला कार्य है। मनुष्य न तो चाहता है और न ही यह सरकार का विशेषाधिकार है कि वह मनुष्य के व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप करे। सरकार को मनुष्य के मूल तथा वैध अधिकार की सीमा का उल्लंघन करके घर में प्रवेश नहीं करना चाहिए। यदि वह ऐसा कर रही है तो वह सही सरकार नहीं है और दूसरे वह अपने ही नागरिकों को अपनी ही सरकार का गुलाम बना रही है। इस बात को ध्यान में रखते हुए सरकार को मनुष्य के व्यक्तिगत मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य के परिवार के रिश्तेदार तथा बुजुर्ग व्यक्ति जीवन के विभिन्न मामलों में समय–समय

पर उचित निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार तथा शक्तिशाली होते हैं। जैसे कि विवाह, तलाक, महिला, पत्नी, बेटी, बहन, माता, पुरुष, पुत्र, भाई, पति, पिता आदि पारिवारिक मामले सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर होने चाहिए। सरकार द्वारा किया जाने वाला कोई भी हस्तक्षेप सरकार तथा उसकी न्यायपालिका/न्याय व्यवस्था द्वारा ही मनुष्य के मूल अधिकार का उल्लंघन है। [अगर विवाह न्यायालय द्वारा तय किया गया है तो भविष्य में होने वाले मतभेद या तलाक के मुद्दे को सुलझाने का अधिकार केवल न्यायालय को है। अगर विवाह समाज द्वारा किया जाता है तो मतभेद के किसी भी मुद्दे को सुलझाने के लिए समाज ही जिम्मेदार है और अगर न्यायालय उसके अधिकार क्षेत्र में आता है तो न्यायालय विध्वंसकारी भूमिका निभा रहा है जो कि न्यायालयों की स्थापना के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है और जो सरकार ऐसे न्यायालयों को पोषित करती है उसे औपनिवेशिक, विदेशी या जनविरोधी कहा जा सकता है। पारिवारिक मुद्दों से मुक्त करके समाज पर ही छोड़ देने से समान नागरिक संहिता की बात या तथाकथित बात अपने आप पूरी हो जाएगी।

न्याय व्यवस्था में ईमानदारी और सादगी का सर्वोच्च स्तर बनाए रखने के लिए न्यायधीशों पर लगातार नजर रखनी होगी या उनमें भ्रष्टाचार को रोकने के लिए छापे भी मारे जा सकते हैं। न्यायधीशों, वकीलों का महिमामंडन न्याय के व्युत्क्रमानुपाती है।

आइए, ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी न्याय व्यवस्था पृथ्वी पर एक जीवंत स्वर्ग का निर्माण करने में शामिल हो।

(3.बी). <u>स्वास्थ्य</u>:

कहा जाता है, "यदि हमारा मन स्वस्थ, प्रसन्न और पवित्र रहेगा तो संसार में समस्या का लेशमात्र भी नामोनिशान नहीं रहेगा और संसार खुशियों से भर जाएगा।"

एक व्यक्ति को स्वस्थ कहा जा सकता है यदि वह सहज है और बाथरूम में अपने शरीर की प्रशंसा कर सकता है यानी पूर्ण नग्नता। यदि कोई बाथरूम, ड्रेसिंग रूम और डाइनिंग रूम में अपने शरीर की प्रशंसा नहीं कर सकता है तो उसे निश्चित रूप से कुछ उपचार की आवश्यकता है और उपचार के लिए निम्नलिखित विभिन्न दृष्टिकोण हैं:

स्वास्थ्य का तांत्रिक तरीका: "मन की गति पदार्थ को नियंत्रित करती है।" यह मन ही है जो शरीर को बनाए रखता है और अगर मानसिक स्वास्थ्य ठीक है तो भौतिक शरीर भी ठीक रहेगा। तंत्र मन, पदार्थ और उसकी गति से संबंधित है, और भगवान शिव द्वारा माता पार्वती को बताई गई ऐसी एक सौ बारह विधियाँ हैं जो मानवता की संपूर्ण ज़रूरतों को कवर करती हैं, यानी भूत,

वर्तमान और भविष्य। सुगंध चिकित्सा द्वारा मन की सफाई, 'यज्ञ' द्वारा वातावरण की सफाई और यौन गतिविधि को नियंत्रित करके शरीर की सफाई 'तंत्र' के परिणाम हैं।

उपचार के विभिन्न तरीके : ऐसा कहा जाता है कि "यदि सभी घटक/भाग ठीक हैं तो मशीन/शरीर ठीक है। अधिकांश चिकित्सा विज्ञान इसी घटना पर काम करते हैं, वे व्यक्तिगत रूप से होने वाली शिथिलता/खराबी को ठीक करते हैं और एलोपैथी, आयुर्वेद, यूनानी आदि इसके उदाहरण हैं।

आयुर्वेद, जो कि आयु का वेद (जीवन का वेद) है और जिसे पाँचवाँ वेद माना जाता है, उपचार प्रदान करने के लिए ज्योतिष की मदद भी लेता है। एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, रंग चिकित्सा, चुंबकीय चिकित्सा और मालिश भी उपचार के विभिन्न तरीके हैं।

एकीकृत उपचार पद्धति: बीमार व्यक्ति के इलाज का एक और तरीका एकीकरण पर जोर देता है। यह कहता है, "आप भागों को छोड़ दें, और अपने पूरे शरीर और दिमाग को ठीक करें तो भाग अपने आप ठीक हो जाएंगे"। इस तरह से सभी कार्य एकीकृत हो जाते हैं। योग, ध्यान, आस्था चिकित्सा और कुछ हद तक, प्राकृतिक चिकित्सा और सम्मोहन इस सिद्धांत पर काम करते हैं। यह कहता है, "अगर मशीन ठीक है तो सभी भाग सही होने चाहिए"।

सामंजस्य का मार्ग: सामान्य समझ के लिए, योग स्वास्थ्य में अंतिम चरण हुआ करता था, जिसमें इनपुट और आउटपुट को सिंक्रनाइज़ किया जाता है। जो लोग अंदर और बाहर समन्वय में नहीं हैं, उनके लिए योग ही एकमात्र विकल्प है। लेकिन समन्वयित व्यक्ति, 'योगी क्या करेगा'? योगी का नृत्य, पूर्ण योगी शायद ही कभी योगिक व्यायाम का सहारा लेता है। योगी योग में रहते हैं और वे नृत्य करते हैं– सूफी नृत्य, शिव नृत्य और कृष्ण नृत्य।

रजनीश (ओशो) की समझ ने हमारे लिए इसमें नए आयाम जोड़े हैं। ओशो ने समझा – योगी नृत्य, इसका परिणाम – अगर कोई नृत्य कर सकता है तो वह योगी होगा और पूर्ण स्वस्थ होगा, और खुश और पवित्र भी होगा। रजनीश ने हम सभी के लिए इस बोध को विकसित किया है और नृत्य और गायन के विभिन्न तरीके सुझाए हैं। रोगियों के लिए चिकित्सा, असंतुलित व्यक्तित्व और मानसिक रूप से टूटे हुए लोगों के लिए योग और स्वस्थ लोगों के लिए नृत्य (गायन, वादन और नृत्य) आदर्श हैं।

समाज को नृत्य केंद्रों को प्रोत्साहित करना होगा, और यह सूफियों और ओशो के संगीत के अनुरूप हो सकता है। शिक्षा केंद्रों में इसे एक विषय के रूप में और कार्यालयों में अभ्यास के रूप में अनुमति दी जाएगी। प्रतिदिन नृत्य करने से डॉक्टर दूर रह सकते हैं।

(3.बी.1) समाज और सरकार निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना और उन पर कार्रवाई करना चाहेंगी:

(क) यह देखा गया है कि सभी सरकारी डॉक्टर कम प्रैक्टिस करते हैं और निजी डॉक्टर ज़्यादा प्रैक्टिस करते हैं। निजी डॉक्टर प्रार्थना करते हैं कि उनके पास ज़्यादा से ज़्यादा मरीज़ आएं और एक तरह से वे ज़्यादा से ज़्यादा बीमारियों के लिए प्रार्थना करते हैं, यहाँ प्रार्थना में ही सुधार की ज़रूरत है।

(ख) समाज और सरकार को डॉक्टरों (साथ ही वकीलों, निजी शिक्षकों/उपदेशकों) और अस्पतालों द्वारा ली जाने वाली अधिकतम फीस को सीमित करना होगा और यह भी देखना होगा कि मीडिया इन व्यवसायों (डॉक्टरों, वकीलों, शिक्षकों/उपदेशकों) का महिमामंडन और प्रचार न करे।

(ग) चिकित्सा व्यय के लिए बीमा सहित मुफ्त सुविधाओं को युक्तिसंगत बनाना होगा तथा सरकारी/निजी अस्पतालों, केमिस्टों, डायग्नोस्टिक्स प्रयोगशालाओं के बीच गठजोड़ को समाप्त करना होगा।

(घ) उपचार के सभी विभेदक तरीके साफ पेट पर अधिक जोर देते हैं, शारीरिक दृष्टि से ये तरीके कहते हैं कि समस्या पेट से शुरू होती है, और पेट के माध्यम से ठीक हो जाती है। साइको-फिजियोलॉजिकल स्तर पर यह कहा जाता है कि पेट में समस्या तब शुरू होती है जब कोई व्यक्ति किसी भावना, भावना, कथन या स्थिति को पचा नहीं पाता है और इस तरह ये विभेदक तरीके समस्या को अधिक शारीरिक और कम मानसिक से कम शारीरिक और अधिक मानसिक में स्थानांतरित करते हैं।

उपचार की विभिन्न विधियों के परिणाम सामूहिक स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र परिवेश की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं। यह विधि दर्शाती है कि रोग और स्वास्थ्य और खुशी संक्रामक हैं और इस प्रकार यह व्यक्तिवादी दृष्टिकोण के स्थान पर सामूहिक दृष्टिकोण की ओर संकेत करता है।

(ई) सरकार और धार्मिक केंद्रों को यह संदेश प्रसारित करना होगा कि अगर सेवन (खाना) ठीक है तो शरीर ठीक काम करेगा। यहाँ भोजन शरीर के लिए वह है जो व्यक्ति आँख, कान, नाक, मुँह और यौन अंगों से खाता है और इस तरह मुँह से जो कुछ भी लिया जाता है वह केवल पाँच प्रतिशत है। कई लोग भोजन को दवा के रूप में खाते हैं और कई लोग दवा को भोजन के रूप में खाते हैं। भोजन की शुद्धता से सात्विकता बढ़ती है।

(च) चिकित्सा पर्यटन से विदेशी मुद्रा कमाने का अच्छा अवसर मिलता है, लेकिन दूसरों की बीमारी से पैसा कमाना एक बीमार मानसिकता है, इसलिए स्वस्थ संस्कृति से इसे बढ़ावा नहीं मिल सकता। हालांकि, बाहरी मरीजों के इलाज के लिए हमारे दरवाजे खुले होने चाहिए।

(छ) जैसे-जैसे मानव जीवन अपने उत्कर्ष की ओर बढ़ रहा है, क्लोनिंग, जीनोम और स्टेम सेल हस्तक्षेप के साथ-साथ सौंदर्य और स्वास्थ्य के लिए प्लास्टिक सर्जरी निश्चित रूप से बढ़ेगी,

जबकि भ्रूण और हृदय प्रत्यारोपण, मस्तिष्क कृत्रिम उत्तेजना तकनीकें उपलब्ध होंगी और इन्हें बढ़ावा मिलना पसंद होगा लेकिन समाज के सामूहिक दिमाग और सामूहिक बेहतरी के लिए इसकी प्रगति द्वारा फ़िल्टर किया जाएगा।

मूल रूप से यह कहा जा सकता है कि 'स्वस्थ, सुखी और पवित्र शरीर' पाने के लिए – इसकी सुनें, यह सभी चेतावनियाँ और संकेत देता है।

(3.सी). शिक्षा: वर्तमान प्रतिमान में शिक्षा का मुख्य कार्य बातचीत में समानता और समझ में समानता लाना तथा सीखने के लिए एक साझा मंच प्रदान करना है। वर्तमान में शिक्षा का उपयोग सीखने और फिर सीखने से कमाई करने के लिए एक मंच के रूप में किया जाता है और उच्च शिक्षा को इस प्रक्रिया को जटिल बनाने के एक उपकरण के रूप में माना जा सकता है ताकि परिष्कृत तरीकों से ग्राहकों को बेवकूफ़ बनाकर या धोखा देकर भी अतिरिक्त पैसा कमाया जा सके।

(क). पर्यावरण सिद्धांत को समझने की प्रक्रिया को 'उपयोग को अनुकूलतम बनाने और दुरुपयोग को न्यूनतम करने' के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य कहा जा सकता है। संस्कृत में इसे ' सा' कहा जाता है। विद्या या विमुक्तये –सा विद्या या विमुक्तये –शिक्षा वह है जो मुक्त करती है, और शिक्षक वह है जो अपने छात्रों को अनावश्यक चिंताओं, हठधर्मिता आदि से मुक्त करने में दाई की तरह काम करता है। लेकिन अब जो हो रहा है, वह यह है कि व्यक्तियों को मुक्त करने के बजाय, शिक्षा लोगों को और अधिक बंधन में डाल रही है, व्यक्तियों को अधिक प्रलोभन की ओर बढ़ावा दे रही है, समाज में एकीकरण के बजाय अधिक विभाजन पैदा कर रही है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली हमें मनुष्य नहीं बना रही है, यह हमें अपना कर्तव्य, अपना कर्म करने और अपने प्राकृतिक धर्म का पालन करने के लिए प्रेरित नहीं कर रही है, बल्कि यह चूहे की दौड़ और बिल्ली की लड़ाई को बढ़ावा दे रही है।

(ख) शिक्षा से जो अपेक्षित है वह यह है कि लोगों को अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति के लिए जगह मिले, और फिर सुधार के लिए प्रतिक्रिया और आलोचना को स्वीकार करने की क्षमता और विनम्रता विकसित हो, यानी हमें अनुभव, अभिव्यक्ति और प्रतिक्रिया की इस सतत प्रक्रिया के लिए काम करना चाहिए/समर्पित होना चाहिए। जहाँ तक शिक्षा की एक अच्छी प्रणाली का सवाल है, केवल वही प्रणाली एक अच्छी शिक्षा प्रणाली मानी जा सकती है जो समाज में अनुभव को व्यक्त करने और अनुभवहीन लोगों को अनुग्रह और कृतज्ञता के अलावा किसी भी दायित्व के बिना अनुभव प्राप्त करने के लिए एक सम्मानजनक मंच प्रदान करती है। अंग्रेजी, संस्कृत, अरबी, तमिल आदि भाषाएँ तभी टिक सकती हैं जब वे दिल की कसौटी पर खरी उतरें और दिमाग की कसौटी पर खरी उतरें।

(ग). "मनुष्य मनुष्य के रूप में जन्म लेता है और मनुष्य के रूप में ही मरता है, उसके लिए और कुछ बनने को नहीं है और कहीं जाने को भी नहीं है, चाहे कोई चाँद पर जाए या मंगल पर, मनुष्य मनुष्य ही रहेगा, जीवन यहीं और अभी है। मनुष्य भटक गया है, उसे लगने लगा है कि जीवन की खुशियाँ यहीं और अभी होंगी, उन्हें वापस लाने के लिए नक्शों की आवश्यकता है क्योंकि सारा ज्ञान और जीवन की खुशियाँ यहीं और अभी हैं।"

(घ) यह गुरु ही है जो बेहतर ढंग से तय कर सकता है कि वह किस तरह के छात्र को मुक्त कर सकता है और छात्रों को चुन सकता है, फिर यह छात्र ही है जो गुरु को चुनता है। जैसे कोई भी तालाब में प्रवेश नहीं कर सकता और तैरना शुरू नहीं कर सकता या खेल के मैदान में प्रवेश नहीं कर सकता और फुटबॉल खेलना शुरू नहीं कर सकता, इसलिए यह पहला गुरु है, माँ जो उसे प्रेम और सेवा का अध्याय सिखाती है और फिर यह पिता और गुरु हैं जो उसे कर्तव्य और जिम्मेदारी का दूसरा अध्याय सिखाते हैं, फिर यह तीसरा शिक्षक है, दोस्त और सहकर्मी जो प्रतिस्पर्धा और तुलना का अध्याय सिखाते हैं, और यह जीवनसाथी है जो अनुभव को व्यक्त करने का पाठ पढ़ाता है और फिर छोटे बच्चे को साधु की तरह रहने का परोपकार का पाठ पढ़ाता है। असली गुरु जीवन के कर्म और उसे करने की कला सिखाता है और पारलौकिकता का विज्ञान समझाता है।

(ई) चूँकि शिक्षा का मूल उद्देश्य व्यक्तियों की मुक्ति है, इसलिए यह आवश्यक है कि यह सरकारी नियंत्रण से मुक्त हो, लेकिन सरकार इसे अप्रत्यक्ष रूप से वित्तपोषित कर सकती है। चूँकि शिक्षा और धर्म का उद्देश्य कुछ हद तक समान है, इसलिए यह सबसे अच्छा होगा कि शिक्षा प्रदान करने का कार्य धार्मिक केन्द्रों द्वारा बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के बारह वर्ष की आयु तक किया जाए, जिसमें खेलकूद के लिए पर्याप्त स्थान हो।

किशोरावस्था से सुव्यवस्थित शिक्षा और अठारह वर्ष से उन्नत शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता है, जिसके लिए शैक्षिक मेले (परीक्षण/परीक्षा नहीं) की व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमें बारह वर्ष और अठारह वर्ष की आयु में प्रस्तावित पाठ्यक्रम, विश्वविद्यालय और शिक्षक शामिल हों, ताकि वे अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन कर सकें, जिसमें मास्टर भी पाठ्यक्रम, विश्वविद्यालय और मार्गदर्शकों/शिक्षकों के उचित चयन के लिए छात्रों को मार्गदर्शन/सलाह दे सकें।

(च) लड़के और लड़कियाँ जीवन में अपनी भूमिका के लिए अलग-अलग तरीके से सीखते हैं और यौवन की शुरुआत के बाद उनके बीच एकरूपता लाने के लिए अलग-अलग शिक्षा की आवश्यकता होती है, जैसे कि महिला शिक्षा – महिला उन्मुख, पुरुष शिक्षा – पुरुष उन्मुख। चूँकि आंतरिक कार्य महिलाओं द्वारा और बाहरी कार्य पुरुषों द्वारा अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित किए जा रहे हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि आंतरिक सुरक्षा महिलाओं द्वारा और बाहरी सुरक्षा पुरुषों द्वारा प्रबंधित की जाए और इसके लिए महिलाओं को जूडो कराटे जैसी मार्शल आर्ट और पुरुषों को सभी

अस्त्र और शास्त्र (जैसे तलवार, लाठी, स्टीन-बंदूक आदि) का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विवाह से एक वर्ष पहले यौन शिक्षा और पारिवारिक जीवन के लिए शिक्षा दी जानी चाहिए। सुव्यवस्थित शिक्षा के लिए छात्रावास / गुरुकुल होना चाहिए, जबकि उन्नत शिक्षा के लिए छात्रावास अनिवार्य होना चाहिए।

(छ) बारह वर्ष की आयु के बाद किसी पर भी शिक्षा थोपने की आवश्यकता नहीं है तथा व्यक्ति घर पर ही अपने माता-पिता की परम्परागत व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर सकता है। हालांकि, शिक्षा किसी भी आयु तक सीमित नहीं होगी, वयस्क और वृद्ध किसी भी समय स्कूल/कॉलेज में प्रवेश ले सकते हैं।

(एच). शिक्षक वे होने चाहिए जिन्होंने अपने जीवन में आत्मज्ञान प्राप्त किया हो, न कि केवल सूचना केंद्र और इसलिए शिक्षक के लिए बेहतर उम्र अड़तालीस वर्ष से अधिक हो सकती है और स्कूल प्रभारी वे होंगे जो संन्यास आश्रम में हैं और शारीरिक रूप से स्वस्थ हैं। परपीड़क और गुलाम मानसिकता वाले शिक्षण कर्मचारियों से बचने के लिए नियमित, लगातार, व्यवहारिक, मनोवृत्ति और शारीरिक फिटनेस परीक्षण की आवश्यकता है क्योंकि ऐसे शिक्षक भविष्य के अच्छे नागरिक बनने के लिए शिक्षा में स्वतंत्रता, बहादुरी के पाठ नहीं दे सकते। नालंदा, तक्षशिला, रोम, ऑक्सफोर्ड, हार्वर्ड, यह सुझाव देते हैं कि संस्थान और देश की प्रगति एक साथ चलती है, इसलिए यह हम सभी को तय करना है कि हम क्या बनना चाहते हैं? ***

16. धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थाओं) से अर्थशास्त्र का प्रबंधन – एक अहस्तक्षेप नीति

निम्नलिखित प्रस्तुत है: धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थाएं) से अर्थशास्त्र का प्रबंधन – एक स्थायी समाज के लिए एक अहस्तक्षेप" के संबंध में प्रस्तुति छह भागों में आगे रखी जा रही है : (1)। सबसे अच्छी शासन प्रणाली क्या हो सकती है, (2)। कोई कैसे कह सकता है कि वर्तमान स्थिति कमजोर / गंभीर / अनिश्चित है और इसमें बदलाव की जरूरत है, (3)। क्या धर्म कोई समाधान प्रस्तुत करता है, (4), परिभाषाएं: धर्म (धर्म), धर्म संस्थान (धार्मिक–संस्थाएं), राजनीति, (5)। समवर्ती धर्मों में विवाद, (6)। पुराने समय के बुद्धिमानों के साथ समाधान केंद्रित चर्चा, (7)। धर्म संस्थान से समाज के प्रबंधन पर विविध दृष्टिकोण, (8)। धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थाएं) का प्रबंधन भाग,

(1) **<u>सबसे अच्छी शासन प्रणाली क्या हो सकती है</u> :** "सबसे अच्छी शासन (सामाजिक–आर्थिक–धार्मिक–राजनीतिक) प्रणाली क्या हो सकती है?" विषय पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, जिसमें विभिन्न विदेश मंत्रियों और अन्य प्रख्यात सामाजिक–राजनीतिक विचारकों ने भाग लिया, एक वक्ता ने कहा: "यदि हममें से कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में किसी भी समय/क्षण में कमजोर और असहाय, निराश्रित या हताश हो जाए, तो उस समय हमारी सरकार से क्या अपेक्षा होगी? जो सरकार उस समय हमारी अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो, उसे एक अच्छी सरकार कहा जा सकता है।

यह देखा गया है कि लोग अपनी गहरी निराशा और लाचारी में ईश्वरीय शक्ति को याद करते हैं और यदि उस समय उस स्थान की सरकार ऐसे लोगों की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम है, तो उसे सबसे अच्छी सरकार कहा जा सकता है और परिस्थितियों और लोगों के साथ व्यवहार करने में दिव्य संतुष्टि भी हो सकती है। ऐसी सरकार की इच्छा आम जनता में आसानी से देखी जा सकती है और इस प्रभाव की एक अंतर्निहित धारा भी वर्गों में महसूस की जा सकती है। दुनिया भर के कई नेताओं के बीच यह आम बात है कि प्राकृतिक नियमों पर आधारित सरकार होनी चाहिए, जिसके नागरिकों के साथ व्यवहार में ईश्वरीयता हो, न कि केवल चरनी और मेनाजेरी या शासक और शासित की सरकार हो।

(2) **कोई कैसे कह सकता है कि वर्तमान स्थिति कमजोर/गंभीर/अनिश्चित है और इसमें बदलाव की जरूरत है**: (उदाहरण भारत)?

(2.ए) निम्नलिखित कुछ मानदंड हैं जिनके आधार पर कोई भी सामान्य व्यक्ति यह पता लगा सकता है कि भारत की जमीनी हकीकत अच्छी नहीं है:

(क) प्रधानमंत्री कार्यालय ने स्वयं स्वीकार किया है कि भारत में अस्सी करोड़ (भारत की साठ प्रतिशत जनसंख्या) लोग गरीब हैं और मुफ्त राशन के हकदार हैं, (भारत के राष्ट्रीय पोर्टल https://www.india.gov.in/spotlight/pradhan-mantri-garib-kalyan-package-pmgkp के अनुसार)।
इसके अलावा, भारत सरकार अपने कृषि प्रधान देश में गरीब माने जाने वाले चार करोड़ किसानों को मानदेय के रूप में चार किस्तों में केवल लगभग आठ हजार रुपये प्रदान करती है।

(ख) ऐसा प्रतीत होता है कि यहां कोई सामाजिक सुरक्षा नहीं है; भारत की राजधानी दिल्ली सहित किसी भी महानगर में अनगिनत भिखारी देखे जा सकते हैं।

(ग) न्याय मिलने में लगने वाला समय (भारत के विभिन्न न्यायालयों में चार करोड़ से अधिक मामले लंबित हैं, जिनमें से नब्बे हजार से अधिक मामले भारत के सर्वोच्च न्यायालय में लंबित हैं।) इसके अलावा शोषण की शिकायत करने और सांत्वना पाने का कोई रास्ता नहीं बचा है (चाहे कर्मचारियों द्वारा या मालिकों द्वारा और यहां तक कि रिश्तों में भी)।

(घ) शिक्षा, बीमारी से उबरने और अदालतों से न्याय पाने पर खर्च किया गया धन, स्वास्थ्य और स्वस्थ आदतों, मनोरंजन और उत्सवों पर खर्च किए गए धन के साथ?

(ई) वन एवं जल निकायों की स्थिति, ताजी हवा एवं पानी की गुणवत्ता?

(च) कॉलोनियों, बाजार और धार्मिक स्थलों पर शोर का स्तर?

(छ) क्या संत/साधु/फकीर, स्वामी और पुजारी, बुजुर्ग और नेता उन पर विश्वास खो चुके हैं, परिणामस्वरूप समाज में उनका सम्मान भी खत्म हो गया है, इसलिए वे अपने निजी जीवनयापन के लिए धन संचय करने के लिए मजबूर हैं?

(ज) अपने घर से दूर किसी स्थान पर विपत्ति आने पर छोटी-मोटी सहायता (जैसे यात्रा व्यय के लिए धन) प्राप्त करने के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं है, इसी प्रकार छोटे-मोटे शोषण के लिए शिकायत करने तथा तत्काल सांत्वना पाने के लिए भी कोई साधन नहीं है।

(i) विश्व की अन्य मुद्राओं की तुलना में भारतीय मुद्रा का मूल्य?

(जे) नेताओं का लगातार बदलता रुख?

(के) 'परिवार, समाज, योग, धर्म–निरपेक्षता, धर्मनिरपेक्षता और विश्व एक बड़ा परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम)' जैसे मूल शब्दों के अर्थ की गलत व्याख्या की गई है?

(एल). ऐसा प्रतीत होता है कि कोई मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं है स्थानीय स्तर पर हम जो भोजन खाते हैं, जो तरल पदार्थ पीते हैं, जो चीजें पीते हैं तथा जो सामग्री पढ़ते और देखते हैं, वे मूल रूप से नागरिकों, उनके समाज और देश को आकार देते हैं।

(सं.) स्वच्छता, मनोरंजन, आचार–विचार और शिष्टाचार की शिक्षा आदि के क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधियों में सुस्ती दिखाई देती है।

(3) <u>क्या धर्म कोई समाधान प्रस्तुत करता है?</u>

हाँ। धर्म ही एकमात्र विकल्प है। धर्म संस्थान से सभी तरह के समाधान और सांत्वना मिल सकती है। धर्म और धर्म संस्थान की स्थिति खराब हो गई है, लेकिन अभी भी कुछ अवशेष मिल सकते हैं जो इस बात की ओर इशारा करते हैं कि यह मानव जाति के पास उपलब्ध एकमात्र विकल्प है और इसे क्रियाशील बनाने के लिए हमें धर्म और धर्म संस्थान को पुनर्जीवित करना होगा। इस कथन की सत्यता निम्नलिखित बातों से पता लगाई जा सकती है:

(3.अ) कहा गया है कि, " **प्रत्येक जीव को मातृभँवर के गहरे गर्त में गिरा दिया गया है**– प्रत्येक जीव ममतामयी भंवर के गहरे गर्त में गिराया गया है ", जो प्रत्येक व्यक्ति में एक सहज आस्था/धर्म और संतानोत्पत्ति की इच्छा के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। धर्म कहता है कि यह यात्रा नवजात शिशु के माँ के गर्भ में आने से पहले ही शुरू हो जाती है और समाज के सुरक्षित वातावरण में अपना पोषण पाती है और तब भी समाप्त नहीं होती, जब वृद्ध प्रकृति के गर्भ में आता है और ईश्वर के सुरक्षित वातावरण में अपना भविष्य तलाशता है। धर्म कहता है कि प्रत्येक संतानोत्पत्ति करने वाला दम्पति अपने प्रत्येक संतान के पुत्र/पुत्री को समान दृष्टि से देखता है। इसी कारण से प्रत्येक संतान को अपने घर (माता–पिता के घर) पर पूरा अधिकार और अपने घर के प्रति कर्तव्य का बोध होता है। प्रत्येक संतान द्वारा अपने माता–पिता और उनके घर के प्रति अधिकारों और जिम्मेदारियों की भावना स्वाभाविक प्रतीत होती है, क्योंकि ये चीजें शाश्वत हैं और व्यक्ति के रक्त–मज्जा में समाहित हो जाती हैं। यहाँ यह भावना होती है कि घर की हर चीज माता–पिता की है और परिवार के सभी लोगों का उसमें अपना हिस्सा है।

माता–पिता के घर की खूबसूरती यह है कि यहाँ हर बच्चे को लगता है कि यह सब उसका है, यहाँ हर बच्चा आज़ादी और ज़िम्मेदारी महसूस करता है, सहज/सामान्य महसूस करता है और खुद को सहज पाता है। घर में भोजन, पानी और आश्रय की गारंटी होती है और परिवार में कोई भी व्यक्ति घर पर उसे कुछ भी दिए जाने पर कोई सवाल नहीं उठाता है, न ही किसी को देने वाले की ईमानदारी पर संदेह होता है और न ही उसके भविष्य के परिणामों के बारे में। परिवार में इस तरह के लेन–देन सदियों से चले आ रहे हैं और आज भी उन समाजों में देखे जा सकते हैं जहाँ संयुक्त परिवार आदर्श हैं।

इसके अलावा इस तथ्य को आदिवासियों के बीच आसानी से देखा जा सकता है, जिन्हें आदिवासी और मूलनिवासी कहा जाता है, जहां आदिवासियों का हर सिर बड़ी संख्या में लोगों के लिए एक घर है, चाहे उनकी उम्र कुछ भी हो, उनके पास समान अधिकार और जिम्मेदारियां होती हैं, जिनका एक मुखिया गॉड फादर या गॉड मदर होता है।

(3.अ.1) कहा जाता है कि छोटे स्तर पर माता–पिता के घर के समान ही धर्म और धर्म संस्थान (धर्म और धार्मिक संस्थाएं) भी ईश्वर/प्रकृति द्वारा या उनके निर्देश पर मानव द्वारा स्वयं की अभिव्यक्ति और उनके संन्यासी के रूप में निर्मित कहे जा सकते हैं।

जैसे माता–पिता और घर को एक भावना/विश्वास कहा जा सकता है, न कि महज चार दीवारें जहां वयस्क पुरुष–महिलाएं और कुछ बच्चे रहते हैं, इसी तरह धर्म भी एक भावना/विश्वास है, जो धरती का सार है, जो हर किसी में जन्मजात है और सभी इसे धारण करते हैं। "(धार्यते इति धर्मा , धरा का मर्म धर्म है) **जो सब कुछ समाहित करता है वह धर्म है, धरती का हृदय/सार धर्म है"** , और धर्म संस्था कोई संरचना नहीं है जिसमें कुछ प्रार्थना की जाती है, कुछ उपदेश सुनाए जाते हैं, भीख मांगी जाती है, मुफ्त भोजन परोसा जाता है, कुछ व्यापार किया जाता है, बल्कि यह अपने आसपास के सभी लोगों और अपने मेहमानों के लिए एक घर जैसा केंद्र है। यदि आप किसी अनजान या परिचित व्यक्ति को कुछ खाने की वस्तु या दैनिक उपयोग की वस्तु या यहाँ तक कि कोई विशेष और महंगी वस्तु भेंट करते हैं, तो यह बिलकुल स्पष्ट है कि कोई व्यक्ति कई सवाल उठाएगा और भेंट को स्वीकार करने से इंकार कर सकता है, चाहे वह वस्तु कितनी भी आकर्षक क्यों न हो और दानकर्ता कितना भी दयालु क्यों न हो, लेकिन एक बात विचित्र है, कम से कम भारत में, जब कोई कहता है कि यह प्रसाद है (वह वस्तु भेंट की गई है और अब संबंधित वस्तु आपको प्रसाद के रूप में दी जा रही है) तो कोई भी ज्ञात या अज्ञात व्यक्ति कोई संदेह नहीं करता है और इसे अनदेखा करता है, लेकिन कम से कम प्रसाद के एक छोटे से हिस्से को एक पवित्र भोजन–संस्कार, प्रसाद के रूप में स्वीकार करता है। इसी तरह, आज भी कोई सवाल नहीं उठाता है अगर कोई धार्मिक संस्थानों (चर्च / मंदिर / मस्जिद आदि) को दान / योगदान देता है।

प्रसाद के साथ कई भावनाएं जुड़ी होती हैं, जैसे कि प्रसाद का स्वामी भगवान होता है, इसलिए यह सभी का होता है, और प्रसाद का वितरक वह माना जाता है जो भगवान के लिए काम करता है, भले ही वह व्यक्ति भगवान को प्रसाद चढ़ाने से ठीक पहले की वस्तुओं का मालिक ही क्यों न हो।

धार्मिक संस्थाओं में प्रसाद के रूप में जो भी वस्तु वितरित की जाती है, उसे लोग हमेशा कृतज्ञता के साथ वितरित और स्वीकार करते हैं। यही कारण है कि समाज में लोगों की ज़रूरत की सभी सेवाएँ धार्मिक संस्थाओं में रखी गई हैं और लोगों को भगवान के आशीर्वाद के रूप में दी जाती हैं, बिना किसी शर्त के। समय बीतने के साथ-साथ व्यवस्थाएँ खराब और भ्रष्ट होती जाती हैं, इसलिए कुछ धार्मिक संस्थाओं में इन सेवाओं की झलक ही देखने को मिलती है, लेकिन ये चीज़ें लोगों की यादों में मौजूद हैं।

जो सुधार की जरूरत है, उसे सुधारने के लिए व्यवस्था को पुनर्जीवित करना होगा, और इस तरह सभी प्रकार की सुरक्षा (भौतिक, भोजन, पानी, हवा, स्वास्थ्य, कपड़ा और आवास, पर्यावरण, ऊर्जा मनोरंजन) धार्मिक संस्थाओं का विषय बन गए। इसके अलावा इन सुरक्षाओं को स्थायी रूप से बनाए रखने के लिए न्याय, शिक्षा, शहर और गांव, उद्योग, बैंक, बाजार भी समाज-धार्मिक संस्थाओं का विषय बन गए।

(3.बी) कहा गया है:

" हाँ यदा हाय धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अधर्म का उदय यही तो आत्म है मैं बना रहा हूं ॥4 – 7॥
मोक्ष के लिए संतों का विनाश की ओर एफ शैतानी दस्तावेज।
धर्म की स्थापना के लिए असंभव युगे युगे. ॥4 – 8॥ "

हे भारत (अर्जुन, ज्ञानी, प्रबुद्ध, भारत) जब जब धर्म की ग्लानि(**बेहोशी**, **अवसाद**, **क्षीणता**, **अस्पष्टता**, **उदासी**, **सुस्ती**, **खिन्नता**, **थकावट**, **थकान**, **तंद्रा**, **हार**, **पछतावा**, **मलाल**,) होती है , धर्म की पुनर्स्थापना के लिए में अपने आप का सृजन करता हूँ। साधुओं (सज्जनों) की र क्षा के लिए, दुष्टों के विनाश के लिए, धर्म संस्थानों की स्थापना को युगों युगों में संभव करवा ता हूँ ।

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर् भवति भारत,
अभ्युत्थानं धर्मस्य तदद्मनं सृजामयम् । 4-7,
परित्राणायसाधुनामविनाशाय च दुष्कृतम्।
धर्म-संस्थापनार्थाय, संभवामि युगे-युगे । 4-8

हे भारत (अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध, संपूर्ण विश्व), जब-जब धर्म की ग्लानि (दोष/गिरावट/उदासी/आलस्य/पश्चाताप) होती है, तब-तब मैं धर्म की पुनर्स्थापना के लिए, साधुओं की रक्षा के लिए, दुष्टों के विनाश के लिए स्वयं को पुनः उत्पन्न करता हूँ तथा युगों-युगों में धार्मिक संस्थाओं की स्थापना को संभव बनाता हूँ। भारत शब्द का उल्लेख अर्जुन, बुद्धिमान, प्रबुद्ध तथा महान भारत नामक पृथ्वी के वंशज के लिए किया गया है। यहाँ (गीता में) इस भूमि के टुकड़े के लिए भारत शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है, जिसे अब भारत-हिंदुस्तान भी कहा जाता है।

ऊपर प्रस्तुत कथनों की प्रामाणिकता के बारे में किसी भी व्यक्ति के मन में, चाहे वह कोई भी हो, रत्ती भर भी संदेह नहीं होना चाहिए। यदि हम बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं (स्वयं के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ हमारे दैनिक व्यवहार में) तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि बड़े पैमाने पर मंथन/परिवर्तन आने वाले हैं।

(3.सी) आइए, हम एक ऐसी स्थिति के बारे में सोचें, जिसमें कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कोई भी हो, यदि किसी समस्या में हो, आस्था केंद्र पर पहुंच जाए, उसे सम्मानजनक व्यवहार मिले, भोजन-पानी मिले और वह बिना किसी शर्त के जब तक चाहे वहां रह सके, तो क्या ऐसी सेवा प्राप्त करने वाले को सहजता और खुशी महसूस नहीं होगी?

इसके अलावा, यदि व्यक्ति को पता चले कि इस विशेष आस्था केंद्र में निःशुल्क स्वास्थ्य, खेल और व्यायाम, संगीत और मनोरंजन, सूचना सह ज्ञान सह मार्गदर्शन केंद्र की सुविधा है, जिसका नेतृत्व विशेषज्ञों और वरिष्ठ लोग करते हैं, जो व्यक्ति की समस्या सुनते हैं और यदि आवश्यक हो तो अन्य सहायता (वित्तीय सहित) के साथ-साथ उपयुक्त सलाह भी देते हैं, तो वह आस्था केंद्र में ऐसी व्यवस्था के लिए कैसी प्रतिक्रिया देगा?

क्या यह स्थान इस व्यक्ति विशेष के लिए ईश्वर के राज्य/अल्लाह-स्वर्ग/राम-राज्य आदि जैसा नहीं लगेगा? क्या होगा यदि ऐसी सेवाओं का प्राप्तकर्ता निराश्रित, वेश्या हो, या वह व्यक्ति जो अकेलेपन से पीड़ित हो या जो एकांत और आत्म-अलगाव में समय बिताना चाहता हो या जिसे उसके प्रियजनों ने अस्वीकार कर दिया हो, निराश कर दिया हो और जिसे अतिरिक्त घोषित कर दिया गया हो और जो पारिवारिक जीवन से ऊब चुका हो और अपना शेष जीवन घर से दूर, इस आस्था केंद्र में रहने वाले या आने वाले सदस्य की सेवा करते हुए शांतिपूर्वक मरना चाहता हो?

क्या होगा यदि यह केंद्र किसी व्यक्ति को अपनी पसंद के अनुसार एकांत में पूजा या प्रार्थना करने के लिए स्थान भी प्रदान करता है? क्या ऐसा स्थान किसी विशेष समुदाय और जाति को नापसंद होगा, या यह किसी भी व्यक्ति को उसकी जाति, वर्ग, रंग या पंथ के बावजूद पसंद नहीं

आएगा? क्या यहाँ एकत्रित लोग अपनी रुचि और विशेषज्ञता के क्षेत्र में अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार अपनी सेवा प्रदान करना पसंद नहीं करेंगे या ये सभी लोग अपनी रचनात्मक ऊर्जा को मुक्त करने के लिए कोई रास्ता खोजे बिना यहीं रहना पसंद करेंगे?

(3.डी) यह ध्यान देने योग्य बात है कि केवल धर्म और धर्म संस्थान ही मानव जाति के सामने आने वाली अधिकांश समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं, जिसे इस पुस्तक में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है: –

(i) परिवार, समाज और देश में काम और आय का तार्किक और संतुलित वितरण सभी जरूरतमंद युवाओं के लिए स्थायी रोजगार और सभी वरिष्ठ नागरिकों के लिए रोजगार के अवसरों की आसान उपलब्धता का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

कहा जाता है कि धर्म ही सभी चीजों का आधार है, जो हर प्राणी में समाया हुआ है, इसलिए यह व्यक्ति और उसके समाज का विशेषाधिकार है कि वह सभी बुनियादी गतिविधियों की देखभाल करे और चुनिंदा काम राज्य/देश पर छोड़ दे। नागरिकों को नौकरी/रोजगार उपलब्ध कराना सरकार (राज्य/देश) का काम नहीं है, बल्कि यह स्थानीय समाज का विशेषाधिकार है और साथ ही कर्तव्य भी है कि वह उन सभी रास्तों का ध्यान रखे जहां समाज के हर सदस्य को रोजगार मिल सके और उन्हें लाभकारी रोजगार मिल सके। आखिरकार यह समाज ही है जिसने सबसे पहले सरकार की अवधारणा बनाई है, उसका गठन किया है, न कि समाज ने।

(ii) कि किस प्रकार निःशुल्क शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय जैसी सेवाएं समाज (सरकार नहीं) द्वारा स्वयं अपने संसाधनों से तथा लाभार्थी से अनुग्रह और कृतज्ञता के भाव से प्राप्त निधि से उपलब्ध कराई जा सकती हैं।

(iii) इस प्रकार गरीबी, जनसंख्या, प्रदूषण, वेश्यावृत्ति और पोर्नोग्राफी पर लगातार नजर रखी जा सकती है और उन्हें नैतिक रूप से यथासंभव न्यूनतम स्तर पर रखा जा सकता है।

(iv) कि कैसे नस्ल, धर्म और क्षेत्र, या जाति, पंथ और रंग के कारण उत्पन्न होने वाली कट्टरता को केवल व्यक्तिगत रूप से और अपने घर पर ही प्रार्थना करके दूर रखा जा सकता है (जैसा कि हाल के लॉकडाउन के दौरान किया जा रहा है), और कैसे यह न केवल भारत बल्कि हमारे पड़ोसियों सहित दुनिया के कई अन्य देशों के लिए पुनर्निर्देशन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

(v) इस प्रकार मतदान करने, चुनाव लड़ने की आयु बढ़ाने तथा राज्य सरकार, नगर पालिका जैसी विभिन्न संवैधानिक संस्थाओं को निरस्त करने से धन की बर्बादी रुक सकती है, देश में प्रशासन सुचारू हो सकता है तथा समाज मजबूत हो सकता है।

(vi) दूध से बनी चाय और कॉफी को कम करने या छोड़ने तथा नंदी बैल का बधियाकरण रोकने से किस प्रकार हम भारतीयों की ताकत, सहनशक्ति और सांस्कृतिक लोकाचार पुनः स्थापित हो सकता है (अनुलग्नक–6, धर्म–गाय और बैल)।

(vii) कि कैसे मशीनरी के उपयोग में अनुकूलन – जैसे विद्युत चालित खाद्य पीसने के काम को त्यागना – लाखों लोगों को रोजगार/सगाई प्रदान कर सकता है और अन्य सभी के स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है।

(viii) इस प्रकार धर्म संस्थानों में ज्ञान सह संसाधन केंद्र खोलने से खाद्य सुरक्षा, सही जानकारी और सलाह, स्थानीय शासन मिल सकता है और साथ ही आपदा प्रबंधन में सहायता मिल सकती है।

(4). धर्म, धर्म संस्थान और राजनीति क्या है?

(ए)। धर्म (रिलिजन) – जो सब को सम्मिलित करता है वह धर्म है, अथवा धर्म सम्पूर्ण पृथ्वी का सार है (धर्म को धर्म कहा जाता है) यह है धर्म : , धारा का मर्म धर्म है ,), संस्कृत में वे कहते हैं, संसार (विश्व–संपूर्ण पृथ्वी–धरा) के लिए यह सनातन धर्म है, जबकि रिलीजन धर्म की क्षेत्रीय अभिव्यक्ति है, 'जैसे; हिंदुस्तान के लिए यह हिंदू है, यहूदा के लिए यह यहूदी धर्म है (यहूदियों के लिए यरूशलेम)। बौद्ध, जैन और सिख हिंदू धर्म के मुख्य अनुयायी हैं, जबकि ईसाई, मुस्लिम और बहाई यहूदी धर्म के मुख्य अनुयायी हैं। पूरा पकड़ना का और धर्म क्षेत्र का)।

धर्म अपनी उदारता के साथ स्वतंत्रता और प्रेम के गुण पर खड़ा है, न कि भूत–प्रेत और नर्क का डर पैदा करने या खुलेआम धमकाकर लोगों को जेल में डालने की, जैसा कि कई धर्म कर रहे हैं। धर्म स्वास्थ्यप्रद है और जीवन में आने वाले सभी लेन–देन के प्रति समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, यह न तो खुद को व्यापार में शामिल करता है और न ही व्यापारिक संस्थाओं का समर्थन/पक्षपाती करता है, साथ ही यह राजनीतिक या शासक या विस्तारवादियों का गुर्गा, प्रचारक या मुखौटा संगठन नहीं बनता है। धर्म कभी किसी को यह वर्दी पहनने या उस तरह के बाल कटवाने, 'यह पढ़ो और वह देखो', 'व्यायाम (योगिक या एरोबिक) करते समय उपदेशों को सुनने' के लिए नहीं कहता है, धर्म मूल रूप से जीवन को एक स्थायी तरीके से स्वस्थ और पवित्र बनाने में लगा हुआ है।

धर्म कभी भी किसी को भगवान को प्रसन्न करने के लिए मनुष्य या उसके विकल्प जैसे नारियल या बकरी, भैंस, भेड़, ऊँट आदि की बलि देने के लिए नहीं कहता। धर्म कभी भी किसी को बैल और भैंस को बधिया करने या पुरुष खतना या लड़की के जननांगों को किसी न किसी कारण से

विकृत करने के लिए नहीं कहता, जिसमें उन्हें ब्रह्मचारी बनने के लिए मजबूर करना शामिल है, या उन्हें (लड़के और लड़कियों को) पूर्ण बलिदान से बचाने के लिए उन्हें एक इकाई बनाकर और घोषित करके जो पहले से ही प्रतीकात्मक रूप से सर्वशक्तिमान के लिए बलिदान किया जा चुका है।

धर्म किसी को भी किसी के विकास को प्रतिबंधित करने के लिए नहीं कहता है, चाहे वह मनुष्य हो या पेड़ और उन्हें बौना या बोनसाई बना दें। धर्म बस हमें जीवन का जश्न मनाने और दूसरों को भी जश्न मनाने की अनुमति देने के लिए कहता है और वह खाने के लिए कहता है जो आपके मूड को स्वस्थ रखता है और वह पीने के लिए कहता है जो आपकी आवाज़ को शांत रखता है। धर्म कभी किसी को पूजा करने के लिए नहीं कहता है और न ही धर्म किसी को किसी भी तरह या किसी भी रूप (मूर्ति) या निराकार की पूजा करने या यहाँ तक कि खुद की पूजा करवाने के लिए प्रतिबंधित करता है, धर्म बस जन्मजात विश्वास/चेतना के निर्देशों का पालन करने और अपने कर्म-कर्म को जारी रखने के लिए कहता है (कोई यह भी कह सकता है; काम ही धर्म है और काम ही पूजा है)। धर्म के लिए अंग्रेजी में कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए धर्म शब्द का उपयोग किया जाता है।

धर्म की सबसे बुनियादी समझ यह है कि पूरी दुनिया एक है लेकिन एक बड़ा परिवार है, जिसे अब तक कई धर्मों ने तब तक मानने से इनकार कर दिया जब तक कि उन्होंने सभी पंथों और रंगों के लोगों को अपने धर्म के संस्करण को स्वीकार करते नहीं देखा। अब, बीमारी के प्रकोप और दुनिया भर में लॉकडाउन ने बिना किसी संदेह के साबित कर दिया है कि दुनिया एक है, अगर दुनिया एक नहीं होती, तो एक बीमारी कैसे पूरी धरती पर मौजूद बिरादरी को प्रभावित कर सकती थी।

(ख) धर्म-संस्थान (धार्मिक संस्थाएँ): धर्म-संस्थान वह संस्था है जो बिना किसी पक्षपात और पूर्वाग्रह के, संपूर्ण समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति आत्मनिर्भर तरीके से करती है। ऐसी आत्मनिर्भर धर्म-संस्थाएँ (धार्मिक संस्थाएँ) सदियों से निरंतर (सदाबहार) काम करती आ रही हैं। वस्तुतः, इस व्यवस्था के सतत कार्य करने के कारण ही, इस व्यवस्था को ही सनातन नाम दिया गया है। इसके अलावा, चूँकि इन संस्थाओं का कार्य पूर्ण धार्मिकता के साथ किया जाता है, इसलिए इसे सनातन धर्म का नाम दिया गया है। हालाँकि, कुछ लोग इसके विपरीत कहते हैं कि शाश्वतता की बुनियादी समझ के कारण ये संस्थाएँ निरंतर कार्य कर सकती हैं।

धर्म संस्थान एक ऐसी संस्था है जो भूखे को भोजन, प्यासे को पानी, निराश्रितों को आश्रय, रोगियों को उपचार, जरूरतमंदों को सलाह और न्याय, असहायों को सहायता, युवाओं को रोजगार,

अकेले और बुजुर्गों को सम्मानजनक रोजगार देने के साथ-साथ अपने आस-पास के सभी व्यक्तियों को शोषण-मुक्त वातावरण में शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करेगी, ताकि कोई अभाव, जबरन भीख मांगने और जबरन वेश्यावृत्ति न हो।

संस्था के दीर्घकालिक सफल संचालन के बाद आमतौर पर जो स्पष्ट आत्मसंतुष्टि दिखाई देती है तथा पूर्णता से भी अधिक सुधार करने की मूर्खतापूर्ण इच्छा के कारण, समाज द्वारा ऐसी संस्थाओं में योगदान कम होता गया, जिससे धीरे-धीरे ऐसी संस्थाएं पिछले तीन हजार वर्षों में अस्तित्वहीन हो गईं। ये सभी धर्म - हिंदू, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई, चाहे कितने भी समग्र होने का दावा करें, लेकिन तथ्य यह है कि इनमें से कोई भी धर्म अपने अनुयायियों को भी समान मंच पर स्थायी रूप से स्वस्थ और खुशहाल जीवन शैली प्रदान करने में सक्षम नहीं है, इसलिए धर्म संस्थान का पुनरुत्थान ही एकमात्र विकल्प कहा जा सकता है ताकि पृथ्वी पर जीवन एक बार फिर से पुनर्जीवित हो सके।

(ग) राजनीति-राजनीति: राजनीति शासन की नैतिकता है और नैतिकता के आधार पर सरकार का कामकाज भी है, जबकि नैतिकता वह है जो पृथ्वी और उसके पर्यावरण से निकलती है (नीति) 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... से :अ: है).
चूंकि पर्यावरण समय के साथ बदलता रहता है, इसलिए पर्यावरण को गतिशील इकाई कहा जा सकता है। पर्यावरण की तुलना में पृथ्वी को स्थिर इकाई कहा जा सकता है। चूंकि राजनीति पृथ्वी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई है, इसलिए राजनीति को स्थिर कहा जा सकता है, लेकिन चूंकि राजनीति पर्यावरण के साथ प्रतिध्वनित होती है, इसलिए राजनीति भी गतिशील हो जाती है।

इस मिश्रण को देखते हुए, **राजनीति को एक ऐसा अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति कहा जाता है जो दृढ़ होते हुए भी काफी लचीली होती है** । इस परिभाषा के मद्देनजर यह माना जा सकता है कि राजनीति एक नौकरी/पेशा नहीं बल्कि समाज और उसके आसपास के वातावरण की सामूहिक भलाई के लिए समाज के प्रति एक जुड़ाव है। ऐसी राजनीति को उन लोगों द्वारा किया जा सकता है जिनके मूल पारिवारिक जरूरतों के लिए उनके समय और धन की आवश्यकता नहीं होती है यानी ऐसे समय में जब उनके बच्चों की शादी हो जाती है, और ऐसी राजनीति में भागीदारी तब तक जारी रह सकती है जब तक कि उनके बच्चे उनकी जगह लेने के लिए उपलब्ध न हो जाएं। इसका मतलब है कि एक सक्रिय राजनीति (मतदान के साथ-साथ चुनाव लड़ना) की उम्र लगभग पचास वर्ष से पचहत्तर वर्ष तक हो सकती है। पचहत्तर वर्ष की आयु के बाद ऐसे सम्मानित व्यक्ति आमतौर पर नए लोगों को शिक्षित और प्रशिक्षित करने में शामिल होना चाहते हैं।

राजनीति एक पेशा है और राजनेता पेशेवर होते हैं, जो निश्चित रूप से अन्य व्यवसायों के समान व्यवहार के हकदार हैं, जो देश और समाज के सुचारू संचालन के लिए आवश्यक है। राजनीति मूल रूप से धर्म के ग्रंथों और/या देश के संविधान में तैयार किए गए निर्धारित नियमों और विनियमों पर पुलिसिंग है। चूंकि देश का संविधान स्थिर है (परिदृश्य और समय के परिवर्तन के साथ भी कमोबेश एक जैसा रहता है) इसलिए संविधान आम तौर पर अलग-अलग समय पर सामने आने वाले मुद्दों से निपटने में अक्षम पाया जाता है। **अंग्रेजी में राजनीति के लिए कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए राजनीति शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।**

(5) समवर्ती धर्मों में विवाद (धर्म की क्षेत्रीय मुक्ति):

(5.A) धर्म क्यों विफल हो गए हैं और अप्रासंगिक होते जा रहे हैं? क्योंकि, जब किसी को कोई समस्या होती है और वह किसी धार्मिक स्थान पर जाता है, तो उसे केवल उपदेश मिलते हैं, पुजारियों से उपदेश या तो उसके द्वारा स्वयं रचित या कुछ पवित्र ग्रंथों के अंश और बातें वहीं समाप्त हो जाती हैं, बिना किसी वास्तविक और दृश्यमान समर्थन के।

उसे पुनः खाली हाथ उसी स्थिति का सामना करना पड़ता है, चाहे वह बुनियादी भूख, कपड़े या आश्रय की बात हो या अपने घर/मकान या पड़ोसियों से दूर एक शांतिपूर्ण वातावरण खोजने के लिए आवश्यक सहायता की बात हो या अपनी रचनात्मक खोज को व्यक्त करने के लिए एक स्थान की बात हो।

अब जरा एक ऐसी स्थिति के बारे में सोचिए जिसमें परिवार में कोई मामूली झगड़ा हो जाए और कोई एक व्यक्ति रात भर बाहर रहने या कुछ दिनों के लिए कहीं और चले जाना चाहे ताकि मामला शांत हो जाए और अपने आप सुलझ जाए। लेकिन दुर्भाग्य से आज के समय में अगर किसी पुरुष के पास पैसे नहीं हैं तो उसके लिए रहने के लिए कोई सम्मानजनक जगह नहीं है, महिलाओं के लिए यह समस्या और भी ज्यादा है, चाहे वह भारत हो या कहीं और। यानी हम सब एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जहां हर इंसान के मन में रोटी, कपड़ा और मकान की असुरक्षा व्यवस्था को सुरक्षा प्रदान कर रही है।

क्या हम इसे खुशहाल और स्वस्थ स्थिति कह सकते हैं? क्या कोई भी धर्म अपने अनुयायियों और गैर-अनुयायियों के लिए ऐसी असुरक्षित, अस्वस्थ, दुखी स्थिति को उचित ठहरा सकता है? समस्या को और भी बेहतर तरीके से समझा जा सकता है कि हर धर्म अपने अनुयायियों/अनुयायियों से योगदान करने के लिए कहता है, लेकिन वास्तविक जीवन की समस्याओं का कोई समाधान नहीं देता।

यह लगभग हर धर्म के साथ होता है, चाहे वह हिंदू हो, बुद्ध हो, जैन हो, ईसाई हो, मुस्लिम हो, सिख हो या बहाई हो। हालांकि कुछ धार्मिक स्थल मुफ्त सामुदायिक भोजन और कुछ दिनों के लिए मुफ्त रहने की सुविधा देते हैं, लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं। ऐसी स्थिति में कोई व्यक्ति तथाकथित आस्था केंद्रों में अपनी आस्था कैसे बनाए रख सकता है?

(5.बी) धर्म और धार्मिक संस्थाओं का पुनरुत्थान वर्तमान समय में सबसे महत्वपूर्ण कार्य कहा जा सकता है, क्योंकि धर्म की मूल बातें भी विवादास्पद मुद्दा बन गई हैं, जो हमारे स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही हैं और हमारे जीवन को कष्टमय बना रही हैं। प्रत्येक धर्म के सभी धार्मिक गुरुओं ने धर्म की मूल बातों को नजरअंदाज किया है, कि आस्था ही आधार है और धर्म वह आधार है जिस पर राजनीति का ढांचा खड़ा होता है और इस प्रकार धर्म का मूल दायित्व भोजन, पानी, कपड़ा, आवास, रोजगार, मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्थानीय प्रशासन और न्याय जैसी सभी बुनियादी आवश्यकताओं की देखभाल करना है।

प्रत्येक धर्म के सभी धर्मगुरु अपने कुल, अनुयायियों और समर्थकों को ये सेवाएं देने के बजाय मृत्यु के बाद जीवन के सपने दिखाने, अपने अनुयायियों में भय पैदा करने, अपने धर्म की श्रेष्ठता और दूसरों को हीन दिखाने में व्यस्त रहे और समाज में शांति और सद्भाव की जगह नफरत और दुश्मनी को और अधिक बढ़ाया। इन सभी धर्मगुरुओं ने मिलकर अपने लगभग सभी अनुयायियों के साथ–साथ पूरे समाज की आस्था को हिला दिया है।

चूंकि आस्था प्रत्येक जीव के लिए जन्मजात और केंद्रीय (हृदय) है, इसलिए जब आस्था डगमगाती है तो यह स्पष्ट है कि हृदय अनियमित रूप से कार्य करेगा। यदि यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो यह अंततः व्यक्ति के आंतरिक संतुलन और प्रतिरक्षा को बिगाड़ देती है, जिससे जाहिर तौर पर शुगर लेवल (मधुमेह), निराशा (हृदय रोग), असहायता (कैंसर) और वह सभी प्रकार की अन्य बीमारियों का आसान शिकार बन जाता है।

चिकित्सा डेटा पुष्टि करते हैं कि बीमारियाँ बहुत ही खतरनाक दर से बढ़ रही हैं जो स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि समाज में आशा प्रदान करने वाली एजेंसियाँ (धार्मिक संस्थाएँ) अपने अनुयायियों के बीच आशा पैदा करने में बुरी तरह विफल हो रही हैं। क्या समाज के लिए कम से कम आशा की अनुपलब्धता से भी बदतर स्थिति हो सकती है? यह स्थिति की इस गंभीरता के कारण हो सकता है कि विभिन्न धर्मों के संस्थापकों ने मिलकर वर्तमान समय (बीसवीं सदी) को या तो प्रलय का समय, या नए मसीहा के अवतार, या बुद्ध के पुनर्जन्म या ईश्वर के नए दूत के आगमन का समय माना हो या यह सिर्फ नए युग में संक्रमण का समय हो?

(5.सी). सभी धर्म अपनी प्रासंगिकता खो चुके हैं, जिसे भौतिक जगत में कोरोना–कोविड ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है, तथा ऐसा प्रतीत होता है कि मूल धर्म पुनर्जीवित होने की प्रतीक्षा कर रहा है। यह देखकर आश्चर्य होगा कि अब जैन और बौद्ध शस्त्र और आक्रमण की बात कर रहे हैं, जबकि मुसलमान शांति और स्थिरता की बात कर रहे हैं, हिंदू कह रहे हैं कि यह संक्रमण का समय है, यहूदी कहते हैं कि यह अंतिम पीढ़ी है (टोरा–धार्मिक पुस्तक के अनुसार)। बुद्ध के अनुसार उनका धर्म पच्चीस सौ वर्षों तक चलेगा, उसके बाद वे मैत्रेय के रूप में पुनर्जन्म लेंगे, ईसाई प्रलय के बारे में बहुत चर्चा करते हैं, पैगम्बर शाहब ने यद्यपि स्वयं को अंतिम संदेशवाहक कहा, परन्तु उन्होंने यह भी कहा कि चौदह सौ वर्षों के बाद दो व्यक्ति आएंगे जो विश्व में शांति स्थापित करेंगे, जैन धर्म और सिख धर्म को हिंदुओं से निकलने वाली धारा कहा जा सकता है और वे ऐसे ही बने रहेंगे। जो भी वर्तमान स्थिति है, वह अनिश्चित प्रतीत होती है और समाज में प्रत्यक्ष, सीधे और आमने–सामने की चर्चा की मांग करती है।

(5.डी). धार्मिक विवादों की गंभीरता को न केवल द्वितीय विश्व युद्ध में धार्मिक नरसंहार द्वारा विश्व स्तर पर देखा जा सकता है, बल्कि क्षेत्रीय स्तर पर भी स्थिति की गंभीरता को धार्मिक घृणा की कई घटनाओं और उसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर हत्याओं द्वारा दर्शाया जा सकता है, यहाँ तक कि भारतीय उपमहाद्वीप में भी। भारत का अलग होना, थाईलैंड, श्रीलंका, म्यांमार, पाकिस्तान और बांग्लादेश में संघर्ष और जातीय सफाया और हाल ही में अफ़गानिस्तान में हुई घटनाएं भारतीय उपमहाद्वीप में हुई कुछ दिल दहलाने वाली घटनाएं हैं। ये सभी जातीय हत्याएं और सफाया कोई छिटपुट और अकेली घटनाएं नहीं हैं, बल्कि खुद पुजारियों द्वारा न केवल दूसरे धर्म के खिलाफ बल्कि अपने ही धर्म के विभिन्न संप्रदायों के बीच नस्लीय और नस्लीय भेदभाव, जाति, वर्ग और रंगभेद के रूप में धार्मिक घृणा का चरम परिणाम हैं।

जो लोग कहते हैं कि धर्म कुछ नहीं सिखाता या उपदेश नहीं देता या शत्रुता बढ़ाने में संलिप्त है, जबकि वर्तमान विश्वव्यापी परिदृश्य में अनेक धार्मिक उपदेशक और पुजारी न केवल भय उत्पन्न करने और घृणा फैलाने में संलिप्त पाए गए हैं, बल्कि वास्तव में एक या दूसरे धर्म के विरुद्ध अपराध को बढ़ावा देने में भी संलिप्त पाए गए हैं, वे शुतुरमुर्ग का जीवन जी रहे हैं।

हैरानी की बात यह है कि प्रत्येक धर्म के प्रत्येक उपदेशक और पुजारी कहते हैं कि उनका ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिशाली है और सर्वोच्च और अभिन्न है, फिर भी ऐसे मौलवी/पुजारी यह मान लेते हैं कि उनका तथाकथित ईश्वर उनके पड़ोसियों को आशीर्वाद नहीं देगा जो इस ईश्वर को दूसरे नाम से पुकारते हैं और अलग शैली और स्वरूप में प्रार्थना करते हैं। इसके अलावा हर धर्म के ऐसे मौलवी/पुजारी बेबुनियाद विश्वास के साथ कहते हैं कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर निश्चित रूप से उनके पड़ोसियों तक नहीं पहुंचेगा जो उनके ईश्वर के संस्करण

का सम्मान नहीं करते, उन्हें नहीं समझते और उनका पालन नहीं करते और निश्चित रूप से उस व्यक्ति तक नहीं पहुंचेंगे और उसे आशीर्वाद नहीं देंगे जो उनके ईश्वर के संस्करण से अनभिज्ञ है। क्या इसका कोई मतलब है?
क्या कोई पुजारी/पादरी इस बात पर विचार कर सकता है कि उनका सर्वव्यापी ईश्वर इतना छोटा कैसे है कि वह अपने पड़ोसी तक नहीं पहुंच पाता, जो उनके विचारों से सहमत नहीं है और ऐसे पड़ोसी को नास्तिक या गैर-धार्मिक या यहां तक कि शैतान घोषित किया जा सकता है और वह भयंकर सजा का हकदार है?

इस अव्यवस्था को देखकर यह आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि धर्म की सार्वभौमिकता धीरे-धीरे लेकिन लगातार कम होती जा रही है, पहले सार्वभौमिकता से मानवता, मानवता से धार्मिकता, धार्मिकता से क्षेत्रीय धार्मिकता, फिर स्थानीयता से अंत में व्यक्तिगतता तक, जो दर्शाता है कि न केवल परिवार, समाज के ढांचे गायब हो गए हैं, बल्कि पूरा वातावरण ही अस्त-व्यस्त हो गया है। इसने हमारे अस्तित्व पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं। इस परिदृश्य को देखकर क्या कहा जा सकता है कि हम किस ओर जा रहे हैं?
क) नरसंहार के साथ एक और विश्व युद्ध?
ख) प्रलय के दिन की ओर (उदाहरण के लिए - एक शक्तिशाली ब्लॉक का उपयोग यह कहने के लिए किया गया कि 21 दिसंबर, 2012 प्रलय का दिन होगा)।
ग) किसी व्यक्ति द्वारा प्रलय की योजना बनाकर स्वयं को मसीहा घोषित करने की स्थिति में बलि का बकरा बनने की ओर।
घ) क्या अब पृथ्वी छोड़कर मंगल ग्रह पर बसने का समय आ गया है?
ई) क्या यह बुराई के अंत और धार्मिकता के पुनरुत्थान का समय है?

(5.ई) लगभग सभी धर्म आधुनिक समय की बीमारियों के हमले के आगे झुक गए हैं और परिणामस्वरूप लगभग सभी पूजा केंद्र और उनके पुजारी बीमारी के हुक्म के आगे झुक गए हैं और अपने अनुयायियों को मौत के मुंह में जाने के लिए छोड़ दिया है। स्थिति तब चिंताजनक हो जाती है जब लोगों को पता चलता है कि प्रार्थना के कई सर्वोच्च स्थानों को भी बंद कर दिया जा सकता है और वे भी किसी आपात स्थिति और आपातकाल के दौरान सांत्वना और सांत्वना नहीं दे सकते। जब वेटिकन, मक्का-मदीना, यरुशलम जैसे केंद्रों के साथ-साथ आस्था-पूजा के लगभग सभी केंद्र ताले और चाबी के नीचे पाए जाते हैं, तो एक साधारण व्यक्ति की आस्था कैसे बरकरार रह सकती है?
ये सभी मंदिर-मस्जिद, मठ और चर्च बंद हो गए हैं और उन पर ताले लगा दिए गए हैं, जिससे यह संदेश गया है कि पूजा के इन केंद्रों और उनके उपदेशकों पर भरोसा नहीं किया जा सकता, ये अप्रासंगिक हो गए हैं और इन केंद्रों की पवित्रता और निरंतरता पर ही नहीं बल्कि इन केंद्रों के

जारी रहने और इनमें होने वाले सांसारिक अनुष्ठानों पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न लग गए हैं। ऐसी स्थिति में क्या यह हम सभी के लिए समझदारी नहीं होगी कि हम इस मुद्दे पर खुले दिमाग और बड़े दिल से विचार करें और तय करें कि क्या ऐसे केंद्रों को छोड़ दिया जाना चाहिए या हमेशा के लिए बंद कर दिया जाना चाहिए या सम्मानपूर्वक नष्ट कर दिया जाना चाहिए या उन्हें इतिहास और पर्यटन के लिए संग्रहालयों सहित अन्य उद्देश्यों के लिए किराए पर दे दिया जाना चाहिए।

ऐसे में जब हर धर्म अपने मौजूदा स्वरूप में हाल की परिस्थितियों से निपटने में अक्षम साबित हुआ है, अब किसी का खुद को उसका ठेकेदार बताना और यह कहना कि उसका धर्म सर्वश्रेष्ठ है और उसके नाम पर अपनी जान जोखिम में डालना या दूसरों की जान लेना बेकार और बेतुकी बात है। चूंकि प्रकृति शून्यता को नापसंद करती है, इसलिए भले ही लॉकडाउन के बाद धर्म का कारोबार फिर से शुरू हो गया हो, लेकिन लोगों को पता चल गया है कि प्रार्थना व्यक्तिगत है और इसे व्यक्तिगत रूप से या परिवार के साथ या समूह के साथ ऑनलाइन किया जा सकता है, जबकि पहले सामूहिक प्रार्थना के तरीके थे। हमें इस मुद्दे पर हर गली-मोहल्ले में चर्चा करने की जरूरत है और भविष्य में लोग कैसे अपनी आस्था बनाए रख सकते हैं और सामान्य दिनों के साथ-साथ आपातकालीन और आपात स्थिति में भी कैसे सांत्वना पा सकते हैं।

(5.F) हर धर्म जो वर्तमान में प्रचलित है, चाहे वह कितना भी बड़ा, साहसी, सुंदर, बेहतर या सर्वश्रेष्ठ क्यों न हो, लेकिन सच्चाई यह है कि ये धर्म गुलामी, जबरन भीख मांगने और वेश्यावृत्ति (जिसे किसी भी सभ्यता पर धब्बा कहा जा सकता है) का कोई समाधान नहीं देते हैं, बल्कि इनमें से अधिकांश धर्म या तो चुप रहते हैं या गुलामी, भीख मांगने और वेश्यावृत्ति को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, कम से कम बौद्ध धर्म से लेकर आगे तक ये सभी धर्म जीवन के बुनियादी मुद्दों पर ध्यान देना भूल गए हैं या उन पर ध्यान देने की जहमत नहीं उठाई है, जैसे कि अर्थव्यवस्था, रोजगार, मनोरंजन, ऊर्जा, पर्यावरण, नैतिकता, शिष्टाचार, प्रदूषण, जनसंख्या, गरीबी, वेश्यावृत्ति, सफाई, स्वच्छता और स्वास्थ्य।
इन सभी धर्मों में इस तरह की कमी के कारण, जो हुआ वह यह कि इसके सदस्य बाजार के राक्षसों और चालाक कला के उस्तादों के आसान शिकार बन गए। इन सभी धर्मों की इस बुनियादी कमी के कारण, इसके सदस्य बाजार की ताकतों, पाखंडियों (अंदर से डरपोक लेकिन साहसी होने का दिखावा करने वाले) और स्पष्टता की कमी के लिए आसानी से इस्तेमाल किए जाने वाले या हेरफेर किए जाने वाले पाए गए। हालाँकि इन सभी धर्मों ने शांति का दावा किया है, लेकिन अंततः मानवता को प्रकृति की क्षमता से अधिक टुकड़ों में काटने के अपराध में भागीदार बन गए हैं।
ऐसी स्थिति में क्या हमें किसी जादू या किसी नए देवता के आकाश से उतरने का इंतजार करना चाहिए? या फिर हमें कोई योजना बनाकर आगे आकर मूल धर्म और धर्म-संस्था को पुनर्जीवित करना चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे तो ईश्वर हमें अवश्य आशीर्वाद देंगे।

(6). प्राचीन ज्ञानियों से समाधान केन्द्रित चर्चा (इसी प्रकार के प्रश्न पर पुस्तक–सनातनी वैश्विक व्यवस्था से अंश)

प्रश्न: हमने आपके समक्ष व्यक्ति, परिवार, समाज और देश की अनेक समस्याएं रखीं, और आपने कहा कि हां, समस्याएं हैं, तो समाधान भी हैं, और समाज और देश के स्तर पर समाधान लागू करने से पहले व्यापक चर्चा और व्यापक संवाद होना जरूरी है, लेकिन हमें चिंता है कि इन प्रक्रियाओं में बहुत समय लगता है और कई बार मामला अनिर्णीत हो जाता है। ऐसे में क्या कोई और तरीका नहीं हो सकता है, जिससे संवाद की प्रक्रिया चलती रहे और लोगों को कुछ राहत भी मिले?

उत्तर: समाधान हवा में हैं, मूल समाधान तीन चीजों में निहित है, जो हैं "प्रार्थना करें, खेलें और पार्टी करें। अकेले में प्रार्थना करें; खिलाड़ियों के साथ खेलें और साथियों के साथ पार्टी करें" और यह सभी के लिए उपलब्ध है, वह भी बिना किसी शोर–शराबे के, बिना लाउडस्पीकर के प्रार्थना किए और दूसरों को परेशान किए बिना। हमारी अधिकांश समस्याओं का समाधान सामूहिक उत्सव/आनंद में निहित है। बस जीवन का जश्न मनाएं और अगर कोई आता है तो उसे शामिल करें, उसे खुश करें, उसे भोजन कराएं और अगर कोई रुकना चाहता है तो उसके ठहरने की व्यवस्था करें।

कहा जाता है कि "जैसे साँस लेते हैं वैसी ही दिशा चुनते हैं, जैसा भोजन वैसा ही भाव, जैसा जल/तरल पदार्थ वैसी ही वाणी और जैसी मादक वस्तुएँ वैसी ही स्थिति" इसलिए जब ये चीजें प्रसाद के रूप में भगवान की कृपा के रूप में दी जाती हैं, तो हमारी दिशा, नियति, भाव, वाणी अच्छी होनी चाहिए। कहा जा सकता है कि इस छोटे से प्रयास से हमारी पूरी व्यवस्था में सुधार आ जाएगा।

प्रश्न: क्या यह उत्सव नहीं होगा कि जो भी आए उसे शामिल किया जाए, उसे प्रसाद और आश्रय दिया जाए? क्या उत्सव में पक्षियों, जानवरों और मछलियों को भी आमंत्रित किया जाता है?

उत्तर: यदि आप उत्सव, आनंद और पार्टी में कंजूस रहना चाहते हैं तो आपके लिए अशांति और समस्याओं में रहना उचित होगा, आप समाधान क्यों खोजते हैं?

सवाल: यह त्यौहार कब तक मनाया जाएगा?

उत्तर: जब तक आप सुख से जीना चाहते हैं, जब सुख से ऊब महसूस हो और आप दुखी, अशांत रहना चाहते हों या किसी से झगड़ना–झगड़ना चाहते हों, तब आप उत्सव मनाना छोड़ दें। यह ऐसे ही है कि जब सुगंध होगी तो खुशी होगी, जहाँ दुर्गंध होगी वहाँ शोर होगा और मूड खराब होगा। उत्सव आनंद से जुड़ा है और विवाद बेचैनी से।

सवाल: अगर हमें लगातार लंबे समय तक उत्सव मनाना है, तो हमें इन जगहों पर रहने, स्वास्थ्य, सुरक्षा और सफाई की व्यवस्था करनी होगी, तो क्या यह एक वैकल्पिक व्यवस्था नहीं होगी? इसका प्रबंधन कैसे होगा, पैसा और दूसरे संसाधन कहां से आएंगे? जब लोग लंबे समय तक रहेंगे तो वे नौकरी भी मांगेंगे, फिर उनके लिए रोजगार कहां से पैदा होगा?

जवाब: खैर, आज के परिदृश्य में यह एक वैकल्पिक व्यवस्था होगी लेकिन यह एक ऐसी व्यवस्था थी, जिसे अच्छा कहा जा सकता है।

जहाँ तक धन का प्रश्न है, एक व्यक्ति की आय में बारह दशमलव पाँच प्रतिशत (एक गुणा आठ) उसकी माता, पिता, पुत्र, पुत्री, पति और सरकार के लिए तथा समाज (धर्म) के लिए भी सम्मिलित होता है, जब यह धन जो समाज (धर्म) का हिस्सा है, समाज में आने लगेगा, तब धन की कोई कमी नहीं रहेगी।

इसके अलावा जब लगातार उत्सव मनाया जाएगा तो बहुत सारे बुजुर्ग और बच्चे आएंगे तो अनाथालय, वृद्धाश्रम का खर्च भी कम हो जाएगा। फिर जब हम यहां रहने वाले व्यक्ति को नौकरी देंगे तो उससे अतिरिक्त आय होगी। इस वैकल्पिक व्यवस्था में नए रचनात्मक कार्य किए जाएंगे जिसमें साइकिल जैसी मशीन से आवागमन हो सकेगा।

इसका मतलब है कि यहाँ की अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर होगी, खुद ही उत्पादन करेगी, खुद ही पकाएगी और खुद ही खाएगी, यानी आर्थिक सिद्धांत "समूह के लिए, समूह द्वारा और समूह का" होगा, जो कभी भी डीजल, पेट्रोल की कमी या बाढ़, अकाल से बाधित नहीं होगा। बैक्टीरिया या वायरस के फैलने से इस पर कोई असर नहीं होगा और इस तरह से यह आत्मनिर्भर होगा या ज़्यादा से ज़्यादा यह कहा जा सकता है कि यह आंशिक रूप से परस्पर निर्भर होगा। यहाँ पर वृद्ध लोग होंगे जिनके पास अपने पूरे जीवन का अनुभव होगा जो दूसरों को सलाह देने के लिए, समाज के लिए काम कर सकते हैं और यह आशा और संसाधनों का केंद्र होगा। जब ज्ञान और संसाधनों के ये केंद्र स्थापित होंगे तो यह जरूरतमंदों, गरीबों की मदद करने के लिए भी काम करेगा और आपदा का प्रबंधन भी कर सकता है।

इसके अलावा, जब यह भोजन, आश्रय और स्वास्थ्य प्रदान करेगा तो भीख माँगना बंद हो जाएगा। शरणार्थियों की समस्या भी हल हो जाएगी। भीख माँगने का दुष्परिणाम यह है कि अगर कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के पास सामान्य जानकारी के लिए भी जाता है तो दूसरा व्यक्ति ऐसा दिखता है जैसे वह कुछ लेने आया है (देने नहीं) और वह भिखारी जैसा है। जब भी भीख माँगने और शरणार्थियों की यह समस्या समाप्त हो जाएगी, तभी हम यह कहने के हकदार होंगे कि हम एक बेहतर समाज में हैं।

आज समाज में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ परिवार में मामूली झगड़े होने पर परिवार का कोई भी सदस्य चाहे वह पुरुष हो, महिला हो, लड़का हो, लड़की हो, बच्चा हो या बूढ़ा हो, बिना पैसे के एक रात के लिए भी आश्रय पा सके, जहाँ समाज खुद आश्वस्त हो सके कि वे सही जगह पर रुके हैं, बिना किसी धांधली के। ये ज्ञान के केंद्र और संसाधन केंद्र जब आस्था के स्थान/धार्मिक संस्थानों में बनाए जाते हैं तो यह सुविधा दे सकते हैं। समाज में ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ शोषित महिलाओं, वेश्याओं का पुनर्वास हो सके और आस्था के केंद्र यह सुविधा दे सकते हैं क्योंकि वे भी किसी की बेटी और बहन हैं।

नौकरी या रोजगार देना सरकार का काम नहीं है। सरकार का काम केवल बाहरी सुरक्षा, संवैधानिक न्याय, विदेशी संबंध और समाज के साथ समन्वय स्थापित करना है। इसके अलावा व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय से जुड़े सभी काम समाज के दायरे में आते हैं।

सवाल: **क्या** ऐसी व्यवस्था का कोई उदाहरण है?

उत्तर: यदि यह व्यवस्था तर्कसंगत लगती है तो फिर हम नया करने से क्यों डरते हैं, फिर भी आप इस व्यवस्था के बारे में संतों और शैतान दोनों से पूछ सकते हैं; यह व्यवस्था श्रुति और स्मृति (कथन और स्मरण) में लोगों के बीच बनी हुई है।

दुनिया में व्यवस्थाओं और परिस्थितियों को सुधारने के लिए दो मुख्य धाराएँ चलती हैं। एक पद्धति कहती है, अगर शरीर या समाज के किसी अंग में कोई समस्या है, तो उसे सुधारें, शरीर और समाज दोनों ही सुधर जाएँगे। इसमें कहा गया है कि शरीर के हर अंग या समाज के हर व्यक्ति को ठीक करें, तो शरीर भी ठीक हो जाएगा और समाज भी। इस पद्धति का इस्तेमाल सभी डॉक्टर और समाज के सभी तथाकथित बुद्धिमान लोग और उपदेशक करते हैं।

अन्य पद्धतियों का कहना है कि अगर सिस्टम सही है तो लोग ठीक रहेंगे, अगर व्यक्ति ठीक है तो शरीर के सभी अंग निश्चित रूप से ठीक रहेंगे। ये वैज्ञानिक योग और प्रणालियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और इन पर शोध करते हैं और उन्हें लागू करते हैं। इसके अलावा, ऐसे भी लोग हैं, जो कहते हैं कि शरीर के अंग और पूरा व्यक्ति, समाज और उसकी व्यवस्थाएँ दोनों ही ध्यान देने योग्य हैं। वे कहते हैं, यही जड़ है, यही सार है और यही धर्म है।

लोकतंत्र को सबसे खराब व्यवस्था कहा जाता है, फिर भी यह इतिहास की ज्ञात शासन प्रणालियों में सर्वश्रेष्ठ है। यह लोकतंत्र पिछले आठ सौ सालों से ऐसा ही है और यह अभी भी एक बच्चे की तरह है और बड़ा नहीं हुआ है।

यह लोकतंत्र स्वतंत्रता की बात तो करता है लेकिन गुलामी बढ़ाता है, नौकरों की संख्या बढ़ाता है और जनता की भागीदारी और उनकी रचनात्मकता को खत्म करता है, तब भी जब यह कहा जाता है कि 'लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा शासन है'।

हकीकत में हम यही देखते हैं कि 'जनता का समूह' खुद ही दूसरे जन समूह की पीठ पर सवार होता है, जनता पर जनता का शासन होता है, कभी एक समूह दूसरे पर शासन करता है, कभी दूसरे पर। कभी–कभी नए समूह आ जाते हैं जिससे वे भयभीत हो जाते हैं और दूसरों पर या दोनों पर असर पड़ता है। पुराना समूह मिलकर नए प्रवेशकर्ता को हरा देता है।

लोकतंत्र में एक और एक कभी दो नहीं होते, एक और एक ग्यारह होने की तो बात ही क्या, लोकतंत्र में ज्यादा से ज्यादा एक गुणा एक ही बचता है या एक भाग एक एक ही बचता है, कुछ नहीं बदलता, स्थिति जस की तस बनी रहती है, यथास्थिति। यही उन्होंने प्रशासन में बैठे अधिकारियों को सिखाया, यथास्थिति बनाए रखना। कुछ जानकार लोग कहते हैं कि लोकतंत्र में अगर कुछ अच्छा होता है तो वह संयोगवश ही होता है।

फिर भी इस बात की पूरी संभावना है कि एक घटा एक शून्य हो जाए और लोकतंत्र तानाशाही में बदल जाए और सैन्य कानून लागू हो जाए। इसके अलावा दया, प्रेम, सहानुभूति के लिए कोई अतिरिक्त स्थान नहीं है। जानकार लोग, लोकतंत्र के महारथी, यह दर्शाता है कि इसमें सुधार की आवश्यकता है। एक अच्छे और नए लोकतंत्र की आवश्यकता है। यदि हम उपरोक्त कार्य (जैसा कि वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के इस कार्य में बताया गया है) पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो वर्तमान लोकतंत्र को एक बेहतर लोकतंत्र में बदलना आसान होगा जिसमें दैवीयता होगी और वह भी बिना किसी पुरोहितवाद के। ऐसा लगता है कि समय आ रहा है इसलिए हमें अपने कर्मों को सर्वशक्तिमान को समर्पित करना चाहिए और तुम्हारा काम हो जाना चाहिए।

सवाल: **क्या** यह बहुत कठिन कार्य नहीं होगा, क्या नेता या सरकारी अधिकारी ऐसा करने की अनुमति देंगे, क्या लोकतंत्र इसकी अनुमति देता है?

उत्तर: आप समाधान चाहते हैं और साथ ही साथ डर भी है कि जब समस्या की जड़ ही मौजूदा व्यवस्था है तो यह कैसे संभव होगा। इसमें सुधार करना सबसे जरूरी है। आप प्रार्थना, मेहनत और जश्न मनाना शुरू करें, संवाद शुरू करें और सब ठीक हो जाएगा। शायद आपको देश में इन मुद्दों पर एक–दो जनमत संग्रह कराने पड़ें। आज का जनमत संग्रह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि हमारे यहां जो भी मुख्यधारा की राजनीतिक पार्टियां हैं, वे या तो आजादी से पहले बनी हैं या इन पार्टियों से अलग हुई हैं, इसलिए इन सभी की मानसिकता कमोबेश एक जैसी है या यूं कहें कि ये इंडिया को भारत नहीं बल्कि कुछ और बनाना चाहते हैं।

(7). धर्म संस्थान की ओर से समाज प्रबंधन पर विविध दृष्टिकोण:

ऐसा कहा जाता है:
"खजाना पेट की भूख मिटाना है,
लक्ष्य है दिल की उलझन दूर करना,
महिमा मन के अंधकार को दूर करने में है,
जिम्मेदारी है सुस्ती दूर करना,

भय अनुशासनहीनता को दूर करने के लिए है,
इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति बांटकर शासन करता है,
मन को साफ़ करके और हृदय को शुद्ध करके,
एक साथ काम करके और पार्टी करके।

काम (*कर्म) छोड़ा नहीं जा सकता, उसे करना ही पड़ता है।*
जब धर्म रहता है तो जीविका सुनिश्चित रहती है ।

(7.A) यह सभी के लिए आश्चर्य की बात है कि तथाकथित शैतान और संत जब भविष्य की ओर संकेत करते हैं तो एकमत दिखाई देते हैं, लेकिन आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि जब शैतान और संत दूरगामी सहमति में आते हैं और एक ही गंतव्य/भविष्य की ओर संकेत करते हैं, तो स्थिति वास्तव में भयावह/खतरनाक/अशांत कही जा सकती है।

वर्तमान उथल-पुथल पर प्रकाश डालते हुए संतजन बड़े ही मधुर स्वर में लोगों को सांत्वना देते हुए कह रहे हैं कि सत्य का युग (सतयुग) आ रहा है, जिसमें सभी लोग स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन व्यतीत करेंगे। सतयुग में पृथ्वी पर कुल तैंतीस करोड़ लोग होंगे और सभी देवता तुल्य होंगे, जिनके पास प्रचुर संसाधन होंगे।
संत कह रहे हैं कि यह समय बुरी शक्तियों के प्रकट होने और उसके फलस्वरूप उनके खात्मे का है, तथा साथ ही अच्छी शक्तियों के उदय और उत्थान का भी, इसलिए ज्यादा चिंता की बात नहीं है, चीजें अपेक्षा से जल्दी ही सुलझ जाएंगी, जनता को बस इतना ही चाहिए कि वे अपना काम जारी रखें और भगवान से प्रार्थना करते रहें तथा उनकी कृपा की प्रतीक्षा करें।

लगभग इसी तरह के भविष्य की ओर तथाकथित शैतान इशारा कर रहे हैं, जो कहते हैं कि पृथ्वी पर स्थिति रहने लायक नहीं रह गई है और पृथ्वी सात सौ करोड़ से अधिक मानव आबादी का बोझ नहीं उठा सकती। जीवित रहने के लिए कम से कम नब्बे प्रतिशत मानव आबादी को खत्म

करना होगा, जिससे पृथ्वी पर केवल दस प्रतिशत आबादी बचेगी जो कि लगभग सत्तर करोड़ लोग हैं।

यदि हम शैतान और संतों के संस्करणों की तुलना करें, तो यह जानकर आश्चर्य होगा कि संत आने वाले दिनों में घटनाओं के अधिक भयावह मोड़ की ओर इशारा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति में समाज क्या कर सकता है? इसका समाधान क्या है? आध्यात्मिक जगत में, संतों और शैतानों की भविष्यवाणियों या योजनाओं के ऊपर, धर्म और धर्म संस्थानों (धर्म और धार्मिक संस्थाओं) के पुनरुत्थान को एक व्यवहार्य विकल्प के रूप में सुझाया जा रहा है। आध्यात्मिक जगत में यह कहा जा रहा है कि समाज में व्यापक मंथन की आवश्यकता है क्योंकि न तो पुरानी बुद्धि गूगल, यूट्यूब, विकिपीडिया आदि के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकती है और न ही ये नव-शास्त्रीय, तकनीक और गैजेट माता-पिता और दादा-दादी, गुरुओं और गुरुओं की कहानियों के बिना सुखद भविष्य का दावा कर सकते हैं। यह कहा जा रहा है कि व्यापक मंथन आवश्यक है ताकि सिस्टम में घुले जहर को हटाया जा सके और सिस्टम को जीवित रखने के लिए अमृत/सार को बरकरार रखा जा सके।

(7.बी) अगर हम आदिवासियों को देखें तो हम जो भी समस्या का सामना कर रहे हैं, उसे हम खुद ही पैदा कर रहे हैं, चाहे वह गरीबी, बेरोजगारी, अकेलापन, मोटापा और कुपोषण आदि की समस्या हो, न कि ईश्वर की कृपा, जैसा कि अधिकांश स्थानों पर कहा जाता है। आम जनता की गरीबी, बड़े पैमाने पर बेरोजगारी, अकेलापन और इनमें से अधिकांश को कुछ चालाक कला के उस्तादों द्वारा योजनाबद्ध किया जा सकता है और धर्म, क्षेत्र, जाति, वर्ग, पंथ, रंग और नस्ल के प्रति हमारे व्यक्तिगत दृष्टिकोण के साथ हमारी भावनाओं के साथ छेड़छाड़ करके जनता के बीच रखा जा रहा है।

आम लोगों के लिए एकांत में प्रार्थना करना बेहतर है और गुरु के लिए यह बेहतर है कि वे आदिवासियों - मूल आदिवासियों के पास जाएं और देखें कि वे किस प्रकार अपने विश्वास का पालन करते हैं और उसे व्यवहार में लाते हैं, क्योंकि आदिवासियों से ही क्षेत्र, धर्म और सभ्यता के विकास का बीज बोया जाता है।

प्रार्थना के लिए, भगवान सूर्य और उनके कुछ वंशज ही सभी योग और यौगिक क्रियाओं के ज्ञाता हैं, जिनमें से सूर्य सबसे अधिक प्रत्यक्ष हैं, जहाँ से आशीर्वाद प्राप्त किया जा सकता है और वह योग सीखा जा सकता है जो काफी समय से लगभग भुला दिया गया है, ताकि दूसरों का मार्गदर्शन

किया जा सके। चूँकि सूर्य सभी योगों के ज्ञाता हैं, इसलिए सूर्य को नमस्कार करना–सूर्य नमस्कार किसी भी योग में प्राथमिक माना जाता है।

(7.सी) चूंकि प्रकृति ने कोई खुला नेटवर्क और सिस्टम प्रदान नहीं किया है, इसलिए जीवन और जीवन चक्र के सुचारू संचालन के लिए जाँच और संतुलन, प्रतिक्रिया, सुझाव और सुधारात्मक तंत्र होना स्वाभाविक है। सुझाव यह संकेत देते हैं कि सुधार की आवश्यकता है या सरलता की कमी है। ऐसी स्थितियों में आत्म–विश्लेषण और आवश्यक उपकरणों और उपायों के साथ समय पर हस्तक्षेप, सर्वोत्तम परिणाम लाता है; निरंतर या पाँच बार या पाँच दिनों में एक बार सर्वशक्तिमान का स्मरण, परिणामों में अतिरिक्त सार प्रदान करता है।

(8) <u>धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थाओं) का प्रबंधन भाग</u> :

(8.A) यह हर घर में आम बात है कि जब बच्चे बड़े हो जाते हैं और उनकी शादी हो जाती है और घर में कोई नया सदस्य (बेटी) आ जाता है या कोई नया सदस्य (बहू) आ जाता है, तो उनका अपना घर ही घर बन जाता है। बच्चों की शादी और नाती–नातिन के आने के बाद कई लोगों के लिए उनके अपने ही पराए हो जाते हैं और वे अनावश्यक, अवांछित हो जाते हैं, लेकिन नाती–नातिन की शादी के बाद लगभग सभी के साथ ऐसा होता है कि इन वृद्धों को सम्मान तो मिलता है, लेकिन उनके साथ वैसा व्यवहार नहीं किया जाता जैसा वे परिवार के सदस्य हैं।

इस उम्र और अवस्था में, अधिकांश लोगों को अपने सपनों के घर से दूर जाने का मन करता है। यह आश्चर्य की बात है कि ऐसे अनुभवी लोगों के साथ वर्तमान में बुरा व्यवहार किया जाता है या अधिक से अधिक दया की दृष्टि से देखा जाता है; वर्तमान में कोई भी धर्म ऐसे लोगों को कोई सांत्वना नहीं देता है। निम्न आय वर्ग या मध्यम आय वर्ग के परिवार में ऐसा नहीं है, बल्कि उच्च पद पर आसीन व्यक्ति के साथ–साथ शीर्ष अधिकारियों, मंत्रियों और यहां तक कि प्रधान लोगों (प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, राजा और रानियों) के लिए भी यह उतना ही दर्दनाक है। कोई भी यह समझ सकता है कि राजनीतिक हलकों में सम्मानजनक निकास योजनाओं की अनुपलब्धता के कारण राजनेता अपमानजनक परिस्थितियों में भी अपने पद पर बने रहने की कोशिश करते हैं।

क्या ऐसी व्यवस्था जो ऐसे सम्मानित वर्ग को सम्मानजनक आश्रय प्रदान करती है और उनकी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करती है, वह समाज को सबसे समृद्ध बुद्धि और ज्ञान से संपन्न बना सकती है? क्या ऐसे वरिष्ठ नागरिकों का वर्ग निष्पक्ष तरीके से न्याय नहीं कर पाएगा? क्या ऐसा वर्ग धैर्य, सुनने और निष्पक्ष सलाह नहीं दे पाएगा? क्या ऐसा वर्ग नैतिकता, बुनियादी शिष्टाचार और जीवनशैली पर शिक्षा और प्रशिक्षण की व्यवस्था नहीं कर पाएगा?

कई लोगों के लिए उपरोक्त बातें एक सपना या कल्पना लग सकती हैं, लेकिन कई धार्मिक गुरुओं को पता है कि ऐसी व्यवस्था वास्तव में अस्तित्व में थी, भले ही इसका उल्लेख किसी इतिहास की किताब या/और अधिकांश धार्मिक ग्रंथों में न किया गया हो। इसका मतलब है कि ऐसी व्यवस्था प्रचलन में थी और दुनिया में ऐसे कई लोग होंगे जो इसके विवरण से अवगत होंगे। गुरुओं द्वारा ऐसी व्यवस्था की पेचीदगियों का पता लगाना भी संभव है, यदि वे अपने ध्यान में इस पर ध्यान दें। हालाँकि, एक सवाल उठ सकता है कि आर्थिक और प्रबंधकीय रूप से व्यवहार्य होने के अलावा ऐसी अभिव्यक्ति के लिए जगह कहाँ मिलेगी?

(8.बी) सदियों पुरानी समस्याओं पर काबू पाने के लिए समाज को स्थानीय सरकार के संचालन और रखरखाव के लिए आवश्यक सभी काम और जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर ले लेनी चाहिए और उस धार्मिक स्थल से काम करना शुरू करना चाहिए जो उस इलाके में सबसे ज़्यादा जगह रखता हो और अन्य सभी धार्मिक स्थलों को अपना कार्यस्थल बनाना चाहिए। समाज ज्ञान और संसाधन केंद्रों से शुरू करता है, फिर सामुदायिक भोजन और आश्रय वहाँ से कर संग्रह सहित अन्य सभी गतिविधियाँ चरणबद्ध तरीके से या हमारे सामूहिक सचेत निर्णय के अनुसार शुरू की जानी चाहिए।

इस दृष्टि से समाज को मौजूदा (विशाल और प्रमुख) धार्मिक केंद्रों को स्थानीय शासन सह सुविधा सह पर्यटन केंद्र के रूप में पूर्ण धर्म-निर्देशित तरीके से (पूरे समाज के साथ-साथ आगंतुकों/पर्यटकों के लिए) बनाने की आवश्यकता है और इसे वास्तविक रूप देने के लिए समाज को मौजूदा मानदंडों के स्थान पर प्रार्थना को पूरी तरह से व्यक्तिगत, शासन को सामूहिक और उत्सव को सार्वजनिक बनाने की आवश्यकता है। इसके अलावा गैर-कार्यात्मक धार्मिक केंद्रों को सामूहिक रूप से निष्क्रिय किया जा सकता है।

जहां तक रोजगार का सवाल है, लोगों को दैनिक आधार पर जीवंत, स्वस्थ और समग्र मनोरंजन सुनिश्चित करना, ताकि उन्हें नशीली दवाओं, मादक पदार्थों, शराब और इंटरनेट पर उपलब्ध मनोरंजन में कूड़ा ढूंढने के लिए मजबूर न होना पड़े, अपने आप में 6 प्रतिशत आबादी को प्रत्यक्ष रोजगार/सगाई प्रदान करेगा, जो वर्तमान आंकड़ों के अनुसार 8.125 करोड़ है।

(8.सी) धर्म संस्थान लोगों को यह सलाह देने के लिए एक सलाहकार संस्था के रूप में कार्य करना चाह सकता है कि क्या खाना चाहिए, क्या पीना चाहिए, क्या धूम्रपान करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, क्योंकि ये किसी भी समाज के लिए खेल परिवर्तक हैं। [पिछले तीन हजार वर्षों से चल रही अराजकता को देखते हुए यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि धर्म की बुनियादी समझ के साथ-साथ क्या खाना चाहिए, क्या पीना चाहिए, क्या धूम्रपान करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, इसकी समझ भी गड़बड़ा गई है। यह सिद्ध तथ्य है कि जैसा भोजन वैसा ही भाव, जैसा जल वैसा ही स्वर और जैसा धुआं, वैसी ही इंद्रियां होंगी, इसलिए धर्म व्यक्ति

को सावधानी बरतने की सलाह देता है, जैसे रासायनिक रूप से उपचारित कामोद्दीपक पदार्थों के सेवन से बचें, सड़े हुए फल और अनाज के पेय से बचें और मानव मांस (नरभक्षण) से बचें, और जो आकार में बड़े हैं (पशु–मत्स्य पालन) जिनमें हाइड्रोकार्बन की उच्च–बड़ी आणविक श्रृंखला होती है) आनुवंशिक गड़बड़ी पैदा कर सकती है, और गिद्ध (गिद्ध) और सूअर का मांस खाने से बचें क्योंकि ये मैला खाते हैं, फिर कुत्ते का (क्योंकि कुत्ते को मनुष्य का मित्र माना जाता है), फिर उन जानवरों का मांस खाने से बचें जिनका दूध मनुष्य पीता है चाहे वह बकरी हो या गाय या भैंस आदि (क्योंकि दूध माँ का होता है) आदि। इन संस्थाओं के साथ व्यक्ति किस प्रकार का व्यवहार करता है, यह न केवल उसके व्यक्तित्व को दर्शाता है बल्कि इन लोगों, उनके परिवार और उनके पूरे समाज के भविष्य का भी पूर्वानुमान लगाता है।]

(8.डी) आवास, नगर एवं ग्राम तथा अन्य सिविल निर्माण गतिविधियां भारी मात्रा में नकदी प्रवाह को आकर्षित करती हैं, जो यदि योजनाबद्ध तरीके से नहीं की जाती हैं, तो नाली या गटर में समाप्त हो जाएंगी या समाधान की अपेक्षा अधिक समस्या उत्पन्न करेंगी, उदाहरण के लिए, उचित वायु–संचार से वंचित तंग घरों का निर्माण, ऐसे घर जो सर्दियों में ठंडे और गर्मियों में गर्म हो जाते हैं तथा बरसात के मौसम में उनमें रिसाव/रिसाव होता है।

इसलिए समाज को इस अवसर पर आगे आकर स्थानीय निर्माण की सभी गतिविधियों को अपने हाथ में लेना चाहिए, जिसमें इसकी योजना और डिजाइनिंग भी शामिल है। प्रत्येक शहर, प्रत्येक ब्लॉक और प्रत्येक जिला और मेट्रो अपने क्षेत्र में आगे की निर्माण गतिविधि की अनुमति देने से पहले अपनी सिविल और वास्तुकला योजना की समीक्षा करना पसंद कर सकते हैं।

राष्ट्रीय सरकार रेलवे, राजमार्ग और अंतर्देशीय जलमार्ग, बंदरगाह और हवाई अड्डों तक ही सीमित रह सकती है। राष्ट्रीय सरकार नए शहर बनाने, औद्योगिक नगर बनाने और कृषि वानिकी क्षेत्र बनाने के साथ–साथ राष्ट्रीय सुरक्षा, आपातकाल और आपदा प्रबंधन से संबंधित निर्माण कार्यों में भी भाग ले सकती है। उपरोक्त बुनियादी ढांचे और उसके रखरखाव से प्रचुर मात्रा में रोजगार उपलब्ध होगा ।

17. स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण

कोई भी भोजन मुफ़्त नहीं है, गुरु कहते हैं, यहाँ इस दुनिया में हर किसी को अपने दोपहर के भोजन के लिए भुगतान करना पड़ता है, या तो ऋण चुकौती के रूप में या डिलीवरी के बदले या अग्रिम भुगतान के रूप में। जो लोग इस कथन से सहमत नहीं हैं, उनके लिए सवाल उठता है? किस बाध्यता के तहत कोई और अपने दोपहर के भोजन या आपके दोपहर के भोजन का भुगतान करेगा और वह भी अपने पूरे जीवन के लिए? ऐसी कौन सी व्यवस्था हो सकती है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अपने दोपहर के भोजन के साथ-साथ दूसरों के लिए भी भुगतान कर सके, भले ही वह राजा/रानी या राजकुमार/राजकुमारी ही क्यों न हो?

अगर ऐसा है, तो बचपन में जो खर्च हुआ है, उसे माता-पिता (माता और पिता) को कर्ज चुकाने के लिए ही चुकाया जा सकता है, इसी तरह बुढ़ापे में जो खर्च होगा, उसे बच्चों को अग्रिम भुगतान के तौर पर ही चुकाया जा सकता है और बुढ़ापे में जो खर्च होगा, उसे समाज और सरकार को अग्रिम भुगतान के तौर पर ही चुकाया जा सकता है। जाहिर है, कोई अपनी जवानी में अपने दोपहर के भोजन का खर्चा कैसे उठा पाएगा?

इसके अलावा, कोई व्यक्ति अपने जीवनकाल में भोजन के साथ-साथ जो सेवाएं प्राप्त करता है, उसका हिसाब कैसे देगा? सामान्य परिस्थितियों में, कठिन समय में और आपदा के समय जैसे कि शिक्षकों की सेवाएं, गुरुओं और अन्य लोगों की कृपा और कृतज्ञता, बड़ों और संतों की उदारता और आशीर्वाद? इसके अलावा, कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन के दौरान अन्य जीवित और निर्जीव प्राणियों से प्राप्त सेवाओं का हिसाब कैसे देगा?

उपरोक्त को एक दिशानिर्देश मानते हुए, और मनुष्यों की औसत आयु छियानबे वर्ष (लगभग सौ वर्ष) मानते हुए, किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त या दी जाने वाली सेवाओं के वितरण पैटर्न के लिए सबसे अच्छी प्रणाली क्या हो सकती है और किसी व्यक्ति द्वारा अपने जीवनकाल में दी जाने वाली आय का वितरण पैटर्न क्या हो सकता है, जिसके अनुसार कहा जा सकता है कि उसने अपने जीवन के पूरे दोपहर के भोजन का भुगतान किया है? और जो हर समय, भूगोल और ऊर्जा के स्तर के हर क्षेत्र में बिना किसी पक्षपात या पूर्वाग्रह के, उसकी जाति, वर्ग या पंथ के बावजूद सभी के लिए सही है, यानी वितरण निरंतरता या शाश्वतता या सनातनता (संस्कृत में) प्रदान करना है? क्या ऐसी वितरण प्रणाली देना या रखना वास्तविक धर्म नहीं हो सकता है? क्या इस वितरण प्रणाली को भूलना सभी स्तरों पर सभी के लिए समस्याओं को निमंत्रण नहीं है?

निम्नलिखित प्रस्तुत है: प्रस्तुति दो भागों में प्रस्तुत की जा रही है : (1) मुद्दे और व्यापक रूपरेखा। (2) "परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण और समाज द्वारा इसका प्रबंधन" पर विविध दृष्टिकोण।

(1) **<u>मुद्दे और व्यापक रूपरेखा</u>** :

(1.A) कोई देता नहीं, अपनी रोटी खुद ही कमानी पड़ती है, यह एक सामान्य धारणा है। इस धारणा को ध्यान में रखते हुए एक सामान्य पुरुष/महिला यह देखना चाहेगा कि उसने अपने पूरे जीवन में जो भी धन या संसाधन खर्च/उपयोग किया है, वह उसने स्वयं कमाया हो, इसके अलावा वह यह भी चाहेगा कि उसके पूरे जीवन में किसी भी समय धन या संसाधनों की कमी न हो, और इसे साकार करने के लिए वह निश्चित रूप से अपने व्यय का नकद और वस्तु दोनों रूप में एक पैटर्न बनाना चाहेगा या यूं कहें कि अपनी आय/सेवाओं का वितरण परिवार, समाज, देश और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के सदस्यों के बीच करना चाहेगा।
लेकिन ऊपर बताई गई बातें एक समझदार व्यक्ति की समझदारी भरी इच्छा हो सकती है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने भी अपने बचपन और किशोरावस्था के दौरान ऐसी सुविधाएं विकसित नहीं की हैं कि वह व्यय पैटर्न या कमाई और उसके उचित वितरण की पेचीदगियों को समझ सके। इसके अलावा, बहुत बुढ़ापे में अधिकांश लोग, भले ही आय/व्यय की पेचीदगियों से अवगत हों, उनसे उसी के साथ तालमेल रखने की उम्मीद नहीं की जा सकती।

तो सवाल यह उठता है कि कोई व्यक्ति अपने बचपन और बुढ़ापे के दौरान और बहुत बुढ़ापे के दौरान किए गए खर्चों का हिसाब कैसे रख सकता है। अर्थशास्त्र में, ऋण, क्रेडिट, पोस्ट पेमेंट, प्रीपेमेंट, डिलीवरी के खिलाफ भुगतान, स्थानीय बैंक में एक जमा और राष्ट्रीय बैंक में सुरक्षित जमा उपरोक्त प्रश्न का उत्तर है।

(1.A.1) चित्र में ऊपर दिए गए प्रतिमान को देखते हुए, सवाल उठता है कि शून्य-शून्य आयु का बच्चा अपना पूरा जीवन कैसे जिए, जिसका हिसाब-किताब उसके पास है, यानी उसे इस जन्म/जीवन से विदा होने पर नो ड्यूज सर्टिफिकेट दिया जाए। लेकिन, किसी की नीयत और ईमानदारी पर संदेह किए बिना, सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह उठता है कि कोई व्यक्ति अपनी अनुमानित आयु जाने बिना अपने खर्चे का पैटर्न कैसे तय कर सकता है।

जहाँ तक काम और आय के वितरण के उद्देश्य से मनुष्य की इष्टतम जीवन प्रत्याशा का संबंध है, इसे (इस युग-तथाकथित कलयुग में) छियानबे वर्ष माना गया है, जिसमें चौबीस वर्ष के चार चक्र या छह-छह वर्ष के सोलह उप-चक्र शामिल हैं। आचार्यों का कहना है कि मनुष्य की जीवन

प्रत्याशा और उसके विकास और क्षय के विभिन्न चरणों में सौर चक्र के साथ समानता पाई गई है। ऐसा कहा जाता है कि हमारे सौर मंडल में, सूर्य पर लगभग हर बारह साल में एक छोटा विस्फोट होता है और हर छियानबे साल में एक बड़ा विस्फोट होता है। सूर्य पर छोटे विस्फोटों के इस बारह वर्षीय चक्र में, दो उप-चक्र कहे जाते हैं, एक आरोही का और दूसरा अवरोही का, जो छह-छह वर्ष का होता है।

बहुत ही सामान्य तरीके से, मनुष्य के बचपन के समय को देखते हुए, उपरोक्त कथन की सराहना की जा सकती है, जिसमें लड़के और लड़कियों में छह साल की उम्र के बाद और बारह साल की उम्र में काफी बदलाव आते हैं। लगभग छह साल की उम्र में शिक्षा शुरू होती है और बारह साल की उम्र के बाद किशोरावस्था शुरू होती है और चौबीस-पच्चीस साल की उम्र में मनुष्य विवाह के योग्य माना जाता है और यह कमोबेश पूरे देश और दुनिया में एक जैसा है।

जिन्होंने इस शाश्वत घटना को समझने तथा उसके अनुसार मनुष्य के लिए व्यवस्था की संकल्पना करने का कठोर परिश्रम किया है, उन्होंने प्रतिपादित किया है कि मानव जीवन को चौबीस-चौबीस के चार भागों में विभक्त किया जा सकता है। इन महापुरुषों ने प्रतिपादित किया है कि यदि मनुष्य (स्त्री-पुरूष) अपने समाज के साथ मिलकर इन सीमाओं का हृदय से/धार्मिकता से पालन करें तो मनुष्य आसानी से स्वस्थ एवं सुखी जीवन जी सकता है तथा सुखपूर्वक, शांतिपूर्वक, सभी रिश्तेदारों, देश एवं समाज से बकाया न होने का प्रमाण-पत्र प्राप्त करके अर्थात पूरे सम्मान के साथ मर भी सकता है।
भारत में कोई भी व्यक्ति यह समझ सकता है कि इसके वजन और माप तथा मौद्रिक प्रणाली में अन्य संख्याओं की तुलना में संख्याओं का अधिक महत्व है - "1, 4, 6, 12, 24, 48 और 96"। आज भी भारत में सोना दस, बीस, तीस ग्राम आदि के बजाय तोला (12 ग्राम), आधा तोला और उसके गुणकों में बेचा/खरीदा जाता है और पैसे की गणना में एक पैसा, एक आना (छह पैसे) चार आना (चार आना-24 पैसे), आठ आना (आठ आना-48 पैसे) सामान्य मूल्यवर्ग हुआ करते थे और नब्बे पैसे यानी सोलह आना से एक कलदार (एक रुपया) बनता था।
उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए यदि कोई व्यक्ति ऋण मुक्त होकर मरना चाहता है तो वह अपने जीवन के प्रत्येक वर्ष के लिए एक पैसा/प्रतिशत निर्धारित कर सकता है। इस तरह उसके पास 96 वर्ष की आयु पूरी होने तक खर्च करने के लिए एक प्रतिशत धन उपलब्ध हो सकता है।

(1.A.2) यदि हम आज भी समाज के लिए एक इष्टतम योजना बनाना चाहते हैं, तो हम यह देखना चाहेंगे कि प्रत्येक बालक/बालिका को विवाह से पहले बढ़ने और विकसित होने, शिक्षा प्राप्त करने और सामान्य क्षेत्र में तथा अपने चुने हुए क्षेत्र में कौशल विकसित करने तथा धन कमाने के लिए सेवा क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए पर्याप्त समय मिले। यह स्पष्ट है कि इस अवधि

के दौरान कोई न कोई उसके विकास और वृद्धि का पूरा भार वहन करेगा, चाहे वह माता–पिता हों, दादा–दादी हों, रिश्तेदार हों, समाज या देश हो, जिसका यह बालक/बालिका धन या सेवाओं के रूप में कम से कम चौबीस प्रतिशत या उससे अधिक ऋणी होगा।

यह उम्मीद की जाती है कि यह लड़का/लड़की अगले चौबीस वर्षों में अपने असली मालिकों यानी माता–पिता या माता–पिता जैसे व्यक्ति या संस्थाओं को अपनी आय के चौबीस प्रतिशत की दर से या तो मौद्रिक रूप में या सेवा प्रदान करके यह राशि चुकाएगा। विवाह के बाद पति और पत्नी को एक इकाई माना जाता है, चाहे समाज मातृसत्तात्मक हो या पितृसत्तात्मक। इसके अलावा, कमाई के मौद्रिक हिस्से की गणना करते समय, एक सदस्य के पति/पत्नी द्वारा नकद या वस्तु के रूप में अर्जित धन को घर पर रहने वाले व्यक्ति द्वारा की गई सेवा के बराबर महत्व दिया जाता है।
इसलिए, पति और पत्नी दोनों को ही अपने माता–पिता (या सास–ससुर), बच्चों और समाज/सरकार को समान रूप से योगदान देते हुए कहा जाता है। गैर–मौद्रिक शर्तों में पत्नी के योगदान को समान महत्व दिया जाता है।

(1.A.3) भारत में बचपन में सीखने की इस अवधि को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। यहाँ ब्रह्मा (संपूर्ण ब्रह्मांड) या जिसने जीवन का भरपूर अनुभव कर लिया है और घर से दूर रहकर संन्यासी का जीवन जी रहा है, यानी बहत्तर वर्ष की आयु से संन्यास आश्रम में रहने वाले लोगों को आचार्य (शिक्षक/गुरु) कहा जाता है, जिनके अधीन कोई व्यक्ति अपना अध्ययन पूरा करता है और कौशल सीखता है। शिक्षक/गुरु के संबंध में व्यक्ति के जीवन की यह पहली चौबीस वर्ष की अवधि ब्रह्मचर्य कहलाती है।
यह अवधि व्यक्ति के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है, क्योंकि यदि यह खराब हो जाए तो उसका शेष जीवन सामान्यतः पीड़ा और दुखों से भरा हो जाता है, इसलिए माता–पिता, दादा–दादी, रिश्तेदार और समाज के सदस्य युवाओं को अच्छी शिक्षा और प्रशिक्षण सुनिश्चित करना चाहते हैं।

जिन लोगों को शिक्षा और प्रशिक्षण देने वाला कहा जाता है, वे वे लोग हैं जिन्होंने स्वयं बचपन में शिक्षा और प्रशिक्षण पूरा किया है, फिर विवाहित जीवन जिया है, जीविकोपार्जन किया है, बच्चों को जन्म दिया है और उनका पालन–पोषण किया है, घर के सभी आंतरिक कार्य और गृहस्थ आश्रम के अन्य कर्तव्यों को पूरा किया है और इसके बाद वानप्रस्थ आश्रम की अवधि भी पूरी की है, जिसमें घर पर रहकर घर के सभी बाहरी कार्यों को देखा है, सामाजिक गतिविधियों में भाग लिया है और अन्य कर्तव्यों का पालन किया है जो वरिष्ठ नागरिकों के दायरे में आते हैं।

सभी कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के बाद, तथा प्रत्येक आश्रम के अधिकारों और विशेषाधिकारों का आनंद लेने के बाद ही व्यक्ति शिक्षक बनने के योग्य बनता है, लेकिन वह भी तभी जब व्यक्ति अपना घर छोड़कर शिक्षा प्रदान करने, प्रशासन और न्याय करने के लिए सामुदायिक केंद्र में रहने लगे और एक तरह से धर्म का केंद्र या धर्म संस्थान या धार्मिक संस्थान या स्थानीय शासन का केंद्र बन जाए।

(1. ए.4) उपरोक्त सीमा-निर्धारण को ध्यान में रखते हुए तथा यह तथ्य कि शून्य-शून्य आयु के प्रत्येक बच्चे से इन चरणों तक पहुँचने की अपेक्षा की जाती है, प्रति वर्ष आय/सेवाओं का एक प्रतिशत वितरित करना तथा उस श्रेणी के व्यक्ति या व्यक्तियों को देना/योगदान करना सही विकल्प/निर्णय माना जा सकता है। इस प्रकार प्रत्येक आय (मौद्रिक रूप में या अमूर्त रूप में) में समान मूल्य के चार भाग होने चाहिए। उपरोक्त पृष्ठभूमि के साथ, जो बात सामने आई है (सूत्र) उसे कई आचार्यों ने अलग-अलग तरीके से कहा है जैसे:
प्रत्येक रुपए में से चार आना (चौबीस पैसे/प्रतिशत) माता-पिता अर्थात पुरानी पीढ़ी या पिछली पीढ़ी को ऋण चुकाने के लिए (12% माता को और 12% पिता को) चिह्नित किया जाना चाहिए, चार आना (24%) भावी पीढ़ियों को ऋण के रूप में अर्थात बच्चों को (12%) बेटे को और (12%) बेटी को, फिर चार आना (24%) वर्तमान पीढ़ी को (12% स्वयं को और 12% जीवनसाथी को), फिर चार आना धर्म/समाज को (22% स्थानीय समाज या धर्म संस्थान को और 12% सरकार को)।

(1. A.5) आय का यह विभाजन/वितरण न केवल किसी की आय में विभिन्न घटकों की हिस्सेदारी के बारे में बताता है, बल्कि परिवार, समाज और देश के प्रबंधन के बारे में भी बहुत कुछ बताता है, जैसे:
(i) आय के इस विभाजन में पूर्ण लैंगिक समानता है। पति और पत्नी अलग-अलग आर्थिक पहचान नहीं हैं, बल्कि एक पहचान हैं। इसमें पति/पत्नी द्वारा घर चलाने के लिए किए जाने वाले काम और घर चलाने के लिए पैसे/सामग्री कमाने के लिए खेत में किए जाने वाले काम को समान महत्व दिया जाता है, इसलिए भले ही घर पर रहने वाला सदस्य (पत्नी/पति) कमाता हुआ न दिखे, लेकिन वह भी उतना ही महत्वपूर्ण है।
पति और पत्नी (जीवनसाथी) को हाथ से पीसने वाली मशीन (चक्की) के दो हिस्सों की तरह कहा जाता है, जिसमें से एक को स्थिर रहना पड़ता है ताकि दूसरे आधे हिस्से/हिस्से को गतिशीलता प्रदान की जा सके। ऐसा कहा जाता है कि पति/पत्नी में से अगर कोई एक स्थिर/घर पर नहीं रहता और दूसरा चलता-फिरता रहता है, यानी अगर दोनों एक ही काम करने लगते हैं, या तो घर पर रहकर उसे चलाने के लिए काम करते हैं या बाहर जाकर उसे चलाने के लिए कमाते हैं, तो

इस बात की पूरी संभावना है कि इस जोड़े को सहजता/आराम नहीं मिलेगा और वे तनाव/तनाव/तनाव आदि में रह सकते हैं।

(ii) यह पुरानी पीढ़ी के साथ-साथ अगली/भविष्य की पीढ़ियों, समाज/धर्म/स्थानीय शासन के साथ-साथ राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय सरकार को भी समान सम्मान देता है। इसमें कहा गया है कि दो बच्चे होने चाहिए, एक सामान्य लड़का/लड़की, और अगर बच्चे ज़्यादा हैं, तो उनका हिस्सा कम हो जाएगा और उनका पालन-पोषण ठीक से नहीं हो पाएगा। पारिवारिक झगड़ों की स्थिति में, अधिकतम 12% हिस्सा उस सदस्य का होता है जिसे उस व्यक्ति (माता/पिता, बेटा/बेटी और पति/पत्नी) को बिना किसी पूर्व या बाद की शर्त के दिया जाना चाहिए।

(iii) किसी व्यक्ति को आवश्यक सभी बुनियादी सुविधाएँ/सेवाएँ समाज/सरकार द्वारा समाज/देश के प्रत्येक कमाने वाले सदस्य की आय के 12% आठवें हिस्से से प्राप्त राजस्व से प्रदान की जानी चाहिए। इस व्यवस्था में आय/कार्य का वितरण या परिवार या समाज या सरकार से अन्य सुविधाएँ/सेवाएँ प्राप्त करने के लिए वेतन/सेवा के अंशों के रूप में योगदान, जो छियानबे वर्ष की आयु से अधिक है, को पूरी व्यवस्था में अतिथि (संस्कृत में अतिथि जो एक तिथि है जिसमें तिथियाँ नहीं होती हैं) कहा जाता है। छियानबे वर्ष से कम आयु का कोई भी बाहरी व्यक्ति किसी भी समाज में अतिथि नहीं बल्कि केवल एक आगंतुक/घुसपैठिया/राहगीर है और उसके साथ उसी तरह का व्यवहार किया जाना चाहिए।

(iv) मीट्रिक प्रणाली में इस छियानबे को सौ में पूर्णांकित किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप चौथा आठ पचास हो गया, चौबीस पच्चीस हो गया, लेकिन बारह को या तो एक आठवाँ (12.5%) कहा जा रहा है या दस में पूर्णांकित किया जा रहा है। आय/संसाधनों/उपज के इस विभाजन/वितरण के साथ-साथ कार्य/जिम्मेदारियों के वितरण में पिछले अध्यायों में चर्चा किए गए सभी बिंदुओं को शामिल किया गया है।

जो लोग इसकी सराहना करते हैं, वे कहते हैं कि आय और कार्य के वितरण की यह प्रणाली, जो शाश्वतता/शाश्वतता या संस्कृत में सनातनता प्रदान करती प्रतीत होती है, इतनी सरल और तर्कसंगत है कि ऐसा प्रतीत होता है कि यह ईश्वर द्वारा भेजी गई रचना है।

(1.बी) कार्य/आय/उपज के वितरण की प्रणाली में नामकरण प्रयोजनों के लिए, आयु के अनुसार कार्य के चार विभाजन कहे गए हैं अर्थात ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम, तथा रुचि/पसंद के अनुसार कार्य के चार विभाजन कहे गए हैं अर्थात सेवा (शूद्र), व्यवसायी (वैश्य), क्षत्रिय और ब्राह्मण। यदि हम उपरोक्त दोनों श्रेणियों को समान मानते हैं तो सेवा ब्रह्मचर्य है, वैश्य गृहस्थ है, क्षत्रिय वानप्रस्थ है और ब्राह्मण संन्यास है। आय के वितरण के लिए:

(i) संन्यास आश्रम या ब्राह्मणों को मिलने वाला अंशदान समाज और सरकार को आठ-आठवें हिस्से के हिसाब से दिया जाना चाहिए, जो कुल चार आना (एक चौथाई-25%) के बराबर होगा, जिससे शासन व्यवस्था, न्याय, विदेशी संबंध, आपदा प्रबंधन, मार्गदर्शन और सलाह केंद्र आदि का संचालन किया जा सके।
(ii) ब्रह्मचर्य आश्रम या सेवा वर्ग या भावी पीढ़ियों को दिए गए योगदान को शिक्षा, प्रशिक्षण, कौशल विकास, अनुसंधान और विकास तथा विविधीकरण आदि के लिए निर्धारित किया जाना चाहिए।
(iii) वैश्य-गृहस्थ आश्रम-वर्तमान पीढ़ी के योगदान को कार्यबल, उपकरण और मशीनरी तथा कार्यशील पूंजी आदि के लिए रखा जाना चाहिए।
(iv) क्षत्रिय - वानप्रस्थ आश्रम की पुरानी पीढ़ी के योगदान को ऋण और बंधक, सुरक्षा और संरक्षा, सामाजिक जिम्मेदारी के पालन और स्वास्थ्य और स्वच्छता और पर्यावरण प्रबंधन आदि के लिए देय राशि के पुनर्भुगतान के लिए निर्धारित किया जाता है।

(1.सी) उपरोक्त प्रणाली बहुत लंबे समय तक प्रचलन में थी, लेकिन कहा जाता है कि नए युग की शुरुआत के साथ यह लुप्त हो गई, लेकिन आज भी इसकी कुछ प्रतिध्वनि देखने को मिलती है जब धार्मिक गुरु या उपदेशक/शिक्षक अपने शिष्यों से अपनी कमाई का आठवाँ हिस्सा या दस प्रतिशत धर्म/मज़हब के लिए दान करने के लिए कहते हैं। हालाँकि अधिकांश उपदेशक अपने शिष्यों को इसका कारण नहीं बताते हैं, इसलिए न तो शिष्य/लोग पूरे दिल से दान करते हैं और न ही दान की गई राशि का उपयोग समाज को बुनियादी सेवाएँ प्रदान करने के लिए किया जाता है।

(1.D). लेकिन, यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि, कैसे कोई समाज और देश एक ईमानदार और निष्ठावान व्यक्ति से उसके पूरे जीवन के सभी ऋणों का भुगतान करने की अपेक्षा कर सकता है, जब भौतिक सुरक्षा, भोजन, पानी, हवा, धूप, ऊर्जा, स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय जैसी सुविधाओं की लागत लगातार बढ़ती जा रही है। इसके अलावा, कैसे कोई समाज और देश न केवल मानव जाति की बुनियादी सेवाओं की गुणवत्ता और मात्रा का प्रबंधन कर सकता है, बल्कि लंबे समय तक अपने अस्तित्व को भी बनाए रख सकता है, अगर विभिन्न सेवाओं और उस विशिष्ट सेवा में विभिन्न व्यक्तियों (उदाहरण के लिए डॉक्टर, जज, इंजीनियर, किसान, व्यापारी और फिर नर्स, परिचारक और सहायक) के बीच वेतन और भत्तों में बहुत बड़ा अंतर है।

(1.E) इस बात पर चर्चा या शोध करने का कोई मतलब नहीं है कि कैसे और क्यों ऐसी तार्किक, स्पष्ट, सरल जीवनशैली प्रणाली को पीछे छोड़ दिया गया और इसी तरह किसी क्षेत्र, धर्म या महान व्यक्तित्व को दोष देने का कोई मतलब नहीं है, और अंत में अगर हम कहें कि कुछ लोगों के लालच/अहंकार/स्वार्थ ने काम और आय के वितरण की इस प्रणाली को खत्म कर दिया है,

तो इससे कोई फायदा नहीं होगा, लेकिन दुनिया भर में नज़र डालना और वर्तमान परिदृश्य का मूल्यांकन करना निश्चित रूप से बेहतर होगा। **निम्नलिखित पर ध्यान दिया जा सकता है**:

(i) जापान जैसे देशों में जन्म दर में भारी गिरावट आई है क्योंकि दम्पतियों ने बच्चे पैदा करना, फिर उनका पालन-पोषण करना, उन्हें पढ़ाना और उनकी शादी करवाना बंद कर दिया है, बस बुढ़ापे में उन्हें भूलकर आजीविका के लिए सरकार या आसमान की ओर देखना शुरू कर दिया है। जापान जैसे देशों में दम्पतियों को लगने लगा है कि बुढ़ापे के लिए पैसे बचाना बच्चे पैदा करने से बेहतर है।

(ii) विवाहित दम्पति द्वारा अपने माता-पिता और समाज के लिए आर्थिक योगदान की बात तो दूर, वे अपने माता-पिता और समाज के वृद्ध व्यक्तियों की भी नहीं सुनते, यह बात पूरे देश और दुनिया में आम है। इसलिए कई देशों में माता-पिता और समाज अपने बच्चों की शिक्षा, प्रशिक्षण और कौशल विकास के लिए हरसंभव प्रयास और व्यवस्था करने के बजाय उन्हें धन कमाने की ओर धकेलते पाए जाते हैं, जिसका अंदाजा बाल श्रम और बाल अपराध की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि से लगाया जा सकता है।

(iii) समाज और उसके बुद्धिमान और वृद्ध लोगों (परदादा-परदादी या ऐसे ही अन्य लोग) के भरण-पोषण के लिए अपनी आय का उचित हिस्सा समाज को न देने के कारण दुनिया भर में सामान्य जीवन प्रत्याशा इष्टतम छियानबे वर्ष से घटकर वर्तमान में 72-75 वर्ष रह गई है। दूसरे शब्दों में, आय/आय के अव्यवस्थित वितरण के कारण एक पूरा वर्ग, जिसे सबसे परिपक्व, अनुभवी माना जाता था, केन्द्रीय मंच से गायब हो गया है।

(iv) 72-96 वर्ष से अधिक आयु वर्ग की पुरानी पीढ़ी के विलुप्त होने के साथ ही, इस समूह द्वारा बनाए गए समाज के सभी सामान्य नियंत्रण और संतुलन भी समाप्त हो गए हैं।

(v) कहते हैं कि यदि ब्रह्मचर्य काल खराब हो जाए तो व्यक्ति का पूरा जीवन खराब हो जाता है। संन्यास आश्रम में बच्चों को शिक्षा और प्रशिक्षण देने वाले लोगों के न होने के कारण समाज के सभी बच्चों की बुनियादी शिक्षा खराब हो गई और एक तरह से पूरा समाज ही बर्बाद हो गया।

(छठी). कार्य/सेवाओं के बुनियादी वितरण और उसके परिणामस्वरूप आय/अर्जन के रखरखाव में विफलता के कारण, समाज में उपलब्ध होने वाली लगभग सभी बुनियादी सामाजिक सुरक्षाएं लुप्त हो गई हैं।

(1.एफ) स्वस्थ और खुशहाल समाज के लिए काम और आय का बेहतर वितरण क्या हो सकता है, इस पर आगे बढ़ने से पहले इस मंदी के संभावित कारण का पता लगाना उचित होगा।

यद्यपि सब कुछ ईश्वर की इच्छा ही कहा जा सकता है, लेकिन यदि कोई वास्तव में यह जानने में रुचि रखता है कि ईश्वर की इच्छा कैसे पूरी होती है, तो आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है, यदि आंखें बदल जाती हैं, तो दृश्य बदल जाते हैं । बदली तो नज़रे बदले - नज़रे बदले तो नज़रे बदले) तो खान-पान, कामोद्दीपक में परिवर्तन के साथ ही धीरे-धीरे सब कुछ अपने आप बदल जाता है। अगर खान-पान, कामोद्दीपक शुद्ध, पवित्र हैं तो स्वास्थ्य और सुख अवश्य मिलता है और अगर खाना जबरदस्ती बधिया किए गए बैल से और दूध कृत्रिम गर्भाधान से पैदा किया गया है तो खाना-पीना अभिशप्त हो जाता है और सभी के लिए बुरा परिणाम लेकर आता है। आध्यात्मिक मंडली का यह तर्क तर्कसंगत और समझने योग्य प्रतीत होता है। अगर हम सामूहिक रूप से चाहें तो बेशक हम स्थिति को पलट सकते हैं लेकिन हम अपना भविष्य सुधार सकते हैं।

(1.जी)। उपरोक्त को एक परिकल्पना या विषय के रूप में माना जा सकता है, जिसने तार्किक रूप से यह स्थापित करने का प्रयास किया है कि कोई व्यक्ति (पुरुष और महिला दोनों) अपने पूरे जीवन को योजनाबद्ध तरीके से कैसे जी सकता है कि यह बचपन से बुढ़ापे तक, जन्म से मृत्यु तक बिना किसी पर निर्भर हुए एक स्वस्थ और खुशहाल यात्रा के रूप में आगे बढ़े। इसके अलावा कई ऐसे गुरु हैं जो ऊपर उठाए गए प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कर पाएंगे और ये समूह इसके लिए व्यापक दिशा-निर्देश ला सकते हैं। काम और आय के लिए उपरोक्त वितरण पैटर्न के साथ यह सुरक्षित रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है कि हम अपने स्वयं के संसाधनों के भीतर सभी जरूरतमंदों को पारिश्रमिक रोजगार और सभी इच्छुक वरिष्ठ नागरिकों को सम्मानजनक रोजगार प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

(1.एच) कार्य और आय के वितरण पर उपरोक्त तर्कों से निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला जा सकता है:

(i) इस वितरण पैटर्न से यह स्पष्ट है कि हर कोई अपने जीवनकाल में प्राप्त पूरे भोजन के लिए भुगतान कर रहा है, जो साबित करता है कि "दुनिया में कोई मुफ्त भोजन/सेवा नहीं है, हर किसी को उसी जीवन में इसके लिए भुगतान करना होगा (अगले जीवन या प्रलय के दिन नहीं)।

(ii) उपर्युक्त चार समूहों में से प्रत्येक में दो घटक भागीदार हैं, इसका मतलब है कि आठ घटक हैं (पुत्र, पुत्री, स्वयं और पति/पत्नी, माता और पिता, समाज/धर्म/स्थानीय सरकार और राज्य/क्षेत्र/राष्ट्रीय सरकार) जिनमें से प्रत्येक को किसी भी आय का 12.5% या 1/8 बराबर राशि प्राप्त करने का अधिकार है। यह लिंग के बीच समानता प्रदान करता है और घटकों की संख्या में इष्टतमता बनाए रखने के लिए भी कहता है।
यह वितरण पैटर्न यह दर्शाता है कि घटकों की संख्या में कोई भी वृद्धि या तो उस खंड में वृद्धि को रोक देगी या अन्य खंडों के लिए प्रतिबंध पैदा करेगी। इसी तरह, किसी भी श्रेणी द्वारा

अतिरिक्त मांग या छीना-झपटी दूसरों को नुकसान पहुंचाती है, चाहे वह बच्चे हों, माता-पिता हों, धर्म हो या सरकार हो, जो अंततः किसी व्यक्ति, उसके परिवार और पूरे समाज के सामंजस्य और लय में व्यवधान पैदा कर सकती है।

इस दृष्टि से व्यवस्था में नियंत्रण और संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। यह भूमिका और जिम्मेदारी आमतौर पर वे लोग निभाते हैं जो सौ वर्ष की आयु प्राप्त कर चुके हैं और देवता के समान आदरणीय हो गए हैं । देवो सम्पूर्ण समाज का भवः ।

(iii) उपरोक्त विभाजन को देखें तो 12.5% या आय का 1/8 हिस्सा समाज/धर्म के लिए योगदान के रूप में आता है। यहीं से धार्मिक उपदेशकों का यह अर्थ निकला कि व्यक्ति को अपनी कमाई का 1/8 हिस्सा धर्म के लिए देना चाहिए।
लेकिन अफसोस! धार्मिक उपदेशक यह बताना भूल गए हैं कि इसका उपयोग कैसे किया जाएगा) या स्थानीय सरकार सभी स्थानीय मुद्दों की देखभाल करेगी, जैसे भौतिक सुरक्षा, सुविधा (प्रशासन) और न्याय, भोजन, पानी, हवा, आश्रय, स्वास्थ्य और शिक्षा, मनोरंजन आदि की सुविधाओं की सुरक्षा। अंतिम श्रेणी में 12.5% या आय का 1/8 हिस्सा राष्ट्र/देश को सभी व्यापक राष्ट्रीय मुद्दों जैसे सीमा और व्यापक सुरक्षा, संवैधानिक न्यायालय, अनुसंधान और विकास, विनाशकारी प्रबंधन आदि की देखभाल के लिए दिया जाना चाहिए।

(iv), आय के उपरोक्त वितरण को देखते हुए, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जब कोई व्यक्ति अपनी आय का पच्चीस प्रतिशत समाज और सरकार को पहले ही दे चुका है, तो उसे किसी भी कर और कर लगाने की गतिविधि की आवश्यकता नहीं है। ऐसे में किसी भी विभाग की आवश्यकता नहीं है जो कर (किसी भी रूप में) एकत्र करता हो और रिटर्न दाखिल करने, निगरानी और नियंत्रण का काम देखता हो। इसका मतलब यह है कि राष्ट्रीय सरकार करों के कारोबार से मुक्त होगी चाहे वह पेट्रोलियम और कामोद्दीपक जैसे उत्पादों पर हो या मनोरंजन और खाने-पीने की चीजों जैसी सेवाओं पर हो, परिणामस्वरूप समाज और राष्ट्रीय सरकार किसी भी व्यावसायिक गतिविधियों में खुद को शामिल नहीं करेंगे। यह अच्छा है क्योंकि यह सिद्ध है कि अगर सरकार व्यापार करती है तो जनता भिखारी बन जाती है (सत्ता 1. 1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 1 ... तो प्रजा भिखारी).

(v) कार्य की मात्रा और उसके हिस्से के संग्रह की जटिलताओं को देखते हुए, इसकी निगरानी और नियंत्रण को प्रतिकूल परिस्थितियों में राष्ट्रीय सरकार के सहयोग से समाज द्वारा सबसे अच्छे ढंग से प्रबंधित किया जा सकता है, न कि इसके विपरीत।

(vi), उपरोक्त वितरण को देखते हुए यह स्पष्ट है कि राज्य सरकार, नगर पालिका, पंचायत आदि जैसी किसी भी मध्यस्थ सरकार की आवश्यकता नहीं है, और न ही इसके कर्मचारियों की। इस स्टाफ को या तो स्थानीय सरकार के साथ या राष्ट्रीय सरकार के साथ मामले के आधार पर विलय किया जा सकता है।

(vii), उपरोक्त के मद्देनजर, राष्ट्रीय सरकार द्वारा महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, मिड-डे मील और राशन कार्ड, गैस, पानी, बिजली पर सब्सिडी, महिलाओं को मुफ्त परिवहन और एक या दूसरे वर्ग को अन्य मुफ्त सुविधाएं जैसी योजनाओं को संभालने का कोई मतलब नहीं है। गरीबी उन्मूलन से लेकर नागरिक कल्याण की सभी योजनाएं स्थानीय शासन का विषय हैं और स्थानीय समाज द्वारा ही इनका सबसे अच्छा समाधान किया जा सकता है।

(2). "परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण और समाज द्वारा इसका प्रबंधन" पर विविध दृष्टिकोण :

(2.A) कहा जाता है कि पृथ्वी में हवा, पानी, ऊर्जा और स्थान स्थिर है, इसलिए यदि एक बाल्टी भरी हुई है तो दूसरी सूखी ही रहेगी।

कहा जाता है कि अकाल कुशासन/प्रशासन या व्यवस्था/प्रबंधन का परिणाम है, अन्यथा प्रकृति ने अपने स्वरूप को बनाये रखने के लिए आवश्यकता से अधिक दिया है।

समाज में व्याप्त व्यापक गरीबी, बड़े पैमाने पर शोषण और अमीरों तथा आम लोगों के बीच का भारी अंतर ही सबसे पहले इसकी अधीनता का कारण बनता है और इसकी व्यापक गरीबी को बढ़ाता है। यह आम धारणा के विपरीत है कि समाज की गुलामी सबसे पहले आम जनता में गरीबी का कारण बनती है।

स्वतंत्रता को बड़े पैमाने पर बनाए रखने के लिए गरीबी और गरीबी पैदा करने वाली घटनाओं को कम करना या हटाना आवश्यक है, चाहे वह धार्मिक हो (जैसे कि यह पिछले जन्म में किए गए बुरे कर्मों का परिणाम है, या भगवान के दरवाजे गरीबों के लिए हैं, या पवित्र महीने में दान देना अच्छा है या भिक्षा लेना राजसी है, जैसा कि राजा गौतम बुद्ध और राजा महावीर ने भी माना था) और सामाजिक हो (धनी होना बोझ है, और गरीब ही अच्छी नींद सो सकता है)।

भिक्षा लेने वाले (भिखारी) शायद ही कभी अमीर बन पाए हों। जो लोग भिक्षा, दान और सब्सिडी पर निर्भर हैं, वे मुश्किल से ही एक सभ्य जीवन जी पाते हैं। यह देखा गया है कि मध्यम वर्ग, अमीर और यहाँ तक कि अरबपति भी इन सब्सिडी, दान का फायदा उठाकर हेरफेर करते हैं और अपनी संपत्ति में और इज़ाफा करते हैं, जिससे गरीब और गरीब हो जाते हैं।

समाज को सद्भाव के लिए 'जीवन जीने की कला' के साथ–साथ 'जीवन जीने की कला' को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है, क्योंकि यह देखा गया है कि "गरीबी के समान कोई दुःख नहीं है और संतों के साथ रहने जैसा कोई सुख नहीं है"।

(2.बी). आर्थिक सुरक्षा एक ऐसी सुरक्षा है जो या तो पारिस्थितिकी तंत्र (पर्यावरण–पारिस्थितिकी) में सभी के पास होगी या फिर पृथ्वी पर किसी के पास नहीं होगी। बहुत सतही निरीक्षण से पता चलता है कि हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में अर्थव्यवस्था – ऊर्जा – पर्यावरण – के काम करने के तरीके में बहुत समानता है।

जिन लोगों ने विज्ञान का अध्ययन किया है या प्रकृति का अवलोकन किया है, वे आसानी से कह सकते हैं कि ऊर्जा को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है; इसे केवल आकार या रूप या दोनों में बदलने के लिए छेड़छाड़ की जा सकती है। हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में ऊर्जा की मात्रा निश्चित है। अर्थव्यवस्था, पर्यावरण (हवा और पानी) के बारे में भी यही कहा जा सकता है। दूसरे तरीकों से, जो नियम ऊर्जा के लिए लागू होते हैं , वे अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के लिए भी लागू होंगे। इसे सीधे शब्दों में कहा जा सकता है कि ये एक साथ काम करते हैं।

अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, पर्यावरण, मनोरंजन, शिक्षा, रोजगार और पारिस्थितिकी जैसे सभी महत्वपूर्ण ई–शब्द (शब्द जो अक्षर E से शुरू होते हैं) का इको सिस्टम या कहें कि पृथ्वी की प्रणाली के साथ एक बड़ा और समान संबंध पाया जाता है। यह पूरा पैरामीटर हमारी भावनाओं को प्रभावित करता है।

इस संबंध में यह कहा जा सकता है कि, ठोस आधार वाली अर्थव्यवस्था या जमीनी संसाधनों और गतिविधियों (पृथ्वी की सतह पर होने वाली गतिविधियां (कृषि वानिकी)) पर आधारित अर्थव्यवस्था कायम रहती है, जबकि भूमिगत (तेल और गैस, खनन) या जमीन के ऊपर (एयरोस्पेस और उपग्रह) संसाधनों और गतिविधियों पर आधारित अन्य सभी गतिविधियां लंबे समय तक नहीं टिक पाती हैं।

(2.सी) आय का समुचित वितरण न होने के कारण घर में रहने वाले लोगों – जैसे माता–पिता, पत्नी, बच्चे और यहाँ तक कि युवा वर्ग का महत्व और सामाजिक मान्यता बहुत कम हो गई है, जिसके कारण व्यवस्था में काम करने की सामान्य इच्छा पैदा हो गई है, जिसके बदले में पैसे मिलते हैं। दूसरी ओर, घर में बच्चों के पालन–पोषण का काम नानी/नौकरानी, बुजुर्गों, भगवान और घर के ताले–चाबी के हवाले हो गया है। जीवन की गुणवत्ता में कमी आई है, इसलिए परिवार और समाज में सभी लोग किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त देखे जा सकते हैं। क्या व्यापक बदलाव की आवश्यकता है?

(2.D) यदि हम ताकत को जिम्मेदारी और सुरक्षा को ताकत न मानकर ताकत को ही अधिकार मानते रहेंगे तो लूट/डकैती ताकत बन जाएगी और इसी प्रकार यदि हम लाभ को अधिकार (न्यायसंगत के स्थान पर) मान लेंगे तो धोखा ताकत बन जाएगा, ऐसी स्थिति में न केवल व्यक्तिगत आम आदमी/महिला जीवित रहेगी बल्कि उसका परिवार और हमारा देश और समाज भी लंबे समय तक जीवित नहीं रहेगा।

उपरोक्त प्रश्न यह सुझाव देते हैं कि यदि परिवार, समाज, देश और विश्व स्थिरता, शांति और सद्भाव, स्थिरता (कुछ लोगों के संकीर्ण और संकीर्ण स्वार्थ की सेवा के अलावा) चाहता है तो विभिन्न पेशेवरों के वेतन और भत्ते, फीस और सेवा शुल्क, विभिन्न वस्तुओं की मूल लागत और उनके लाभ मार्जिन, पेटेंट वस्तुओं की लागत और बौद्धिक संपदा अधिकारों की **रॉयल्टी** को न्यायसंगत, उचित, वहनीय और कमोबेश स्थिर रहना होगा।

18. (वैकल्पिक) अर्थव्यवस्था और पारिस्थितिकी तंत्र के अर्थशास्त्र का प्रबंधन

प्रस्तुत है: प्रस्तुतीकरण दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1) मुद्दे और व्यापक रूपरेखा। (2) वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के एजेंडे को शुरू करने के लिए भारत एक बेहतर स्थान क्यों हो सकता है,

(1) मुद्दे और व्यापक रूपरेखा:

इस पुस्तक में नया कुछ भी नहीं है; पिछले सत्रह अध्यायों में जो कुछ भी लिखा गया है, वह प्रचलन में है। हमेशा की तरह, बहुत लंबे समय तक सुचारू रूप से चलने के बाद व्यवस्था में आत्मसंतुष्टि आ जाती है और लोग अनावश्यक रूप से अपना दिमाग लगाना शुरू कर देते हैं और बेकार के तर्क के बहाने व्यवस्था के साथ खेलना शुरू कर देते हैं कि सुधार की हमेशा गुंजाइश रहती है।

इस सरल समझ के बावजूद कि अनंत में कुछ भी जोड़ने की संभावना नहीं है, पूर्णता में सुधार की कोई संभावना नहीं है। जब मन को अनावश्यक रूप से परिपूर्ण प्रणालियों में सुधार करने की इच्छा के साथ भी लगाया जाता है, तो क्या होता है, परिपूर्ण प्रणाली सभ्यता और चरित्र अधिक परिपूर्ण या कम परिपूर्ण नहीं बनते हैं, ये मूल रूप से टूट जाते हैं और रसातल में गिर जाते हैं। हमारे पतन का यही मामला है। अब पुनर्जीवित करने के लिए, जो कुछ भी करने की आवश्यकता है, वह कुछ नया करने की नहीं है, बल्कि केवल उस प्रणाली और प्रक्रियाओं को बहाल करने या पुनर्जीवित करने की है जिसका हम कभी पालन करते थे (जिनमें से काफी बड़ी संख्या में इस दस्तावेज़ में रखे गए हैं) और सावधान, सतर्क और सावधान रहना है। ऐसा कहा जाता है कि जो लोग सभी काम करते हैं और अपने काम (कर्म) को अपने काम के लिए समर्पित करते हैं, उन्हें सफलता जल्दी ही मिलती है।

आध्यात्मिक जगत में कहा जाता है कि अर्थव्यवस्था और सामान्य शासन की बहाली के लिए भारत (इंडिया) से शुरुआत करना बेहतर हो सकता है। इस कार्य के लिए भारत (इंडिया) को क्यों चुना गया, यह नीचे दिए गए कुछ तर्कों से समझा जा सकता है:

(2) <u>वैकल्पिक अर्थव्यवस्था के एजेंडे को शुरू करने के लिए भारत एक बेहतर स्थान क्यों हो सकता है</u> :

(2.A) सामान्यतः यह देखा गया है कि प्रत्येक धर्म के प्रचारक/पुजारी स्वयं को आतंकवादियों, चोरों, लुटेरों, धोखेबाजों, लुटेरों तथा तथाकथित शैतानी ताकतों से अलग रखते हैं, तथा समाज में भय फैलाने, घृणा और शत्रुता पैदा करने जैसे अधार्मिक कार्य करते रहते हैं।

इन ताकतों के विपरीत, संत और साधु अच्छे काम करते रहते हैं लेकिन श्रेय लेने से खुद को दूर रखते हैं। वैसे तो हर देश में शैतान और साधु होते हैं लेकिन भारत को प्राचीन काल से ही साधुओं और संतों का निवास माना जाता रहा है। संतों और साधुओं की मौजूदगी के कारण ही भारत–भारत के नाम से जाना जाने वाला यह देश सदियों से चली आ रही तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद अपनी धार्मिकता को बनाए रखने में भाग्यशाली रहा है।

इसके अलावा, संतों और साधुओं के ऐसे प्रतिष्ठित वर्ग की उपस्थिति के कारण, भारत विभाजन के दौरान हिंदू राष्ट्र बनने के लिए जबरदस्त दबाव के बावजूद, स्वयं को एक धर्म–निरपेक्ष (पूर्णतः धार्मिक) देश के रूप में बनाए रखने में सक्षम रहा है।

हालांकि भारत की स्थिति इतनी भी अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है? तीन राष्ट्रों और प्रत्येक राष्ट्र के भीतर कई राज्यों के रूप में विभाजित होने की स्थिति से, फिर भी कुछ विकास और प्रगति देखी जा सकती है। भारत के बारे में सकारात्मक बात यह है कि इसके बच्चे आत्मविश्वास प्राप्त कर रहे हैं और अब उनमें अपने प्रति आस्था, अपनी संस्कृति और परंपराओं के प्रति गर्व देखा जा सकता है। संतों और साधुओं के आशीर्वाद से, भारत–भारत अब खुद को खड़ा होने और सनातन आर्थिक व्यवस्था को बहाल करने और आर्थिक क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी बुराइयों को खत्म करने के लिए उपयुक्त पाता है।

(2.B). वैसे तो हम भारत को विश्वसनीय और अविश्वसनीय देश बताने के लिए बहुत नारे लगा रहे हैं, लेकिन इसमें यह नहीं बताया जा रहा है कि यह क्या होगा और क्या नहीं होगा? जबकि भारत क्या है और भारत का क्या मतलब है, इसकी पर्याप्त अभिव्यक्ति है, कहा जाता है कि भारत का मतलब है सभी की भलाई के लिए अच्छे लोगों द्वारा सुशासन।

आगे और भी प्रश्न पूछे जा रहे हैं? क्या भारत एक विचार है या यह सिर्फ एक भूमि का टुकड़ा है, या यह किसी चीज का प्रतीक है, या यह शब्दों का मिश्रण है, या यह एक संक्षिप्त नाम है या एक विशेषण या क्रिया है या भारत एक दिया गया नाम है या एक निर्दिष्ट नाम है?
पिछले कुछ हज़ार वर्षों में कई लोगों ने "हिंदुस्तान – भारत" को हिमालय और हिंद महासागर के बीच सिंधु और ब्रह्मपुत्र नदी से घिरा एक क्षेत्र माना है और इस क्षेत्र को "भगवान की भूमि या देवताओं की भूमि / ब्रह्मा की भूमि" और इसके बच्चों / निवासियों को हिंदुओं और ब्रह्मपुत्र (सिंधु / हिंदू) के रूप में संदर्भित किया है। एवं ब्रह्मपुत्र)। लेकिन यह कहा जा सकता है कि भारत एक ऐसी उपाधि है जो जनमानस को आलोकित करने और वर्गों को प्रबुद्ध करने के लिए किए गए कार्यों के कारण अर्जित की गई है।

भारत नाम (भा–प्रकाश, और रत–व्यस्त, भारत = भा + रत) ⇒ भा = प्रकाश , रोशनी , ज्योति + रता = व्यस्त , संलग्न , ⇒ प्रकाशित करने के लिए की काम में ' व्यस्त ' नाम

इसकी गुणवत्ता और मानव जाति को प्रबुद्ध करने के प्रयासों के कारण आया है, जबकि 'हिंदुस्तान' और 'इंडिया' नाम इसे दूसरों द्वारा सामान्य स्रोत 'सिंधु' से दिया गया है जैसे: (i)। ' सिंधु –हिन्दू –हिन्दुस्तान' (सिन्धु –हिन्दू -हिन्दुस्तान), (ii) . 'सिंधु' – 'इंदु' – 'भारत' (सिंधु – इंदु – भारत),

(2.सी) कहा जाता है कि "हिंदी– हिंदू और हिंदुस्तान" "संस्कृत–सनातन धर्म और संसार/भारत" का अपभ्रंश (भ्रष्ट संस्करण) है।
यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि भारत में हर कोई इस बात से सहमत है कि यह "संस्कृत–सनातन धर्म और भारत" है जो इसे (हमें) "हिंदी–हिंदू और हिंदुस्तान" के अर्थों से अधिक परिभाषित करता है। भाषा, धर्म और देश की वैज्ञानिक प्रकृति की बुनियादी समझ में इस भ्रष्टाचार ने पूरी मानवता के लिए जितनी समस्याओं का समाधान किया है, उससे कहीं अधिक समस्याएं पैदा की हैं।

हालांकि, कुछ बुद्धिमान लोग, जो कंप्यूटर और सॉफ्टवेयर क्षेत्र से हैं, कहते हैं कि "हिंदी– हिंदू और हिंदुस्तान" एल्गोरिदम का एक फ्रंट–एंड संस्करण है जो "संस्कृत– सनातन धर्म और भारत" है, और कुछ अन्य कहते हैं कि "हिंदी– हिंदू और हिंदुस्तान" मूल की शाखा है जो "संस्कृत–सनातन धर्म और भारत" है, फिर भी कुछ अन्य लोग कहते हैं कि "हिंदी – हिंदू और हिंदुस्तान" एक नदी की तरह है, जबकि "संस्कृत– सनातन धर्म और भारत" एक महासागर, एक बादल और पहाड़ है, जहां से यह नदी निकलती है, पानी पाती है और डूब जाती है।

गुरुजनों का कहना है कि भारत और दुनिया में मुख्य समस्या विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और भाषाओं का मूल/स्रोत अर्थात "संस्कृत–सनातन धर्म और भारत" से अलग होना है। ऐसा कहा जाता है कि यदि हम बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं (स्वयं के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ हमारे दैनिक व्यवहार में) तो हम निश्चिंत हो सकते हैं कि बड़े पैमाने पर मंथन/परिवर्तन आने वाले हैं। हम सभी को सहयोग करने की आवश्यकता है, न कि सर्वांगीण शांति और सद्भाव की बहाली के इस लंबे समय से प्रतीक्षित कार्य में बाधा बनने और बाधा उत्पन्न करने की। ***

<u>बंदना चौधरी</u>

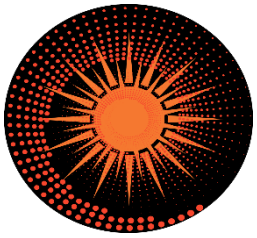

धर्म का पुनरुत्थान

भाग-2

आर्थिक संस्थाओं, प्रणालियों और बाह्य उपकरणों पर नोट्स (मीता– लाइफ स्टाइल एजेंडा से संपादित अंश)

1. जीवन शैली

जब थक जाओ तो आराम करो, जब काम खत्म हो जाए तो सो जाओ।
जब दिन भर का काम पूरा हो जाता है तो थककर आराम और नींद लेते हैं और जब जीवन का पूरा काम पूरा हो जाता है तो अंतिम विश्राम और गहरी नींद (मृत्यु) लेते हैं।
एक ही तरह का काम दोबारा आने पर दोबारा आएं, काम पूरा करें और काम समाप्त कर लें।
संसार की रचना उनकी (अल्लाह-सब, ब्रह्म-ब्रह्मांड (ब्रह्मांड)) लीला है, इस रचना/लीला में चक्र कभी यहां तो कभी वहां चलता रहता है, और प्रत्येक भाग और अतिरिक्त भाग को दिए गए समय और स्थान में उपयोग किया जाता है, उस प्रतिमान में उचित मान्यता के साथ।

हर व्यक्ति, हर अंग एक निश्चित लक्ष्य के लिए यहाँ है, हर कोई जन्म लेता है, जीता है और फिर मर जाता है, उसी उद्देश्य की पूर्ति करता है। ऋषि इसे समझते हैं, ज्योतिष इसकी घोषणा करता है, हस्तरेखा शास्त्र इसकी भविष्यवाणी करता है, रेकी इस तक पहुँचती है, टैरो इसके बारे में बताता है। इन पर विश्वास करने वाले व्यक्ति सभी की बात सुनते हैं और अपने कर्तव्य/उद्देश्य की पूर्ति की ओर बढ़ते हैं।

जो द्रष्टा सम्पूर्ण वस्तु को समग्रता में देखते हैं, यह देखते हैं कि कहां समतल सतह है, कहां अवसाद है, कहां दमन है, कहां आक्रमण है और कहां लक्ष्य है तथा लक्ष्य के बाद क्या है, वे समझते हैं कि समय व्यतीत करना कितना कठिन है, और इस तरह हमारे (आंखों के) सामने पर्दे डाल दिए जाते हैं ताकि यह खेल चलता रहे, चलता रहे, चलता रहे...

इस लीला में प्रातः उठते समय इस सृजक को स्मरण किया जाए और दिन के कार्य के प्रारम्भ में, फिर अवकाश के समय, फिर दिन का कार्य समाप्त होने के बाद, फिर विश्राम से पहले, फिर विश्राम के बाद, इत्यादि को स्मरण किया जाए, और यह पर्याप्त है।
माँ कहती हैं: इस समय में दिन में ऐसा कुछ मत करो जिससे रात में हमारी नींद खराब हो, और रात में ऐसा कुछ मत करो जिससे दिन में हमारी शक्ल या सूरत खराब हो। इस समय में अल्लाह/ब्रह्मा की धुन पर गाना और नाचना सबसे अच्छा है।

जो लोग अपना काम करते हुए अधिक याद रखते हैं, उन्हें नाटक में महत्वपूर्ण भूमिका मिलती है, और जो लोग लगातार याद रखते हैं और काम कर रहे हैं, वे सबसे महत्वपूर्ण बन जाते हैं, जो केवल काम करते हैं और जो केवल याद रखते हैं उन्हें अस्थायी महत्व मिलता है और जब ये लोग सामंजस्य खो देते हैं तो उन्हें किनारे कर दिया जाता है।

जब तक खेल सुचारू रूप से चलता है, तब तक सब कुछ सामान्य रहता है, जब लोग भटक जाते हैं, तो इसका कार्यवाहक पैगम्बर प्रकट होता है और जब खेल में व्यवधान आता है, तो उसे अधिकाधिक प्रयास द्वारा ठीक किया जाता है।
सामान्यतः जीवन शैली वही होनी चाहिए जो विभिन्न धर्मगुरुओं ने कही है, तथा कबीर ने भी यही कहा है।

" खेलिबा , खोबा , धारीवा ध्यानम " – खेलिबा, खैबा, धारीव ध्यानम (खेलें, खाएं और ध्यान/याद करें), या नानक के रूप में
" काज करो , बंट चाखो , नाम जपो , काज करो, बंट चाखो, नाम जपो", (काम करो, एक साथ खाओ, और भगवान को याद करो), और यह सब जीवनशैली के बारे में है–
"प्रार्थना करें, खेलें और पार्टी करें" – अकेले में प्रार्थना करें, खिलाड़ियों के साथ खेलें (काम करें) और साथियों के साथ पार्टी करें। **

2. सफल (सफलता) – सही फल

सभी जानते हैं कि बच्चे यौन क्रिया से पैदा होते हैं, फिर भी सभी समझते हैं कि यह केवल यौन क्रिया (काम–कर्म) नहीं है, जो समान प्रकार के प्रजनन के लिए जिम्मेदार है या कहें कि प्रजनन करता है। गुणसूत्रों में अराजकता पैदा करने वाली यौन क्रिया से बच्चे पैदा हो भी सकते हैं और नहीं भी। किस तरह का निर्माण होगा यह साथी की शारीरिक और मानसिक स्थिति, स्थान और मौसम आदि पर भी निर्भर करता है, और ये सभी भावी बच्चे और बच्चे के भविष्य को आकार देते हैं।

शिशुओं की सफलता की कहानी ऊर्जा और दूध चूसने से शुरू होती है। जो लोग अधिक मात्रा में चूसते हैं (SUCk–exCESS) वे तथाकथित सफल हैं और जो मधुमक्खियों की तरह चूसते हैं वे सफल – सफल – फलदायी/सुसंस्कृत हैं। अधिक मात्रा में चूसने से माँ और बच्चे (देने वाले और लेने वाले) को बीमारी होती है, जबकि ज़रूरत/उपयुक्तता के अनुसार चूसने से दोनों और अन्य सभी को संतुष्टि मिलती है।

पिछले बीस सालों में (भारत में) अनगिनत लोगों का ज़िक्र किया गया, जिनमें भिखारी, किसान, सुधारक, हवाई जहाज़ चलाने वाले, ड्राइवर और चालक, करोड़पति और अरबपति कानून बनाने वाले और कानून तोड़ने वाले, प्रधानमंत्री भी शामिल थे, सभी ने कहा कि उनके माता–पिता आर्थिक रूप से थोड़े कमज़ोर थे, लेकिन जिन लोगों से बात की गई, उनमें से हर एक के दादा गरीब थे। इन सभी लोगों ने कहा कि "ऐसा इसलिए है क्योंकि उनके दादा–दादी के समय में देश स्वतंत्र नहीं था, और उनके माता–पिता के समय में देश अपनी शैशवावस्था में था और अब हम कह सकते हैं कि हम किशोरावस्था में हैं"।

सभी ने कहा कि सफलता भले ही व्यक्तिगत प्रयास है, लेकिन परिणाम सामूहिक इच्छा, अभिलाषा और नियति का परिणाम है। सभी ने कहा कि अगर व्यक्तियों के बीच का अंतर पांच सितारा होटलों और पांच वर्ग मीटर की झोपड़ियों की तरह बहुत बढ़ जाता है तो डकैती और लूटपाट, दमन और आक्रमण, उकसावे और संरक्षण, जीवन बचाने और जीवन लेने के तंत्र बढ़ जाते हैं। इस प्रकार, सफलता के लिए सभी ने प्रकृति पर आधारित व्यवस्था की आवश्यकता बताई। एक सफल समाज के लिए, हमें वर्तमान गतिविधियों/चीजों में से कई को अलग तरीके से करना पड़ सकता है, और कई नई और आने वाली गतिविधियाँ भी इसी तरह की हो सकती हैं। वे लोग, “जो प्रकृति या सर्वशक्तिमान के मार्गदर्शन का पालन करते हैं और अपने कार्य (कर्म) को प्रकृति को समर्पित कर देते हैं, उनके कर्म से सफलता शीघ्र ही प्राप्त होती है, और ऐसे लोग सुखी और प्रेममय होते हैं”। **

3. ज़िम्मेदारी

(क) एक ऋषि द्वारा यह घोषित करने पर कि वह चरित्रहीन है, राजा/प्रधानमंत्री ने उससे पूछा, 'क्या इसका अर्थ यह है कि वह छेड़खानी, चोरी, डकैती आदि का सहारा लेगा?'
ऋषि ने उत्तर दिया कि चरित्रवान होना एक जीवित मशीन की तरह पूर्वनिर्धारित, पूर्व-निर्धारित होना है जबकि जब कोई 'जागृत' होता है और प्रकृति के साथ रहना शुरू करता है; वह प्रतिक्रिया करने में सक्षम हो जाता है या प्रतिक्रिया करने योग्य होता है। जब कोई प्रतिक्रिया करने में सक्षम होता है, तभी वह जिम्मेदार होता है (प्रतिक्रिया-क्षमता)। इसके अलावा, जब कोई जिम्मेदार नहीं होता है, तभी उसे चरित्रवान बनाया जा सकता है।

हमारे देश के मौजूदा हालात को देखते हुए हम यह कह सकते हैं कि यहां कोई भी जवाब देने में सक्षम नहीं है, चाहे वह महामहिम हों या महामहिम, मुख्य न्यायाधीश हों या तथाकथित स्वतंत्र प्रेस, और इसलिए कोई भी जिम्मेदार नहीं दिखता। लोकतंत्र के पांच स्तंभ (जनता, संसद, न्यायपालिका, कार्यपालिका और प्रेस) पिछले कई सालों में एक मंजिला इमारत नहीं बना पाए हैं और आज भी अलग-अलग स्तंभों के रूप में खड़े हैं और आम आदमी असमंजस की स्थिति में यह नजारा देख रहा है।

यहाँ तथाकथित जिम्मेदारी के नाम पर कभी मंत्री को इस्तीफा देना पड़ता है, कभी किसी जूनियर कर्मचारी की गलती के लिए चेयरमैन को निलंबित कर दिया जाता है, तो कभी किसी जज की गलती के लिए पुलिस इंस्पेक्टर को जेल भेज दिया जाता है। यहाँ बंपर फसल के बीच गेहूं आयात किया जाता है और प्याज की कमी के समय निर्यात किया जाता है, लेकिन किसी को जिम्मेदारी का अहसास नहीं होता। यहाँ पुलिस घटना के बाद पहुँचती है और मौत के बाद फैसला सुनाया जाता है। यह इतना घालमेल है कि कोई भी किसी पर सीधे आरोप नहीं लगा सकता - कुल मिलाकर यह गैरजिम्मेदार व्यवस्था है, जो भगवान की कृपा पर चल रही है। बहुत कम लोग जो ईमानदार और समझदार हैं, उन पर इसका बोझ पड़ता है और वे अतिरिक्त पीड़ा महसूस करते हैं।

(बी) निम्नलिखित सुधार हेतु प्रस्तुत है:

1) पांच स्तंभों यानी सार्वजनिक 'संसद, प्रेस, न्यायपालिका और कार्यपालिका' में से हमें यह तय करना और घोषित करना है कि सर्वोच्च नेता कौन है और समग्र रूप से जिम्मेदार कौन है। एक बार जब उपरोक्त तय हो जाता है तो हमें नेता को पूरे पांच स्तंभों में व्यवस्था सुधार करने के लिए मजबूर करना होगा, ताकि दिशात्मक और जिम्मेदार व्यवहार और कामकाज हो सके।

2) समाज और पारिवारिक व्यवसाय में सरकार के अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण उनमें जिम्मेदारी का व्यवहार कुछ हद तक समाप्त हो गया है। कल्याणकारी सरकार की अवधारणा ने समाज के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारी को अलविदा कह दिया है। कहा जाता है कि स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आती है; बल्कि सच इसके विपरीत है। जब कोई जिम्मेदार होता है, तभी वह स्वतंत्रता का लाभ उठा सकता है, अन्यथा वह शारीरिक रूप से स्वतंत्र होने पर भी मानसिक रूप से पराधीन रहता है। **

4. स्वतंत्रता

(A) पैगम्बर मोहम्मद से उनके शिष्य ने पूछा, 'क्या हम स्वतंत्र हैं या नहीं?

पैगम्बर साहब ने प्रश्नकर्ता से एक पैर उठाने को कहा और शिष्य ने भी ऐसा ही किया। पैगम्बर जी ने दूसरा पैर उठाने को कहा। शिष्य ने कहा कि यह संभव नहीं है।

पैगम्बर जी ने कहा, "हम इतने स्वतंत्र हैं और इतने जुड़े हुए हैं कि एक पैर उठाने के लिए हम स्वतंत्र हैं और दूसरा पैर बायां या दायां उठाने के लिए भी स्वतंत्र हैं। जब पहला कदम तय हो जाता है और व्यक्ति अपना एक पैर उठा लेता है, तो दूसरा कदम भी उसके पीछे ही चलना चाहिए।"

बोर्न फ्री एक अवधारणा है जो एक तक ही सीमित है। " बिन पग चले सुनहु बिन काना – बिन पग चले, सुनहु बिन काना" (जो बिना कदम चले, बिना कान के सुने अर्थात सर्वशक्तिमान)। हम इस तथ्य को शांति से स्वीकार करते हैं और प्रार्थना करते हैं कि हमारा पहला कदम धार्मिकता हो।

(बी)। निम्नलिखित पर ध्यान दिया जा सकता है:

(1) गैरजिम्मेदार व्यक्ति, समाज या राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता खो देता है और एक या दूसरे के अधीन हो जाता है। स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आती है, इसलिए केवल जिम्मेदार, साहसी लोग और समाज ही स्वतंत्र रह सकते हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि पुरुष और महिला का सामान्य स्वास्थ्य और ऊंचाई भी उनकी स्वतंत्रता पर निर्भर करती है, और इसे गांवों, कस्बों, शहरों, महानगरों और स्वतंत्रता से पहले और बाद की अवधि के बीच औसत स्वास्थ्य और ऊंचाई के बीच सरल तुलना से समझा जा सकता है।

(2). जो व्यक्ति अकेले खड़ा होने में सक्षम है, वह स्वतंत्र है, फिर भी सबसे अधिक जिम्मेदार है। ऐसे में केवल साहसी, साहसी लोग ही स्वतंत्रता मांग सकते हैं, ले सकते हैं और वहन कर सकते हैं, चाहे वह व्यक्ति हो, प्रेस हो, समाज हो या देश हो। आइए हम एक व्यक्ति के रूप में, एक परिवार के सदस्य के रूप में, एक आम नागरिक के रूप में, एक अर्थशास्त्री, न्यायाधीश, शिक्षक, राजनीतिज्ञ आदि के रूप में अपने हर कार्य के लिए जिम्मेदार बनें और जिम्मेदार बने रहें। तभी हम स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं, स्वतंत्रता को बनाए रख सकते हैं और बनाए रख सकते हैं। **

5. धर्म

(अ). "धार्यते इति धर्म" जो सब कुछ समाहित करता है, वह धर्म है। धर्म आस्था है, जो हर शरीर में जन्मजात है, और प्रकृति में सनातन है। मनुष्यों में यह पहले अर्थ – यानी साधन, अर्थ, धन और शरीर के बाद काम (काम, सेक्स – शारीरिक प्रेम) फिर धर्म (शारीरिक प्रेम और मानसिक शारीरिक प्रेम – एक क्षेत्रीय प्रेम) फिर मोक्ष – स्वतंत्रता (परोपकार या केवल प्रेम – सभी को शामिल करते हुए) का रूप लेता है, इस चौथे चरण में यह धर्म बन जाता है।

धर्म सनातन है; धर्म प्राकृतिक है और प्रकृति के साथ एक है, धर्म पूरे क्षेत्र और धर्म को अपने दायरे में समेटे हुए है। ऋषियों ने ईश्वर, अल्लाह और भगवान को सर्वशक्तिमान, सभी में मौजूद, सभी के चरित्र में और एक अभिन्न आत्मा के रूप में वर्णित किया है। अभिन्न आत्मा, सभी को एकीकृत करती है और कोई भेदभाव नहीं छोड़ती।

वेद–पुराण, कुरान–बाइबिल हमारी आत्मा है और हम इनसे परिभाषित होते हैं, लेकिन फिर भी हम कल क्या करने जा रहे हैं, यह नहीं बताया जाता। ऋषियों और सूफियों ने जिस तरह से अपना जीवन जिया, वह इस चौथे चरण की गवाही देता है। धर्म आंतरिक है जो बाहरी विकास के लिए कर्म को सींचता है, दोनों के बीच दृढ़ संबंध किस्मत को परिभाषित करता है जो बदले में जीवन में लय लाता है।

धर्म एक नदी (शायद सबसे शुद्ध गंगा) की तरह है जो सनातन में परिणत होती है। धर्म/नदियाँ बाढ़ ला सकती हैं, सूख सकती हैं लेकिन कभी समुद्र के बराबर नहीं हो सकतीं। सभी नदियों को समुद्र से पानी मिलता है और सभी धर्मों को सनातन धर्म से मूल ऊर्जा मिलती है। धर्म से वियोग (व्यक्तिगत या समूह का), व्यक्ति को जड़ से अलग कर देता है/उतराता है जो आमतौर पर लंबे समय तक नहीं टिकता।

अध्यात्म ही राजनीति समेत सभी चीजों का आधार है। अध्यात्म के आधार पर ही राष्ट्र बनते हैं और क्षेत्र तथा धर्म की अनुकूलता के अनुसार भौगोलिक आकार लेते हैं। राजनीति राजनीति से निकला एक पेशा है और कई लोगों के लिए राजनीति किसी भी अन्य पेशे की तरह ही है।

(बी)। उपरोक्त सुझाव निम्नलिखित है :

1. सभी धर्म महान हैं, यदि वे महान न होते तो इतने लंबे समय तक जीवित नहीं रह पाते। किसी एक धर्म को खत्म करने के बजाय हमें उसे बढ़ावा देना चाहिए और उसके डूबने या आत्मसात होने का इंतजार करना चाहिए, जैसे विभिन्न नदियाँ समुद्र, सनातन में डूब जाती हैं।

2. सभी धर्म क्षेत्र से उत्पन्न होते हैं। जहाँ क्षेत्र एक धर्म से आच्छादित है, वहाँ धर्म स्वतः ही पूरे क्षेत्र (जैसे वेटिकन) पर शासन करने लगता है, लेकिन जहाँ विभिन्न क्षेत्र और धर्म मिलकर एक देश बनाते हैं, वहाँ लोगों का समूह किसी भी या सभी क्षेत्रीय या धार्मिक शक्तियों पर हावी हो जाता है, और यही स्वाभाविक (धर्म) है और इसे शांति से स्वीकार करना चाहिए।

3. पिछले छब्बीस सौ सालों में धर्म या तो तलवार के बल पर या रणनीतिक राज्य शक्ति के बल पर फैला, लेकिन कभी भी धार्मिक वर्चस्व के कारण नहीं फैला। एक दूसरे से जुड़ी और इंटरनेट से जुड़ी दुनिया में धर्म को अपने फायदे के लिए आगे बढ़ना चाहिए। इस परिदृश्य में हर धर्म सभी धर्मों की तुलनात्मक प्रस्तुति में भाग लेना पसंद कर सकता है।
भारत को विशाल मुस्लिम जनसंख्या और सर्वाधिक हिन्दू जनसंख्या के आधार पर विश्व का स्वाभाविक धार्मिक नेता कहा जा सकता है। भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी धर्मों के सार को विश्वव्यापी जनसंख्या तक फैलाने की यह स्वाभाविक जिम्मेदारी उठाए ।

6. विज्ञान

(ए). अंग्रेजी शब्द साइंस शब्द कॉन्शियस (कॉन–साइंस) से आया है, जिसका अर्थ है कि कॉन्शियस शब्द का अर्थ है, "गलत और सही का ज्ञान और समझ"। साइंस शब्द में गलत और सही की समझ को छोड़ दिया जाता है या हटा दिया जाता है और इस प्रकार विज्ञान केवल ज्ञान बन जाता है। विज्ञान केवल ज्ञान है, काफी हद तक यह व्यवस्थित है और गलत और सही की किसी भी जांच के बिना 'क्या और कैसे' जैसे सवालों के जवाब देने की कोशिश करता है और इसीलिए हम कहते हैं कि विज्ञान अंधा है।

इसके विपरीत भारत में हमने 'विज्ञान' शब्द दिया है, जिसका अर्थ है 'विशेष ज्ञान'; यहाँ 'ज्ञान' का अर्थ ही गलत और सही की समझ है, और इस प्रकार विज्ञान का अर्थ है गलत और सही की विशेष या अनुभव की गई समझ। यह भी कहा जा सकता है कि जब ज्ञान समझ बन जाता है और अनुभव भी हो जाता है तो वह विज्ञान बन जाता है, यहाँ विज्ञानी का अर्थ है विशेष दृष्टि वाला।

कहा जाता है: "विज्ञान और वेदांत की परिभाषा स्पष्ट है; संन्यास और योग वास्तविक सत्य हैं"। (विज्ञान–प्राप्त विज्ञान, वेदांत–वेद+अंत: जो अनुभव किया गया हो, संन्यास–अच्छाई के साथ रहना, योग–योग, आंतरिक और बाह्य रूप से जुड़ा हुआ)।

(ब) इसके अलावा अगर हम जीवन के विभिन्न लेन–देनों पर विचार करें, तो हम समझ सकते हैं कि मनुष्य के जीवन में होने वाले दस लाख लेन–देनों में से विज्ञान केवल बीस प्रतिशत लेन–देनों पर ही विचार करता है; और उसके परिणाम अस्सी से नब्बे प्रतिशत सही होते हैं, हमारी कल्पना अस्सी प्रतिशत लेन–देनों पर विचार करती है और उसके परिणाम लगभग चालीस प्रतिशत सही होते हैं, जबकि हमारी अंतर्ज्ञान सौ प्रतिशत लेन–देनों पर विचार करती है और उसके परिणाम लगभग पैंतीस प्रतिशत सही होते हैं। इसलिए अगर हम तुलना करें तो दस लाख लेन–देनों में से विज्ञान एक लाख अड़सठ हजार, कल्पना तीन लाख बीस हजार और अंतर्ज्ञान तीन लाख पचास हजार सही उत्तर देता है। एक तरह से कल्पना और अंतर्ज्ञान को मिलाकर छह लाख सत्तर हजार सही उत्तर मिल सकते हैं, जबकि विज्ञान केवल एक लाख अड़सठ हजार सही उत्तर देता है।

(सी) आगे विज्ञान कहता है,

A, A है और यह गैर A नहीं है

ताओ प्रणाली कहती है,

A, A है और Z के लिए विधेय के रूप में भी है

जबकि वेदांत प्रणाली कहती है,

A, न तो A है और न ही A है

यह A के सभी अर्थों को समाहित करता है, A को A के रूप में, A को प्रथम के रूप में, A को एक के रूप में, A को Z के लिए विधेय के रूप में, और फिर भी कहता है (नेति–नेति–) यह नहीं है, यह नहीं है और इस तरह A के अनंत अर्थ को समाहित करने के लिए खुला है।

विज्ञान चेतना है, कल्पना अवचेतन है और अंतर्ज्ञान अचेतन है और हम तीनों की बढ़ती विशालता को जानते हैं। अचेतन परत प्रकृति के साथ कंपन करती है और यही कारण है कि अंतर्ज्ञान किसी भी व्यक्ति को प्रश्न देता है और अधिकतम सही उत्तर भी देता है। सभी वैज्ञानिक विकास अंतर्ज्ञान और/या कल्पना का परिणाम हैं, और, इस तरह, विज्ञान को अतिरिक्त महत्व देने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(डी) विज्ञान भैरव तंत्र सर्वोच्च है; विज्ञान के बाद ज्योतिष और उसके बाद चेतना विज्ञान है और इन्हें उसी तरह महत्व और अभिव्यक्ति की आवश्यकता है। ऐसा कहा जाता है कि बुद्ध को विज्ञान भैरव तंत्र की पहली विधि से ज्ञान प्राप्त हुआ था और विज्ञान भैरव तंत्र में ऐसी एक सौ बारह विधियाँ हैं।

वर्तमान विज्ञान सूक्ष्म से सूक्ष्मतम के बारे में अधिक से अधिक जानने में व्यस्त है, अर्थात थोड़े से थोड़े के बारे में अधिक से अधिक जानने में अथवा अंततः 'कुछ नहीं' के बारे में अधिक से अधिक जानने में। यह परम 'कुछ नहीं' के बारे में अधिकतम (अनंत) जानने की ओर ले जाता है तथा यह बोध कराता है कि यह एक वृत्त है; इस स्तर पर शून्य (0–वृत्त) तथा अनंत (दोहरा वृत्त) की खोज की गई तथा यह एक स्वाभाविक परिणाम है।

शून्य के आगमन के साथ ही यह भी खोज की गई कि शून्य को 0.01 से पहले रखने से एक का वाल्व कम हो जाता है, जबकि शून्य को 1 के बाद जैसे 100 रखा जाए तो उसका मूल्य बढ़ जाता है, व्यक्ति का मूल्य बढ़ जाता है, इसलिए शून्य और अनंत का शोधकर्ता होने पर गर्व करने के बजाय हमें परिणाम को अपने हिसाब से लेना चाहिए। इन शब्दों की खोज या शोध करना परम प्राप्ति की ओर संकेत करता है। चूंकि खोजकर्ता या शोधकर्ता पूरी मानव जाति के लिए हैं, इसलिए किसी भी शोध या गर्व पर शर्म करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(ई) उपर्युक्त के मद्देनजर हम यह नोट करना चाहेंगे कि:
(i) सुपर कंप्यूटर सिस्टम पर भी की जाने वाली प्रार्थनाएं पूरी तरह से प्रकृति के साथ तालमेल में होती हैं।
(ii) साइंस की जगह विज्ञान नाम का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि विज्ञान के प्रति अंधता दूर हो। व्यक्ति की कल्पना और अंतर्ज्ञान को बल देने के लिए तरीके और साधन विकसित किए जाने चाहिए ।

7. मृत्यु और जीवन

संक्षिप्त कथा: श्वेतकेतु से उसके पिता उद्दालक ने पूछा; इस छोटे से बीज से यह विशाल वट वृक्ष कैसे उत्पन्न हुआ?
श्वेतकेतु ने कहा, मैं ठीक-ठीक तो नहीं कह सकता, लेकिन इस बीज में जीवन है, जो इस वृक्ष को विकसित करता है।
उद्दालक ने श्वेतकेतु से पूछा, यदि ऐसा है तो इस बीज को तोड़कर पता लगाओ?
उनके आदेश पर बीज को सूक्ष्मतम (परमाणु) कण आकार में तोड़ दिया गया लेकिन वहां कुछ भी नहीं था, जिसके बारे में श्वेतकेतु कह सके कि इसमें जीवन है।
यह उत्तर सुनकर उद्दालक ने श्वेतकेतु से कहा कि वह गुरुकुल में वापस जाए, ताकि वह जीवन और मृत्यु को समझ सके, ब्रह्म (अल्लाह) की कार्यप्रणाली को समझ सके और ज्ञाता/ब्राह्मण बन सके।

"जीवन बीज में इस शून्यता से आया, शून्यता या गैर-उत्पत्ति से अ-मन आता है, अ-मन से अ-स्मृति आती है, और इस अ-स्मृति से स्मृति आती है और पूर्ण विकास के बाद यह पुनः शुद्ध सत्ता के रूप में शून्यता में विलीन हो जाती है और फिर चक्र दोहरा सकता है, या नहीं भी हो सकता है, संभावनाएं हैं।

संभावना वास्तविकता में बदल सकती है या नहीं भी हो सकती है; लाखों वर्षों तक कुछ भी नहीं होता है फिर भी सब कुछ संभव है"। शून्यता (शून्य) से नो माइंड आता है, अर्थात्; बीज बोया जाता है (एक गर्भवती अवस्था), संभावनाओं ने वास्तविकता की ओर अपना पहला कदम उठाया है, और प्रतीक्षा शुरू हो गई है, इस नो माइंड से नॉन-मेमोरी आती है, और हम समझ सकते हैं कि हमें अपने बचपन की यादें (यानी दो-तीन साल की उम्र तक की) मुश्किल से याद हैं। यह अवस्था मूल रूप से एक साइकेडेलिक अवस्था है, और इससे नॉन-मेमोरी की अवस्था आती है जिससे मेमोरी विकसित होती है और फिर हम अपने जीवन को याद रखने में सक्षम होते हैं।

अगर हम ध्यान के अभ्यासों को देखें तो हम समझ सकते हैं कि ध्यान स्मृति अवस्था से साइकेडेलिक अवस्था से गर्भवती अवस्था से शुद्ध ऊर्जा तरंग तक जाने की प्रक्रिया है। जो लोग ध्यान कर सकते हैं वे अपने पिछले जन्म या शायद अपने विकास के पूरे कालक्रम के साथ-साथ पूरे समाज और प्रकृति के विकास का पता लगा सकते हैं।
हर कोई ऊर्जा की एक मात्रा के रूप में रहता है और अपनी तरंगदैर्ध्य (योनि) और आयाम (सटीक गर्भ) के अनुसार अस्तित्व में आता है। जो लोग प्रकृति के साथ स्पंदित होते हैं, वे उसकी इच्छा के अनुसार आते हैं और जब तक वह चाहती है, तब तक जीवित रहते हैं। ऐसा सामान्य तरीके से

होता है, लेकिन या तो उत्सव के रूप में या समाधि के रूप में या जलाशयों की जीवंत यात्रा के रूप में या प्रकाश स्रोत के रूप में (अपने शरीर में परमाणु संलयन बनाकर)।

हर धर्म ग्रंथ में नवजात शिशु के जन्म के उत्सव मनाने के तरीके और तरीके बताए गए हैं, लेकिन मृतकों के साथ क्या करना है, यह पता लगाना मुश्किल है। 'रमन महर्षि' ने कहा कि जो लोग आ चुके हैं (प्रकृति के साथ स्पंदन करना शुरू कर देते हैं और ऋषि बन जाते हैं) उनका दाह संस्कार इस तरह करना चाहिए जैसे वे समाधि में हों, और जो नहीं आए हैं उन्हें उनकी खोपड़ी तोड़कर (जलाने के बाद) उनकी पूर्ण स्वतंत्रता के लिए जला देना चाहिए ताकि वे फिर से आ सकें और अपनी यात्रा पूरी कर सकें।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि ऊर्जा तरंग (आत्मा) के बाहर चले जाने पर बायोडिग्रेडेबल सामग्री का क्या होता है। खोपड़ी को तोड़कर जलाने की प्रथा, शवदाह (ताबूत के साथ या बिना), इसे किसी उपयोगी उद्देश्य (जैसे गिद्ध द्वारा खाना) के लिए छोड़ देना, या नदी/समुद्र में छोड़ देना, ये सभी सनातन प्रथा का हिस्सा हैं, जिसमें यह भी ध्यान रखा जाता है कि मृत शरीर भूमिगत जल और सतही हवा को संक्रमित/प्रदूषित न कर पाए और रेगिस्तान और समुद्र तट पर लकड़ी खोजने के लिए समाज पर बोझ न बने।

वे संस्कृतियाँ और वे धर्म, जो 'महर्षि रमण' के प्रथम कथन के अनुसार शुरू हुए, दाह संस्कार और पिरामिड/ताबूत (छोटे या बड़े) बनाने की प्रथा का पालन करते हैं। और जो लोग जीवन के इस तथ्य को समझते हैं कि यह एक निरंतर यात्रा है, वे अंतिम संस्कार (दहन) या मछली/पक्षी खाने की प्रथा का पालन करना शुरू करते हैं।

जिन्होंने (अधिकांशतः) पहले विचार को स्वीकार किया, उन्होंने एक जीवन की अवधारणा मान ली और जिन्होंने दूसरे विचार को स्वीकार किया, उन्होंने अनेक जन्मों की अवधारणा शुरू कर दी और उसे लीला, माया (नाटक, भ्रम, असंख्य जीवन) आदि जैसे विभिन्न नामों से पुकारना शुरू कर दिया और कभी-कभी तो यह भी कह दिया कि, "नींद छोटी मृत्यु है और मृत्यु बड़ी नींद है"। वे आगे कहते हैं कि यदि थकान छोटी है तो नींद काम करेगी और यदि थकान बड़ी है तो मृत्यु ही काम करेगी और मृत्यु (बड़ी नींद) के बाद व्यक्ति एक नई चमक के साथ अपनी यात्रा शुरू कर सकता है।
वैज्ञानिक निष्कर्षों के आधार पर यह कहा गया है कि, "एक छोटा कण / ऊर्जा तरंग भी नष्ट नहीं की जा सकती है, यह केवल आकार और आकृति बदलती है; यदि ऐसा है तो हम मनुष्य कैसे नष्ट हो सकते हैं (सिगरेट या दाह संस्कार में जलने वाला कार्बन कण कार्बन डाइऑक्साइड में परिवर्तित हो जाता है, जिसे पौधे ले सकते हैं, और इसे फूल, फल या लकड़ी में परिवर्तित कर सकते हैं, जिसे जीवित संभोग द्वारा उपभोग किया जा सकता है, और फिर यह चक्र दोहराया जा

सकता है। केवल एक चीज जो हम नहीं जानते हैं, या जानने में सक्षम नहीं हैं वह यह है कि जलने के बाद (कार्बन डाइऑक्साइड में) यह कार्बन कैसे प्रकट होने वाला है।

अनगिनत तरीकों और साधनों के माध्यम से यह पाया गया है कि शाश्वत खुशी सभी जीवित प्राणियों की एकमात्र इच्छा है और यह सभी के लिए एकमात्र जीवन शक्ति है, इसलिए यह मायने नहीं रखता कि किसी को किस तरह से अंतिम संस्कार दिया जाता है; महत्वपूर्ण बात यह है कि क्या कोई सामंजस्यपूर्ण और खुशी से रहता है। मृत्यु और जीवन के परिदृश्य में निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं:

1. मृत्यु की वर्षगांठ के स्थान पर जीवन (जन्म दिवस) मनाया जाना चाहिए। विवाह की वर्षगांठ को विवाह दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

2. दाह संस्कार या अंतिम संस्कार; यह व्यक्ति और परिवार दोनों की पसंद है। हालांकि, अंतिम संस्कार करने के लिए व्यक्ति के परिवार को पर्याप्त (तीन दिन) स्मरण अवकाश देना होगा।

3. जैसे पूरा जीवन एक उत्सव है, वैसे ही मृत्यु भी एक उत्सव होनी चाहिए। डॉक्टरों को सलाह दी जाती है कि वे आने वाली मृत्यु के संकेत को पहचानें और इस तरह से कार्य करें कि जीवन व्यक्ति की इच्छा के अनुसार समाप्त हो, और उन्हें वेंटिलेटर पर पैसे के लिए दिवंगत आत्मा और उनके रिश्तेदारों को परेशान करने में शामिल न करें।

4. नेत्रदान और अन्य अंगदान, यदि कोई हो, को मान्यता दी जानी चाहिए और मृतक के परिवार के मुखिया को सम्मान के रूप में कुछ नकद राशि दी जानी चाहिए। दया-हत्या को सम्मान दिया जाना चाहिए। हारा-किरी और आत्महत्या विफलता के मामलों को आपराधिक रूप से नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि दयालुता से या यदि संभव हो तो परोपकारी तरीके से देखा जाना चाहिए।

जीवन का जश्न मनाने को मौजूदा प्रथाओं से ज़्यादा आम बनाना होगा। जीवन का सम्मान किसी भी चीज़ से ज़्यादा करना होगा ।

8. ब्रह्मचारी, संत, साधु और ऋषि

(अ). जो लोग दूसरे के सिर में रहते हैं, वे लंबे समय तक जीवित रहते हैं, जो दूसरे के दिल में रहते हैं, वे लंबे समय तक जीवित रहते हैं और जो दूसरों के सिर और दिल में रहते हैं, वे सबसे लंबे समय तक जीवित रहते हैं। ऋषि लोगों के दिल और दिमाग में रहते हैं और इस तरह वे सभी युगों में जीवित रहते हैं। चूँकि ऋषि किसी एक पंथ, जाति, धर्म और नस्ल से संबंधित नहीं होते, इसलिए सभी क्षेत्रों के लोग सभी बाधाओं को पार करके भी उनके पास आते हैं और उन्हें अपना सम्मान देते हैं। **ऐसे ही ऋषि हैं – ऐसे लोगों को मेरा प्रणाम।**

ऋषि स्वतंत्रता प्रदान करते हैं और शिष्य नहीं बनाते, क्योंकि शिष्य को बनाए रखना उस स्वतंत्रता के सिद्धांत के विरुद्ध है जो वे अपने विद्यार्थियों को प्रदान करते हैं। जो गुरु अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्रता प्रदान करते हैं और उन्हें शिष्य नहीं बनाते, वे ऋषि बन जाते हैं और बाकी केवल स्वामी या शिक्षक बनकर रह जाते हैं, जिन्हें एक या कई क्षेत्रों में महारत हासिल होती है और शिक्षण कौशल होता है।

साधु– वह है जिसने अपने आंतरिक अस्तित्व में कुछ पकड़ लिया है (साधु ; जिसने कुछ साध लिया है – साधु; जिसने कुछ साध लिया है) और इस तरह एक से अधिक कलाओं में माहिर हैं। ये साधु जनता की मदद करने के लिए अपनी निपुणता दिखाने के लिए आगे बढ़ते हैं।

दूसरी ओर संत वे होते हैं जिनका अंत अच्छा होता है। संत– संत के बारे में अंत अच्छा है – जिसका अंत अच्छा है, जैसा कि हम कहते हैं अंत भला तो सब भला (यदि अंत भला तो सब भला) धीरे–धीरे ये लोग निरंतर आधार पर परिभाषित और परिष्कृत होते हैं, ये भी आगे बढ़ते हैं और बड़ी आबादी की बेहतरी के उद्देश्य से जीवन और इसके विभिन्न पहलुओं के अपने अनुभव को साझा या व्यक्त करते हैं।

जबरन ब्रह्मचर्य पालन– बिलकुल पाप है। यह उनके माता–पिता के प्रति अनादर है, और भावी पीढ़ियों के प्रति विश्वासघात है; इन लोगों को कठोर और गुप्त रूप से दंडित किया जाता है। ब्रह्मचर्य अगर कुंडलिनी जागरण से प्रकट होता है तो ये लोग सीधे ऋषि की स्थिति में पहुंच जाते हैं, और उनकी उपस्थिति से बने माहौल (नकारात्मक या सकारात्मक) से उन्हें अलग किया जा सकता है।

(बी). सत्ता के खेल में, पहला सबक यह है कि चेहरे के भावों को समायोजित करके इरादे को छिपाया जाए ताकि जनता को आकर्षित या विचलित किया जा सके, फिर भी ऐसे सभी नेता

आंखों की पुतलियों की गति को समायोजित करने और आंखों के दर्शक को मूर्ख बनाने में सक्षम नहीं हैं। आंखों की पुतलियों में स्थिरता और प्रेमपूर्ण भाव नेता, साधु, संत और अंततः ऋषि की ओर यात्रा का संकेत है। लोग हालांकि मानदंडों का पालन करते हैं, लेकिन, फिर से अंतर और अंतर धर्म पर चर्चा करना और समाज और सरकार के लिए इन सकारात्मक रूप से ऊर्जावान लोगों के सम्मान के लिए नए मानदंड बनाना पसंद कर सकते हैं। **

9. परिवार – Pariwar

अ) आम तौर पर परिवार को अंग्रेजी में परिभाषित किया जाता है और अधिकांश पश्चिमी देशों में इसे इस प्रकार स्वीकार किया जाता है: परिवार – पिता और माता जिसमें जीवित (प्यार करने वाला) युवा शामिल है। यानी पिता, माता और उनके अविवाहित बेटे और बेटियाँ (पच्चीस वर्ष की आयु तक) को एक परिवार माना जाता है।

B) भारत में कहा जाता है कि – रक्त संबंध वाले लोग (पिता, चाचा, दादा, बेटा और बेटी, पोता और बेटी) के साथ–साथ एक ही वंश के लोग जिन्होंने रक्त संबंध बनाने में भाग लिया है (माता, दादी, पत्नी और बहू) जिन्हें कोई व्यक्ति अपने जीवनकाल में देख सकता है, उसे परिवार कहा जाता है।

आश्रम व्यवस्था में परिवार की स्पष्ट परिभाषा दी गई है। इसमें कहा गया है कि हमारे जीवन में चौबीस वर्ष के चार आश्रम होते हैं (मान लें कि मानव जीवन छियानबे वर्ष का है, तो सौ वर्ष की आयु में जितने लोग रक्त संबंधी और एक ही कुल (गोत्र) के होते हैं, उन्हें परिवार कहा जा सकता है। इसे और विस्तार से समझा जाए तो जन्म के समय व्यक्ति अपने रक्त संबंधियों को सौ वर्ष तक की आयु में देख सकता है, अर्थात अपने माता–पिता (पिता या परदादा) से तीन पीढ़ी पहले और फिर सौ वर्ष की आयु में वही व्यक्ति अपने से तीन पीढ़ी आगे देख सकता है (पुत्र/पुत्री या पौत्र)।
इस तरह व्यक्ति की सात पीढ़ियों, तीन पहले की तीन और एक वर्तमान पीढ़ी के लोग मिलकर मेरा परिवार बनते हैं या इसे मेरा परिवार कहा जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि इनका आनुवंशिक (डीएनए) कोड कमोबेश एक जैसा होता है और ये आने वाली पीढ़ी को आनुवंशिक रूप से प्रभावित करते हैं।

C). आश्रम व्यवस्था में कहा गया है कि मेरे जन्म के समय मेरे माता–पिता गृहस्थ आश्रम में होंगे, मेरे दादा–दादी वानप्रस्थ आश्रम में, मेरे परदादा–परदादी संन्यास आश्रम में और हो सकता है कि मेरे परदादा–परदादी भी संन्यास आश्रम में हों, जैसे–जैसे मैं बड़ा होकर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करूंगा मेरी पत्नी भी मेरे कुल की सदस्य होने के साथ–साथ मेरे परिवार का हिस्सा भी बन जाएगी, फिर मेरे वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करने और मेरे बेटे के गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने पर मेरे बेटे की पत्नी भी मेरे परिवार की सदस्य बन जाएगी, इसके अलावा मेरे वानप्रस्थ आश्रम से प्रस्थान करने के समय मेरा पोता गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करेगा और उसकी पत्नी भी मेरे परिवार की सदस्य बन जाएगी, जब मेरे पोते को पुत्र/पुत्री की प्राप्ति होगी तो मैं अपनी पत्नी के साथ संन्यास आश्रम चला जाऊंगा और उसके बाद वंश वृक्ष में मेरी ज्यादा रुचि नहीं रहेगी। इस

तरह से मुझसे चार पीढ़ी पहले और मुझसे तीन पीढ़ी आगे के सभी संबंध (रक्त के और रक्त संबंध बनाने के लिए जिम्मेदार) मेरे परिवार के सदस्य माने जा सकते हैं। इसके साथ ही शपथ (मनसा , वाचा , कर्मणा) से जो रिश्ता बनता है । मनसा, वाचा, कर्मणा (विचार, भाषण, कार्य) या तो मेरे द्वारा या मेरे माता-पिता या मेरी संतान द्वारा किए गए कार्य भी मेरे परिवार का हिस्सा हैं जैसे बहन, भाई, बेटा या बेटी जिन्हें शपथ द्वारा स्वीकार किया जाता है।

भारत में कहा जाता है कि मेरी मां के पैतृक घर के सदस्य, मेरी दादी के पैतृक घर के सदस्य और मेरी पत्नी के पैतृक घर के सदस्य इत्यादि मिलकर एक कुटुम्ब (कुटुम्ब बड़ा परिवार) बनाते हैं। यदि हम इस **प्रकार** देखें, तो हम पाएंगे कि हम सभी किसी न किसी रूप में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और यहीं से वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा और भावना विकसित हुई – कि संपूर्ण विश्व सापेक्ष है।

ई) उपरोक्त को देखते हुए यह मेरा नैतिक और आनुवंशिक व्यवहार होगा कि मैं इन सभी रिश्तेदारों की स्नेह से देखभाल करूं और कर्तव्यनिष्ठ होकर इन सभी का प्यार से ख्याल रखूं या फिर मुझे/हमें अपने जीवन का बलिदान भी करना पड़े, लेकिन जब हमें अपने जीवन या दूसरों के जीवन का बलिदान करने का मन हो तो धर्म ही मार्गदर्शक होना चाहिए और इसे केवल अंतिम उपाय के रूप में ही किया जाना चाहिए।

एफ) <u>उपरोक्त के अतिरिक्त हम निम्नलिखित भी कहना चाहेंगे</u> :

1) जिस समाज में दो बच्चों के मानदंड को स्वीकार किया जाता है और उसका पालन किया जाता है, तथा जहाँ सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, वित्तीय, भावनात्मक और यदि संभव हो तो आध्यात्मिक) को उचित महत्व दिया जाता है और उसे हल्के में नहीं लिया जाता है, वहाँ ऊपर वर्णित परिवार की व्यवस्था प्रत्येक घटक को स्वस्थ, सुखी और पवित्र जीवन प्रदान करते हुए अच्छी तरह से काम करती है। दो बच्चों के बाद हर नए बच्चे की वृद्धि एक पीढ़ी को भूलने/छोड़ने की ओर ले जाती है और सुरक्षा (शारीरिक, मानसिक, वित्तीय और भावनात्मक) में चूक के साथ कई पीढ़ियाँ एक साथ नष्ट हो जाती हैं।

2). ऊपर वर्णित परिवार उन्नति और विकास की पराकाष्ठा है, तथा ऊपर वर्णित परिवार अराजकता/दासता/खानाबदोशी से विकास की शुरुआत है। परिवार की अवधारणा पूर्ण रूप से मूर्त/कार्यात्मक तब होगी जब सम्पूर्ण विश्व एक हो जाएगा, तब तक हमें तीन-चार पीढ़ियों के परिवार से ही संतुष्ट होना पड़ेगा।

3) वर्तमान स्थिति में तथाकथित असफल कल्याणकारी राज्यों की अपेक्षा धार्मिक केंद्रों की यह अधिक जिम्मेदारी है कि वे दो बच्चों (लड़का और लड़की) के मानदंड की अवधारणा को आगे बढ़ाएं, ताकि हमारे समाज के वृद्धों और बच्चों को हमसे उचित शारीरिक, वित्तीय और भावनात्मक सहायता मिल सके और हमें अपने बच्चों और अपने पोते–पोतियों/परपोतियों से उनका हक मिल सके।

4). हिंदू अविभाजित परिवार और मुस्लिम पर्सनल लॉ पर कानून की समीक्षा और सुधार किया जाना चाहिए। हमारी बेहतर मानवता के लिए क्रॉस कजिन और पैरेलल कजिन के बीच विवाह की समीक्षा की जानी चाहिए। आश्रम, व्यवस्था और वर्ण व्यवस्था में आवश्यक शोध और अध्ययन किए जाने की आवश्यकता है और सामाजिक, शासन और न्यायिक व्यवस्था में उपयुक्त निष्कर्षों/सुझावों को लागू किए जाने की आवश्यकता है। परिवार – परंपरा , रीति व रीति , परिवार – परम्परा रीति वा रिवाज – परिवार की अवधारणा परंपरा, रीति और नियम का पालन करने के लिए विकसित की गई थी ताकि हम और हमारे बुजुर्ग और संतान स्वस्थ, खुशहाल पवित्र जीवन का आनंद ले सकें। ***

10. दौड़

(ए) कोई भी व्यक्ति जो कम बुद्धि वाला है, वह समझ सकता है कि विभिन्न रंगों, लक्षणों और खासकर जब काले और सफेद जैसे विपरीत रंग आपस में मिल जाते हैं, तो यह मिश्रण बनता है। अगर हम दुनिया भर में देखें तो हम मुख्य रूप से चार-पांच रंगों के लोगों के अस्तित्व को समझ सकते हैं, जैसे काला, सफेद, पीला, लाल सिर वाला और गेहुंआ रंग।

अगर हम उन देशों पर बारीकी से नज़र डालें जहाँ सभी नस्लें अलग-अलग प्रतिशत में एक साथ रहती हैं, तो हम आसानी से संकर नस्लों के उद्भव को समझ सकते हैं, काले और सफेद के विभिन्न अनुपातों में। सैकड़ों और हज़ारों सालों में कई कारणों से ऐसा अंतर्संबंध होता रहता है जो मानव के नियंत्रण से परे है, जिसे एक नौसिखिया भी कुछ शीर्ष मॉडलों, गायकों, अन्य कलाकारों और आम जनता की मौजूदगी में अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों को देखकर आसानी से समझ सकता है।

(ब) ब्राजील, मैक्सिको जैसे पूर्वी और कुछ पश्चिमी देशों के मिश्रण को अपने मिश्रित रंग (त्वचा कैंसर और अन्य त्वचा रोगों से बचाने के लिए पर्याप्त रूप से मजबूत त्वचा के साथ जो कि गोरे लोगों में प्रचलित है) और मिश्रित संस्कृति पर गर्व करने की आवश्यकता नहीं है जिसे केवल भगवान की कृपा कहा जा सकता है। भारत ने हमेशा कृष्ण के 'श्याम (नीला-काला) रंग' का सम्मान किया है और इस प्रवृत्ति का पालन करना पसंद किया है। समुद्र तटों और रेगिस्तानों के कारण गोरापन, गर्म और ठंडा मौसम बना रहेगा। यह उम्मीद की जाती है कि बिना किसी अवरोध या प्रदर्शन के हम प्राकृतिक अभिसरण को भगवान की इच्छा के रूप में देखेंगे। भारत अपनी गहरी जड़ों पर गर्व करता है और समझता है कि जिनकी जड़ें गहरी हैं वे ही ऊपर जा सकते हैं और अधिक परिपक्वता से व्यवहार करने के लिए बाध्य हैं। **

11. बूढ़े और बुद्धिमान (पुराने समय के बुद्धिमान लोग)

आम तौर पर जीवन की गतिशीलता के लिए भी स्थिर परिभाषाएँ दी जाती हैं, लेकिन मूल प्रश्न यह उठता है कि स्थिर परिभाषाएँ जीवन की गतिशीलता सहित किसी भी गतिशीलता को कैसे समझा सकती हैं या उसमें कैसे फिट हो सकती हैं? जीवन की गतिशीलता को गतिशील परिभाषा द्वारा निम्नलिखित दो तरीकों से बेहतर ढंग से समझाया जा सकता है।

(ए). जो लोग विकास सिद्धांत और व्यवहार में विश्वास करते हैं, उनके लिए, मानव मस्तिष्क हमेशा विस्तारित होता रहता है और भौतिक आकार में बढ़ता रहता है, यहाँ गतिशीलता और विकास पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है। प्रत्येक नया बच्चा अपने माता-पिता के कंधे से देखता है और इस तरह आगे की ओर देखता है। युवा पीढ़ी उस कार्य को वहीं से करती है जहाँ पुराने लोगों ने छोड़ा था, और इस तरह बड़ों के अनुभव का पूरा लाभ उठाती है।

यह कहा जा सकता है कि एक युवा व्यक्ति की आगे की यात्रा, वृद्ध व्यक्ति की पूरी की गई यात्रा पर निर्भर करती है। प्रत्येक नया आविष्कार पुराने आविष्कारों के आधार पर होता है। इस तरह से कोई भी आविष्कार मौलिक नहीं कहा जा सकता और न ही उसे पेटेंट कराया जा सकता है। प्रत्येक वर्तमान उपलब्धि, यहाँ तक कि जीवन के लिए भी, हम बूढ़े होने के लिए बाध्य हैं और इसलिए अपने माता-पिता और पूरे समाज के प्रति ऋण चुकाने के लिए बाध्य हैं। इस सिद्धांत के प्रवर्तक कहते हैं, "मानव संपूर्ण विकास प्रक्रिया का फल है और मानवता इस प्रक्रिया का विकास है, अर्थात इस फल (बीज) में संपूर्ण विकास छिपा है।"

(बी). यहाँ ऋषि-मुनि अपनी उपलब्धियों का सारा श्रेय अपने गुरुओं को देते हैं और ये गुरु अपने गुरुओं को और इसी तरह अंत में गुरु या प्रथम गुरु बृहस्पति को देते हैं। बृहस्पति कहते हैं कि उन्होंने इसे ब्रह्म (ईश्वर) के साथ देखा है और 'ब्रह्मा' कहते हैं कि उन्होंने इसे 'ब्रह्मा' (ब्रह्मांड) से ही अनुभव किया है - गतिशील और निरंतर विस्तारित ब्रह्मांड। एक तरह से इस सिद्धांत के गूढ़ व्यक्ति का कहना है कि सूर्य के नीचे और ब्रह्मांड में कुछ भी नया नहीं है।

(सी)। इस संबंध में निम्नलिखित प्रस्तुत हैं:

1. दोनों ही तरीकों से, वृद्ध लोगों को आधार और बुद्धिमान माना जाता है।

2. सभी तथाकथित नए आविष्कार पुरानी पीढ़ी के ज्ञान, समाज की प्रतिक्रिया, प्रकृति द्वारा प्रदत्त कल्पना और अंतर्ज्ञान के आधार पर होते हैं; किसी भी नए आविष्कार पर किसी भी तरह

का अधिकार और संपूर्ण स्वामित्व का दावा करना बुद्धि की सरासर मूर्खता और मूर्खता है और ऐसे दावों को स्वीकार करना और भी अधिक मूर्खतापूर्ण है। इस तरह किसी भी व्यक्ति या किसी भी देश का किसी भी ज्ञान (बौद्धिक) संपदा अधिकार या कानून पर कोई भी दावा निराधार या बिना किसी आधार/आधार/तर्क के कहा जा सकता है।

पूरे पेड़ की अनुमति के बिना टहनी नहीं गिर सकती। सभी आविष्कार मानवता द्वारा निर्देशित होते हैं और ऐसे सभी आविष्कारों का परिणाम पूरी मानवता का होता है। संपूर्ण बौद्धिक संपदा अधिकार और पेटेंट कानून का कोई आधार नहीं है और इन्हें खत्म किया जाना चाहिए।

3. समाज रचनात्मक और विचारोत्तेजक कार्य बैंकों के क्षेत्रीय केंद्रों को बढ़ावा दे सकता है, जो बुद्धिमान और वृद्ध लोगों द्वारा चलाए जा रहे हैं। इसी तरह, हम ज्ञान सह संसाधन केंद्रों को बढ़ावा दे सकते हैं, जहां नई तकनीक/सिद्धांत को आवेदन से पहले मंजूरी के लिए भेजा जाएगा ताकि उसकी उपयोगिता, दुष्प्रभाव और समग्र प्रभाव देखा जा सके। **

12. बच्चे

"आत्मा माता-पिता और समाज का चयन करती है।" बच्चा कोरियोग्राफ़ी करता है, अदृश्य से दृश्यमान, अज्ञात से ज्ञात, स्थापित अतीत से छिपे हुए भविष्य से हमेशा नए वर्तमान तक अपनी अभिव्यक्ति करता है। यानी भविष्य अतीत और वर्तमान का चयन करता है। एक तरह से यह अतीत और वर्तमान नहीं है जो भविष्य को आकार देता है, बल्कि यह भविष्य है जिसने पूरे अतीत को ढाला/निर्देशित और आकार दिया है और वर्तमान को लगातार आकार दे रहा है। फिर भी कुछ लोग कहते हैं कि जीवन एक चक्र में चलता है, इसलिए जो भविष्य प्रतीत होता है वह वास्तव में हाल ही में या सुदूर अतीत में हुआ है।

उत्तर: "कृष्ण, राम, बुद्ध, महावीर, पैगम्बर, ईसा, नानक ने राजपरिवार को ही अपने माता-पिता के रूप में चुना था। भविष्य हमें इस अर्थ में अपना सर्वश्रेष्ठ देने के लिए तैयार रहने के लिए कहता है; केवल एक स्वस्थ और खुश माता-पिता ही अपने बच्चों को एक अच्छा वातावरण दे सकते हैं, और इसलिए माता-पिता का यह कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को स्वस्थ, खुश और पवित्र वातावरण प्रदान करें।

जब हर महिला अपने गर्भ से संतान पैदा करना चाहती है तो यह प्रार्थना की जा सकती है कि वह अच्छे बच्चे पैदा करे। गर्भाधान के समय और उसके बाद सही क्षेत्र, मौसम, समय, शारीरिक स्वास्थ्य, मनोदशा और ढेर सारी प्रार्थना का चयन करके ही अच्छे बच्चे पैदा किए जा सकते हैं। यह प्रक्रिया किसी भी अन्य व्यायाम या काम की तरह ही है। यहाँ केवल इतना अंतर है कि जोड़े संभोग संतान पैदा करने के लिए करते हैं न कि आनंद के लिए। समय आदि के उचित चयन के लिए " गर्भाधान संस्कार " (गर्भाधान और गर्भावस्था के अनुष्ठान) उपलब्ध हैं।

B. ज़्यादातर बच्चों को डर दिखाकर बड़ा किया जाता है; जैसे माँ कहती है – ऐसा करोगे तो भूत तुम्हें खा जाएगा, और पिता कहते हैं – मैं तुम्हें मारूँगा। हमारे समाज में भी यही चलन है; इसी तरह धर्म कहता है – अगर तुम कुछ गलत करोगे तो तुम नर्क में जाओगे और भगवान/अल्लाह तुम्हें सज़ा देंगे, और सरकार कहती है – अगर तुम गलत करोगे तो तुम्हें जेल में डाल दिया जाएगा। ऐसे लगातार डर की स्थिति में घर में बच्चों और समाज में मनुष्य का स्वस्थ विकास नहीं हो सकता।

शायद हम यह प्रदर्शित करके इसे बदलना चाहेंगे कि बुरा कितना बुरा है, और अच्छा कैसे और क्यों अच्छा है, और इनका व्यक्तियों, उनके परिवार, देश और समाज पर किस तरह से व्यापक प्रभाव पड़ता है। भय को प्रेम और स्वतंत्रता से बदलना होगा। हमें यह दिखाना होगा कि अच्छाई

कैसे अच्छी/बेहतर है और भय को प्रेम से कैसे बदला जा सकता है। खुशी ही एकमात्र जीवन को बनाए रखने वाली शक्ति है, जो प्रेम और प्रेमपूर्ण संबंधों से बढ़ती है। प्रत्येक व्यक्ति, समाज और सरकार से यह प्रार्थना और अपेक्षा की जाती है कि हम अपने समाज में प्रेम की मात्रा को बढ़ावा देंगे।

C. व्यापारिक/आर्थिक संदर्भ में कहा जा रहा है कि यदि एक दिन में लाभ/रिटर्न चाहिए तो लॉटरी टिकट खरीदें, यदि एक वर्ष में लाभ चाहिए तो फसल उगाएं, दो से पांच वर्ष तक लाभ चाहिए तो फल उगाएं, लेकिन स्थायी लाभ/रिटर्न के लिए कार्यालय/उद्योग में टीम विकसित करें और घर/समाज में बच्चे पैदा करें।

डी. बच्चों को माता-पिता, खास तौर पर माताओं की जरूरत होती है, न केवल गुणवत्तापूर्ण समय के लिए बल्कि पर्याप्त समय के लिए भी। नौकरानी या क्रेच के जरिए पले-बढ़े बच्चों में एकजुटता की कमी देखी जाती है और वे परिवार, समाज और देश के प्रति उदासीन रवैया अपनाने के लिए प्रवृत्त होते हैं। आम तौर पर, अगर कोई बच्चा बचपन में अकेलापन महसूस करता है तो उसके माता-पिता को बुढ़ापे में अकेलेपन का सामना करना पड़ता है। समाज, धार्मिक संस्थाओं और सरकार को मिलकर काम करना होगा ताकि माताएँ/माता-पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय दे सकें और हर तरह से सुरक्षित महसूस कर सकें। **

13. किशोरों

(ए). इतिहास के माध्यम से यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल है कि किशोरों को क्या करना चाहिए। कुछ लोग किशोरों को बच्चों की तरह मानते हैं और कुछ उन्हें वयस्कों की तरह मानते हैं और फिर भी कुछ लोग उन्हें मिश्रण के रूप में मानते हैं। किशोरों के साथ यह व्यवहार उनकी सुविधा के अनुसार है और किशोरों की इच्छा के अनुसार नहीं है, कुछ कहते हैं कि वे सीखने की अवस्था में हैं और अन्य कहते हैं कि बुनियादी समझ विकसित हो चुकी है और समय के साथ आकार लेगी। कुछ कहते हैं कि किशोर उम्र की लड़कियों और लड़कों को एक-दूसरे से दूर रहना चाहिए; अन्य कहते हैं कि लड़कियाँ यौवन की शुरुआत में विवाह योग्य होती हैं और अन्य कहते हैं कि यह डेटिंग और बिना किसी कड़वाहट के मिलने की उम्र है।

पूर्ण आकार में विकसित फलों को पका हुआ फल नहीं कहा जा सकता, पूर्ण विकास के बाद फलों के पकने में कम से कम पचास प्रतिशत अधिक समय लगता है, तथा यह धैर्य का समय होता है। इसी प्रकार, यदि यौवन तेरह-सत्रह वर्ष से शुरू होता है, तो लड़के-लड़कियों को विवाह के लिए साथी बनने में सात-आठ वर्ष अधिक लगेंगे।

"किशोरों को जीवन जीने की कला के साथ-साथ जीवन जीने के तरीके की भी आवश्यकता है" **तथा** उन्हें एक छत्र जैसी सुरक्षा और स्वतंत्रता की आवश्यकता है। किशोरों के माता-पिता को मित्र, मार्गदर्शक, आलोचक, विवेकशील और साथ ही अभिभावक के रूप में भी व्यवहार करने की आवश्यकता है। इस उम्र में माता-पिता के मात्रा के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण समय की भी आवश्यकता होती है।

(बी) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:

1) इस जीवंत और सबसे गतिशील युग में, जहाँ सपने केंद्र में होते हैं, पर्याप्त मार्गदर्शन आमतौर पर उपलब्ध नहीं होता। विचारकों के साथ-साथ इस समूह के बीच भी विचार-मंथन और हृदय-मंथन शुरू किया जाना चाहिए।

2). किशोरों के लिए शहरों और कस्बों में प्रदर्शनी आयोजित की जानी चाहिए, जिसमें भविष्य के लिए व्यापक अवसर दिखाए जाएं, शोध और अनुप्रयोग के लिए नए आयाम दिखाए जाएं। प्रदर्शनियों में कुछ ऐसे क्षेत्रों को प्रदर्शित किया जाना चाहिए, जहां आम तौर पर कोई भी आम सीखने और कमाई के उपक्रमों के साथ नहीं जाना चाहता, ताकि किशोर अपने उद्यम यानी रोमांच में शामिल होना चाहें। **

14. औरत

हम दूसरों को जो कुछ भी देते हैं, वह कुछ समय बाद प्राकृतिक माध्यमों से हमारे पास वापस आता है, चाहे वह सबसे खराब हो, बुरा हो, अच्छा हो या सबसे अच्छा हो। "अगर दुनिया भर में महिलाओं को सर्वश्रेष्ठ नहीं मिल रहा है, तो यह केवल यह दर्शाता है कि कहीं न कहीं वे समाज को अपना सर्वश्रेष्ठ नहीं दे रही हैं" चाहे बेटी, बहन, दोस्त, पत्नी या यहाँ तक कि अपने पुरुष समकक्ष के मुकाबले माँ के रूप में।

1) पिछला औद्योगिकीकरण अधिक यांत्रिक था, जबकि वर्तमान औद्योगिकीकरण यांत्रिक और सॉफ्टवेयर चालकों का मिश्रण है। यह उम्मीद की जाती है कि भविष्य का औद्योगिकीकरण मुख्य रूप से सॉफ्टवेयर संचालित होगा, इसलिए सॉफ्टवेयर में अधिक विशेषज्ञ होने के कारण महिलाएं औद्योगिक दुनिया का नेतृत्व करेंगी, और पुरुष केवल इन सॉफ्टवेयर चालकों की महिलाओं की मदद करेंगे। महिलाएं खुश महसूस कर सकती हैं, जबकि पुरुष इसे एक स्वाभाविक प्रगति के रूप में ले सकते हैं।

2) पुरुष और महिला कई मायनों में भिन्न हैं। दोनों को एक जैसी शिक्षा देना दोनों के साथ अन्याय है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से पुरुष प्रधान है। **"महिला शिक्षा – महिला प्रधान" को लागू करने के लिए प्रयास करना होगा।**

3) प्रत्येक धर्म ने महिलाओं की तुलना पृथ्वी से की है, इसलिए सभी सांसारिक मामलों को महिलाओं द्वारा अच्छी तरह से संभाला जा सकता है, और समाज द्वारा उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, ताकि महिलाएं अपने घर, समाज और देश में इसकी जिम्मेदारी ले सकें।

4) शादी के साथ ही एक अलग जीवन शुरू होता है; दुनिया में कहीं भी युवाओं को विवाहित जीवन में अपनी यात्रा के लिए सही समय पर प्रशिक्षित नहीं किया जाता है। समाज को यह प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। संस्कृति, लोकाचार, व्यवहार, शिशु देखभाल के अलावा पारिवारिक जीवन पर शिक्षा दोनों को दी जानी चाहिए, लेकिन जैविक कारणों से महिलाओं को अधिक।

(5). बच्चे की देखभाल के लिए माँ को तीन से छह साल की उम्र की ज़रूरत होती है। इसके अलावा, बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना वयस्कों की ज़िम्मेदारी है और उन्हें अकेला छोड़ना या नौकरों के ज़रिए उनकी देखभाल करना इस बात का संकेत है कि बुढ़ापे में उन्हें भी यही व्यवहार झेलना पड़ेगा। समाज को इन मुद्दों पर चर्चा करने की ज़रूरत है ताकि इस संबंध में भी कोई दिशा-निर्देश मिल सके। **

15. पुरुषों

जो देता है, वही आगे बढ़ता है, पुरुष वर्चस्व का पालन करते दिखते हैं क्योंकि परिवार में पुरुष अधिक देते हैं, और यही हमारे युग और समय में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का एक कारण है। इसे जारी रखने के लिए पुरुष को अपने देने के रवैये और कार्यों को जारी रखना होगा।

ऐसा देखा गया है कि एक महिला केवल तभी देती है जब वह माँ होती है, अन्य सभी रिश्तों में वह लेने वाली की तरह ही अपेक्षा करती है और व्यवहार करती है। यदि कोई किसी महिला से कुछ लेना चाहता है, तो उसे मातृवत मुद्रा दिखानी होगी या महिलाओं के प्रति वैसा ही सम्मान दिखाना होगा जैसा कि कोई अपनी माँ को देता है। संत इस बात को समझते हैं और इसलिए महिलाओं से आशीर्वाद, शुभकामनाएँ और अनुसरण के रूप में सबसे अधिक प्राप्त करते हैं, अन्य लोग भी उनका अनुसरण कर सकते हैं और महिलाओं को अधिक सम्मान देना पसंद कर सकते हैं। भगवान – माता-पिता और भाग्यवान – भाग्यशाली पत्नी के बीच संतुलन बनाए रखना, पुरुषों और पूरे समाज के लिए एक वास्तविक चुनौती होगी। **

16. सेक्स

(अ). जन्म से लेकर मृत्यु तक लैंगिक जीव एक ही पहचान के रूप में जाने जाते हैं (जैसे अमीबा, नीम आदि) और लैंगिक जीव दोहरे पहचान के रूप में जाने जाते हैं, मानव (नर और मादा)। सभी अलैंगिक या लैंगिक जीव उभयलिंगी प्रकृति के होते हैं और यही अंगों (नर या मादा) का आधार है, अलग–थलग रहने पर भी परिपूर्णता का एहसास होता है।

यौन क्रियाओं में जब समय और स्थान लुप्त हो जाते हैं (कामोन्माद के समय) तो नई रचनाओं के बीज बोये जाते हैं। प्रकृति को जारी रखने के लिए कामवासना ही आधार है और प्रकृति को समाप्त करने के लिए कामवासना ही कारण है, इसीलिए हम सर्वशक्तिमान उस सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता को "शिव – प्रेम और मृत्यु" कहते हैं।
मनुष्य की यौन ऊर्जा पहले भौतिक रूप लेती है, (काया का विस्तार और यौन ऊर्जा का भण्डार) जो तेरह से सत्रह वर्ष तक होता है और फिर ऊर्जा का भण्डार बाईस से चौबीस वर्ष की आयु तक भर जाता है, और तब से यह या तो ऊपर की ओर बढ़ता है और कुंडलिनी जागरण के रूप में जाना जाता है और हृदय और सिर को भोजन और ऊर्जा प्रदान करता है या नीचे की ओर बढ़ता है और यौन अंगों में तनाव पैदा करता है।

उनतीस वर्ष की आयु के बाद यौन ऊर्जा में कोई भी ठहराव व्यक्तित्व में असंतुलन पैदा करता है। ठहराव को दूर करने के लिए जीवनसाथी से मिलना, सेक्स वर्कर के पास जाना या हस्तमैथुन करना उपलब्ध उपाय हैं। पुरुष स्वभाव से ही अस्तित्व में विविधता चाहता है और स्त्री भी अस्तित्व में विविधता चाहती है। सेक्स दीर्घायु, आत्म–भोग, जीविका और समाप्ति तथा मनोरंजन का ज्ञात आधार है और ऐसा ही रहेगा।

(बी). कुंडलिनी अवस्था के निरंतर जागरण में रहना यानी वीर्य ऊर्जा की निरंतर ऊर्ध्व गति में बने रहना सबसे दुर्लभ है और इस तरह संभोग, हस्तमैथुन और स्वप्नदोष संतों और ऋषियों पर भी लागू होते हैं। यह ऊर्ध्व गति और निरंतर ब्रह्मांडीय संभोग सुविधा ब्रह्मा को उपलब्ध या प्रदान की गई है। उपरोक्त समझ रखने वाला भारत अपने सिस्टम से रीति–रिवाजों, वर्जनाओं को हटाना शुरू कर सकता है और उसी का प्रचार करेगा।
मनुष्यों सहित स्तनधारियों में शारीरिक–मनोवैज्ञानिक आयाम में, स्वयं की यौन खोज, फिर उसी की, फिर विपरीत की, फिर विपरीत की खोज और फिर विराम आदर्श है और इस विराम के बाद वही चक्र दोहराया जाता है। “समलैंगिक” और “लेस्बियन” विवाह प्रकृति में सबसे दुर्लभ अपवाद हैं और किसी भी सरकार द्वारा किसी कानून और सामान्यीकरण की आवश्यकता नहीं है और इसे केवल समाज पर छोड़ दिया जाना चाहिए।

(सी) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:

1. जब तक कुंडलिनी जागृत नहीं होती, मंदिर, मस्जिद, मठ, चर्च और गुरुद्वारा में अकेला व्यक्ति (विषमलैंगिक जीवनसाथी/साथी के बिना) या तो दबा हुआ रह सकता है या फिर अवैध यौन संतुष्टि या यौन शोषण के क्षेत्र में उपद्रव मचा सकता है और धार्मिक स्थल की पवित्रता को खतरे में डाल सकता है। इसलिए ऐसे स्थान पर वानप्रस्थ आश्रम (अड़तालीस वर्ष से अधिक) या संन्यास आश्रम (बहत्तर वर्ष से अधिक) की आयु के विवाहित लोगों को मुखिया के साथ-साथ अनुष्ठान/प्रार्थना करने वाले के रूप में होना चाहिए। अविवाहित, तलाकशुदा और विधवा व्यक्ति ऐसे धार्मिक स्थानों पर रह सकते हैं, लेकिन द्वितीयक और सहायक पदों पर।

2. छेड़खानी और बलात्कार भी सेक्स के अत्यधिक प्रचार और इसकी कम उपलब्धता के कारण होते हैं, एक तो मीडिया के कारण और दूसरा सेक्स से जुड़े कलंक/वर्जित विचारों के कारण, सुधारात्मक कार्रवाई के लिए समाज में इन पर चर्चा की जानी चाहिए। कई प्रतिष्ठित संगठनों में जबरन कुंवारेपन ने यौन उपयोग या दुर्व्यवहार की बदबू दी है। ऐसे संगठनों को बरकरार रहने के लिए खुद को बदलने की जरूरत है।

3. समलैंगिक और लेस्बियन; कुछ देशों में एक नए वर्ग का तथाकथित उदय अगर कभी-कभार होता है तो एक भ्रमण है, और अगर स्थायी है तो विकृति है। भ्रमण को बाहर रखा जाना चाहिए, या कभी-कभार होने वाली विकृति को छोड़ दिया जाना चाहिए, लेकिन विकृति को रोका जाना चाहिए और उसे बढ़ावा नहीं दिया जाना चाहिए। समलैंगिक और लेस्बियन तथाकथित आधुनिकतावादियों के घेरे में आ रहे हैं जिनका जीवन अधिक पाखंडी होता जा रहा है; मीडिया और अदालतों को ग्लैमराइज़िंग और महिमामंडन की भूमिका के बजाय स्वाभाविक और तटस्थता प्रदान करने वाली भूमिका निभानी चाहिए। चूंकि यह एक सामाजिक मुद्दा है, इसलिए सरकार को किसी भी बहाने से इसमें किसी भी तरह से हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं है।

4. राजनीतिक हलकों में और अन्य शत्रुता में (यौन) उजागर करना और समाप्त करना निश्चित रूप से हमारे समाज के लिए चिंता का विषय बना रहेगा। हमें उजागर करने और समाप्त करने के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। **

17. विकलांग

(ए) जन्मजात विकलांग:

आम तौर पर, जोड़े आनंद, संतुष्टि या अपने तनाव को दूर करने के लिए सेक्स करते हैं, और बच्चे उनके उप-उत्पाद होते हैं। हम सभी उप-उत्पादों की कीमत, महत्व और स्थिति को जानते हैं और यह अस्वस्थ और कभी-कभी विकलांग संतानों के जन्म का प्रमुख कारण है। सभी धर्म और उनके ज्योतिष विज्ञान किसी व्यक्ति के भाग्य का पूर्वानुमान लगाने के लिए जन्म के समय को ध्यान में रखते हैं। कई धर्म, ज्योतिष जैसे कबाला, अंकशास्त्र या कुंडली संकेत देते हैं कि वास्तविक प्रसव के समय की तुलना में गर्भाधान का समय अधिक महत्वपूर्ण है। भारत में कुछ स्थानों पर ज्योतिषी बच्चे की इच्छा रखने वाले जोड़े को गर्भाधान का समय और उसकी गुणवत्ता का सुझाव देते हैं। यह सुझाव दिया जाता है कि इन अवधियों के दौरान संभोग केवल यौन संतुष्टि के बजाय प्रार्थना होना चाहिए।

यह देखा गया है कि कई दम्पति स्वस्थ, सुखी और पवित्र शिशु के लिए "गर्भाधान संस्कार" नामक कुछ संस्कार करते हैं; फिर ये दम्पति पवित्र कुरान में अल्लाह के सौ नामों के शीर्षक में दिए गए निन्यानबे नामों की सूची में से शिशु लड़के या लड़की का नाम भी चुनते हैं (इस सूची में एक नाम छोड़ दिया जाता है जो इंगित करता है कि शिशु का जो भी नाम होगा, वह अल्लाह का नाम होगा)। इसी प्रकार, अन्य धर्मों के अनुयायी तैंतीस करोड़ देवी, देवता, ईसा, मरियम, मूसा, बुद्ध और महावीर या किसी बड़े व्यक्ति के नाम से नाम चुनते हैं। देवताओं के नामों से नाम चयन दो कारणों से किया जाता है: नवागंतुक को भगवान के रूप में सम्मान देना और शिशु का नाम पुकारकर ईश्वर के नाम का उच्चारण करना।

(बी) समाज और सरकार को धार्मिक केंद्रों और मीडिया की मदद से निम्नलिखित को बढ़ावा देना होगा:

1). फूल की पूरी तरह से सराहना करने के लिए बीज की भी सराहना करनी होगी। अगर कोई महिला अपने बच्चों से प्यार करती है लेकिन अपने पति से नफरत करती है, तो बच्चों के प्रति प्यार सिर्फ अधिकार जताना है, प्यार नहीं। एक बेहतर कल में जब महिलाएं अपने बच्चों से सच्चा प्यार करेंगी, तो महिलाओं को अपने विवाह साथी चुनने में अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होगी। समाज वयस्कों को विवाह और संभोग से पहले बातचीत और डेटिंग की अनुमति देने/प्रोत्साहित करने की अपनी भूमिका को फिर से निभाना पसंद कर सकता है।

2). यौन संतुष्टि चाहने वाले जोड़ों के लिए: बेहतर यौन शिक्षा, बेहतर यौन पठन सामग्री और खजुराहो और कोणार्क जैसी जगहों पर जाने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। खजुराहो और कोणार्क के मंदिरों में यौन क्रियाओं का संदेश परिधि में है और केंद्र में भगवान विराजमान हैं। ऐसे केंद्रों को अच्छे बुनियादी ढांचे के साथ बनाए रखा जाना चाहिए।

3). संतान प्राप्ति की चाह रखने वाले दम्पतियों के लिए, गर्भधारण के उचित समय के लिए उचित अंकशास्त्री या ज्योतिषी, हस्तरेखाविद् या टैरो रीडर के माध्यम से सहायता और उनकी आस्था और विश्वास के अनुसार अनुष्ठान करने को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। समाज और सरकार ज्योतिष और विभिन्न ज्योतिष विज्ञानों की एकीकृत प्रक्रिया में अनुसंधान का समर्थन और प्रोत्साहन करना चाह सकते हैं।

(सी) <u>परित्यक्त विकलांग के लिए</u> :

समाज और सरकार पर गहरी जिम्मेदारी है। कुछ विकलांगों में विशेष प्रतिभा होती है और ऐसी प्रतिभाओं का दोहन, समर्थन और प्रोत्साहन किया जाना चाहिए।
परित्यक्त विकलांगों के लिए समाज और सरकार को उचित और जीवंत बुनियादी ढांचे का निर्माण और रखरखाव करने की आवश्यकता है। समाज और सरकार मिलकर ऐसे सभी विकलांग लोगों या कुष्ठ रोग से पीड़ित लोगों को एक स्थान पर लाना चाहते हैं, और उन्हें चिकित्सा और भावनात्मक सहायता प्रदान करना चाहते हैं। यह समाज और सरकार की जिम्मेदारी है, इसलिए विकलांगों के लिए आश्रयों के प्रबंधन में तथाकथित धर्मार्थ ट्रस्टों और गैर सरकारी संगठनों की भूमिका को समाप्त करने की आवश्यकता है। जो भी हो, इनसे और दूसरों से भीख मांगना बंद होना चाहिए।

(घ) <u>दुर्भाग्यशाली विकलांग</u> :

1. केवल प्रमाण पत्र के लिए विकलांग बनना या नौकरियों और अन्य सुविधाओं में आरक्षण/लाभ के लिए वास्तविक अर्थों में विकलांग बनना या भीख मांगना, इनसे सख्ती से निपटना होगा और ऐसे मामलों को शून्य तक कम करना होगा।

2. नेत्रदान को प्रोत्साहित करना होगा; ऐसे सभी प्रोत्साहनों के लिए सभी सफल नेत्र प्रत्यारोपणों के लिए दानकर्ता के परिवार के मुखिया को पचास से सौ ग्राम सोने की टोकन नकद राशि दी जाएगी। सौ से अधिक बिस्तरों वाले अस्पतालों को नेत्रदान की सुविधाओं से लैस करने के लिए कहा जा सकता है। कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण को आसान और सस्ता बनाया जाना चाहिए। विकलांगों

के लिए अनुसंधान और विकास को इस हद तक वित्त पोषित किया जाना चाहिए कि वर्तमान समूह खुशी से रह सके।

3. अन्य सभी विकलांगों के लिए समाज और सरकार को मिलकर उनकी आजीविका का ध्यान रखना होगा और किसी भी स्थिति में भीख मांगने को अनुमति नहीं दी जानी चाहिए या विकल्प के रूप में छोड़ा नहीं जाना चाहिए।

18. जनसंख्या

(ए). आस्था और संतानोत्पत्ति सभी जीवों में जन्मजात इच्छा होती है, और यह इच्छा पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक होती है। हम समझ सकते हैं कि महिलाएं अधिक धार्मिक होती हैं और बच्चों की अधिक चाह रखती हैं। इसमें किसी भी तरह का हस्तक्षेप प्रकृति के विरुद्ध खेलना है।

पश्चिम में जब चर्च अपने युवाओं को निर्देशित करने में विफल रहे या असफल रहे और जब पश्चिम के युवा चर्चों से संतुष्ट नहीं हुए, तो उन्हें एक खालीपन महसूस हुआ और प्रकृति के अनुसार खालीपन को नापसंद करने के कारण यह स्थान हिप्पी संस्कृति और यौन संतुष्टि से भर गया। यौन मुक्ति को बनाए रखने के लिए, महिलाएँ बच्चों को ले जाने से मना कर देती हैं। यह स्थिति लगातार तलाक और एकल माता-पिता से जुड़ी समस्याओं से और भी गंभीर हो गई। बच्चों के विकास के लिए बचाए गए पैसे को अकेलेपन की बोरियत से बचने के लिए विलासिता के लिए नए और नए तकनीकी खिलौने खरीदने में निवेश किया गया। यह समस्या कई देशों में और भी गंभीर होती जा रही है क्योंकि बुढ़ापे में बच्चे अपने माता-पिता के साथ वित्तीय योगदान/सहयोग करने से इनकार कर देते हैं, जिसके कारण कई जोड़े बच्चों के पालन-पोषण पर खर्च करने के बजाय अपने भविष्य के लिए पैसे बचाने की जीवनशैली अपनाने के बारे में सोचते हैं।

(बी). पश्चिम में घटती जनसंख्या ने पश्चिमी बुद्धिजीवियों को सचेत कर दिया है, लेकिन वे खुद को आंतरिक नैतिक समस्याओं से निपटने में असमर्थ पाते हैं। पश्चिमी आबादी में गिरावट और पूर्वी आबादी में वृद्धि ने उन्हें चिंतित कर दिया था कि यह बढ़ती आबादी उनके देश पर कब्ज़ा कर लेगी। इस अनावश्यक भविष्य के डर से प्रेरित होकर, पश्चिमी मौलवियों ने छोटे परिवार और परिवार नियोजन के विषय का प्रचार करना शुरू कर दिया। अपने प्रचार को समर्थन देने के लिए, उन्होंने जन्म नियंत्रण के लिए उपकरण और तरीके विकसित किए, और विषय को पूरक बनाने के लिए, मीडिया का उपयोग यह प्रचार करने के लिए किया गया कि जनसंख्या देशों के विकास और विकास के लिए मुख्य समस्या है।

(सी) उपरोक्त विचार से निष्कर्ष निकालते हुए, कुछ देशों और कुछ अन्य मौलवियों ने यह मानना शुरू कर दिया कि यदि हमारे देश और हमारे कबीले की जनसंख्या सबसे अधिक है तो हम दुनिया पर राज करेंगे। प्रकृति में, हम जो कुछ भी दबाते हैं वह जुनून बन जाता है, और जो कुछ भी हम प्रोत्साहित करते हैं वह दब जाता है, और यह पूर्व के साथ-साथ पश्चिम के लिए भी सच है, एक को कम जनसंख्या की समस्या है और दूसरे को अधिक जनसंख्या की समस्या है। इसके अलावा

कई पूर्वी देशों में जहाँ प्रति व्यक्ति आय बहुत कम है, बच्चे कमाने वाले सदस्य पाए जाते हैं (भीख माँगकर, छोटे–मोटे काम करके, सरकारी राशन का लाभ उठाकर आदि) जो कि कई तीसरी दुनिया के देशों में जनसंख्या को बढ़ाने वाले मुख्य कारणों में से एक है।

सरकार को कल्याणकारी राज्य के अपने तथाकथित प्रक्षेपण को त्यागना चाहिए और समाज के माध्यम से जनता को प्रोत्साहित करना चाहिए कि उनके अनुयायी भीख और गुलामी के बिना खुशहाल और स्वस्थ जीवन जीएं, और फिर एक परिवार में कितने बच्चे हैं; सरकार को इसकी चिंता नहीं करनी चाहिए।

(डी) पिछले साठ सालों में दुनिया की मानव आबादी दो सौ करोड़ से तीन से चार गुना बढ़कर लगभग सात सौ करोड़ हो गई है, जिसका मुख्य कारण जीवन के हर क्षेत्र में बिजली, पेट्रोलियम उत्पादों का आगमन है (चाहे वह चिकित्सा सुविधाएं हों, मेट्रो, ऊंची इमारतों और झुग्गियों का भरण–पोषण, ध्रुवीय क्षेत्रों के पास और रेगिस्तान में हीटिंग और कूलिंग सपोर्ट हो), ऐसी वृद्धि असुरक्षित है। समाज को आगे आना होगा ताकि देश और दुनिया में एक संतुलित परिवार की अवधारणा स्थापित और कायम रहे। ***

19. सकल घरेलू उत्पाद बनाम सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपीआर)

इस प्रकार, सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) गलत शब्द है, आठ प्रतिशत की वृद्धि के लिए यह इस प्रकार का प्रभाव देता है:
आठ प्रतिशत की वृद्धि: गरीबों की गरीबी में।
आठ प्रतिशत की वृद्धि: विकसित देशों के विकास में।
आठ प्रतिशत की वृद्धि: अविकसित का कोई विकास नहीं।
आठ प्रतिशत की वृद्धि: लूटपाट, अपराध, नक्सलवाद और उग्रवादी गतिविधियों में, साथ ही दलितों की विनम्रता और अच्छाई की अच्छाई में।
जीडीपी पर अत्यधिक जोर देने से असंतुलन बढ़ा है, समाज में गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ी है। चोरी और डकैती में वृद्धि, दिनदहाड़े लूटपाट, अन्य आपराधिक और नक्सली गतिविधियों के अलावा जीडीपी को अत्यधिक महत्व देने की घटना को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। चूंकि कुल हवा में ऑक्सीजन का प्रतिशत लगभग समान रहता है और उसे समान रहना ही पड़ता है, इसलिए पारिस्थितिकी या अर्थशास्त्र में इस तरह की वृद्धि अशांति/असंतुलन का संकेत है, इसलिए जीडीपी शब्द को सकल खुशी अनुपात से बदलने की जरूरत है, जहां **जीएचआर को सकल खुशी अनुपात (जीएचआर) = ए/बी के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।**

उत्तर: बुनियादी ढांचे, शक्ति निर्माण और रखरखाव, भोजन और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट, परोपकार आदि पर सरकार और जनता का कुल व्यय।

बी: स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, तथा तथाकथित नैतिक उपदेश, संकट प्रबंधन और शवगृह व्यवसाय पर सरकार और जनता का कुल व्यय। सकल खुशी अनुपात में वृद्धि से हम सभी को अधिक मात्रा में जीवनदायी शक्ति मिलेगी।

जब प्रवृत्ति नीचे की ओर होती है तो स्वास्थ्य, मुकदमेबाजी, धर्मोपदेश और शवगृह व्यवसाय में वृद्धि होती है और जब प्रवृत्ति ऊपर की ओर होती है तो बुनियादी ढांचे, खाद्य और फिटनेस, आहार और डिजाइन, फैशन और मनोरंजन, रिजर्व और अनुसंधान, विकास और सजावट में वृद्धि होती है। **

20. मूल्य आधारित नेतृत्व

(A) यह शब्द आमतौर पर राजनीतिक क्षेत्र, कॉर्पोरेट घरानों और बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों में इस्तेमाल किया जा रहा है; यहाँ वे कहते हैं कि नेतृत्व मूल्य आधारित होना चाहिए, लेकिन इस क्षेत्र के अधिकांश लोग इस बात पर अनिर्णीत हैं कि क्या यह मूल्य (नैतिकता, आचार संहिता) है जो महत्वपूर्ण है, या नेतृत्व महत्वपूर्ण है।
आम तौर पर कोई व्यक्ति मूल्यों या नेतृत्व को कितना महत्व देता है, यह उसके कार्य–क्रम को निर्धारित करता है। अगर किसी के लिए मूल्य महत्वपूर्ण है, तो हो सकता है कि उसके लिए नेतृत्व महत्वहीन हो जाए और हो सकता है कि वह मूल्य को बनाए रखने के लिए बहुत कुछ त्याग दे (स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान ऐसा अक्सर होता था)। और अगर किसी के लिए नेतृत्व महत्वपूर्ण है, तो यह बिल्कुल स्पष्ट है कि नेतृत्व को बनाए रखने के लिए वह पहले व्यक्तिगत मूल्यों का त्याग करेगा, और फिर उन सभी मूल्यों का त्याग करेगा जो उसके नेतृत्व में बाधा बन रहे हैं।

व्यावहारिकता यह बताती है कि कुछ मूल्य समय और स्थान के अनुसार बदल जाते हैं, (जैसे युद्ध के समय, शांति के समय, दुःख के समय और सुख के समय) क्षेत्र और धर्म के अनुसार और कुछ मूल्य चिरस्थायी बने रहते हैं। समाज के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि चिरस्थायी मूल्यों को बनाए रखा जाए, भले ही इससे समाज में कुछ लोगों का नेतृत्व खत्म हो जाए। यदि मूल्य अक्षुण्ण रहें तो किसी को परेशान नहीं होना चाहिए, आमतौर पर नया नेतृत्व अपेक्षा से जल्दी उभरता है जो फिर से चिरस्थायी मूल्यों को पूरा महत्व देते हुए काम करेगा। यदि मूल्य अक्षुण्ण नहीं रहेंगे, तो यह संभव है कि न केवल वह नेता या वह समूह नीचे चला जाए बल्कि पूरा समाज नीचे चला जाए और पीड़ित हो। इसलिए चिरस्थायी मूल्यों को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है, और ऋषियों के आशीर्वाद से समाज की दृष्टि और लक्ष्य के अनुसार काम करने के लिए नया नेतृत्व आसानी से स्थापित हो जाएगा।

(बी) राजनीतिक क्षेत्र में पेशेवर राजनेता अपनी व्यावसायिकता के अनुसार ईमानदारी दिखाते हैं। लेकिन जहाँ अतिरिक्त ईमानदारी दिखती है, वह आमतौर पर या तो असुरक्षा की गहरी भावना से उत्पन्न होती है या प्रेम की अधिकता से। असुरक्षा की गहरी भावना से उत्पन्न राजनीति अपने दलीय संगठन और जनता में असुरक्षा पैदा करती है, और प्रतिबद्धता की गहरी भावना और प्रेम की अधिकता से उत्पन्न राजनीति लक्ष्य के लिए त्याग करने और दूसरों की सुविधा के लिए नेताओं का निर्माण करती है।

प्रार्थना है कि हम ऐसे मतभेदों को देखें और फिर स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के लिए अपना रास्ता और नेता चुनें, और पहले स्वयं को, फिर समूह को, फिर धर्म और क्षेत्र को, फिर राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय को और अंत में सनातन धर्म को मजबूत करके अपनी यात्रा शुरू करें।

(स) जन्मजात नेतृत्व क्षमता वाले व्यक्ति को नेतृत्व प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि उसकी प्रतिभा और निखर सके। इसके लिए नेतृत्व महाविद्यालय खोले जाने चाहिए (जिसमें राजनीति, राजनीति, व्यापार, मानव संसाधन प्रशासन, भूगोल और संक्षिप्त इतिहास, विश्व धर्म की झलक, हमारी योग्यता और हमारी क्षमता आदि विषय शामिल हों)
कॉर्पोरेट क्षेत्र में यह देखा गया है कि; लगातार विफल हो रहे प्रबंधन सिद्धांतों में, उद्योगों में प्रचलित पारिवारिक माहौल अभी भी अच्छे परिणाम दे रहा है। हमारे लिए इस विशेषता पर सामाजिक क्षेत्र में इसके अनुप्रयोग के लिए भी चर्चा करना बेहतर होगा। ***

21. धर्मनिरपेक्ष विस–ए–विज़ धर्मनिर्पेक्षता

(ए)। भारतीय धर्म निर्पेक्ष धर्म ग्रंथम से लिया गया है जहां निरपेक्ष का अर्थ धर्म है जो गैर–संबंधपरक है यानी हिंदू के लिए सपेक्ष नहीं, मुसलमानों के लिए सपेक्ष नहीं, बौद्ध के लिए सपेक्ष नहीं, ईसाई के लिए सपेक्ष नहीं, यहूदियों के लिए नहीं और एक्स, वाई, जेड के लिए सपेक्ष नहीं। निरपेक्ष, सपेक्ष के विपरीत है।
भारत का कहना है कि धर्म 'सनातन' है और इसमें सभी धर्म शामिल हैं, जबकि धर्मनिरपेक्ष शब्द थोड़ा भ्रम पैदा करता है क्योंकि इसका अर्थ है गैर–धार्मिक और पूरी तरह से धन–उन्मुख सरकार। धर्म–निरपेक्ष के लिए अंग्रेजी में कोई सटीक शब्द नहीं है। धर्म–निरपेक्ष का अर्थ है पूरी तरह से धार्मिक या पूरी तरह से धार्मिक। धर्म–निरपेक्ष देश के रूप में भारत एक पूरी तरह से धार्मिक (धार्मिक) देश को दर्शाता है और इसे 'भारत – धर्म–राष्ट्र, भारत – धार्मिक देश' कहा जा सकता है।

(बी). "भारत" (भा–प्रकाश, और चूहा–व्यस्त) नाम विभिन्न ऋषियों द्वारा मानव जाति को प्रबुद्ध करने के प्रयासों के बाद आया है। भारत चमकदार सफेद रोशनी देता है, जो जीवन और जीवन के सभी रंगों को समाहित करता है। अपने रंगीन लेंस वाले व्यक्ति इसमें अपना मनचाहा रंग देख सकते हैं और इसकी सराहना कर सकते हैं। 'सनातन' शब्द वास्तव में पुराने और नए भारत को समान रूप से दर्शाता है।

(सी) <u>हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे</u> :

1. भारत धर्मनिरपेक्ष था और रहेगा (क्योंकि यह प्रत्येक भारतीय के रक्त और मज्जा में है); इसलिए इसमें हस्तक्षेप करने या इसे धर्मनिरपेक्ष कहने का कोई भी प्रयास हम सभी के लिए अप्रसन्नता का कारण बनेगा।

2. मुसलमानों, ईसाइयों, यहूदियों, बौद्धों और हिंदुओं के बीच चल रही विभिन्न अंतःक्रियाएं (राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय) जैसे आक्रामकता, धर्मांतरण को बढ़ावा देना, योग, ध्यान को अपनाना, मिश्रण और आत्मसातीकरण और परिणामस्वरूप उभरती धर्म निरपेक्ष (पूर्ण रूप से धार्मिक – सनातन) विश्व व्यवस्था का संकेत हैं।

3. भारत को आंतरिक तथा बाह्य स्तर पर धर्म–निरपेक्षता के विचार–विमर्श को बढ़ावा देना होगा, तथा धर्म–निरपेक्षता और उसके आचरण के संरक्षक के रूप में भारत को अपने मार्ग में आने वाली सभी प्रतिकूलताओं को समाप्त करना होगा तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर धर्म–निरपेक्षता को बढ़ावा देना होगा ।

22. कानून

चीन और जापान में एक प्रसिद्ध पेंटिंग में ज़ेन मास्टर को धम्मपद जलाते हुए दिखाया गया है, जो कि ज़ेन मास्टर की धार्मिक पुस्तक (बौद्धों के लिए एक तरह की कानून की पुस्तक) है। जब कोई आता है, तो किताबें और शास्त्र अपनी प्रासंगिकता खो देते हैं।

ऐसे लोग और समाज प्रकृति के साथ कंपन करते हैं और उसका शब्द आदेश बन जाता है, और घटनाएँ घटित होती हैं, चाहे कानून की किताब में लिखा हो या नहीं। लोगों को पूर्वनिर्धारित या पूर्वानुमानित नहीं किया जा सकता है, लेकिन वे जिम्मेदार हैं।

जो लोग अभी तक नहीं पहुंचे हैं, उनके लिए लिखित नियम और दस्तावेजी कानून की किताबें चाहिए। जिन देशों के नियम और कानून की किताबें बड़ी हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि वे अभी तक नहीं पहुंचे हैं और अगर नियम और कानून की किताबें भ्रम और अराजकता पैदा कर रही हैं, तो यह कहा जा सकता है कि देश अभी भी नवजात अवस्था में है। यह स्पष्ट है कि अगर नियम और कानून जटिल हैं, तो न्याय की डिलीवरी खतरे में पड़ सकती है। किसी देश और समाज को युवा बने रहने के लिए, उसे अपनी कानून की किताबों का अनुभव करना चाहिए। **

23. आदेश

तंत्र कहता है कि जो लोग पूर्ण रूप से व्यवस्थित हैं, वे अगर कुछ भी कहें तो वह व्यवस्था बन जाती है, और जो लोग व्यवस्थित हैं, उन्हें ही आदेश देने का अधिकार है। कोई भी सिस्टम (यहां तक कि मशीनें भी), जो व्यवस्थित नहीं हैं, न तो निष्पादन योग्य आदेश दे सकती हैं और न ही आदेशों का पालन कर सकती हैं, ऐसे व्यक्ति या मशीनों या सिस्टम से कोई भी आदेश जितना साफ़ होता है, उससे ज़्यादा अव्यवस्था पैदा करता है। उनका समाधान समस्याओं की आपूर्ति करता है और प्रत्येक हस्तक्षेप अधिक हस्तक्षेप और भ्रम पैदा करता है। अव्यवस्थित सिस्टम में, यह कथन कि, "आवश्यकता आविष्कार की जननी है", "आवश्यकता आविष्कार का बच्चा है" से बदल जाता है।

तंत्र स्वयं को और सिस्टम को व्यवस्थित करने के लिए एक सौ बारह तरीके सुझाता है। ये बारह सौ तरीके सर्वसमावेशी हैं और इनमें सभी धर्मों और सभी समय, भूत, वर्तमान और भविष्य की सभी प्रक्रियाएं शामिल हैं, और इनका परीक्षण किया गया है। किसी भी चीज को निष्पादित करने के लिए आदेश की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यवस्थित होता है, यानी जब वह प्रकृति (पर्यावरण, मौसम, परिवेश और स्थिति) के साथ तालमेल में होता है, तो आदेशों का पालन किया जाता है। एक व्यवस्थित प्रणाली में व्यक्ति को कोई तनाव नहीं होता, इच्छाओं और इच्छाओं की कोई बाधा नहीं होती। यह एक आदर्श विद्युत प्रणाली की तरह है, जिसमें स्विच ऑन करने पर बल्ब जलता है और मशीनें काम करती हैं।

समाज को खुद को और सरकार को व्यवस्थित करने की प्रक्रिया और अभ्यास को बढ़ावा देना और प्रोत्साहित करना है ताकि व्यवस्था का सम्मान किया जा सके और उसका पालन किया जा सके। जो लोग व्यवस्थित हैं उन्हें सत्ता, या मार्गदर्शन, आलोचक और सचेत रक्षक या सभी की सीट लेनी होगी। हमें व्यवस्था की जांच करनी होगी और अव्यवस्था पैदा करने वाली बाधाओं को दूर करना होगा। आइए हम ईश्वर से प्रार्थना करें कि हम व्यवस्थित रहें। ***

24. सरकार

(अ) इतिहास का संदर्भ लेने वाले इस बात की सराहना करेंगे कि लिखित इतिहास में, शुद्ध अराजकता से शुरू हुई सरकार तीरंदाजी की ओर जाती है, तीरंदाजी से समूह तीरंदाजी, शारीरिक तीरंदाजी से शारीरिक और मानसिक तीरंदाजी, तीरंदाजी से धनुर्धरता और फिर राजसी अभिजाततंत्र की ओर। राजसी अभिजाततंत्र से राजसी अत्याचार, राजसी तानाशाही से सामूहिक तानाशाही, सामूहिक तानाशाही से राक्षसतंत्र और राक्षसतंत्र से प्रत्यक्ष अभिजाततंत्र यानी लोकतंत्र और इस प्रत्यक्ष अभिजाततंत्र से लोकतंत्र और यदि यह क्रम चलता रहा तो बेहतर समय में सरकार में लोकतंत्र में देवत्व होगा और अंततः दिव्य लोकतंत्र के रूप में।

अगर हम विश्व परिदृश्य पर नज़र डालें तो हम पाएंगे कि छोटे से लेकर बड़े स्तर तक लोकतंत्र तक हर तरह की सरकार मौजूद है और हम यह भी देख सकते हैं कि ये निरंतर आधार पर विकसित हो रही हैं। अगर हम बारीकी से देखें तो भारत और कुछ अन्य देश शासन के एक रूप के रूप में तेजी से दानव-तंत्र से प्रदर्शनीय अभिजाततंत्र (लोकतंत्र) से दिव्य-लोकतंत्र (पुरोहिती अभिजाततंत्र नहीं) की ओर बढ़ रहे हैं।
ऐसा कहा जाता है कि इस विकास प्रक्रिया में, जो लोग दुनिया को प्रकाशित करने और लोगों को प्रबुद्ध करने के लिए खुद को समर्पित करते रहते हैं, वे इसके स्पष्ट मशालवाहक बन जाते हैं और भारत के रूप में जाने जाते हैं।

(बी) जो लोग इतिहास का संदर्भ नहीं लेते, वे समझते हैं कि दुनिया में कुछ भी आकस्मिक, संयोग या आकस्मिक नहीं है, बल्कि सब कुछ क्रमिक है। चूंकि प्रकृति का प्रतिमान इतना विशाल है कि अधिकांश घटनाएं और प्रक्रियाएं आकस्मिक, संयोग या आकस्मिक लगती हैं, लेकिन जो लोग प्रकृति के साथ तालमेल बिठाते हैं, उनके लिए जन्म से लेकर मृत्यु और पुनर्जन्म तक सब कुछ क्रमिक है और बस समय व्यतीत करने का समय है (ब्रह्म-अल्लाह-सर्वशक्तिमान का)। जो लोग प्रकृति में/के साथ प्रयोग करते हैं और जो नहीं करते हैं, वे सभी मूल रूप से प्रकृति की विकास प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

ऐसा कहा जाता है कि इस विकासवादी प्रक्रिया में, जो लोग दुनिया को रोशन करने और लोगों को प्रबुद्ध करने के लिए खुद को समर्पित करना जारी रखते हैं, वे इसके स्पष्ट मशाल वाहक बन जाते हैं और भारत के रूप में जाने जाते हैं। भारत (भा + रत), भा- प्रकाश, ज्वाला, ऊर्जा, चूहा- व्यस्त, यानी ज्ञानोदय में व्यस्त, (इसकी सफेद आभा में जीवन के हर रंग समाहित हैं)। यह कहा जा सकता है कि भारत दुनिया का एक स्वाभाविक नेता है और इसलिए यह भी आवश्यक है कि भारत अपनी पूरी जीवंतता और गतिशीलता के साथ दुनिया के एक स्वाभाविक नेता की तरह

व्यवहार करे, ताकि हर जगह एक स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र वातावरण बना रहे। अतीत में भारत ने इसे बनाए रखा और अब समय आ गया है कि भारत उसी मार्ग पर चले।

ऊपर लिखी बातें सिर्फ़ इसलिए हैं, क्योंकि भरत समझते हैं कि नेतृत्व का मार्ग दिल से दिमाग, मानसिक बनावट से शारीरिक क्रिया, शब्दों, कार्यों और कर्मों से होकर जाता है। ऐसा कहा जाता है कि अगर भरत नेता की तरह व्यवहार नहीं करते हैं तो आमतौर पर परिस्थितियाँ अराजकता की ओर ले जाती हैं या फिर तबाही भी हो सकती है।

भारत समझता है कि दूरदर्शी ही लक्ष्य को देखता है और दिखाता है, और हम सभी समझते हैं कि लक्ष्य आकर्षित करता है और उसकी प्राप्ति के लिए मार्ग दिखाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर की सर्वोच्च योजना, कार्यान्वयन और समन्वय निकाय को ऐसे सभी ऋषियों, संतों और सूफियों (एकांत में या परिवार में रहने वाले) का निरंतर आशीर्वाद प्राप्त करना होगा और समग्र कल्याण के लिए क्रमबद्ध तरीके से कार्य करना और व्यवहार करना होगा। ऋषियों, संतों और सूफियों के आगे के आदेशों को चाहे जो भी परिस्थितियाँ या प्रचलित/मौजूदा कानून हों, सर्वोच्च शक्ति प्राप्त करनी होगी। प्राकृतिक नेतृत्व की गतिशीलता और पोषण को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि ये आदेश सीधे प्रकृति से पहले से आते हैं और आपदाओं, युद्ध और उत्सवों में भिन्न होते हैं।

यह भी कहा जा सकता है कि नेता एक संस्था है, जो परिस्थितियों से आकार लेती है, ऋषियों द्वारा आशीर्वादित होती है, गुरुओं द्वारा समर्थित होती है, बुद्धिजीवियों द्वारा प्रचारित होती है, अनुयायियों के माध्यम से चलती है और कैनवास के सामान्य भाग्य के लिए काम करती है। यह एक संरचित घटना है और इसी तरह से काम करती है। कोई भी बदलाव तबाही की ओर ले जाता है और इसे हर कीमत पर टाला जाना चाहिए। (एकल व्यक्ति संस्था दुर्लभ है और सर्वशक्तिमान–भगवान 'कृष्ण' की तरह एकाधिकार है)। ऐसे परिदृश्य में हमारे लिए दूरदर्शी, ऋषियों, द्रष्टाओं और सूफियों का सम्मान करना आवश्यक है और खुश, स्वस्थ और पवित्र रहने के लिए उनके आदेशों का पालन करना चाहिए। यह अलग बात है कि ऐसा वर्ग सम्मान पाता है और कभी सम्मान का भूखा नहीं रहता।

(सी). यदि हम विश्व परिदृश्य पर बारीकी से नज़र डालें तो हम कह सकते हैं कि विभिन्न समाजों, धर्मों और देशों के बीच आत्मसात प्रक्रिया शुरू हो गई है, जिसे विभिन्न घटकों के बीच नफरत के साथ–साथ प्यार के बढ़ने से देखा जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि नफरत और प्यार का रिश्ता नीचे दिए गए तरीके से बढ़ता है:

नफरत + प्यार = दया,

दया + प्रेम = सहायता.

सहायता + प्रेम = करुणा
करुणा + प्रेम = परोपकार
परोपकार + प्रेम + प्रेम = प्रेम

हम कह सकते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय परिवार या अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे की भावना दुनिया में मौजूद है और हम सभी इसे विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे सुनामी, भूकंप या चक्रवात और बीमारियों के प्रसार के दौरान देखते हैं। हमने हाल ही में देखा है कि कैसे पूरी दुनिया से सूचना, सुझाव, सहयोग की पेशकश आने लगती है, हालांकि मदद की मात्रा व्यक्ति की क्षमता के अनुसार अलग-अलग होती है। यह समझना आम बात है कि मदद की मात्रा उदासीन व्यक्ति से बढ़ती है, उसके बाद परिचितों से, उसके बाद उनसे नफरत करने वालों से, उसके बाद उनसे प्यार करने वालों से।

जिन समाजों और देशों में दुश्मनी या नफरत कायम है, वहाँ देर-सवेर वह उदासीनता या प्रेम में बदल जाती है। बढ़ते रिश्ते में उदासीनता पुनर्संरेखण का कारण बनती है जबकि नफरत या प्रेम एकीकरण का कारण बनते हैं और दोनों ही इस अवधारणा में डूबने की ओर अग्रसर होते हैं कि दुनिया एक बड़ा परिवार है और इसमें शामिल देश एक परमाणु परिवार की तरह है। अफ्रीका, एशिया, यूरोप और अमेरिका के विभिन्न देशों के संभावित विघटन या विलय में राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रीय राजधानियों को बदलने की आवश्यकता होगी, साथ ही कई अन्य बदलाव भी होंगे जिन्हें एक सामान्य परिणाम माना जा सकता है।

उपरोक्त परिदृश्य में भारत और पाकिस्तान के एकीकरण की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। आम जनता और उनके नेताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इस बात पर विचार करें कि किस तरह से कुछ बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत और पाकिस्तान जैसे देशों के बीच नफरत को बढ़ावा दिया है और फिर दोनों देशों को लूटकर और बेवकूफ बनाकर दोनों देशों से भारी लाभ उठाया है। आम जनता और उनके नेता इस बात को समझते हैं कि जब परिवार अलग हो जाता है और परिवार के सदस्य पड़ोसी बन जाते हैं तो यह सामान्य बात है, लेकिन परिवार के सदस्यों को पड़ोसी बनते और दुश्मनी करते देखना बहुत दुखद स्थिति है। ऐसी स्थितियों में, नफरत-शत्रुता, हताशा-झगड़े, क्रोध-आक्रामकता, रोना-धोना और प्रेम का अचानक बढ़ना ऐसे अलगाव के स्वाभाविक परिणाम हैं, जिन्हें दुर्भाग्य से सभी को देखना पड़ता है। लेकिन जब दिल एक ही तरंगदैर्घ्य पर धड़कते हैं, तो न केवल भारत और पाकिस्तान बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई अन्य देशों के एकीकरण की उम्मीद हमेशा बनी रहती है। मतभेद चर्चा में नहीं बल्कि प्रेम और समुद्र की उदारता की धारा में डूबे हुए हैं, शायद हम सभी अपने शब्दों और कार्यों में इसकी सराहना करेंगे ताकि हमारी सामूहिक खुशी हो। हो सकता है कि घटक देश एकीकरण की संभावना को साकार करने के लिए एक या दो जनमत संग्रह कराना चाहें, जैसा कि ऊपर बताया गया है।

चीनी उत्पादों को सस्ता कहा जाता है, लेकिन बताया जाता है कि यह सस्तापन उसी देश के असहाय मजदूरों का खून चूसकर लाया जाता है, जो कभी मजदूरों के हितैषी होने का दिखावा करता था। चीन को इस मामले में मानवीय दृष्टिकोण अपनाना चाहिए और कैदियों सहित अपने नागरिकों की देखभाल करनी चाहिए।

भारत और चीन दो सबसे लोकप्रिय (कम से कम बुद्ध, लाओ-त्ज़ु और कन्फ्यूशियस के समय से) और सबसे अधिक आबादी वाले देश हैं, जिन्हें दुनिया की आबादी से ज़्यादा अपने लोगों का ख्याल रखने की ज़रूरत है और उन्हें सहयोग करने और यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि दुनिया परमाणु विनाश के तथाकथित निरंतर खतरे में बची रहे। भारत और चीन के बीच साझा सीमा, साझा मुद्रा, साझा परिवहन और साझा संचार पर चर्चा और विचार किया जा सकता है।

(डी) कोई भी व्यक्ति अपने शरीर की बनावट में विदेशी वस्तुओं को पसंद नहीं करता। विदेशी कणों को उपद्रव के रूप में देखा जाता है और अत्यंत आवश्यक और आपातकालीन स्थिति में ही उनका उपयोग और उपभोग किया जाता है। विदेशी वस्तुओं का उपयोग कमजोरी और लाचारी की निशानी माना जाता है। जब तक हम वैश्विक भाईचारे/परिवार के स्तर तक नहीं पहुंच जाते, विदेशी चीजें विदेशी ही रहेंगी,

हम सभी लोग भोजन में विदेशी तत्वों को आवश्यकता के अनुसार स्वीकार करते हैं और आम तौर पर इससे बचते हैं, लेकिन साथ ही हम चाहते हैं कि विदेशी तत्व विभिन्न प्राणियों और वस्तुओं के लिए बने रहें/मौजूद रहें। सभी विदेशी और विदेशी वस्तुओं को हम अनुभव की अभिव्यक्ति के लिए अपना क्षेत्र मानते हैं (क्योंकि हर अनुभव अभिव्यक्ति चाहता है), और अनुसंधान प्रयोगशालाओं को प्रयोग करने और अपनी इच्छा और इच्छा के अनुसार उनका उपयोग और उपभोग करने के लिए। हर कोई अपना विस्तार करना चाहता है लेकिन आत्म-विनाश के खतरे से रोका और प्रतिबंधित किया जाता है।

यह एक तथ्य है कि किसी भी देश की अन्य विदेशी देशों के प्रति नीतियां आमतौर पर उपरोक्त दृष्टिकोण से निर्देशित होती हैं और ऐसे परिदृश्यों में किसी भी देश के लिए बेहतर होगा कि वह अपनी आंतरिक शक्ति और एकजुटता को बनाए रखते हुए वैश्विक परिवार को वास्तविकता बनाने की दिशा में आगे बढ़े। जो भी हो, जोखिम या रोमांच, खुशी हर किसी की एकमात्र इच्छा कही जा सकती है कि वह परिवार, समाज, देश और वैश्विक परिवार बनाए और इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए। ***

25. संसद

***अधिक संदर्भ के लिए: पुस्तक– डिविंक्रेसी, अध्याय –5, लोकतांत्रिक देशों की स्थिति,**

भारतीय संसद एक भूतहा घर बन गई है, जिसके हर कोने में बहुत सारी मूर्तियाँ हैं। इतनी सारी मूर्तियों की मौजूदगी ने संसद को एक अजीवित संस्था में बदल दिया है। भारत–माता की एक मूर्ति पर्याप्त से अधिक मानी जा सकती है; गीता, कुरान, गुरु–बानी आदि से देवी–देवताओं के वाक्यांशों के फोटो फ्रेम बेहतर रचना और जीवंतता प्रदान करेंगे, साथ ही धर्म–निर्पेक्ष देश की एक सच्ची संस्था का प्रतीक भी बनेंगे।

1. कई लोगों का मानना है कि भारतीय संसद और भारतीय सर्वोच्च न्यायालय भारत में ब्रिटिश छद्म उपस्थिति के दो अंतिम प्रतीक हैं और इन्हें ध्वस्त कर दिया जाना चाहिए तथा सभी धर्मों के मूल सिद्धांतों पर आधारित एक नई प्रणाली, जो गतिशील और प्रकृति के साथ जीवंत हो, को शुरू किया जाना चाहिए और उसे प्रयोग/अभ्यास में लाया जाना चाहिए।

2. यदि हमें लगता है कि भारत (देश) को "विजेता सब कुछ ले जाता है" की अवधारणा से दूर जाना चाहिए और राष्ट्रीय चुनाव में दूसरे और तीसरे स्थान पर रहने वालों की सेवाओं का लाभ उठाना / जोड़ना पसंद करना चाहिए, तो हमें संसद के नए सदस्यों पर विचार करना होगा और देश के विभिन्न हिस्सों में ऐसी संसद खोली जानी चाहिए।

(3). हर कोई जानता है और समझता है कि किसी भी संगठन और संगठनात्मक गतिविधि के लिए जनशक्ति और धन की आवश्यकता होती है, और यदि उससे जुड़े कार्य और जिम्मेदारी बहुत बड़ी हो तो आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। फंडिंग के वर्तमान अप्रत्यक्ष तरीके में, राजनीतिक दल भी बड़े दानदाताओं/योगदानकर्ताओं के प्रति ऋणी महसूस करते हैं और जीतने के बाद सरकारी एहसान के रूप में इसे चुकाने के लिए मजबूर महसूस करते हैं, जो आम तौर पर बहुत अधिक रिटर्न के बराबर होता है। फंडिंग का यह अप्रत्यक्ष तरीका किसी भी देश के करदाताओं और नागरिकों के लिए बहुत महंगा है।
राजनीतिक दलों की आवश्यकता, प्रत्यक्ष वित्तपोषण के लाभ, प्रत्यक्ष वित्तपोषण की जाँच और संतुलन पर छह से आठ वर्षों में चर्चा, क्रियान्वयन और समय–समय पर समीक्षा की जानी चाहिए। शुरुआत में, कोई देश अधिकतम स्वीकार्य चुनाव व्यय सीमा (सकल घरेलू उत्पाद–जीडीपी के एक प्रतिशत से अधिक नहीं) के बराबर राशि पर चर्चा कर सकता है और योगदान कर सकता है, जो सभी सांसदों के लिए तर्कसंगत रूप से तीन–चार मुख्य राष्ट्रीय दलों के बीच समान रूप से वितरित की जाती है और फिर कुछ कम राशि छोटी पार्टियों को दी जाती है। ***

26. मार्ग (कर्म, ज्ञान, भक्ति, राज योग और उसका संयोजन)

(ए) <u>तरीका:</u>

1. मोटा आदमी ज़्यादा खाता है और ज़्यादा खाने की वजह से उसे नींद आती है और वह कम काम करता है और ऐसा करने से मोटापा बढ़ता है और यह चक्र चलता रहता है। दूसरी तरफ़, कामकाजी लोग ज़्यादा काम करते हैं और फ़िट रहते हैं, इसलिए ज़्यादा काम कर सकते हैं और ज़्यादा काम करके वे काम की ओर ज़्यादा आकर्षित होते हैं और काम/कर्म के ज़रिए जो चाहें हासिल कर लेते हैं। इन्हें कर्म- योगी कहा जा सकता है।

2. दूसरे प्रकार के लोग जो अधिक से अधिक अध्ययन करते हैं, योजना बनाते हैं और बदले में उन्हें अधिक से अधिक शंकाओं का समाधान मिलता है। ऐसे लोग अपनी बुद्धि, ज्ञान और अध्ययन के माध्यम से योगदान करते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं और ज्ञान – योगी कहलाते हैं । ज्ञान योगी.

3. तीसरे प्रकार के लोग अपने स्वामी की चापलूसी, चाटुकारिता और प्रार्थना में रहते हैं, ऐसा करने से उन्हें अपने स्वामी की सेवा करने का अधिक से अधिक अवसर मिलता है और अपने वरिष्ठों, स्वामी या पिता की भक्ति के माध्यम से वे जो चाहें प्राप्त कर लेते हैं।
सर्वशक्तिमान और भक्ति – योगी भक्ति योगी के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

4. चौथे प्रकार के लोग उपरोक्त तीनों की सेवाओं का उपयोग अपने और अपने स्वयं के लाभ के लिए करते हैं और तालमेल के माध्यम से जो चाहें प्राप्त करते हैं और एक तरह से राजयोगी – राजयोगी की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

5. पाँचवें प्रकार के लोग उपरोक्त सभी को समझते हैं, उनका पालन करते हैं, उनमें से किसी या सभी के साथ काम कर सकते हैं और फिर भी स्वतंत्र हैं और उन्हें संत, सूफी और सांख्य योग के ज्ञाता कहा जा सकता है । योगी .

(बी) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:
i) प्रथम चार श्रेणियों द्वारा पीछे की ओर यात्रा (या गतिविधि का रुक जाना) व्यक्ति को शून्य की ओर ले जाती है, जबकि आगे की ओर यात्रा इन व्यक्तियों को नाम, प्रसिद्धि और धन आदि में परम प्राप्ति की ओर ले जाती है, जबकि पांचवें प्रकार के लोग शून्य और अनंत के बीच जीवंत रहते हैं।

ii). योग केवल शरीर और सांस का व्यायाम नहीं है, योग सिर, हृदय, शरीर और भावनाओं को एक साथ लाना या बाहरी और आंतरिक दुनिया के बीच समन्वय स्थापित करना है। योग के मार्ग का चयन एक व्यक्तिगत विकल्प है, जिसमें समाज/सरकार की कोई भूमिका नहीं है, सिवाय व्यक्तित्व लक्षणों की इस समझ की सराहना करने के। संतों/साधु/ सांख्य के आशीर्वाद की निरंतरता – योगी –सांख्य योगी देश और समाज को सुख, स्वास्थ्य और पवित्रता प्रदान करते हैं तथा उसकी दीर्घायु भी बनाए रखते हैं ।

27. जीवन काल और उसका विभाजन (आश्रम व्यवस्था–श्रम विभाजन प्रणाली)

(ए). सूर्य में हर बारह साल में छोटे परमाणु विस्फोट होते हैं और आठवें विस्फोट (यानी छियानबे साल) पर बड़े परमाणु विस्फोट होते हैं। प्रत्येक छोटे विस्फोट में, पहले छह वर्षों तक ऊर्जा बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर होती है और बाद में घटती हुई प्रवृत्ति पर। दो बड़े विस्फोटों के बीच सूर्य में आठ चक्र और सोलह उप चक्र होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य आम तौर पर एक ही प्रवृत्ति का पालन करते हैं और मनुष्य भी सूर्य पर विस्फोटों के अवधि वितरण के समान लक्षण प्रदर्शित करते पाए गए हैं।

मनुष्य के लिए, पहले बारह वर्ष बचपन की अवस्था है, जहाँ लड़के–लड़कियों में लगभग एक ही प्रवृत्ति देखने को मिलती है, बारह वर्ष के बाद चौबीस वर्ष तक किशोरावस्था होती है, जहाँ यौन ऊर्जा, शिक्षा और ज्ञान में वृद्धि होती है। चौबीस से अड़तालीस वर्ष तक की यौन ऊर्जा संतानोत्पत्ति में उपयोग की जाती है, परिवार में जन्म होता है और पारिवारिक जीवन चलता रहता है। अड़तालीस वर्ष से अधिक की आयु में रजोनिवृत्ति होती है और एक अलग जीवन शुरू होता है, जब उसके बच्चे इतने बड़े हो जाते हैं कि वे विवाह करके जिम्मेदारी संभाल सकते हैं और व्यक्ति अब बाहर की ओर देख सकता है या यूँ कहें कि बाहर की ओर देखने के लिए मजबूर हो जाता है। बहत्तर वर्ष से अधिक की आयु में बच्चों के बच्चे विवाह योग्य आयु में पहुँच जाते हैं।

जब नाती–पोतों का पारिवारिक जीवन शुरू हो जाता है और बच्चे बाहर की ओर देखने लगते हैं, तब पारिवारिक जिम्मेदारी पूरी तरह से छोड़ देने का समय आ जाता है और यह माना जा सकता है कि व्यक्ति ने परिवार के प्रति अपना पूर्ण कर्तव्य निभा दिया है और संन्यास आश्रम शुरू करने का समय आ गया है।

(बी) उपरोक्त से विद्वानों ने कई निष्कर्ष निकाले हैं जिनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत हैं:

1. बच्चों की शिक्षा छह साल की उम्र से शुरू होनी चाहिए और बारह साल की उम्र तक लड़के और लड़कियों दोनों के लिए एक समान होनी चाहिए। बारह साल से चौबीस साल की उम्र तक लड़के और लड़कियों को अलग–अलग शिक्षा दी जानी चाहिए। यौन शिक्षा और पारिवारिक जीवन की शिक्षा विवाह योग्य उम्र यानी लगभग चौबीस साल की उम्र में दी जानी चाहिए। चौबीस साल की उम्र में पारिश्रमिक वाला रोजगार शुरू किया जाना चाहिए और इसे अगले चौबीस साल तक जारी रखा जा सकता है।

2. अड़तालीस वर्ष से बहत्तर वर्ष तक के लोगों को समाज सेवा में शामिल किया जा सकता है, सलाहकार, परामर्शदाता, निगरानीकर्ता के रूप में कार्य किया जा सकता है, तथा राजनीति, शिक्षा, न्याय व्यवस्था आदि में भी उन्हें शामिल किया जा सकता है। बहत्तर वर्ष की आयु के बाद लोगों को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए, तथा युवाओं को जीवन के अनुभव प्रदान किए जाने चाहिए।

In the above distributions of work, in order to accommodate individual choices, preferences and problems, the margin of six years is generally being suggested by various masters. Exception in any case has to be an exception only.

आश्रम व्यवस्था -अच्छी श्रम व्यवस्था, या कहें श्रम विभाजन की अच्छी व्यवस्था है
Ashram Vyavastha is a nice division of labour. **

28. Class-Caste System- (Varna Vyavastha- System of Selection of Choice)

वर्ण व्यवस्था – वर्ण व्यवस्था पसंद/चयन के अनुसार कार्य का वितरण ((संस्कृत शब्द वर्ण – वर्ण वरण–वर्ण के कई अर्थ हैं उनमें से कुछ हैं: पसंद, चुनाव, विकल्प, अक्षर, रंग, जाति, वर्ग, प्रजाति, रंग, रंज, रंग, चरित्र आदि)

यदि हम समवर्ती समाजों को बारीकी से देखें, तो हम निम्नलिखित समूह या वर्गों के अस्तित्व की सराहना कर सकते हैं:

i) एक योजनाकार, अनुसंधान और विकास वैज्ञानिक, यानी बुद्धि या ज्ञान का प्रयोग करने वाला, एक बाहर की ओर और दूसरा अंदर की ओर। यह वर्ग समाज के संचालन के लिए अपनी बुद्धि और विवेक के माध्यम से शासक और व्यापारी वर्ग को सहायता प्रदान करता है।

ii) शासक वर्ग, राजनीतिक वर्ग, सशस्त्र बल और पुलिस। यहाँ वीरता का प्रयोग किया जाता है – एक परिष्कृत तरीके से और दूसरा कच्चे और भौतिक तरीके से काम करवाने के लिए। यहाँ एक में शासन करने की शैली उच्च श्रेणी की है और दूसरे में निम्न श्रेणी की। यह वर्ग ऊपर वाले वर्ग द्वारा बनाए गए नियमों और विनियमों के माध्यम से समाज के संचालन की जिम्मेदारी लेता है।

iii) व्यवसायी वर्ग एक तरह से उद्योगपति, उद्यमी और दूसरे तरह से हेरफेर और दिमागी खेल द्वारा स्टॉकब्रोकर। ये दो प्रकार के व्यवसायी वर्ग हैं: एक अधिक संक्षिप्तता का उपयोग करता है, और दूसरा अधिक बुद्धि का उपयोग करता है।

iv) सेवा वर्ग – उपरोक्त तीनों का समर्थन करना और उनसे समर्थन प्राप्त करना। यह वर्ग अधिक क्रिया–उन्मुख लेकिन आश्रित है।

उपरोक्त वर्गीकरण में विभाजन व्यक्ति के जीवन में किए गए चुनाव के आधार पर कमोबेश क्षैतिज है। लोगों का एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जाना सामान्य प्रथा कही जा सकती है और इसे एक स्वीकृत मानदंड माना जा सकता है।

भारत में इसे वर्ण/जाति (स्वयंवर) माना जाता है –स्वयंवर) व्यवस्था/प्रणाली। अपनी रुचि/रुचि के अनुसार कार्य वितरण की इस सुपरिभाषित प्रणाली में विभिन्न वर्गों को "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य/व्यापारी और सेवा वर्ग (शूद्र)" के रूप में जाना जाता है।

(बी) भारत में, यह भी कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवनकाल में इन सभी चार वर्णों से गुजरता है, शूद्र (नौकर) चौबीस वर्ष तक, वैश्य (व्यापारी) चौबीस से अड़तालीस तक, क्षत्रिय (लड़ाकू–शासक) अड़तालीस से बहत्तर वर्ष तक, ब्राह्मण (योजनाकार शिक्षक) बहत्तर से छियानबे वर्ष तक और छियानबे वर्ष के बाद साधु/अतिथि जैसा होता है।
इसके अलावा, कुछ अति–बुद्धिमान लोग यह भी कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में ये चार वर्ण/जाति होती हैं – सेवा प्रदाता के रूप में पैर और हाथ, व्यवसाय के रूप में पेट और प्रजनन, क्षत्रिय के लिए छाती, ब्राह्मण के लिए सिर।

(सी) उपरोक्त के अनुसार शरीर में पेट का, परिवार में गृहस्थ आश्रम का तथा समाज में व्यवसायी का यह कर्तव्य है कि वे अन्य तीन श्रेणियों को आवश्यक पोषक तत्व/भोजन/धन उपलब्ध कराएं, ताकि शरीर, परिवार और समाज में सामंजस्य बना रहे।
इसी तरह, अन्य तीन श्रेणियों को अन्य तीन श्रेणियों की सेवा बिना किसी उत्साह या पक्षपात के करनी होगी। दूसरे शब्दों में, किसी भी एक श्रेणी को यह नहीं सोचना चाहिए कि वह श्रेष्ठ या निम्न है और दूसरों को काम या फिरौती पर रख सकता है।

उपरोक्त वर्ग के अलावा संत/साधु–ज्ञानी–अतिथि वर्ग को भीमान्यता दी जा रही है। साधुओं के अलावा एक और वर्ग की पहचान की गई है जो किसी भी वर्ग का काम ले सकता है, लेकिन एक समय में केवल एक ही वर्ग का, और यह वर्ग गुरु–ऋषि के रूप में पूजनीय है। "अंतिम वर्ग सर्वशक्तिमान का है"।

(डी) आरक्षण (भारत में), जो कुल नौकरियों यानी सरकारी नौकरियों के केवल दो प्रतिशत के लिए है, दलितों की स्थिति को नहीं बदल सकता है। सरकार द्वारा एससी/एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यकों को आरक्षण प्रदान करने के साथ, वास्तव में जमीन पर जो हुआ वह यह है कि अमीर और प्रसिद्ध लोगों ने निजी और महंगी शिक्षा, स्वास्थ्य और न्यायिक प्रणाली के निर्माण के माध्यम से उनके लिए अट्ठानबे प्रतिशत नौकरियां आरक्षित कर दी हैं। ये महंगे निजी स्कूल/कॉलेज, अस्पताल और वकील तथाकथित आरक्षित वर्ग को शुरू से ही वंचित करते हैं और दीर्घकालिक नतीजे नहीं देखते हैं।
इसे दूर करने के लिए हमें सभी स्तरों पर शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय व्यवस्था को निःशुल्क बनाना होगा। चूंकि मानसिक अवरोधों को दूर करना प्राथमिक है, इसलिए आरक्षित/सेवा वर्ग और देश के सभी लोगों के जीवन में सुधार के लिए अंतर–वर्गीय और अंतर–धार्मिक चर्चा शुरू करनी होगी।

(ई) नाम/टैग नाम/जाति जो कि स्वभाव से आती है, जन्म से आने वाली जाति से अधिक महत्वपूर्ण है; व्यापार करने वाले को वैश्य (बनिया) कहा जाना चाहिए, सेवा करने वाले को शूद्र, सेना में नौकरी करने वाले को क्षत्रिय, योजना बनाने और अनुसंधान करने वाले को ब्राह्मण कहा जाना चाहिए। केवल विश्वास/धर्म ही नहीं बल्कि कार्य/जाति भी बदलने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

कोई भी व्यक्ति अपने कार्य कौशल पर गर्व कर सकता है चाहे वह ब्यूटीशियन हो, डाइटिशियन हो, इलेक्ट्रीशियन हो या राजनेता हो। केवल एक चीज जिसे सुधारने की आवश्यकता है वह है सेवा का पारिश्रमिक हिस्सा, व्यक्ति को पर्याप्त पारिश्रमिक मिलना चाहिए चाहे वह काम शारीरिक हो या मानसिक या दोनों और पारिश्रमिक का अधिकतम से न्यूनतम अनुपात पंद्रह हो सकता है [ताकि एक रुपये में (एक रुपया = सोलह आना) अगर एक को पंद्रह आना मिलता है तो दूसरे को कम से कम एक आना यानी छह पैसे मिलने चाहिए]। **आश्रम व्यवस्था एवं वर्ण व्यवस्था को सम वर्णाश्रम व्यवस्था कहते हैं।** **

29. समाज विकास के चरण

(अ) एक सहज और बुनियादी आस्था के स्तंभों पर समाज और देश की सभ्यता के विकास के चार चरण हैं। पहला अर्थ, फिर काम (शारीरिक प्रेम), फिर धर्म (मानसिक प्रेम) और फिर मोक्ष (स्वतंत्रता)। आगे कहा गया है कि अर्थ, कमाई के साधन और अर्थ ही किसी भी सभ्यता का लक्ष्य या चरम तय करते हैं।

कहा जाता है कि अर्थ ही समाज और देश का भाग्य और उसकी सीमा तय करता है कि वह पहले, दूसरे, तीसरे या चौथे चरण तक पहुंचेगा। आगे कहा जाता है कि मंदिर (सभ्यता का शिखर) का स्वर्ण शिखर काम (काम–प्रेम) और धर्म के स्तंभों द्वारा आधार, अर्थ पर निर्मित होता है। किसी भी चरण को महत्व न देने से (मंदिर) सभ्यता ढह जाती है।

ऐसा प्रायः होता है कि जब कोई व्यक्ति शिखर पर पहुँच जाता है, तो वह विकास के विभिन्न स्तरों पर स्थित लोगों के महत्व को कम आंकने लगता है तथा दूसरों को सम्मान देने तथा उन्हें आकर्षित करने का अपना स्वाभाविक कर्तव्य भी भूल जाता है, फलस्वरूप ऐसे लोग तथा ऐसी सभ्यता शीर्ष पर से भी नीचे गिर सकती है। यह देखा गया है कि ढही हुई सभ्यता प्रायः अपने एक समय के वर्चस्व की बात करती है तथा पर्याप्त समय तक उसी विस्मृति (पुरानी यादों) में डूबी रहती है, तथा अन्य लोग ढही हुई समृद्धि का एक टुकड़ा भी छीन लेते हैं, जिससे उस पर रहने वाले व्यक्ति विस्मृति में डूब जाते हैं, तथा वह व्यक्ति और भी कमजोर, असहाय हो जाता है।

(बी) यह सच है कि हमने सभ्यता का चरम देखा है, और यह भी सच है कि हम बहुत गिरे और ढह गए। अपनी यात्रा को फिर से शुरू करते समय यह अपेक्षा की जाती है कि हम शीर्ष पर पहुँचने की जल्दी में बकवास की मीनार नहीं खड़ी करेंगे। यह अपेक्षा की जाती है कि हमारे पास आस्था/विश्वास और परस्पर सम्मान का एक मजबूत आधार होगा। कहा जाता है कि आने वाले दिनों में वैश्विक दृष्टि ही टिकेगी, इसलिए हमारा प्रयास स्थानीय और वैश्विक जनता के लाभ के लिए समर्पित होना चाहिए। **

30. आस्था, विश्वास, भरोसा और सत्य

नानक कहते हैं, "जिसे नकारा या पार किया जा सके वह सत्य नहीं है;
युद्ध में अहिंसा का निषेध हो जाता है और इसलिए वह सत्य नहीं है।" हम जन्म लेते हैं, जीते हैं और फिर मर जाते हैं और इस तरह जीवन का भी निषेध हो जाता है, इसीलिए ग्रांथम कहते हैं, "जीवन लीला, माया या नाटक है"।

जन्म और मृत्यु के बीच जैसा हम देखते हैं, वैसा ही शाश्वत सत्य, परिस्थितिजन्य सत्य भी प्रकट होता है, और उसी के अनुसार उसका मूल्यांकन भी होता है। ये दोनों सत्य प्रकृति में निरंतर प्रवाहित होते रहते हैं और व्यक्ति में आस्था के रूप में प्रकट होते हैं। जो लोग आस्था रखते हैं, वे कह सकते हैं कि पृथ्वी चपटी है और जिन्होंने सत्य को परखा और चखा है, वे कहेंगे कि पृथ्वी गोल है और ऊर्जा स्रोत के चारों ओर घूमती है। "स्वाद से विश्वास पैदा होता है," हो सकता है, भविष्य में हम किसी मान्यता के अनुसार नहीं, बल्कि परीक्षण और स्वाद से उत्पन्न अपने अनुभव के अनुसार काम करना चाहें। **

31. आदर्श और विचारधारा

A). कुछ लोग कहते हैं कि आदर्श मूर्ति से संबंधित होते हैं, अन्य कहते हैं कि आदर्श मूर्ति की तरह ही सम्मानीय होते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि आदर्श स्थिर होते हैं, और बदलती और गतिशील दुनिया में भी एक जैसे ही रहते हैं, अन्य कहते हैं कि मूल आदर्श सभी समय और स्थान में एक जैसा ही रहता है, लेकिन इसकी अभिव्यक्ति समय और स्थान का रंग धारण करती है।

बी) विचार – ऊर्जा का बुलबुला है, या कुछ लोगों के मस्तिष्क में आणविक गड़बड़ी है जिसे वे रचनात्मकता कहते हैं। विचार या रचनात्मकता अगर मजबूत है तो ऊर्जा की धारा को आकर्षित करती है ताकि आदर्शों तक पहुंच सके। आदर्शों की ओर अपनी यात्रा में विचार को मौसम और चमड़े, मौसम और कारण, तनाव और निराशा, खेल और आनंद का सामना करना पड़ सकता है या यह इस बात पर निर्भर करता है कि विचार प्रकृति के अनुरूप है या इसके खिलाफ। आदर्श में, एक विचार को आदर्श में डूब जाना चाहिए, लेकिन आदर्श में भी अगर कोई विचार से चिपका रहता है, तो उसे पीछे धकेल दिया जाता है।

एक बार पीछे धकेल दिए जाने के बाद यह स्पष्ट है कि पूरी यात्रा फिर से शुरू करनी होगी। अपनी पुनः यात्रा के दौरान इस संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है कि कोई अन्य धारा इसे पीछे छोड़ दे और यह अपेक्षित ऊर्जा और प्रवाह खो दे। आदर्श में जहां प्रत्येक धारा डूब जाती है, सभी विचारों को आदर्श में उचित और समान सम्मान मिलना चाहिए, अन्यथा एक विचार को आदर्श कैसे कहा जा सकता है।

ऐसे समूहों के नेता जब शासक पद पर आसीन होते हैं तो खुद को बहुत ही अजीब स्थिति में पाते हैं, क्योंकि शासन में उन्हें अपने विरोधियों का उसी तरह ख्याल रखना पड़ता है, जिस तरह उन्हें अपने समूह के किसी सदस्य का रखना पड़ता है, जिसने उन्हें ऊपर उठाया है।

संघर्ष इतना गंभीर है कि कई लोग अपनी आंखें मूंद लेते हैं और दिनचर्या का पालन करना शुरू कर देते हैं, अन्य जो केवल अपने समूह की परवाह करते हैं वे हड़ताल, अशांति और विरोध का कारण बनते हैं, और व्यवस्था के कुछ हिस्से में निराशा और असहायता पैदा कर सकते हैं, जो कानून और व्यवस्था और सामूहिक छवि की समस्या है, और जो लोग विरोधियों को शामिल करने के लिए अपनी स्थिति बदलते हैं, वे अपने समूह का समर्थन खोने से डरते हैं और इस डर से वे अंततः हार जाते हैं।

ज्ञान कहता है– अगर विचारधारा शब्द से कोई मोहित है तो वह विचारधारा ही हो सकती है जो लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक दल को सत्ता में पहुंचा सके और उसे सत्ता में बनाए रख सके, वह विचारधारा ही हो सकती है जो राष्ट्रीय स्तर पर सर्वसमावेशी धर्म–निरपेक्ष, आत्मसात करने वाली और एकीकृत हो तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अंतरराष्ट्रीय बंधुत्व की भावना रखती हो। चूंकि देश सभी देशवासियों का है, इसलिए शासन में सभी देशवासियों का सामूहिक कल्याण ही विचारधारा और आदर्श हो सकता है। प्रयास की आवश्यकता है कि हम स्वयं अपने मार्गदर्शक, आलोचक, विवेक के रक्षक और आदर्श बनें और बने रहें ।

32. इतिहास और भूगोल

कहा जाता है कि जिसका इतिहास अच्छा है उसका भूगोल अच्छा नहीं है, और जिसका भूगोल अच्छा है उसका इतिहास अच्छा नहीं है, इसके अलावा जिसका इतिहास और भूगोल दोनों अच्छे नहीं हैं वह निराश हैं और जिसका इतिहास और भूगोल दोनों अच्छे हैं वह सभी के द्वारा सम्मानीय हैं।

उत्तर: पिछले छह–सात हजार वर्षों के इतिहास को देखें तो हम पाएंगे कि एक छोटा सा गांव राज्य, फिर गांवों का समूह राज्य, फिर नदी राज्य, फिर शहर राज्य, फिर शहर राज्य का समूह अस्तित्व में आया है। हालांकि प्रत्येक राज्य ने युद्ध लड़ा और अपने सर्वोत्तम संभव तरीकों से अपनी अखंडता और संप्रभुता को बनाए रखने की कोशिश की, लेकिन वर्तमान भू–राजनीतिक राज्य प्रदान करने के अपने प्रयास में विफल रहा।
और अब कोई भी देश यह कहने का जोखिम नहीं उठा सकता कि वह पूरी तरह से स्वतंत्र है, अगर कोई उत्पादन करता है तो दूसरा बाजार उपलब्ध कराता है और अगर उत्पादकों को सहायता की आवश्यकता होती है तो बाजार सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करता है। भौगोलिक इतिहास इसी तरह बदल रहा है और नव–वैश्वीकरण के लिए जगह बना रहा है। हम इस तथ्य को शांति से स्वीकार करते हैं और अल्लाह/राम के मार्ग पर आगे बढ़ेंगे।

बी. इतिहास रहस्य है और भूगोल वास्तविक है, इतिहास अतीत है और भूगोल वर्तमान है, इतिहास से मनुष्य ने केवल यही सीखा है कि "मनुष्य ने इतिहास से कभी कुछ नहीं सीखा, और इसलिए बहुत से लोग कहते हैं कि "इतिहास खुद को दोहराता है"। सभी नवजात अपने मस्तिष्क में पूरा अतीत लेकर चलते हैं और वे दुनिया को अपनी माँ और पिता के कंधों पर बैठकर देखते हैं और इसलिए अपने माता–पिता से कहीं आगे देखते हैं। सभी युवा लोग भूगोल को देखते हैं और उसके व्यवहार, दृष्टिकोण, संस्कृति, परंपरा से सीखते हैं और भूगोल की ऊर्जा और सामंजस्य से सीखते हैं। दुख या खुशी कंपन की लय और एक घूमती (गतिशील) दुनिया के भीतर इसकी सरपट (स्थिर) पर निर्भर करती है।

C. अगड़े वर्ग ने कभी इतिहास की परवाह नहीं की और हमेशा भूगोल और इतिहास बनाने में व्यस्त रहे। पिछड़े वर्ग जड़ की खोज में व्यस्त हैं, उन्हें लगता है कि जिनका इतिहास पुराना है वे ही ऊपर जा सकते हैं; और वे इतिहास लेखन और मानवशास्त्रीय शोध में खुद को व्यस्त रखते हैं। अगर कोई देश ऐसा कर रहा है, तो यह सुरक्षित रूप से कहा जा सकता है कि उनका पतन शुरू हो गया है, वे भूल जाते हैं कि जिनकी जड़ें गहरी हैं वे ही ऊपर जा सकते हैं।

भारत इस बात को समझता है और इतिहास की कभी परवाह नहीं करता। उसे सिर्फ़ इस बात की परवाह है कि कौन सी चीज़ ज़रूरी है और क्या ज़रूरी है। चूँकि ये चीज़ें हमारे खून और मज्जा में हैं, इसलिए हमें इस बात की परवाह नहीं है कि राम के दादा (नाना) कौन थे और उनके परपोते कौन थे। उसे राम की भी ज़्यादा परवाह नहीं है, उसे सिर्फ़ इस बात की परवाह है कि क्या ज़रूरी काम किए गए हैं, उसे इस बात पर भी संदेह है कि कोई ख़ास काम राम ने किया था या कृष्ण ने या गणेश ने आदि ने।

डी. अगर हम इतिहास की किताबों को देखें तो कृष्ण, राम, शिव, बुद्ध, महावीर, लाओ-त्ज़ु, पैगम्बर साहब और ईसा मसीह का नाम शायद ही कहीं मिलेगा या अगर है भी तो सिर्फ़ फुटनोट है। हम इतिहास लेखकों से सहानुभूति रख सकते हैं कि ये व्यक्तित्व भी ऐतिहासिक नहीं बन पाए हैं। हम उन्हें अभी भी बच्चे या सबसे कम उम्र [कभी बूढ़ा भी नहीं] के रूप में दिखाते हैं। इसे समझते हुए, भारत के लिए अपरिपक्व (इतिहास लिखने वाले देशों) के साथ प्रतिस्पर्धा करना और इतिहास लिखना अच्छा नहीं है,

ई. जब दुनिया आगे बढ़ती है और जब सामने की दृष्टि और पीछे के अनुभव का एकीकरण आवश्यक होता है, तब इतिहास प्रेमी और वृद्ध लोग पीछे की ओर देखते हैं और गौरवशाली अतीत का जाप करते हैं और अपने कक्ष में खुश होते हैं और महसूस करते हैं कि वे नेता (स्वघोषित) हैं और उन्हें स्वतः उज्ज्वल भविष्य मिल सकता है।

जबकि जो लोग इसके भूगोल का ध्यान रखते हैं, वे संभावित खतरे को देखते हैं, शासन को तैयार करते हैं और अज्ञात खतरे की तैयारी के लिए खुद को तैयार करते हैं, और ऐसे भूगोल प्रेमी, लंबे समय में इसके भूगोल का विस्तार करने में जरूरी नहीं समझते और संतुष्ट महसूस करते हैं, फिर भी इसके भूगोल के लिए सतर्क रहते हैं। भूगोल प्रेमी समझते हैं कि इसका आकार बनाए रखने की तुलना में विस्तार करना आसान है। हमें अपने भूगोल को सही करने के लिए खुद को समर्पित करना चाहिए, संतुष्ट महसूस करना चाहिए और इसे सतर्क और ऊर्जावान तरीके से बनाए रखना चाहिए।

(एफ) उपरोक्त के अलावा, निम्नलिखित भी प्रस्तुत किया गया है: **1.** हम भारत के विशाल भूगोल और इसकी भूगोल की विशालता और विशिष्टता पर गर्व करते हैं। भूगोल की विशालता और इसकी विशाल स्थलाकृति और अद्वितीय भूमि संरचना को स्कूल से लेकर कॉलेजों तक में पढ़ाया जाना चाहिए। प्रकृति की प्राकृतिक विरासत को बनाए रखना होगा और औद्योगिक विकास या किसी बाहरी देश के प्रलोभन के बावजूद इसे बनाए रखना होगा, दबाव की तो बात ही क्या।

2. देश को अपने प्राकृतिक भूगोल को सही करने के लिए चर्चा और संवाद को बढ़ावा देना होगा। बाहरी उद्देश्यों के लिए रक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। आंतरिक उद्देश्यों के लिए व्यक्तिगत रूप से जागरूक सुरक्षा को आंतरिक उद्देश्यों के लिए अपनाना होगा। बहुसंख्यकों को अर्धसैनिक सह रक्षा शिक्षा शैक्षिक और धार्मिक संस्थानों के माध्यम से प्रदान करनी होगी।

3. आज़ादी के बाद पैदा हुई हर नई पीढ़ी को यह याद दिलाने की ज़रूरत नहीं है कि उस समय देश पर किसी का शासन था या जब भारत और चीन अपने चरम पर थे, तब हमारी पुरानी पीढ़ी खानाबदोश थी और ऐसे में इन इतिहासों को पंद्रह साल की उम्र तक नहीं पढ़ाया जाना चाहिए, बाद में राष्ट्रीय और विश्व इतिहास को मिलाकर एक संक्षिप्त विषय के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। इतिहास के मौजूदा पाठ्यक्रम में बदलाव करके आज़ादी के बाद की ऐतिहासिक घटनाओं को भी शामिल किया जाना चाहिए, जिन्हें अभी सामाजिक विज्ञान के विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। स्कूलों में धर्म, तर्क, नैतिकता और आचार-विचार का एक अलग विषय जोड़ने की ज़रूरत है। मज़बूत संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यपुस्तकों में क्या ज़रूरी है, क्यों ज़रूरी है और कितना ज़रूरी है, इस विषय को शामिल करने की ज़रूरत है।

4. जो लोग इतिहास के बारे में जानना चाहते हैं, उन्हें कॉलेज में स्नातक स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए, अन्य देशों का इतिहास स्नातकोत्तर स्तर पर पढ़ाया जाना चाहिए, इतिहास को किसी सर्वोच्च पद (प्रशासनिक सेवा या अन्य) का हिस्सा नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे केवल सामान्य अध्ययन का हिस्सा होना चाहिए। इतिहास को मानवशास्त्र या सामाजिक विज्ञान के साथ जोड़ना होगा। इतिहास लेखकों को भारत और पश्चिम के इतिहास के बीच कई गलतफहमियों को ठीक करना होगा। भारत को सचेत रूप से आगे बढ़ने और अपनी भावी पीढ़ी पर गर्व करने की आवश्यकता है, और अपने नए लोगों पर इतिहास की बड़ी-बड़ी बातें लादने की आवश्यकता नहीं है, ऐसा कहा जाता है कि बड़े पेड़ों के पास फसलें नहीं उगती हैं। **

33. आधुनिकीकरण और परंपरा

(A) कोई भी नई चीज आधुनिक कहलाती है और जब कोई इस आधुनिक चीज का व्यापार करता रहता है, तो वह परंपरा बन जाती है। एक ही चीज का कमोबेश एक ही तरीके से तीन पीढ़ियों से अधिक समय तक व्यापार करना परंपरा बन जाती है।

उपरोक्त व्यापार में उसी स्थान या अन्य स्थान के अन्य व्यापार (धर्म और क्षेत्रीय प्रथाओं) द्वारा कोई भी बदलाव आधुनिक हो जाता है और इस नए पाए गए बदलाव का अभ्यास आधुनिकीकरण कहलाता है। धर्म और क्षेत्रीय परंपरा मिश्रण के अलावा, आधुनिकीकरण तब भी होता है जब प्रकृति पेट्रोलियम ईंधन या बिजली के उत्पादन या विद्युत चुम्बकीय तरंगों के वायरलेस ट्रांसमिशन जैसी नई चीजें प्रदान करती है।

इस तरह के आधुनिकीकरण में पूरे क्षेत्र और सभी धर्म इन नए पाए गए रूपों द्वारा संशोधित हो जाते हैं। वैज्ञानिक क्षेत्र में तेजी से विकास के साथ, व्यापार जो कम से कम तीन पीढ़ियों में परंपरा बन जाता था, अब व्यापक और त्वरित वैश्विक अंतर्संबंध के साथ वार्षिक बदलाव प्राप्त कर रहा है।

(बी) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:

1. आम तौर पर सभी नए/युवा बहुत अधिक गतिज ऊर्जा के साथ आते हैं और इसलिए तेजी से फैलते हुए दिखाई देते हैं जबकि पुराने में बहुत अधिक संभावित ऊर्जा होती है और इसलिए यह नए को आगे बढ़ने या बसने की अनुमति देती है। यह देखा गया है कि न तो 'पुराना हमेशा सोना होता है और न ही नया हमेशा बोल्ड होता है' हमें दोनों को सावधानी से अपने साथ रखना चाहिए।

2. हमें विभिन्न संस्कृतियों के बीच सामंजस्यपूर्ण तरीके से घुलने-मिलने पर नज़र रखनी होगी, और समय-परीक्षित संस्कृतियों को पूरी मानव जाति के लिए प्रचारित करने का समर्थन करना होगा। हमें मानवता के व्यापक लाभ के लिए नए आगमन के साथ-साथ मौजूदा व्यापार प्रथाओं की जांच करने के लिए बुद्धिमान लोगों का एक समाज स्थापित करना होगा। **

34. समक्रमिकता

'जंग' द्वारा शोधित एक प्राकृतिक सिद्धांत ने संकेत दिया कि, एक बंद कमरे में, दो पेंडुलम घड़ियाँ एक ही समय (घंटा, मिनट) दिखाती हैं और अगर उन्हें छेड़ा जाए तो वे फिर से वही समय दिखाने के लिए समायोजित हो जाती हैं। इसके अलावा यह देखा गया है कि हमेशा छोटी घड़ी ही समायोजन करती है, जबकि समायोजन के लिए समय अंतराल गड़बड़ी की मात्रा पर निर्भर करता है।

बंद कमरे में संगीत वाद्ययंत्रों जैसे गिटार, सितार में भी ऐसा ही देखा गया कि अगर हम एक बजाते हैं तो बिना बजाए गए तार का तार भी उसी तरह कंपन करता है। बिजली उत्पादन केंद्रों में भी ऐसा ही होता है कि अलग-अलग बिजली उत्पादन इकाइयां ग्रिड आवृत्ति का अनुसरण करती हैं। इसी तरह प्रकृति में भी हम सर्दी, गर्मी, बरसात आदि में प्रकृति के अनुसार खुद को समायोजित करते हैं, न कि इसके विपरीत।

हमारे दैनिक जीवन में ये उच्च ऊर्जा वाले लोग ही होते हैं जिनके कंपन से सामान्य जनसमूह प्रभावित होता है। ऐसे उच्च ऊर्जा वाले गुरुओं; नेताओं का आंदोलन, व्यवहार, रवैया और कार्यकलाप उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और जनसमूह के लिए व्यवस्था बनाते हैं। एक तरह से कहावत है '(अंधेर नगरी , चौपट राजा , यथा राजा तथा प्रजा ', अंधेर नगरी, चोपट राजा, तथा यथा राजा तथा प्रजा')- "अंध नगरी निराश राजा" तथा "जैसा राजा वैसी प्रजा" भी समकालिकता के सिद्धांत से उचित हो जाते हैं।

इस प्रकार, सिस्टम को केवल वही व्यक्ति तोड़ सकता है, जिसका ऊर्जा स्तर सिस्टम से अधिक हो, जो हमेशा अपने चुने हुए व्यक्ति को सर्वशक्तिमान का आशीर्वाद देता हुआ प्रतीत होता है। ऐसा कहा जाता है कि ऐसे लोग अपनी मासूमियत, सहजता, सरलता, दृढ़ता के अलावा अपने प्रेमपूर्ण और देखभाल करने वाले कार्य पैटर्न से पहचाने जाते हैं। **

35. पूजा स्थल – मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा आदि।

(A) अगर आप किसी व्यक्ति या समुदाय को तोड़ना चाहते हैं, तो उनकी आस्था को तोड़ें, और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उनके आस्था (धार्मिक) केंद्रों–मंदिर, मस्जिद और चर्च आदि को तोड़ दें या उन्हें निष्क्रिय/निष्क्रिय कर दें। और अगर आप किसी इंसान या समुदाय को एकजुट करना चाहते हैं, तो उनके आस्था (धार्मिक) केंद्र बनाएं और उन्हें सक्रिय और क्रियाशील बनाएं या अगर वे किसी कारण से टूट गए हैं, तो उनके धार्मिक केंद्र का पुनर्निर्माण और पुनरुद्धार/पुनरुत्थान करें।

मंदिर मनुष्य के सर्वोच्च क्रम की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति हैं और आगे की खोज और अभिव्यक्ति के लिए द्वार हैं। पूजा स्थल का निर्माण पद्मासन में बैठी महिलाओं की मुद्रा का अनुसरण करता है, जिसके केंद्र में भगवान (माँ के गर्भ में एक बच्चे की तरह) रहते हैं।

(ब). मंदिर/मस्जिद (प्रार्थना स्थल) की स्थिति उस व्यक्ति, समाज, समूह या पूरे देश की स्थिति को दर्शाती है। यदि पूजा स्थल की स्थिति गंदी और जीर्ण–शीर्ण है, तो उस समूह, समाज की स्थिति भी वैसी ही होगी और यदि मंदिर/मस्जिद/गुरुद्वारा की स्थिति सामंजस्य, लय, समन्वय और ऊर्जायुक्त है, तो उस समूह की स्थिति और उस स्थान पर आने वाले लोगों की स्थिति भी अच्छी होगी। ये दोनों एक दूसरे पर निर्भर हैं और सीधे आनुपातिक हैं यानी यदि समुदाय की स्थिति सुधरती है, या यदि पूजा स्थल की स्थिति सुधरती है, तो दूसरे की स्थिति भी सुधरेगी। वाइजमैन हमें अपने देश और समाज की स्थिति को सुधारने के लिए छोटे कदम उठाने यानी पूजा स्थल की स्थिति सुधारने के लिए कहते हैं।

(सी) तथाकथित कल्याणकारी राज्य के सरकारी कार्यालय, जो दुनिया भर में अपने लोगों को भोजन, आगंतुक आश्रय, व्यायाम, संगीत, गौशाला, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता जैसी बुनियादी सेवाएं प्रदान करने में बुरी तरह विफल रहे हैं, के स्थान पर लोगों/समाज को आगे आना होगा और धार्मिक संस्थानों को विकास और स्वास्थ्य के केंद्र के रूप में विकसित करना होगा।
हमें (समाज और सरकार को) पूजा स्थल को पाकशाला, पाठशाला, धर्मशाला, व्यायामशाला, आरोग्यशाला, सैन्यशाला, संगीतशाला, गौशाला, संन्यास आश्रम और ब्रह्मचर्य आश्रम (शयनगृह, शिक्षा, आगंतुक आश्रय, व्यायामशाला, स्वास्थ्य केंद्र, रक्षा प्रशिक्षण, संगीत केंद्र और गौशाला के साथ–साथ संन्यास और ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने वालों के रहने का स्थान) की जिम्मेदारी जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करना होगा, बिना किसी भेदभाव के और पूरी तरह से धर्म–निरपेक्ष तरीके से। इस प्रतिमान को देखते हुए यह स्पष्ट होना चाहिए कि आम लोगों के लिए

एक ही स्थान पर पूजा स्थल केवल पूरे समाज का हो सकता है यानी न तो यह किसी एक व्यक्ति या परिवार या एक वर्ग या संप्रदाय का हो सकता है और न ही राज्य/सरकार का।

पिछले कुछ सौ वर्षों में, कल्याणकारी राज्य की अवधारणा और प्रचार ने समाज को दरकिनार कर दिया है और इसके धार्मिक संस्थानों को कुछ कर्मकांडों/अनुष्ठानों और सर्वशक्तिमान/अल्लाह से भीख मांगने के अलावा किसी भी या सभी सामाजिक गतिविधियों को करने के लिए निष्क्रिय बना दिया है। इनके स्थान पर दिखावे के लिए पेश किए गए एनजीओ (गैर-सरकारी संगठन) वास्तविक संचालन की तुलना में सफेदपोश धन के हेरफेर में अधिक शामिल पाए गए हैं। दुनिया भर में एनजीओ निर्णायक रूप से असफल साबित हुए हैं। यह दर्शाता है कि सभी एनजीओ की जांच, सेंसरशिप और यदि आवश्यक हो तो बंद करने की आवश्यकता है। इसके अलावा एनजीओ, ट्रस्ट, मंदिर, मस्जिद आदि में विदेशी योगदान (आवक और जावक) यदि कोई हो तो राष्ट्रीय सरकार के माध्यम से ही होना चाहिए ताकि स्थानीय और राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा की जा सके।

(डी) संचालन को सुव्यवस्थित करने के लिए, अयोध्या-भारत को एक ऐसा स्थान माना जाता है जिसमें धार्मिक राजधानी बनने के लिए जीवंतता, गतिशीलता और ऊर्जा का स्तर हो, एक ऐसी राजधानी जो सनातन धर्म की सभी शाखाओं (जैसे हिंदू, मुस्लिम ईसाई, बुद्ध, यहूदी आदि) के सभी लोगों की सभी प्रकार की धार्मिक आवश्यकताओं को पूरा करे और दुनिया को एक जीवित स्वर्ग में परिवर्तित करे। शायद आने वाले दिनों में हम इसे एक वास्तविकता के रूप में देखने के लिए इस दिशा में अपना प्रयास समर्पित करना चाहेंगे।

लेकिन जिनके लिए कर्म ही पूजा है, उनके लिए कार्यस्थल ही मंदिर है और जिनके लिए ध्यान ही पूजा है, उनके लिए हर जगह मंदिर है ।

36. प्रबंधन– प्रबन्ध

(ए) अगर कोई अपना काम खुद कर सकता है, तो इससे बढ़िया और कुछ नहीं हो सकता। लेकिन बड़े काम के लिए, बड़ी मात्रा में, विभिन्न परिस्थितियों और स्थितियों में, हम (समाज और सरकार) इसे पूरा करने के लिए दूसरों का योगदान/सेवाएँ लेना चाहेंगे। दूसरों का योगदान/सेवाएँ लेते समय, जो लोग मामलों के शीर्ष पर हैं, वे नीचे दिए गए एक या दूसरे मानदंड का पालन करने का प्रयास करते हैं:

(क) दूसरों को प्रोत्साहित करना और उन्हें सुविधा प्रदान करना, या,

(ख) आवश्यक क्रम में लोगों, मशीनों और सामग्री की व्यवस्था करके, या

(ग) मानव मशीन, धन, सामग्री और बाजार का प्रबंधन करके, या

(घ) वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए मनुष्य, मशीन, धन, सामग्री और विपणन का प्रबंधन करके।

यदि हम उपरोक्त चार श्रेणियों पर बारीकी से नजर डालें, तो हम समझ सकते हैं कि श्रेणी एक, हृदय और उद्देश्य में उदार एक वास्तविक नेता की है, जो परिणाम के लिए सामूहिक प्रयास की इच्छा रखता है।

दूसरी श्रेणी उस व्यक्ति की है जो परिणाम के लिए व्यक्तियों और वस्तुओं की व्यवस्था करता है और उसे संयोजक या सुगमकर्ता या प्रबंधक कहा जाता है।

तीसरी श्रेणी मैनेजर की है, जो सिर्फ चीजों, वस्तुओं और व्यक्ति का प्रबंधन करता है। चूंकि ये मैनेजर फिर से प्रबंधित किए जा रहे हैं, इसलिए मैनेजर का उन्मुखीकरण किसी भी तरह या किसी भी तरह से कार्य को पूरा करना है।

चौथा वर्ग प्रशासक का है, जो प्रशासन से काम करवाने का प्रबंध करता है। चूंकि इन वर्गों को भी व्यवस्था प्राप्त होती है, इसलिए स्व–दासता और उसका संवर्धन इसी वर्ग से होता है।

(बी) हम, समाज/सरकार जनता द्वारा और जनता के लिए, तब आत्मविश्वास प्राप्त करते हैं जब सामान्य सेवाएँ/चीजें समाज/सरकार की होती हैं न कि किसी व्यक्ति की। संदेह तब उत्पन्न होता है जब चीजें विदेशी होती हैं और संदेहास्पद स्तर की होती हैं। जबकि घबराहट तब शुरू होती है जब सरकारी नियम सक्शन पंप की तरह काम करते हैं जो आम लोगों से पैसा लेकर उसे जेट की तरह अमीरों तक पहुँचाता है यानी अमीरों का समाज/सरकार अमीरों द्वारा और अमीरों के लिए, या सरकारी कर्मचारी का समाज/सरकार सरकारी कर्मचारी द्वारा और सरकारी कर्मचारी के लिए।

व्यक्तिगत रूप से हम चाहते हैं कि घर का खजाना भरा रहे और सामूहिक रूप से हम चाहते हैं कि समाज/सरकार का खजाना भरा रहे। घर का खजाना व्यक्तियों को सुरक्षा और आत्मविश्वास प्रदान करता है और समाज/सरकार का खजाना समाज को सुरक्षा और आत्मविश्वास प्रदान करता है। विनिवेश अल्पावधि में पागलपन है और दीर्घावधि में आत्मघाती है (यहां तक कि उन औद्योगिक घरानों के लिए भी जो बाजार में हेरफेर करते हैं और ढेर और स्वामित्व हासिल करते हैं)।

(सी) हम घर पर परिवार को उपयोगी कार्यों से जुड़ने के लिए प्रेरित करते हैं और इसके लिए समय और धन लगाते हैं। सामूहिक रूप से सरकार ये कार्य करती है और सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समय और धन लगाना पड़ता है।
हम घर पर जब किसी कार्य में लगे होते हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार कार्य लेता है या पाता है और परिवार के ट्रस्टी के स्तर पर प्रतिफल प्राप्त करता है, यही बात समाज/सरकार (बड़े परिवार) में भी करने की आवश्यकता है, जिसमें भागीदार ट्रस्टी होते हैं, न कि केवल कर्मचारी, जिनका प्रबंधन या प्रशासन अन्य वरिष्ठ कर्मचारियों द्वारा किया जाता है।

(डी) <u>आगे निम्नलिखित प्रस्तुत किया गया है</u> :

1). व्यक्तिगत उद्यमी विचारों की शक्ति वृद्धि और विकास की कुंजी है। ऐसे व्यक्ति को शुभकामनाएं और समर्थन प्रदान करना, पूंजीवादी शासन में विकास की कुंजी थी/है, देशों के विकास के लिए इसे छीनना साम्यवादी शासन की कुंजी थी, व्यक्तिगत विचार को समर्थन प्रदान करना, कंपनी के नाम पर उसका पेटेंट कराना और तथाकथित खुले बाजार और मुक्त प्रतिस्पर्धा में उत्पाद को बढ़ावा देना नए शास्त्रीय आर्थिक सिद्धांत के नवीनतम लेकिन असफल शासन की कुंजी थी।
कई लोकतांत्रिक देशों में, सार्वजनिक सुविधाओं के लिए योजना बनाते समय, सरकारी क्षेत्र का लक्ष्य, सुविधाएँ बनाना, नौकरियाँ पैदा करना होता था, क्योंकि रखरखाव द्वारा निरंतर सेवा की गुणवत्ता, दक्षता और प्रावधान, लक्ष्य नहीं थे, और इसलिए यह विफल हो गया। लोकतांत्रिक समाज/सरकार में विकास को बढ़ावा तब मिलेगा जब एक व्यक्तिगत उद्यमी के विचार, कल्पना और दृष्टि को समाज और सरकार द्वारा व्यापक रूप से मानव जाति के लाभ के लिए समर्थन और स्वीकृति मिलेगी। समरूप और सामंजस्यपूर्ण विकास तब होगा जब पूरे शरीर को पूरा सम्मान और उसका उचित हिस्सा मिलेगा, न कि केवल सिर को।
2) वर्तमान में जेब में बंद विकास के स्थान पर सर्वांगीण विकास के लिए हमें प्रबन्ध–प्रबन्ध व्यवस्था को प्रमाणित करने, परिभाषित करने, आरंभ करने तथा फिर उसे कायम रखने के लिए

कठोर परिश्रम करना होगा। यद्यपि कठोरता उचित आधार प्रदान करती है, किन्तु कठोरता मृतकों का काम है, नियम–कानून में जीवंतता, जीवंतता तथा गतिशीलता तब सबसे अधिक प्रदान करती है, जब इन्हें विश्वास का दृढ़ आधार प्राप्त हो। दूसरों के आने तथा हमारे जाने के लिए दरवाजे तथा खिड़कियाँ खुली होनी चाहिए, किसका स्वागत करना है तथा कहाँ जाना है, किस विदेशी का स्वागत करना है तथा किस विदेशी देश की यात्रा करनी है, व्यापार, अन्य संधियों को स्वीकार करना है अथवा उससे भिन्न होना है, जिसके लिए हमारा मस्तिष्क तथा हृदय सर्वोत्तम मार्गदर्शन प्रदान करता है।

भारत में हम दर्शन कहते हैं, जिसका अर्थ है देखना, और हम ऐसे व्यक्ति को द्रष्टा कहते हैं, जिसने देखा है (जर्मन में इसके बराबर का शब्द है, फिलोसिया)। उपनिषद, ज़ेन, ताओ, कबाला द्रष्टा भाव हैं और उनमें सबसे बड़ी समझदारी है और वे पवित्र हैं, जो एक तरह से मानव जाति को सुझाव देते हैं कि वे सामान्य और साथ ही विशेष प्रबंधन के लिए मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए ऋषियों–द्रष्टाओं से आशीर्वाद प्राप्त करना जारी रखें, यदि नहीं तो कम से कम अपने स्वयं के स्वास्थ्य और खुशी के लिए।

(3) व्यस्तता – किसी भी काम में व्यस्तता शरीर को फिट रखने के लिए जरूरी है और यह सबसे ज्यादा तब मिलता है जब आजादी और प्रकृति से नजदीकी सबसे ज्यादा हो। व्यस्त रहना ही व्यवसाय है, व्यस्त रहना सब ठीक है लेकिन हमेशा व्यवसाय में लगे रहना ठीक नहीं है, आराम जरूरी है। हम उन लोगों की सराहना कर सकते हैं जो खुद को व्यवसायी कहते हैं; तनाव, थकान उन्हें घेर लेती है और उनका साथी बन जाती है और फिर उनके चेहरे और शरीर से झलकती है।

भ्रमित समाज में वाणिज्य सबसे ऊपर होगा, सेवा दूसरे स्थान पर होगी, खेती तीसरे स्थान पर होगी और भिक्षा चौथा और अंतिम उपाय होगा। जो समाज नीचे की ओर जाने लगता है, वह इसी स्थिति में रहता है और कुछ–कुछ इसी तरह, लेकिन समाज के विकास के शुरुआती चरण में प्रवृत्ति इस तरह होती है, जैसे भिक्षा सर्वश्रेष्ठ, सेवा दूसरे स्थान पर, वाणिज्य (व्यापार) निम्न और खेती अंतिम उपाय है। पुराने और बुद्धिमान लोग कहते हैं कि निम्नलिखित को प्राथमिकता दी जानी चाहिए: "सबसे अच्छी खेती और वानिकी है, मध्यम वाणिज्य (व्यापार), निम्न सेवा (दासता) है और भिक्षा अंतिम उपाय है।"

(4). कहा जाता है कि अगर किसी व्यक्ति या समुदाय को तोड़ना है तो उसकी आस्था को तोड़ो और ऐसा करने का सबसे अच्छा तरीका है कि उसके आस्था केंद्रों को तोड़ दो या उन्हें निष्क्रिय कर दो। और अगर किसी व्यक्ति या समुदाय को एकजुट करना है तो उसके आस्था केंद्रों को सक्रिय और क्रियाशील बनाओ यानी उसके धार्मिक केंद्र का पुनर्निर्माण करो। धर्म संस्थान (आस्था/धार्मिक केंद्र) को अभिव्यक्ति के उच्चतम स्तर का प्रकटीकरण कहा जा सकता है और

साथ ही यह मनुष्य की सबसे सुंदर अभिव्यक्ति भी है और आगे की खोज और अभिव्यक्ति का द्वार भी है।

समाज के धार्मिक केन्द्र की स्थिति से उस समाज के व्यक्तियों, परिवारों, समाज और देश की स्थिति का पता चलता है। यदि पूजा स्थल की स्थिति गंदी और जीर्ण-शीर्ण है, तो उस समाज की स्थिति भी वैसी ही होगी। यदि धार्मिक केन्द्र की स्थिति सामंजस्य, लय, समन्वय और ऊर्जायुक्त है, साथ ही स्वच्छ (जैसा कि मूलभूत आवश्यकता है) है, तो वहां आने वाले लोगों की स्थिति भी अच्छी होगी और इसी प्रकार उन्हें अच्छा मार्ग भी दिखाएगी। ये दोनों अन्योन्याश्रित और सीधे आनुपातिक हैं, अर्थात यदि समाज की स्थिति सुधरती है, या पूजा स्थल की स्थिति सुधरती है, तो दूसरे की स्थिति भी सुधरेगी।

ज्ञानी हमें छोटे कदम उठाने को कहते हैं, अर्थात पूजा स्थल की स्थिति सुधारो, देश और समाज की स्थिति अपने आप सुधर जाएगी। जिनका कर्म ही पूजा है, उनके लिए कर्मस्थल ही मंदिर है, और जिनका ध्यान ही प्रार्थना है, उनके लिए सर्वत्र मंदिर है। आनंद तब आता है, जब अभिमान अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच जाता है और जागृत अवस्था में बना रहता है।

(5) यह देखा गया है कि परिवार और समाज नामक दो सबसे महत्वपूर्ण संस्थाओं को व्यवस्थित रूप से पिछवाड़े में धकेल दिया गया है, जिसकी प्रक्रिया लगभग तीन हजार साल पहले व्यक्ति की व्यक्तिगतता और सफलता के निरंतर और निरंतर बयानबाजी से शुरू हुई थी, चाहे वह आध्यात्मिक क्षेत्र में हो या भौतिक/आर्थिक क्षेत्र में " **अपने मालिक स्वयं बनो, अपना प्रकाश स्वयं बनो" जैसे उपदेशों द्वारा,** जिसने अब तक परिवारों और समाजों में सामूहिकता और एकरूपता को बिगाड़ दिया है।

ऐसा कहा जाता है कि: प्रार्थना व्यक्तिगत है और इसे निजी स्थान पर निजी तौर पर किया जाना चाहिए, काम स्पष्ट है और इसे निर्दिष्ट कार्य स्थान पर किया जाना चाहिए जैसे हम घर पर अन्य परिवार के सदस्यों के साथ काम करते हैं (जहां हर कोई अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार योगदान देता है और अपनी आवश्यकता और आवश्यकताओं के अनुसार भाग लेता है) जबकि पार्टी/उत्सव वैकल्पिक है लेकिन इसे भागीदारों और दोस्तों के साथ सार्वजनिक स्थान पर किया जाना चाहिए।

अफ़सोस! हम जो देख रहे हैं, वह बिलकुल उल्टा है, सार्वजनिक स्थानों पर वर्दी पहनकर प्रार्थना की जा रही है, काम एक उदासीन माहौल में गुलाम या मशीन की तरह किया जा रहा है और पार्टी करना बिलकुल बंद हो गया है या फिर खुद को लाड़-प्यार करने या ज़्यादा से ज़्यादा अपने करीबी

लोगों के साथ पार्टी करने जैसा हो रहा है। इससे समाज में उथल-पुथल मच रही है और अराजकता फैल रही है, जिससे हमें सावधान रहने की ज़रूरत है।

(6). हमें वर्तमान ज्ञान कि हर कोई चोर है (इसलिए सख्त व्यवस्था) से लेकर हर कोई ईमानदार है (इसलिए प्रकाश व्यवस्था) तक की कार्यप्रणाली को बदलना होगा। पहले में उल्लंघनकर्ता (ईमानदार) को पुरस्कृत किया जाता है, जबकि दूसरे में उल्लंघनकर्ता (चोर) को दंडित किया जाता है (हालांकि अराजक स्थितियों में ईमानदार को दंडित किया जाता है और चोर और जोड़तोड़ करने वाले पुरस्कार और पुरस्कार पाने में कामयाब हो जाते हैं)।

सरकारी नौकरियों में सौ प्रतिशत सुरक्षा, निचले स्तर के कर्मचारियों का गैर-स्थानांतरण, छोटी-मोटी हरकतों के लिए कोई सजा नहीं, न्यूनतम वेतन और ठेका मजदूरों के लिए कड़ी मेहनत की दिनचर्या प्रबंधन को अनावश्यक तनाव और दबाव देती है, लेकिन रोल/नौकरी में अक्षम या अप्रभावी व्यक्ति को बाहर निकाले जाने से पहले अस्वीकृत, निराश, अधिशेष अधिकारी/कर्मचारी सेल/विभाग में रखा जाना चाहिए। इससे व्यक्ति को सुधरने या निकाले जाने के लिए एक गर्भावधि अवधि मिलेगी और संगठन को अंततः बाहर निकाले जाने से पहले व्यक्ति का पुनर्मूल्यांकन करने का मौका मिलेगा। हमें उद्योग और विश्वविद्यालयों से जिला प्रबंधन में अधिकारियों के स्थानांतरण को प्रोत्साहित करना होगा, और इसके विपरीत प्रशासकों, प्रोफेसरों और अधिकारियों के कार्यभार और कार्टेल को कम करने और व्यक्तियों को अपने चुने हुए क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की सुविधा/अवसर प्रदान करने के लिए।

(7). विविधता में एकता विकास और स्थिरता के लिए अच्छी है, व्यक्तियों के लिए छोटे क्षेत्र, संयुक्त उद्यमों के लिए मध्यम और सार्वजनिक भागीदारी के लिए बड़े क्षेत्र भविष्य के विकास और गौरव की कुंजी हो सकते हैं। छोटे स्तर पर प्रतिस्पर्धा और बड़े प्रतिमान में उत्कृष्टता जीवित स्वर्ग को एक वास्तविकता बना देगी। ***

37. सभी के लिए भोजन

(अजगर करे न चाकरी, पंक्षी करे न काम। दास मलूका कहते हैं यह तो राम ही हैं, जो सबको देते हैं।)

प्रकृति हमेशा खाने वालों की ज़रूरत से ज़्यादा भोजन देती है, समस्या तब शुरू होती है जब प्राकृतिक वितरण में हस्तक्षेप किया जाता है। अकाल भोजन की कमी के कारण नहीं बल्कि गलत वितरण के कारण हुआ। नियंत्रण न तो विपत्ति में अच्छा है, न ही बहुतायत में, बल्कि यह एक अनुशासन है, जिसका पालन विपत्ति में, सामान्य समय में और बहुतायत में भी किया जाना चाहिए।

जब समाज सभ्यता के शिखर पर था, तब सामाजिक सुरक्षा के तहत सभी बुनियादी ज़रूरतों को न केवल मनुष्यों के लिए बल्कि स्थानीय प्रबंधन और धार्मिक केंद्र के आस-पास रहने वाले सभी पक्षियों और जानवरों, चींटियों और मछलियों के लिए मुफ़्त में उपलब्ध कराने पर विचार किया गया था ताकि क्षेत्र में कोई भी व्यक्ति खाली पेट न सोए। अफसोस! धीरे-धीरे इसे पीछे धकेल दिया गया। यह परम पावन नानक थे जिन्होंने खाद्य सुरक्षा के महत्व को समझा और धार्मिक उत्सव जैसे लंगूर की अवधारणा शुरू की। ये धार्मिक उत्सव एक तरफ़ खाद्य सुरक्षा की पुकार का जवाब देने की कोशिश करते थे, वहीं दूसरी तरफ़ 'भगवान' की कृपा से भोजन के प्रावधान के महत्व का संदेश फैलाने के लिए आगंतुकों को आकर्षित करते थे।

(1) सार्वजनिक वितरण प्रणाली के रूप में सरकार द्वारा संचालित खाद्य सुरक्षा की समीक्षा की जानी चाहिए और इसे समाप्त किया जाना चाहिए क्योंकि यह प्रणाली गरीबी, धोखाधड़ी और अन्य बड़े पैमाने पर कुप्रथाओं को बनाए रखने का मुख्य दोषी पाई गई है। जरूरत इस बात की है कि समाज जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए गांव, कस्बे, शहरों और महानगरों में लंगर का आयोजन करें।

खाद्य पदार्थों के आयात और निर्यात पर निगरानी रखने की आवश्यकता है, आपदा के लिए तीन वर्षों के लिए पर्याप्त स्टॉक बनाए रखना होगा तथा आवश्यकता के समय अन्य देशों की सहायता करना होगा, किसी भी प्रकार के दुर्भावनापूर्ण भंडारण और हेराफेरी के प्रति सतर्कता और नजर रखनी होगी, जिससे खाद्य सुरक्षा प्रणाली को खतरा हो सकता है और यह सब राष्ट्रीय और सामाजिक हितों की रक्षा के लिए आवश्यक है।

(2). शरीर के लिए भोजन वह है जो हम आँख, कान, नाक, स्पर्श और मुँह से लेते हैं। मुँह से लिया जाने वाला भोजन आम तौर पर हमारे द्वारा प्रतिदिन खाए जाने वाले कुल भोजन का दस प्रतिशत होता है। खुश, स्वस्थ और पवित्र रहने के लिए कहा जाता है कि हमारा भोजन – कुल भोजन – अच्छी गुणवत्ता का होना चाहिए। जब भोजन शुद्ध होता है, तो यह पवित्रता को बढ़ाता है जो बदले में स्मृति को बढ़ाता है; यह बढ़ी हुई स्मृति व्यक्ति को सभी अनावश्यक परेशानियों, बंधनों, हठधर्मिता और सीमाओं से मुक्त करती है।

तो आइए हम प्रार्थना करें और अभ्यास करें कि हम अच्छा भोजन खाएं और दूसरों को भी अच्छा भोजन खिलाएं ताकि हम व्यक्तिगत रूप से और साथ ही सामूहिक रूप से खुश, स्वस्थ और पवित्र रहें।

38. पोशाक और वर्दी

(ए) कोई भी इस बात की परवाह नहीं करता कि कोई व्यक्ति बिस्तर पर, बाथरूम में, अकेलेपन में या अकेलेपन में क्या पहनता है, लेकिन अगर वही गुण खुलेआम प्रदर्शित किया जाए तो निश्चित रूप से लोग बुरा मान सकते हैं। जो लोग बाहर जबरदस्ती चलन का अनुसरण करते हैं वे दयनीय हैं और जो लोग इस चलन का अनुसरण करते हैं वे स्वेच्छा से दूसरों का ध्यान आध्यात्मिक या यौन या व्यंग्यात्मक रूप से आकर्षित करते हैं।

(बी)। मानव जाति कई कारणों से सुरक्षा या प्रक्षेपण, बचाने या उपलब्धता और अपनी पसंद के अनुसार विभिन्न आयामों और रंगों में दिखाने के लिए कपड़ा पहनती है। रंगों की पसंद मुख्य रूप से समय और स्थान कारक पर निर्भर करती है। ऐसा कहा जाता है कि; चमकदार सफेद प्रकाश में सात रंग होते हैं, अर्थात, बैंगनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल। ऐसा कहा जाता है कि इन सात रंगों का प्रतिनिधित्व हमारे शरीर में सात ऊर्जा केंद्रों द्वारा किया जाता है, अर्थात लाल–मूलाधार आधार या सेक्स केंद्र, नारंगी–नाभि (स्वादिष्ट– मृत्यु केंद्र), पीला– पेट (मणिपुर, इंद्रिय केंद्र), हरा– हृदय (अनाहत),
नीला–कंठ– (विशुद्ध–शुद्ध) – वाणी, नील–सिर (आज्ञा–क्रम) और बैंगनी–आकाश केंद्र (सहस्त्रसार–कमल की हजार पंखुड़ियाँ)।

अगर हम गौर करें तो, विवाहों में ज़्यादातर लाल रंग का इस्तेमाल किया जाता है, संत नारंगी रंग का इस्तेमाल करते हैं, जो कि स्वादिस्थान (मृत्यु केंद्र– अंतिम संस्कार में आग का रंग) का प्रतीक है। और वक्ता ज़्यादातर नीले रंग के होते हैं, अस्पतालों में आम तौर पर पर्दे हरे रंग के होते हैं (आशा जगाने के लिए) जबकि मेडिकल और पैरामेडिकल स्टाफ़ को सफ़ेद कोट पहनना चाहिए (सभी रंगों को दर्शाने के लिए)। इसके अलावा रंग के चयन में भी निम्न मानदंड देखे गए हैं।
पीला – जो आम तौर पर इंद्रियों में रहते हैं, हरा – जो दिल से भरे होते हैं, नीला – आम तौर पर वक्ताओं, वक्ताओं द्वारा, इंडिगो – आदेश की स्थिति वाले व्यक्तियों द्वारा उपयोग किया जाता है और बैंगनी – जब कोई शांत, चुप और लगातार खुश मूड में होता है,

सफेद – सभी के द्वारा उपयोग किया जाता है और पसंद किया जाता है, लेकिन अधिकतर वे लोग जो अपने अंदर सभी रंग रखते हैं, काला – रंग और प्रकाश की अनुपस्थिति का उपयोग डाकू, मोहक महिलाओं और अत्यधिक रचनात्मक व्यक्तियों और ब्लैक कैट कमांडो द्वारा किया जाता है।

(सी) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:

1. जिस प्रकार आंतरिक प्रभाव कपड़े के चयन और उसके रंग पर पड़ता है, उसी प्रकार कपड़ों का बाहरी रंग भी आंतरिक प्रभाव को प्रभावित करता है।

2. वर्दी एकरूपता के लिए होती है; इसका उद्देश्य आंतरिक और बाह्य उद्देश्य के लिए पहचान और ब्रांड से अलग एकता और समानता की भावना पैदा करना है। यह सेवा के प्रकार और मौसम, आयु और लिंग के अनुरूप होना चाहिए। स्कूल यूनिफॉर्म में अप्रासंगिक प्रणाली, जैसे सर्दियों में बच्चों के लिए हाफ पैंट, गर्मियों में टाई और लड़कियों के लिए भी टाई, को ठीक किया जाना चाहिए। उष्णकटिबंधीय स्थानों में सामान्य कार्यकारी पोशाक के रूप में टाई और कोट को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता नहीं है। प्रसंस्करण उद्योगों में टाई और ढीले कपड़ों से पूरी तरह बचना होगा।

3. न्यायालय की मूर्तियों, न्यायाधीशों, वकीलों की वर्दी और उनके कलम तथा उसकी स्याही से काला रंग हटाना होगा, क्योंकि काला रंग कानूनविहीन है। अंधकार का प्रतीक होने के कारण काला रंग सम्पूर्ण शिक्षा दीक्षांत समारोह प्रणाली से हटाना होगा।

4. नाभि के नीचे के हिस्से में किसी भी तरह के महत्वपूर्ण चिह्न का चित्रण अपमान के रूप में समझा जाना चाहिए और उसी तरह से व्यवहार के योग्य होना चाहिए। हालाँकि सरकार को आम तौर पर कुछ नहीं कहना चाहिए, लेकिन हमें स्वस्थ रहने और दूसरों को खुशी से जीने का तरीका दिखाने के लिए खुद को साफ और सम्मानजनक कपड़े पहनने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

5. चिकित्सा विज्ञान की एक शाखा रंग चिकित्सा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

6. मुस्लिम और हिंदू समुदाय में बुर्का और पर्दा प्रथा के बारे में चर्चा को बढ़ावा देना होगा। अरब देशों में गर्मी से बचने के लिए बुर्का पहना जाता है। मुस्लिम और हिंदू समुदाय में आमतौर पर कहा जाता है कि महिलाओं को आजादी नहीं मिल सकती, इसलिए उन्हें ढकना, सुरक्षा देना और प्रतिबंधित करना चाहिए। तुलसीदास ने भी रामचरित्र–मानस में कहा है:
अमित बृष्टि जिमि फूटी कीरी, जिम स्वतंत्र भय बिगरे नारी (भारी वर्षा के पानी से रास्ता टूट जाता है, उसी प्रकार नारी स्वतंत्रता से उन्मत्त हो जाती है) जबकि ऐसी भावनाएं गीता में प्रतिबिंबित नहीं होती हैं और, इस तरह, वे प्रकृति का हिस्सा नहीं हैं और उन्हें समाप्त किया जाना चाहिए।

हमें इस मुद्दे पर चर्चा करनी चाहिए और एक उचित आचार संहिता बनानी चाहिए ताकि हममें से पचास प्रतिशत (बहनों की माँ और बेटियाँ) उस स्वतंत्रता का आनंद ले सकें जो हमें मिल रही है। ऐसा कहा जाता है कि, "निषेध और प्रगति, दमन और खुशी विपरीत अनुपात में हैं, जबकि कोई भी दमन जुनून के रूप में फूटने के लिए बाध्य है"।

7. काम के दौरान ढीले कपड़े कुर्ता–पायजामा, सलवार–कुर्ता पहनने से नींद आती है, आलस्य, सुस्ती और कम प्रभावीता आती है। काम के दौरान टाइट और आरामदायक कमर और जागते समय बिना अंडरगारमेंट के ढीले कपड़े, मौसम और कारण के अनुसार बदलाव के साथ सबसे अच्छे कहे जा सकते हैं। हर समय सिर और पैर ढकने की सुविधा अच्छी है।

8. शरीर को छूने वाले कपड़ों के लिए सूती रेशमी और ऊनी कपड़े सबसे अच्छे हैं और सहायक वस्तुओं के रूप में सिंथेटिक और चमड़े के कपड़े बेहतर हैं, जैसे– बेल्ट, पर्स जूते–चप्पल आदि और बेहतर स्वास्थ्य के लिए इन्हें भी उसी तरह प्राथमिकता दी जा सकती है। स्वच्छता बनाए रखने के लिए, मंदिर और रसोई आदि जैसे सम्मानजनक और धार्मिक स्थानों पर गंदे कपड़े, आम स्लीपर और जूते पहनने पर कुछ प्रतिबंध होना आवश्यक है। हमें पोशाक और वर्दी के मामले में सक्रिय दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है।

9. नेताओं की पोशाक: आम तौर पर लोग घर में और आराम करते समय और सोते समय कुर्ता–पजामा पहनते हैं, और अगर नेता दिन भर एक ही पोशाक पहने रहें, तो क्या कहना? नेताओं को मुश्किल समय में आम लोगों की पोशाक पहननी चाहिए, देश के विकास के दौर में अमीरों की सफेद/फूलों वाली पोशाक और विकसित दौर में औपचारिक पोशाक पहननी चाहिए। जींस–शर्ट/कुर्ता, साड़ी/धोती इनर और एक्सेसरीज के साथ हर तरह के मौसम के लिए सबसे अच्छी पोशाक है। ***

39. भाषा

(A). पहला मौखिक संचार माँ द्वारा अपने बच्चे के साथ गहरे प्रेम में किया जा रहा था और इस तरह मातृभाषा अस्तित्व में आई। प्रेम की अभिव्यक्ति के कई तरीके हैं और इसलिए मातृभाषाओं की विविधता है और समय, स्थान और ऊर्जा के अनुसार प्रत्येक मातृभाषा में विविधता है। चूँकि सभी माताएँ धरती माँ की तरह होती हैं और इसलिए दुनिया की सभी भाषाओं में समानता के कुछ सूत्र देखे जा सकते हैं जैसे शब्द/ध्वनि ए, यू, एम, लगभग सभी भाषाओं, बोलियों और कठबोली में देखे जा सकते हैं। इसके अलावा, हालाँकि माँ (मातृभाषा) आदिम है, लेकिन सास (पति या पत्नी और अन्य रिश्तेदारों की भाषा) के महत्व को कौन नकार सकता है, इसलिए समझदार पुरुष/महिला दोनों को साथ लेकर चलते हैं और भाषा के मामले में किसी भी दुश्मनी/अपमान में खुद को शामिल नहीं करते हैं।

(बी) यह देखा गया है कि संस्कृत दुनिया की सबसे शक्तिशाली, साकार और वैज्ञानिक भाषा है, संस्कृत के शब्दों में एक ही ध्वनि/उच्चारण होता है, चाहे कोई भी बोले, यानी समय, स्थान और ऊर्जा। कुछ लोगों का मानना है कि संस्कृत के अक्षरों को सबसे पहले भगवान शिव के डमरू से बजाया गया और फिर देवताओं द्वारा इस्तेमाल और बोला गया। यही कारण है कि संस्कृत को देव-भाषा (देवताओं की भाषा) और इसकी लिपि/फ़ॉन्ट को देव-नागरी (देवताओं की लिपि/फ़ॉन्ट/वर्ण) कहा जाता है। इस तरह संस्कृत को ईश्वर की भाषा कहा जा सकता है, जो अंतहीन और हमेशा मौजूद रहती है।

लेकिन जो लोग विकासवादी सिद्धांत में विश्वास करते हैं, उनके लिए सभी मातृभाषाएं संस्कृत से पुरानी होनी चाहिए, इस साधारण तर्क के अनुसार एक बेहतर भाषा केवल उस समय उपस्थित सभी मातृभाषाओं के बीच बाध्यकारी या योजनाबद्ध मंथन से ही उभर सकती है, चाहे वह देवता की हो या दानव की, संत की हो या शैतान की, स्वामी की हो या राक्षस की।

उपरोक्त बातों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि अनादि काल से सर्वोत्कृष्ट साहित्य मूल रूप में या मूल के समान संस्कृत में उपलब्ध है, इसलिए संस्कृत को मातृभाषा के बाद एक ऐसी भाषा कहा जा सकता है जिसे सीखने में सभी को रुचि होनी चाहिए।

(सी)। आज हम जिन भाषाओं के बारे में सुनते हैं, वे सभी महान भाषाएँ हैं, अगर वे महान न होतीं तो वे टिक नहीं पातीं और अन्य भाषाओं में डूब जातीं। सभी आविष्कार प्रकृति की इच्छा से होते हैं और आम तौर पर किसी को भी उस पर एकाधिकार या स्वामित्व रखने की अनुमति नहीं देते हैं, चाहे वह टेलीविजन हो, टेलीफोन हो या दूरसंचार या भाषाएँ हों और सभी मनुष्यों की हैं।

सभी भाषाएँ सभी की हैं; कुछ प्रथम हो सकती हैं या कुछ दूसरी। गर्व करना, श्रेष्ठता महसूस करना, दूसरों को एक विशेष भाषा सीखने और दूसरी भाषा भूलने के लिए मजबूर करना, भाषा के आधार पर राज्य की सीमाएँ, अवरोध, सीमांकन और भेदभाव बनाना विकास और सद्भाव के लिए उतना ही प्रतिकूल है जितना कि नस्ल और धर्म, जाति और वर्ग, आयु और लिंग के आधार पर भेदभाव। उभरती हुई विश्व व्यवस्था में भाषाओं का एकीकरण या आत्मसात होना जारी रहेगा।

(घ) ऐसा कहा जाता है कि सबसे अच्छी भाषा वह होती है जिसमें कोई शब्द नहीं होता और जिसे एक व्यक्ति द्वारा व्यक्त किया जाता है और दूसरे द्वारा पूर्ण मौन में भावना के माध्यम से अनुभव किया जाता है, दूसरी सबसे अच्छी भाषा संकेतों और प्रतीकों की भाषा होती है जिसे आमतौर पर नर्तक, बहरे और गूंगे तथा अन्य भाषा के जानकार लोग इस्तेमाल करते हैं और तीसरी सबसे अच्छी भाषा वह होती है जिसके लिए लोग तर्क देते हैं कि उनकी भाषा श्रेष्ठ है और सभी को इसे सीखना चाहिए और इसका पालन करना चाहिए और फिर उसी भाषा में प्रयोग और गाली देनी चाहिए। यह कितना भ्रांतिपूर्ण है!

शब्द ब्रह्म है, हर अक्षर ब्रह्मांड का प्रतिनिधि है, हर शब्द सृजन करता है, उसमें ऊर्जा होती है इसलिए हर किसी से अपेक्षा की जाती है कि वह भाषा का प्रयोग सावधानी से करे। कहा जाता है कि जो भाषाएं गुरुओं और ऋषियों द्वारा बोली जाती हैं, वे अच्छी होनी चाहिए लेकिन फिर भी हमें भाषा और ध्वनिविज्ञान के लिए एक शोध और विकास केंद्र स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि सामंजस्य की ध्वनि का पता लगाया जा सके और उसे भाषा के क्षेत्र में कैसे आत्मसात किया जा सके। ***

40. रोज़गार सृजन (भारत जैसे देश में)

प्रस्तुत है: "रोजगार सृजन (भारत जैसे देश में)" के संबंध में प्रस्तुतीकरण दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1) मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2) पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा:

इस अध्याय अर्थात् "रोजगार सृजन (भारत जैसे देश में)" को पढ़ते समय, इसमें निहित विषय-वस्तु की सराहना करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों का संदर्भ लेना उचित होगा: **सामाजिक सुरक्षा की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था की सामाजिक सुरक्षा,** स्वच्छ और स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था तथा सफाई और स्वच्छता का अर्थशास्त्र, **एक अर्थव्यवस्था के स्थायी कामकाज के लिए कार्य वितरण** , एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए शासन, प्रशासन और उसका अनुकूलन, **स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय का अर्थशास्त्र** , लाभकारी रोजगार और सम्मानजनक जुड़ाव के प्रमुख अवसर, **धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थानों) से अर्थशास्त्र का प्रबंधन-एक अहस्तक्षेप** , एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण **"।**

(1) <u>मुद्दे और उसकी व्यापक रूपरेखा</u> :

(1.A) रोजगार के लिए कहा जाता है कि कृषि वानिकी सबसे अच्छी है, मध्यम वाणिज्य (व्यवसाय) है, निम्नतर नौकरी है, तथा भीख मांगना अंतिम उपाय है। बढ़ता तापमान (ग्लोबल वार्मिंग), बदलता मौसम, बढ़ता प्रदूषण, भूजल स्तर में कमी, सूखा, बाढ़, शहरों में तनावपूर्ण जीवन, तथा नई-नई बीमारियों का आना, हमें सीखने, सीखने और कमाने, कमाने और जीने, जीने और खुशी से जीने के लिए नए सिरे से योजना बनाने के लिए कहता है।

लाभकारी रोजगार और सम्मानजनक रोजगार सृजित करने और बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि प्राथमिक कार्य अनिवार्य रूप से शारीरिक, द्वितीयक अर्द्ध-स्वचालित और तृतीयक प्रौद्योगिकी संचालित तथा उसके बाद स्वचालित या रिमोट नियंत्रित ही रहने दिया जाए। इस तरह से पूरे कृषि-वानिकी क्षेत्र को शारीरिक/मैन्युअल रूप से संचालित होना चाहिए, खाद्य उत्पादों की पैकेजिंग अर्द्ध-स्वचालित होनी चाहिए और कोल्ड स्टोरेज का रखरखाव प्रौद्योगिकी संचालित होना चाहिए तथा बायो-गैस संयंत्र का संचालन, बिजली का संचरण और वितरण स्वचालित होना चाहिए और उसे रिमोट नियंत्रित भी किया जा सकता है। यदि आवश्यकता हुई या युवाओं में बेरोजगारी का स्तर दस प्रतिशत से अधिक बढ़ा तो शायद हमें कृषि और वन क्षेत्र में सभी ईंधन तेल या बिजली चालित मशीनरी पर प्रतिबंध लगाने के बारे में सोचना होगा।

(2) **<u>प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों में आम चर्चा थी</u>** :

(2.A) दुनिया के साथ–साथ भारत के प्रमुख सूचना प्रौद्योगिकी आधारित संगठनों में हाल ही में हुई छंटनी ने एक भयावह संदेश दिया है कि इंटरनेट, इंट्रानेट और सूचना प्रौद्योगिकी आधारित रोजगार में बढ़ती प्रवृत्ति न केवल खत्म हो गई है, बल्कि इसमें गिरावट आई है। इससे यह देखा जा सकता है कि सूचना प्रौद्योगिकी में जानकारी होना और उसमें महारथ हासिल करना कोई अतिरिक्त मूल्य नहीं होगा; इसलिए युवाओं को बड़े पैमाने पर रोजगार देने के मामले में हमारे लिए यह समझदारी होगी कि हम इसमें बड़े पैमाने पर कदम न उठाएं।

(2.बी) रोजगार की व्यवस्था में, समाज को यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि कार्य अनुबंध के किसी भी पक्ष द्वारा कोई शोषण न किया जाए, इसके अलावा प्रत्येक प्रकार के कार्य/क्षेत्र के लिए न्यूनतम और अधिकतम मजदूरी/लाभ तय किया जाना चाहिए।

ऐसा माना जा रहा है कि आने वाले सालों में रोजगार सुरक्षा, भोजन, फैशन, ऊर्जा और मनोरंजन, प्रकृति की विलासिता में उद्यम और रोमांच के इर्द–गिर्द घूमेगा। हमें इस प्रवृत्ति को बनाना और उसका अनुसरण करना चाहिए। ***

41. शक्ति-ऊर्जा

ऊर्जा आनंद है और शक्ति ऊर्जा से प्राप्त होती है। हम अपनी प्रार्थना में जिस तरह से कलश भरकर ऊर्जा का प्रदर्शन करते हैं, उससे कुछ ज़्यादा नहीं है - ऊर्जा, यही हम अपने लिए और अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए जारी रखने की उम्मीद करते हैं।

निम्नलिखित प्रस्तुत है :

(ए) मुफ्त ऊर्जा: हम "श्री परमहंस तिवारी" द्वारा आविष्कृत मुफ्त ऊर्जा के लिए व्यावसायिक रूप से जाना पसंद कर सकते हैं , (लेखक, आविष्कारक और न्यूक्लियर पावर कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआईएल) के सेवानिवृत्त कार्यकारी निदेशक (परमाणु परियोजनाएं), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से बीएससी इंजीनियरिंग स्नातक, उनका एनपीसीआईएल के साथ चार दशकों से अधिक का करियर था। हालांकि, उनके अग्रणी योगदान उनके पेशेवर करियर से परे हैं। वे भौतिकी में एक क्रांतिकारी सिद्धांत, स्पेस वोर्टेक्स थ्योरी (एसवीटी) के लेखक हैं, और उसी पर कई किताबें लिखी हैं, उनके सिद्धांत ने उन्हें तिवारी रिएक्शनलेस जेनरेटर (टी-आरएलजी), एक उच्च दक्षता वाले विद्युत जनरेटर का आविष्कार करने के लिए प्रेरित किया। संपर्क: अनुपम तिवारी, a_tewari@icloud.com , https://www.tewari.org/contact.html या https://www.tewari.org ,

(A.1) कहा जाता है कि पैसा एक ऐसी ऊर्जा है जिसकी हर किसी को जरूरत होती है। कुछ लोग कहते हैं कि जितना अधिक पैसा (जितनी अधिक ऊर्जा) उतना ही अच्छा होता है और इससे संसाधनों (पैसे और ऊर्जा) का संचय होता है। दीर्घकालिक अनुभव कहता है कि धीमी और स्थिर गति से ऊर्जा का उपयोग करने से आनंद मिलता है और प्रकृति को ऊर्जा के अपने चक्र को सामंजस्यपूर्ण तरीके से पूरा करने का समय मिलता है, जबकि तेज गति से ऊर्जा (पैसे) का उपयोग करना या उच्च ऊर्जा स्रोतों (तरल हाइड्रोजन या) या कम समय में बड़ी मात्रा में केंद्रित धन (सोना, चांदी, प्लेटिनम और मोती) का उपयोग करना प्रदूषण का कारण बनता है और प्रकृति को अपना चक्र पूरा करने के लिए पर्याप्त समय नहीं देता है और चक्र में सभी के लिए (चाहे दिखाई दे या न दे) परेशानी का कारण बनता है। इस समझ वाले लोग कहते हैं कि पैसा अच्छाई के साथ आना चाहिए; लाभ अच्छाई के साथ और सही तरीकों से आना चाहिए और सही उद्देश्य के लिए निवेश किया जाना चाहिए।

(बी) भारत जैसे देश के लिए कोयला आधारित संयंत्र को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि कोयला आधारित बिजली संयंत्रों की अधिकतम चालीस प्रतिशत दक्षता है, जिसमें से दस प्रतिशत बिजली उत्पादन के लिए बिजली संयंत्र में खपत होती है, पंद्रह-बीस प्रतिशत कोयला

निकालने और कोयला परिवहन तथा ग्राहकों तक बिजली पहुंचाने में खपत होती है, केवल तीस प्रतिशत शुद्ध ऊर्जा उपयोग के लिए बचती है। इस ऊर्जा के उत्पादन से वायु प्रदूषण, राख निपटान की समस्या के साथ-साथ अन्य पारिस्थितिकीय गड़बड़ी भी होती है। ईंधन-तेल आधारित और गैस आधारित बिजली संयंत्रों को भी अनुकूलित करने की आवश्यकता है। इनके स्थान पर छोटे से मध्यम हाइड्रो, छोटे से मध्यम बायोगैस संयंत्र, बड़ी पवन चक्कियाँ, और सौर ऊर्जा का अधिक उपयोग तथा चुनिंदा लेकिन पर्याप्त रूप से बड़े परमाणु ऊर्जा संयंत्र बनाने होंगे।

(बी.1) भारत की कई राज्य सरकारें और निजी संस्थाएँ अपने निवासियों को ऊर्जा सुरक्षा प्रदान करने में विफल रहीं। ईंधन तेल, कोयला, परमाणु ऊर्जा और विद्युत ऊर्जा के बड़े पैमाने पर उत्पादन और परिवहन/संचरण के लिए राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता है, हालाँकि बिजली के वितरण के लिए समाज के तहत स्थानीय चरित्र सबसे अच्छा होगा।

ऊर्जा सुरक्षा के लिए प्राकृतिक गैस, सीएनजी, एलपीजी को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, जैसे कि पहले खाना पकाने के लिए, फिर शहरी सेवाओं के लिए और फिर औद्योगिक और अन्य उपयोग के लिए। चूंकि सब्सिडी उस समाज के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए हानिकारक पाई जाती है जिसके लिए इसे दिया जाता है, इसलिए सभी ईंधन तेल, प्राकृतिक गैस, केरोसिन और डीजल को वास्तविक रूप से कैलोरी मान के आधार पर पूरे देश में एक ही दर पर बेचा जाना चाहिए। इसके अलावा यह बेहतर होगा कि हम जनता को उसी कीमत पर खनन कोयला उपलब्ध कराएं जिस पर कोयला-संचालित बिजली कंपनियां इसे प्राप्त करती हैं।

(बी.2). विकास, समृद्धि और सुरक्षा सीधे ऊर्जा की उपलब्धता और उसके पोषण पर निर्भर और आनुपातिक हैं। इसे प्राप्त करने के लिए भारत को प्रौद्योगिकी/उपकरणों, उनके स्पेयर पार्ट्स और अंत में सबसे महत्वपूर्ण ईंधन और परमाणु ईंधन के पुनर्संसाधन के निरंतर आयात पर निर्भरता से मुक्त होना चाहिए। भारत को केवल बचत ही नहीं, बल्कि इष्टतम उपयोग और न्यूनतम दुरुपयोग/अपव्यय की अवधारणा को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। ऐसे विकास से बचने के लिए विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है जो बिजली आपूर्ति की विफलता से पूरे देश या महाद्वीप को पंगु बना सकता है, इसलिए एक जुड़ा हुआ लेकिन अलग/अलग ग्रिड सिस्टम सबसे अच्छा कहा जा सकता है।

आवासीय और औद्योगिक परिसरों में घरों में छत की ऊंचाई कम करने और परिणामस्वरूप वेंटिलेटर को हटाने से वेंटिलेशन की समस्या उत्पन्न हुई है, जिसके कारण छत के पंखे, एग्जॉस्ट पंखे और एयर-कंडीशनिंग का उपयोग बढ़ गया है, जिससे बिजली की मांग बढ़ गई है। बुनियादी घरों और घरेलू सामानों, कार्यालयों को इस तरह से डिजाइन करने की आवश्यकता है कि वे

अधिकतम प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश, वायु शीतलन और हीटिंग आदि का उपयोग करें। इसका मतलब यह है कि घर बारह से तेरह फीट ऊंचे होने चाहिए ताकि छत के पास वेंटिलेटर हो, पर्याप्त मोटी दीवार हो ताकि वे सर्दियों में गर्म और गर्मियों में ठंडे रहें (बजाय सर्दियों में ठंडा और गर्मियों में गर्म रहने के, घर/घर के अंदर रहने योग्य तापमान बनाए रखने के लिए बहुत अधिक बिजली की ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण और किसी भी कच्ची या कम लागत वाली लकड़ी की वस्तुओं के निर्यात को रोकने, खनन, रिफाइनिंग और पेट्रोकेमिकल क्षेत्रों के पास नाइट्रोजन और सल्फर ऑक्साइड अवशोषक संयंत्र लगाने के साथ ही भारत ऊर्जा में स्थिरता प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा भारत ऊर्जा से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान और विकास करना जारी रखता है, चाहे वह भंडारण, संचरण और वितरण हो, लेकिन भारत के लिए अभी भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वह **ऊपर (ए) में बताई गई बातों को लागू करे** ।

(सी) भारत जैसे जलवायु वाले अधिकांश देशों में हमेशा से ही वनों का आशीर्वाद रहा है, यहां जलाने के लिए हमेशा इतनी सूखी लकड़ियां उपलब्ध रहीं कि ऊर्जा का विचार ही नहीं आया जैसा कि रेगिस्तान और बर्फ से ढके क्षेत्रों में होता है।

बिजली और पेट्रोल की खोज से पहले पूरी धरती पर मानव आबादी का स्तर अधिकतम था, लेकिन आज जब रेगिस्तान में, बर्फीले इलाके में, प्राकृतिक हवा, रोशनी के बिना, एक डिब्बे जैसे कमरे (घरों) में रहना संभव है, तो मानव आबादी मक्खी–मच्छर की तरह बढ़ गई है। इस बढ़ती मानव आबादी ने ऊर्जा (पेट्रोल और बिजली) की ज़रूरत को और बढ़ा दिया है – और अब आबादी और ऊर्जा (बिजली और पेट्रोल) दोनों ही बढ़ रहे हैं, जैसे एक दूसरे को ताकत दे रहे हों।

आज हर संयंत्र और हर संभव तरीके (हवा, पानी, सूरज की रोशनी, कोयला, परमाणु) से पेट्रोल–डीजल को बिजली में बदलने की कोशिश की जा रही है। वहीं विकास की दौड़ में ऐसे उत्पादों की जरूरत उत्तरोत्तर बढ़ रही है जो कम समय में बहुत अधिक ऊर्जा प्रदान करते हैं – जैसे तरल हाइड्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड, परमाणु ऊर्जा/हथियार, बारूद और क्रायोजेनिक्स (तेज और गहरी शीतलन के लिए)।

(सी.1) उपरोक्त वास्तविकता का एक पक्ष है, जबकि वास्तविकता का दूसरा पक्ष यह है कि हमारा सामूहिक विनाश उसी दर या अनुपात में बढ़ रहा है जिस दर या अनुपात में ऊर्जा की मांग बढ़ रही है।

आमतौर पर विकास का एक आकर्षक मॉडल प्रस्तुत किया जाता है जैसे कि देश के हर पुरुष/महिला का सपना होता है कि उसके पास कम से कम एक घर हो, एक बाइक हो, एक बंदूक/पिस्तौल हो, एक कार हो और घर में एयर कंडीशनर, टीवी, फ्रिज, वाशिंग मशीन, डिशवॉशर, वाई-फाई कंप्यूटर और अच्छी क्वालिटी का मोबाइल हो, फिर हर किसान के पास ट्रैक्टर और कटाई, भूसा आदि के लिए मशीनें हों, तभी देश उन्नत कहा जा सकता है। जाहिर है कि इन सपनों को पूरा करने के लिए देश में बिजली उत्पादन की बड़ी क्षमता और परिवहन के लिए जीवाश्म ईंधन की बड़ी आपूर्ति होनी चाहिए। अगर विकास का यही पैमाना होगा तो हममें से हर कोई एक अंतहीन दौड़ में भाग रहा होगा जिसका अंत एक चींटी की तरह है, जो मरने तक दौड़ती/चलती रहती है।

इस अंतहीन और विस्तारित विकास में ऊर्जा की खपत और उससे उत्पन्न होने वाली गर्मी इतनी बढ़ गई है कि पूरी धरती गर्म हो गई है, हिमालय और आर्कटिक में बर्फ पिघलने लगी है, पूरा पर्यावरण बदलने लगा है और जल, जमीन और हवा में प्रदूषण साफ दिखाई देने लगा है, वनस्पतियां बर्बाद हो रही हैं और जंगल सिकुड़ रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप सभी जीवों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है।

(सी.2) सूर्य पृथ्वी पर निरंतर ऊर्जा दे रहा है, (लगभग पंद्रह टेरा-वाट यानी कई करोड़ किलोवाट बिजली के बराबर) जो मिट्टी और पानी को गर्म करती रहती है। पेड़-पौधे ही हैं जो बड़ी मात्रा में इसे अवशोषित करते हैं और इसे पत्तियों, लकड़ी के रूप में संग्रहीत करते हैं और इसे जीव-जंतुओं के लिए भोजन में परिवर्तित करते हैं और पृथ्वी के पर्यावरण (तापमान, नमी और हवा का संचार) को संतुलित रखते हैं। हमारे लिए यह समझदारी है कि हम पेड़ लगाएं और उनकी रक्षा करें, न कि उन्हें काटें और बिजली पैदा करने के लिए सोलर पैनल लगाएं, भले ही हम दोनों को दस से पंद्रह साल की अवधि में दोनों द्वारा उत्पादित ऊर्जा के संदर्भ में गिनें।

भारत जैसे देश, जहाँ सूर्य, वायु, जल से प्रचुर मात्रा में ऊर्जा उपलब्ध है, अपेक्षा से कहीं पहले ही ऊर्जा-संपन्न हो सकते हैं। ऊर्जा की आवश्यकता का समाधान वायु, जल और सूर्य में है।
गुरुत्वाकर्षण बल और उत्तोलन बल (ऊर्जा) विपरीत हैं; इनकी प्राकृतिक लय सुखी और आसान जीवन देती है। ***

42. वेश्यावृत्ति

(अ) दुनिया का सबसे पुराना पेशा और सेक्स (काम–आंतरिक काम) की रिसर्च लैब को बंद करने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता, जहाँ वेश्याओं के बीच काम–सूत्र की रचना की गई थी। कुछ इलाकों में सुनने में आता है कि एक नवविवाहिता महिला वेश्याओं से आशीर्वाद लेती थी कि वह जीवन भर पतिव्रता बनी रहे, क्योंकि वेश्याओं को ऐसा माना जाता है।

(ब). सेक्स को दबाना, उसे वर्जित बनाना और व्यक्ति के निजी मामलों में हस्तक्षेप करना, वर्ग को पहले हिजड़े जैसा बनाने और फिर उसे गुलाम (बैल) की तरह इस्तेमाल करने की साजिश है। (सेक्सी पुरुष और महिला) बैल को उसकी इच्छा के विरुद्ध इस्तेमाल करना बहुत मुश्किल है।

(सी) वेश्यावृत्ति के फलने–फूलने का सबसे महत्वपूर्ण कारण है उच्च तलाक दर, कम उपलब्धता और मीडिया में उच्च प्रक्षेपण, प्रेम संबंधों की तुलना में अधिक प्रतिस्पर्धी संबंध उच्च यौन तीव्रता की तुलना में वेश्यावृत्ति के प्रमुख कारण हैं और इस वजह से वर्तमान में वेश्यावृत्ति पश्चिम में अधिक प्रचलित है। जैसे–जैसे बुद्धि का स्तर केवल शारीरिक से मानसिक तक बढ़ता है, यौन विविधता की आवश्यकता बढ़ जाती है, ऐसे में वेश्याएं दबी हुई ऊर्जा और पैसे को बाहर निकालने का एक आसान रास्ता प्रदान करती थीं।

(डी) विवाहित जोड़े एक दूसरे के द्वारा ग्रसित महसूस करते हैं और कुछ समय बाद एक दूसरे के साथ छेड़छाड़ करना बंद कर देते हैं और उस स्थिति में बेवफाई एक स्वाभाविक परिणाम होगा जो बाहर जाने वाले व्यक्तियों के लिए और दूसरे के लिए निराशा होगी, और फिर यह नया चलन प्रत्येक व्यक्ति को अपने नए चुने हुए मार्ग का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है यानी बाहर सांत्वना ढूँढना। मीडिया, धार्मिक संस्थानों आदि से अपेक्षा की जाती है कि वे यौन निष्ठा में विविधता लाने के लिए पर्याप्त जानकारी प्रदान करने की भूमिका निभाएँ, न कि अनजाने में सरल बेवफाई के लिए मजबूर करें।

(ई) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:

1) सरकार को केवल एक ही काम करना है, वह है जबरन वेश्यावृत्ति पर रोक लगाना। वेश्यावृत्ति की ओर जाने वाली यात्रा में आसान और उच्च तलाक दर और उसके बाद गरीबी को शामिल करने के लिए धार्मिक चर्चा शुरू करनी होगी। सरकार को ऐसे लोगों को वेश्यावृत्ति के इस क्षेत्र से बाहर बसाने के लिए सहायता प्रदान करनी होगी। ऐसा महसूस किया जाता है कि वेश्यावृत्ति की रोकथाम सरकार की सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारी है, और सरकार को इसमें ज्यादा हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं है।

2). हमें वेश्याओं और आगंतुकों के साथ अच्छा व्यवहार करना होगा। बीमारियों को रोकने के लिए तिमाही/समय पर चिकित्सा जांच और उपचार की सुविधा जरूरी है। वेश्यावृत्ति के खिलाफ

सभी कानूनी मंजूरी वापस लें और मतदान का अधिकार प्रदान करें। सुनिश्चित करें कि वेश्यावृत्ति के कारण पर्यटन न बढ़े। बड़े होटलों और गैर-आवासीय क्षेत्रों में डांस बार खोले जा सकते हैं। प्रेम संतान/या सह-उत्पाद को भी सभी सुविधाएं प्रदान की जाएंगी, पिता का पता लगाने के लिए डीएनए परीक्षण की भी व्यवस्था की जा सकती है, केवल मुआवजे के उद्देश्य से (कानूनी तौर पर) और इसे गुप्त रखा जा सकता है। ***

43. आरक्षण (भारत जैसे देश में)

निम्नलिखित प्रस्तुत है: "आरक्षण (भारत जैसे देश में)" के संबंध में प्रस्तुतीकरण दो भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है: (1). मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा, (2). पुराने समय के बुद्धिमान लोगों के बीच आम चर्चा:

इस अध्याय अर्थात् "आरक्षण (भारत जैसे देश में)" को पढ़ते समय, इसमें दी गई सामग्री की सराहना करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों का संदर्भ लेना उचित होगा: **सामाजिक सुरक्षा की अर्थव्यवस्था और अर्थव्यवस्था की सामाजिक सुरक्षा,** स्वच्छ और स्वास्थ्यकर अर्थव्यवस्था और सफाई और स्वच्छता का अर्थशास्त्र, **एक अर्थव्यवस्था के स्थायी कामकाज के लिए कार्य वितरण** , एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए शासन, प्रशासन और इसका अनुकूलन, **स्वास्थ्य, शिक्षा और न्याय का अर्थशास्त्र** , धर्म संस्थान (धार्मिक संस्थानों) से अर्थशास्त्र का प्रबंधन – एक अहस्तक्षेप, **एक स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए परिवार, देश और समाज के बीच आय का वितरण"।**

(1). <u>मुद्दे और इसकी व्यापक रूपरेखा</u> :

सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे जन्म, मृत्यु और हमारे कर्म, भक्ति या ज्ञान के अनुसार कुछ चीजों को सुरक्षित रखता है ताकि आपसी उपद्रव से सुरक्षा प्रदान की जा सके। ब्रह्म/ब्रह्मांड की इस घटना को देखने वाले द्रष्टा को ऋषि के रूप में सम्मानित किया जाता है और जो ब्रह्म/ब्रह्मांड के इस तथ्य/पहलू को समझते/सराहते हैं उन्हें ब्राह्मण कहा गया है। ब्राह्मण बनना दूसरा जन्म है और इसे समझे/अनुभव किए बिना कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि वह ब्राह्मण है। ब्राह्मण बनना राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री, पुजारी, पंडित, मौलवी, इंजीनियर, डॉक्टर आदि बनने से कहीं अधिक है, जिसे कोई भी जन्म से विरासत में प्राप्त होने का दावा नहीं कर सकता।

महाभारत में एक प्रसंग है जिसमें रानी गांधारी भगवान कृष्ण को श्राप देती हैं कि जैसे तुमने मेरे कुल का नाश किया है, वैसे ही तुम्हारा कुल भी नाश हो और भगवान कृष्ण ने इस श्राप को स्वीकार कर लिया। ऐसा कहा जाता है कि अगर यह श्राप न मिलता और भगवान इसे स्वीकार न करते तो आज बहुत से लोग यह कहते हुए दिखाई देते कि वे भगवान के प्रत्यक्ष वंशज (पुत्र और पुत्रियाँ) हैं। इस प्रसंग को देखते हुए हम यही कह सकते हैं कि भगवान स्वयं नहीं चाहते कि कोई भी व्यक्ति यह कहे कि वे भगवान के पुत्र/पुत्री या प्रत्यक्ष वंशज हैं। अब अगर कोई यह दावा करता है कि वह भगवान कृष्ण के ही गाँव/कुल से है और उसे लगता है कि उसे कुछ लाभ, कुछ विशेषाधिकार प्राप्त हैं, जो भगवान कृष्ण से जुड़े थे, तो निश्चित रूप से यह एक हास्यास्पद प्रस्तावना होगी।

जो लोग ब्राह्मण नहीं बने हैं, लेकिन सिर्फ इसलिए कि वे ब्राह्मण के बेटे और बेटी हैं, उन्हें वही लाभ, वही विशेषाधिकार और सम्मान मिलना चाहिए जो उनके पिता/माता को मिला था, जो वास्तव में ब्राह्मण बने थे, क्योंकि उनके जन्मसिद्ध अधिकार ही बड़े परिवार समाज के सुचारू संचालन में समस्या पैदा करते हैं। उपरोक्त जैसी स्थितियों को शुरुआती बिंदु कहा जा सकता है जहाँ 'आरक्षण, पेटेंट' और बौद्धिक संपदा अधिकार' की अवधारणा सामने आई। इसे वास्तविक आरक्षण कहा जा सकता है जिसके बारे में किसी को चिंता करनी चाहिए, चिंता करनी चाहिए और इसे खत्म करने का प्रयास करना चाहिए, और बाकी जो हम भारत और अन्य देशों में देखते हैं वह सिर्फ एक दिखावा है जिसे बिना पलक झपकाए कभी भी आसानी से समाप्त किया जा सकता है।

(2) **<u>प्राचीन काल के बुद्धिमान लोगों में आम चर्चा थी</u>** :

(2.A). आरक्षण (भारत में), जो कुल नौकरियों यानी सरकारी नौकरियों के केवल दो प्रतिशत के लिए है, दलितों की स्थिति को नहीं बदल सकता। सरकार द्वारा एससी/एसटी, ओबीसी और अल्पसंख्यकों को आरक्षण प्रदान करने के साथ, वास्तव में जमीन पर जो हुआ वह यह है कि अमीर और प्रसिद्ध लोगों ने निजी और महंगी शिक्षा, स्वास्थ्य और न्यायिक प्रणाली बनाकर उनके लिए अट्ठानबे प्रतिशत नौकरियां आरक्षित कर दी हैं। ये महंगे निजी स्कूल/कॉलेज, अस्पताल और वकील तथाकथित आरक्षित वर्ग को शुरू से ही वंचित करते हैं और इनका दीर्घकालिक असर नहीं दिखता।
इसे दूर करने के लिए हमें सभी स्तरों पर शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय व्यवस्था को निःशुल्क बनाना होगा। चूंकि मानसिक अवरोधों को दूर करना प्राथमिक है, इसलिए आरक्षित/सेवा वर्ग और देश के सभी लोगों के जीवन में सुधार के लिए अंतर-वर्गीय और अंतर-धार्मिक चर्चा शुरू करनी होगी।

(2.बी). पूरे पेड़ की अनुमति के बिना टहनी नहीं गिर सकती। सभी आविष्कार मानवता द्वारा निर्देशित होते हैं और ऐसे सभी आविष्कारों का परिणाम पूरी मानवता का होता है। हमें बिना किसी पेटेंट अधिकार और बौद्धिक संपदा अधिकार और उससे जुड़े भारी शुल्क के सभी आविष्कारों को सम्मान देना होगा, जो इसके पेशेवरों के लिए अनुचित आरक्षण की मांग करते हैं। समाज को सलाहकारों, डॉक्टरों, चार्टर्ड अकाउंटेंट, वकीलों, सफाई कर्मचारियों, बढ़ई, रसोइयों आदि द्वारा ली जा रही फीस को अनुकूलित करने की आवश्यकता है।

उम्मीद है कि उपरोक्त अभ्यास और इस पुस्तक के मुख्य अध्यायों में विभिन्न विषयों में प्रस्तुत की गई बातों से अधिकांश आरक्षण समाप्त हो जाएगा, चाहे वह जाति, पंथ और रंग का हो या

संवैधानिक रूप से दिया गया हो। आरामदायक आरक्षित (रेलवे) यात्रा और सामान्य श्रेणी में असुविधाजनक यात्रा के वर्तमान स्वरूप को सभी वर्गों में और सभी वर्गों के लिए आरामदायक यात्रा से बदला जाना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है ताकि देश समृद्धि और सम्मान के अपने स्तर पर पहुंच सके और अपना खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त कर सके। लोगों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना और युवाओं को एक मंच देना ताकि वे अपने आकाओं की निगरानी में अपनी आकांक्षाओं के अनुसार काम कर सकें ताकि हम सामूहिक रूप से एक स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र जीवन जी सकें, हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। ***

44. मोटापा और कुपोषण

ए). क्लिनिकल व्यवसाय पर एक रिपोर्ट कहती है, "वर्तमान जीवनशैली और खान-पान की आदतों (फास्ट लाइफ, फास्ट फूड) के कारण, शहरी आबादी का तीस प्रतिशत हिस्सा हमेशा मोटापे से पीड़ित रहेगा और इस तीस प्रतिशत में से पचास प्रतिशत लोग मोटापा क्लीनिक का सहारा लेंगे। मोटापे से ग्रस्त रोगियों की इतनी बड़ी संख्या की देखभाल के लिए, बड़ी संख्या में मोटापा क्लीनिक की आवश्यकता होगी और इस तरह यह व्यवसाय अच्छी संभावनाएं लेकर आएगा।

दुनिया के दूसरे हिस्सों में एक और रिपोर्ट कहती है कि अमीर और गरीब के बीच बढ़ती असमानता के साथ, गरीबी भी उस देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की दर से ही बढ़ेगी। इस गरीबी के कारण भुखमरी/कुपोषण होगा और यह मिशनरियों और धर्मार्थ ट्रस्टों को अच्छी नौकरियां प्रदान करेगा।

यह कहा जा सकता है कि चिकित्सा, दान और मिशनरी को व्यवसाय के रूप में बढ़ने और महिमामंडित करने की अनुमति दी जाती है, इसी तरह बीमारी/रोग को भी बढ़ने और बढ़ावा देने की अनुमति दी जाती है। अफसोस! कितनी शर्म की बात है! यह किस तरह की सोच है? क्या इस तरह की आर्थिक योजना समाज को स्वस्थ और खुशहाल बनाने में मदद कर सकती है या बीमारियों और दुखों से भरी हुई? ऐसे में यह जरूरी है कि हम (समाज) व्यापक परिप्रेक्ष्य में योजना के पूरे दायरे पर फिर से विचार करें।

(बी) हम निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहेंगे:

1) मोटापा और कुपोषण भी टूटे हुए आश्रम और वर्ण व्यवस्था (जीवनशैली और जाति/वर्ग का विभाजन) का परिणाम है। एक प्राकृतिक अवधारणा के रूप में, एक गृहस्थ आश्रम में और एक व्यवसाय में काम करते हुए कमाते हैं और सभी की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, एक परिवार में और दूसरा समाज में। लेकिन वर्तमान में गृहस्थ आश्रम और व्यवसाय में लोग अधिक ले रहे हैं और अधिक खा रहे हैं और आय/लाभ/संसाधनों को ठीक से साझा नहीं कर रहे हैं, जिससे युवा आयु में, व्यवसाय में, नौकरी में और बच्चों में मोटापा और अन्य लोगों में यानी वृद्धावस्था में कुपोषण हो रहा है। यदि हम एक स्वस्थ परिवार और स्वस्थ समाज चाहते हैं तो हमें अपने आश्रम और वर्ण व्यवस्था को सही करना होगा। समाज को व्यवस्थित करने के लिए हमें धार्मिक स्थानों पर मुफ्त भोजन (लंगर/अन्नकूट/कुरान-खानी/भोज) की सुविधा शुरू करने की आवश्यकता है, जिसे कुपोषण से निपटने के लिए समाज द्वारा शुरू और बनाए रखने की आवश्यकता है।

2) मोटापे की शिक्षा पर नियंत्रण रखने के लिए उद्योग और सेवा क्षेत्र को अपने पाठ्यक्रम में शारीरिक गतिविधि को एक आवश्यक भाग के रूप में शामिल करना चाहिए, या तो 'वर्क इन' या 'वर्क आउट' के रूप में। कहा जाता है कि 'डांस ए डे कीप्स द डॉक्टर अवे'।
3) प्रिजर्वेटिव युक्त भोजन पेट में भी भोजन को सुरक्षित रखता है और अपच का कारण बनता है। कृत्रिम प्रिजर्वेटिव का उपयोग सीमित करना होगा और प्राकृतिक प्रिजर्वेटिव का सामान्य उपयोग कम करना होगा। स्कूलों और दफ़्तरों की कैंटीनों में जो कुछ भी बिकता है, उस पर नज़र रखनी होगी। देखा गया है कि मोटे लोग बहुत तेज़ी से खाते हैं जबकि सेहत को बनाए रखने के लिए खाने-पीने का समय धीरे-धीरे होना चाहिए। खाने के लिए कहा जाता है 'ठोस पिएँ और तरल खाएँ (खाने को इतना चबाएँ कि वह तरल हो जाए और पानी को ऐसे गटकें जैसे कि वह ठोस केला हो)। हो सके तो गद्देदार ज़मीन या टेबल कुर्सी पर बैठकर खाना-पीना चाहिए, लेकिन खड़े होकर खाने-पीने से बचना चाहिए।

4) मोटापा खाने का कारण नहीं है, बल्कि अकुशल निर्वहन का कारण है। पूर्वी शौचालय घुटने के पीछे एक्यूप्रेशर भी देता है और मलत्याग में आसानी पैदा करता है। पूर्वी शौचालय और प्रसाधन सामग्री को और अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसके अलावा, बैठे या खड़े होकर शौच करना बीमार जानवरों के लिए है। स्वस्थ समाज को पेशाब और शौच के स्वस्थ तरीके का उपयोग करने की आवश्यकता है। पश्चिमी शौचालय मोटे, अस्वस्थ लोगों और बीमारियों में वृद्धि और परिणामस्वरूप चिकित्सा बिलों के मुख्य कारणों में से एक है, और इसमें सुधार की आवश्यकता है।

5) बरगद और पीपल के पेड़ दूसरे पेड़-पौधों की तुलना में ज़्यादा बढ़ते रहते हैं क्योंकि पीपल और बरगद दिन भर भोजन बनाते रहते हैं, कार्बन डाइऑक्साइड लेते रहते हैं और ताज़ा ऑक्सीजन छोड़ते रहते हैं। भोजन बनाने में पेड़ कार्बन लेते हैं (हवा में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड के ज़रिए) और ऑक्सीजन पर्यावरण में छोड़ते हैं। पेड़ जो कार्बन लेते हैं, वह प्रकाश संश्लेषण के ज़रिए ग्लूकोज़/फ्रक्टोज़ या पेड़ के रस में बदल जाता है और पेड़ को बड़ा करता है। हवा से मनुष्य ऑक्सीजन लेते हैं और सांस लेने के बाद वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। मनुष्य हवा में जो कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं, उसमें मौजूद कार्बन वज़न को नियंत्रित करने का मुख्य स्रोत है, यानी अगर हम अपनी सांसें (गहरी और लंबी) लेते रहें तो हम अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं। ***

45. आतंकवाद और आतंकवादी

(ए) आतंकवाद किसी भी अन्य 'वाद' (जैसे साम्यवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद और यहां तक कि धर्मवाद) की तरह है, लेकिन इसके संचालन में यह अधिक जघन्य है और भय की चरम सीमा हो सकती है। जबकि आतंकवादी आतंकवाद से निर्देशित हो सकते हैं या वे आतंकवाद से प्रेरित हो सकते हैं या अकेले या अलग-थलग समूह हो सकते हैं या किसी भी तरह से पैसे कमाने के लिए एक छोटे समूह में काम कर सकते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें भाईचारे, नरसंहार और प्रलय के स्तर पर जाना पड़े। हालांकि, कुछ अन्य लोग कहते हैं कि आतंकवाद शैतान की कट्टर अभिव्यक्ति है जो लोगों के बीच आतंक पैदा करने/भड़काने के लिए है ताकि वे (शैतान) आसानी से आगे बढ़ सकें और उन्हें अपनी मर्जी के अनुसार कुछ भी करने की अनुमति दे सकें, जिसमें लक्षित उत्पीड़न और द्वितीय विश्व युद्ध में यहूदियों की सबसे भयानक हत्या/हत्या जैसी सभी तरह की सनकें और मनमौजी हरकतें शामिल हैं और फिर न केवल दुनिया की संपत्ति को लूटना और लूटना बल्कि कई देशों को नियम और विनियमन के लिए सहमत करना जिससे उन्हें आने वाले वर्षों तक लगातार धोखा और लूट का सामना करना पड़े।

9/11 अमेरिका में हुआ और कई लोकतांत्रिक लोगों ने पूरे मुस्लिम भाइयों को आतंकवादी करार दिया और उसके बाद अफगानिस्तान, इराक पर हमले किए और बड़ी मुस्लिम आबादी वाले सभी देशों पर लगातार निगरानी रखी। गांधी जी की हत्या कर दी गई और उनकी शहादत के लिए पूरे आरएसएस को जिम्मेदार ठहराया गया, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या कर दी गई और पूरे सिख समुदाय को हत्यारा करार दिया गया। एक क्षेत्र/धर्म/जाति/पंथ/रंग/लिंग को अपराधी/आतंकवादी और अछूत के रूप में इस तरह से पेश करना जो आम तौर पर बहुत ही योजनाबद्ध तरीके से किया जाता है और बहुत ही व्यवस्थित तरीके से कई तरह के फायदे उठाने के लिए अंजाम दिया जाता है, कहा जा सकता है कि इसका उद्देश्य अपराधी के प्रति वास्तविक आतंक पैदा करना है जिसे शैतान का आतंक कहा जा सकता है।

(A.1) क्या हथियारों की बिक्री के लिए किसी उद्योग द्वारा विपणन के लिए रखे गए पैसे से आतंकवादी हमला या युद्ध की योजना नहीं बनाई जा सकती है, और क्या हथियारों के उत्पादन की शुरुआती खेप को आतंकवादियों को परीक्षण के लिए नहीं दिया जा सकता है? ईंधन तेल भंडार, खनिज भंडार, हथियारों और गोला-बारूद की बिक्री से संबंधित कई बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ चाहती हैं कि आतंकवाद और आतंकवादी जारी रहें और उनके हितों की पूर्ति हो। यह आम बात है कि तानाशाह (सेना/सेना के लोगों द्वारा संचालित सरकारें) किसी भी नागरिक और लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार की तुलना में हथियारों और गोला-बारूद के आपूर्तिकर्ताओं की धुन पर बेहतर तरीके से नाच सकती हैं।

(बी) यदि कोई व्यक्ति किसी अपराध की वजह से हुई चूक या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कार्रवाई के बारे में जानना चाहता है तो वह किसी भी ठंडे खून वाले अपराध की विस्तृत जांच रिपोर्ट देख सकता है जिसमें सबसे पहले यह पता लगाया जाता है कि अपराध से किसको लाभ मिला है और उसे धन, नाम, प्रसिद्धि, सत्ता की स्थिति के रूप में अल्पकालिक और दीर्घकालिक रूप से क्या लाभ हुआ है। इसी तरह, यह भी पता लगाया जाता है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से कौन-कौन पीड़ित हैं और उनकी पीड़ा का स्तर क्या है। इसके अलावा यह भी पता लगाने की कोशिश की जाती है कि क्या यह ठंडे खून वाला अपराध पुरानी दुश्मनी का बदला लेने का नतीजा है या परिवारों, समाजों, देशों और दुनिया में नए सत्ता समीकरणों को भड़काने का। फिर यहां से आगे की जांच आगे बढ़ती है, जो कई बार बहुत गंभीर और खतरनाक होती है, इसलिए इसे गुप्त दस्तावेज बना दिया जाता है।

यदि हम अपराधों की उपरोक्त सूची पर गंभीरता से विचार करें तो स्थिति भयावह प्रतीत होती है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि जब विश्व के प्रमुख परामर्शदाता एवं वैज्ञानिक संगठनों से बात की जाती है तो पता चलता है कि उपरोक्त अपराध जैसे अमेरिका में 9/11, श्री एम.के. गांधी की हत्या, भारत में संसद पर हमला तथा हाल ही में फैली बीमारी और उसके बाद वर्ष 2002 से जारी वैश्विक लॉकडाउन के लिए काफी तैयारी की आवश्यकता होती है, वह भी तब जब विभिन्न संस्थाओं का समर्थन और पर्याप्त धन प्रवाह हो।

यह बात और भी भयावह हो जाती है जब पता चलता है कि दो विश्व युद्धों में शामिल लोग और उनकी संस्थाएं आज भी मौजूद हैं और किसी भी इकाई, समूह या देश या यहां तक कि सभी पर उस युद्ध को दोहरा सकते हैं। इस तैयारी की झलक हॉलीवुड की कुछ फिल्मों, विभिन्न वीडियो गेम्स, इस सहस्राब्दी के आगमन पर होने वाले विभिन्न विशेष वार्तालापों और दो हजार अठारह में प्रसारित नई विश्व व्यवस्था पर कुछ विश्व नेताओं के साक्षात्कारों से मिलती है। कहा जा रहा है कि अब चालाकी और छद्म विज्ञान के इन तथाकथित सफेदपोश महारथियों ने उन उपकरणों को अपने हाथ में ले लिया है जो अपनी इच्छानुसार भूकंप, चक्रवात, आंधी, तूफान और उसके परिणामस्वरूप होने वाली बारिश, वज्रपात और भूस्खलन को संभव बना सकते हैं और किसी भी देश/क्षेत्र को ध्वस्त कर सकते हैं।

(सी)। क्या किसी क्षेत्र/धर्म/जाति/पंथ/रंग/लिंग के प्रति ऐसे ब्रांडेड नफरत के विचार रखना और पेशेवर अपराधियों/आतंकवादियों/शैतानों को हस्तक्षेप करने और कार्य करने के लिए जगह देना सराहनीय है, कम से कम यह ऐसे विचार नहीं रखता है" क्योंकि ऐसी दुश्मनी और ऐसे विचार रखना प्रकृति के विरुद्ध है।

(सी.1). शैतान/आतंकवादी हत्या करके, एक तरह से सर्वशक्तिमान के काम में मदद कर रहे हैं – मास्टर किलर और मास्टर क्रिएटर। यह सिर्फ़ शैतान/आतंकवादियों के लिए प्रार्थना करता है, कि उनके हाथ खून से न दुखें। किसी के जीवन में सिर्फ़ दो ही महत्वपूर्ण लोग होते हैं, एक जो जीवन/जन्म देता है और दूसरा जो जीवन लेता/खत्म करता है, और इस तरह यह न तो आतंकवादियों से नफ़रत करता है और न ही आतंकवादियों का मुकाबला करता है।
जीवन की शुरुआत नकारात्मकता से होती है, बच्चे शुरू में ना कहना शुरू करते हैं और फिर छोटी उम्र में समझ जाते हैं कि कहां ना कहना है और कहां हां कहना है, लेकिन ऊर्जाहीन लोग हर बात के लिए हां कह देते हैं, इसलिए कहा जा सकता है कि जीवन की विकास प्रक्रिया के साथ आतंकवादी भी सज्जन बन सकते हैं। ऐसे में क्या यह उचित नहीं होगा कि आतंकवादी/शैतान को भी सुधरने और आगे आने का मौका दिया जाए।

(सी.2) आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण के लिए, एक खुशहाल समाज के लिए, मीडिया के प्रचार और नफरत को बढ़ावा दिए बिना और परेशान किए बिना, विभिन्न तरीकों से चिन्हित लोगों/समूहों को निशाना बनाया जाना चाहिए। हमें लगता है कि मीडिया एक सामंजस्यपूर्ण समाज के निर्माण में अपना कर्तव्य अच्छी तरह से निभाएगा।

(डी). अक्सर ऐसा होता है कि ये आतंकवादी गतिविधियाँ और युद्ध सद्भाव के लिए काम करने के लिए सही सोच वाले लोगों को एक साथ लाते हैं। अगर आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ रही हैं तो इसका मतलब है कि व्यवस्था में बदलाव की ज़रूरत है और सही सोच और दिल वाले लोगों को कड़ी मेहनत करनी होगी। हमें एक आम जनता के रूप में सही सोच और विकासोन्मुख लोगों को प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है, फिर हो सकता है कि आतंकवाद खुद ही खत्म हो जाए या फिर उसे पनपने और आतंकवादियों को पनपने के लिए समय, स्थान और ऊर्जा न मिले। आइए प्रार्थना करें कि ये आतंकवादी और तथाकथित आतंकवाद विरोधी लोग साहस, स्वतंत्रता और प्रेम का पाठ समझें और जीवन का पूरा आनंद लें। **

46. भ्रष्टाचार

व्याप्त अशुद्धियाँ/भ्रष्टाचार ही विकास और क्रांति, वृद्धि और क्षय के लिए जिम्मेदार है। सभी जीव, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, भोजन और उत्सव में भ्रष्टाचार के कारण ही विकसित होते हैं। लेकिन सवाल यह उठता है कि कितना भ्रष्टाचार, कितना मिश्रण, या अन्य भागों में कितनी शुद्धता और कितनी मौलिकता? क्यों और किस लिए?
बुद्धिमानी भरा उत्तर यह है कि जब तक इन्द्रियाँ (जिनके द्वारा व्यक्ति अपनी भावना के विपरीत कार्य कर सकता है) उसके हृदय की परीक्षा में सफल रहती हैं, तब तक कोई भी कार्य प्रकृति के अनुरूप माना जा सकता है, अन्यथा वह कार्य कष्टकारक हो जाता है और भ्रष्ट कहलाने लगता है।

(बी). जैसे–जैसे व्यक्ति, समाज और देश आगे बढ़ता है, भ्रष्टाचार शुद्ध शारीरिक से मानसिक स्तर पर बदल जाता है। प्राथमिक और भौतिक स्तर पर, अविकसित देश सबसे अधिक भ्रष्ट हैं, विकासशील कम भ्रष्ट हैं और विकसित और भी कम भ्रष्ट हैं; जबकि उन्नत स्तर पर विकसित देश आमतौर पर अविकसित और विकासशील देशों की तुलना में मानसिक रूप से अधिक भ्रष्ट हैं।

यह बात समझी जा सकती है कि मानसिक भ्रष्टाचार ज़्यादातर समय दूसरे भ्रष्टाचारों का कारण बनता है। मानसिक भ्रष्टाचार बुराई, अधार्मिकता का मार्ग और दुख का मार्ग है। यह बुराई तब और बढ़ जाती है जब धर्मी लोग पीछे हट जाते हैं और अनुभवी और भ्रमित लोगों को नेतृत्व करने देते हैं। धर्म के पीछे हटने से भ्रष्टाचार (यानी भोजन में नमक) का सूक्ष्म संतुलन बिगड़ जाता है और अराजक और यहां तक कि अधार्मिक (अधार्मिक) स्थितियां पैदा हो जाती हैं।

(सी). आम तौर पर, किसी देश में अगर मुखिया/प्रधानमंत्री भ्रष्ट है तो वह अपने ट्रस्टी/मंत्री को भ्रष्ट और अधीनस्थों को ईमानदार रखने के लिए बाध्य होगा। इससे आगे चलकर ऐसी स्थिति पैदा होगी कि मंत्री भी अपने ट्रस्टी को भ्रष्ट मानेगा और अपने अधीनस्थ को ईमानदार रखना चाहेगा और यह सिलसिला चलता रहेगा। इसी तरह अगर मुखिया/प्रधानमंत्री अकुशल है तो वह मंत्रियों का चयन करेगा, कुशल मंत्री अकुशल सचिवों का चयन करेगा और अकुशल सचिव अकुशल चेयरमैन, डायरेक्टर, जिला प्रशासक आदि का चयन करेंगे। उपरोक्त दोनों ही तरीकों से चाहे भ्रष्ट हो या अकुशल व्यवस्था ध्वस्त हो जाती है।

इसलिए यह देखा जाना चाहिए कि शीर्ष पर बैठे लोगों का चयन अत्यंत सावधानी से किया जाए। लोकतंत्र में यही मूल दोष है, जहां प्रमुखों का चुनाव किया जाता है और आम तौर पर मीडिया के

हेरफेर या दूसरों की विफलता के द्वारा। बेहतर भविष्य के लिए हमें एक ऐसी प्रक्रिया की आवश्यकता है, जिसमें प्रमुख का चयन ऋषि (कुछ दिव्य शक्ति वाले प्रबुद्ध लोगों का एक समूह) द्वारा किया जाता है, जो निर्वाचित सदस्यों में से हो सकता है या यदि आवश्यक हो तो अनिर्वाचित सदस्यों में से हो सकता है, और यह प्रणाली इंगित करती है कि हमें दिव्य लोकतंत्र की ओर बढ़ने की आवश्यकता है।

(डी) सामान्यतः सभी लोग समझते हैं कि जीवन का एकमात्र लक्ष्य सुख ही है और सुखी रहना ही धर्म के साथ रहना है। हमें ऋषियों की निगरानी में भ्रष्टाचार (शारीरिक और मानसिक) को रोकने और नियंत्रित करने के लिए सतर्कता प्रणाली और न्याय व्यवस्था (न्यायपालिका) का ध्यान रखना होगा और यदि आवश्यकता हो तो बुराई के मूल कारण भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ना होगा। हमें बुराई के विनाश और धर्म तथा उसकी संस्थाओं की पुनः स्थापना के लिए तैयार रहना होगा। ***

47. ' शिकायत और परिवाद', 'सुझाव और प्रतिक्रिया' और प्रस्तुतियाँ

प्रकृति ने कोई भी खुला हुआ नेटवर्क और सिस्टम प्रदान नहीं किया है। प्रकृति में सभी सिस्टम कमोबेश बंद लूप हैं, कुछ छोटे लूप का अनुसरण करते हैं जबकि अन्य लंबे लूप का अनुसरण करते हैं जैसे मौसम का चक्र, हवा, पानी और ऊर्जा का चक्र, पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा का चक्र, जीवन का चक्र और जीवन चक्र। समस्या तब उत्पन्न होती है जब कोई व्यक्ति या कोई सिस्टम जाने-अनजाने में, स्वेच्छा से या अनिच्छा से, किसी भी बंद लूप या चक्र/नेटवर्क में बाधा उत्पन्न करता है या बाधा बन जाता है, उदाहरण के लिए, मानव शरीर में यदि कोई पानी पीने, पेशाब और शौच में देरी करता है तो समस्याएँ आनी तय हैं, इसी तरह बड़े पैमाने पर जल भंडारण बैराज/बांध बनाने, वनों की कटाई, जानवरों की आवाजाही को प्रतिबंधित करने आदि से सभी चिंताओं में समस्याएँ आनी तय हैं।

जब कुछ भी गलत होता है और मानदंडों से भटक जाता है, तो प्रभावित और स्थानीय लोगों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे शिकायत और सुझाव, फीडबैक लेकर आएं ताकि जिम्मेदार व्यक्ति या एजेंसी द्वारा सुधारात्मक कार्रवाई (यदि कोई हो) की जा सके ताकि संचालन सुचारू रूप से जारी रहे। शिकायत और सुझाव संचालन में सरलता की कमी या सुधार की आवश्यकता को इंगित करते हैं, जबकि फीडबैक और सबमिशन को लोगों की बेहतरी की इच्छा का संकेत माना जा सकता है और यह प्रगतिशील और प्रतिष्ठित समाज का सूचक है।

समाज और सरकार को समाज के वर्गीय या समग्र सुधार के लिए योग्य सुझावों और सिफारिशों को स्वीकार करने के लिए एक हस्तक्षेप तंत्र प्रदान करने की आवश्यकता है, साथ ही अनुसंधान और विश्लेषण विंग को आगे के शोध के लिए नए विषयों की पेशकश करने की भी आवश्यकता है।

सुझाव स्वीकार करने की वर्तमान प्रथा बहुत ही भद्दी है, जैसे कि "जो लोग अपना सुझाव भेजना चाहते हैं, उन्हें 15 दिसंबर या उससे पहले साफ-सुथरे टाइप किए गए कागज़ पर सुझाव भेजना चाहिए और सुझाव समिति का होगा और उस पर व्यक्ति का कोई अधिकार नहीं होगा"। इसके अलावा, शिकायत और शिकायत, सुझाव और प्रतिक्रिया और प्रस्तुतियों से निपटने की वर्तमान प्रणाली भी हास्यास्पद लगती है, जब मूल कागज़ ही संबंधित विभाग को भेजा जाता है, जिससे संबंधित व्यक्ति व्यक्तिगत दुश्मनी और उसके बाद के परिणामों के लिए असुरक्षित हो जाता है। शिकायत और शिकायत, सुझाव और प्रतिक्रिया और प्रस्तुतियों से निपटने की प्रणाली को एक सक्रिय प्रणाली बनाने की आवश्यकता है, जिसमें प्रत्येक योगदानकर्ता को व्यक्तिगत रूप से स्वीकार किया जाता है, और यदि उचित हो तो उसे पुरस्कृत भी किया जा सकता है।

क्या स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर 'ज्ञान सह संसाधन केंद्र' खोलना एक विकल्प हो सकता है? क्या पूर्व प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपति, मंत्री, अन्य सेवानिवृत्त गणमान्य व्यक्तियों और विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों सहित वरिष्ठ नागरिकों के एक समूह द्वारा संचालित एक केंद्र, जो न केवल सही जानकारी प्रदान करेगा बल्कि ज़रूरतमंदों को ईमानदारी से सलाह और यथासंभव मदद भी प्रदान करेगा, एक विकल्प हो सकता है?

इस तरह के केंद्र के खुलने से वरिष्ठ और अनुभवी कर्मियों को सम्मानजनक रोजगार मिलेगा और उनकी ऊर्जा को सही तरीके से बाहर निकालने का अवसर मिलेगा। इस गतिविधि से वरिष्ठ नागरिकों को रोजगार मिलेगा और युवाओं को उनके सहायक के रूप में रोजगार मिलेगा।

सुझाव और प्रतिक्रिया जीवन प्रक्रिया के स्वाभाविक तत्व हैं और जीवन एवं जीवन संवर्धन प्रक्रिया के निम्नलिखित चक्र का अनुसरण करते हैं।

जीवन और जीवन संवर्धन प्रक्रिया. *****

***

48. गर्व और आनंद

"गर्व ईश्वर की कृपा से आता है, जबकि आनंद प्रकृति की गोद में है"। गर्व आत्मनिर्भर होने, परस्पर निर्भरता का सम्मान करने, शांति से स्वीकार करने और जो बदलने की आवश्यकता है उसे बदलने की क्षमता और योग्यता में निहित है। कमज़ोर लोगों का दमन, शक्तिशाली/योद्धाओं का अनादर और कुप्रथाएँ या आत्म-अपमानजनक प्रभाव गर्व के रंग को काला कर देते हैं।

अपने काम, हैसियत या मुद्रा को कम या ज्यादा रखना गर्व की बात नहीं है। जब एक सेब चार डॉलर/यूरो/पाउंड प्रति पीस बिकता है तो एक फ्रांसीसी या ब्रिटिश नागरिक के लिए इसे खरीदना उतना ही आसान है जितना कि एक भारतीय के लिए इसे चार रुपये में खरीदना। भेदभाव और उसका प्रभाव तब शुरू होता है जब भारतीयों को इसे दो-तीन सौ रुपये प्रति पीस खरीदना पड़ता है। मुद्रा और हैसियत की समानता जल्द से जल्द खरीदनी होगी और इसे बनाए रखना होगा, भले ही हमें कुछ समय के लिए आधा भूखा रहना पड़े।

परमानंद तब आता है, जब अभिमान अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाता है और जागृत अवस्था में बना रहता है। प्रकृति के करीब रहने और नदी जोड़ो परियोजनाओं, विशाल जलविद्युत और सिंचाई बांधों, गहरे समुद्र में अन्वेषण और परमाणु बमों के परीक्षण जैसे प्रकृति के हेरफेर में आत्म-संयम से परमानंद को बनाए रखा जाता है। **

49. हिंसा, अहिंसा, शांति और लय

1) अंततः खेल शक्ति/ताकत से तय होता है, यदि शक्ति बुरे लोगों/राक्षसों/असुरों/दैत्य/दानवों के पास है तो समाज भयभीत, अराजक, दबा हुआ आदि होगा और यदि शक्ति/ताकत अच्छे लोगों/देवताओं के पास है तो निश्चित रूप से समाज अच्छाई से भरा होगा।

2) जब महावीर जी से पूछा गया कि, "सब लोग कहते हैं कि शक्ति और जागरूकता होनी चाहिए, आपके क्या विचार हैं, महावीर जैन ने उत्तर दिया कि शायद मेरे विचार से "यह अच्छा है कि बुरे लोग कमजोर और जागरूक रहें और यह अच्छा है कि अच्छे लोग शक्तिशाली रहें, शक्ति से युक्त हों और जागरूक रहें (पता नहीं देश के जैनों में अहिंसा की यह अतिशयोक्ति कब और कैसे पैदा होती है।

3). प्रकृति में विचित्र और विरोधाभासी घटनाएं होती रहती हैं और हमारे इतिहास में इसका पर्याप्त उल्लेख है। बुद्ध और महावीर द्वारा अहिंसा के अतिरेक के बाद भारत में गिरावट आई और अब गांधी जी और उनके अनुयायियों द्वारा अहिंसा आंदोलन के बाद सुधार शुरू हुआ। "जिस कारण से भारत में पतन शुरू हुआ, वही उत्थान का कारण भी बन गया।"

4) सभी लोग मजे के लिए हिंसा या हत्या का विरोध करते हैं, अल्लाह ने हमलावर से प्रेम नहीं किया, न ही कृष्ण ने युद्ध शुरू किया। जो भी अधार्मिक (अधार्मिक–काफिर) बनता है, वह दण्ड का पात्र है? यदि समाज का कोई बड़ा समूह या विशेष वर्ग अधार्मिक (गैर–धार्मिक) प्रथाओं का पालन या समर्थन करना शुरू कर देता है, तो धर्म–युद्ध/जिहाद (युद्ध) की आवश्यकता होती है। ऐसे सभी धर्म–युद्ध/जिहाद/युद्ध में शीर्ष नेता कृष्ण की तरह अपने हाथों से किसी की हत्या नहीं करता। ऐसे ही लोग युद्ध के केंद्र में भी अहिंसक रह सकते हैं; अन्यथा लोग आम लोगों की अहिंसा और खास लोगों (पुलिस और सेना की) की हिंसा का समर्थन करते हैं।

5) जीवन में संघर्ष हमेशा चलता रहता है, यहाँ तक कि हमारे शरीर में भी श्वेत रक्त कणिकाएँ वायरस और बैक्टीरिया से युद्ध करती रहती हैं, और ऐसे में शांति तभी मिलती है जब हम टुकड़ों में बँट जाते हैं यानी मृत्यु पर। आम तौर पर जो हासिल होता है वह लय है और हमें उसी पर लक्ष्य बनाना चाहिए। **

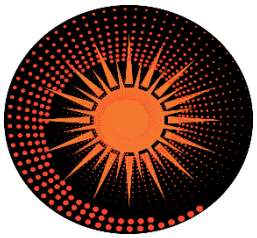

धर्म का पुनरुत्थान

भाग - 3

आर्थिक साधन धन और मुद्रा

(एक पैसा

(A.1) पैसा तो पैसा ही है। पैसा सिर्फ़ व्यापार योग्य मुद्रा नहीं है जिसे हम आज कागज़ के नोटों और धातु के सिक्कों के अलावा कुछ वस्तुओं के रूप में देखते हैं, बल्कि कहा जाता है कि (भारत में) पैसा धन के आठ स्रोतों पर टिका होता है: आध्यात्मिकता, भौतिक संपदा, कृषि, राजसी सत्ता, ज्ञान, साहस, संतान और विजय।

कुछ लोग कहते हैं; " *तका ही कर्मम्, ताका ही धर्मम्, तका ही मोक्ष प्रदायते, तका बिन टक-तक-ताकी, टक-तक-टकटयते।* " (धन कर्म है, धन धर्म है, धन मोक्ष है। धन के बिना व्यक्ति संशय में रहता है, भयभीत रहता है और आशा के साथ अपनी घड़ी या आकाश की ओर देखता है), जबकि अन्य लोग कहते हैं कि : "गरीबी के समान कोई दुःख नहीं है और संतों से मिलने जैसा कोई सुख नहीं है)। धन के महत्व के संबंध में इन सभी कहावतों के साथ, यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि क्यों और कैसे पूरा समाज गरीब हो गया है, और अभी भी ऐसा ही है। यहां यह भी ध्यान दिया जा सकता है कि आनंद समृद्धि में नहीं, बल्कि संतों की संगति में है। धन ऊर्जा है, और यह चूहों (पंचतंत्र कहानी) को भी ऊर्जा प्रदान करता है, सांप इस पर बैठते हैं और इसकी रखवाली करते हैं, धन के रक्षक कुबेर का सम्मान किया जाता है

(ए.2) वर्तमान व्यवस्था ने सभी धन को प्रचलन में लाने के लिए कोई रास्ता खोजने के बजाय धन को 'काला और सफेद' जैसे नाम देने में खुद को व्यस्त पाया। पैसा पैसा है और बच्चे बच्चे हैं, चाहे वे कहीं भी पैदा हुए हों। काले धन या वेश्यालयों की मौजूदगी यह दर्शाती है कि देश के सभी प्रकार के कानून (सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक-राजनीतिक) या तो दमनकारी हैं या अस्पष्ट या संदिग्ध या अस्पष्ट हैं या पुराने और अप्रचलित हो चुके हैं।

चाहे संभोग का तरीका कोई भी हो, सभी बच्चे भगवान की रचना हैं और उन सभी पर भगवान का आशीर्वाद होता है, किसी भी बच्चे की उपेक्षा करना और फिर उसे त्याग देना हमेशा प्रकृति द्वारा दंडित किया जाना है, एक से अधिक तरीकों से, लेकिन गुप्त रूप से। पैसे के मामले में भी यही बात है कि पैसे का हमेशा सम्मान किया जाता है।

गलत तरीकों या अनैतिक तरीकों से कमाए गए पैसे और अकेले या वेश्यालयों में पैदा हुए बच्चों को नज़रअंदाज़ करना और त्यागना किसी काम का नहीं है, इसके बजाय जो होना चाहिए वो है सभी पैसे/बच्चों को स्वीकार करना और हमारे कानून और व्यवस्था में खामियों को दूर करना ताकि भ्रष्टाचार न पनपे और वेश्यालय न पनपें। सुरक्षित रहस्य और सुरक्षित बैंकिंग का प्रावधान एक अस्थायी व्यवस्था हो सकती है।

(अ.3) एक बार जब धन को काला धन घोषित कर दिया जाता है, तो वह आलोचना और उत्पीड़न का केंद्र बन जाता है और फिर उसे गुप्त भंडारण और प्रचलन के लिए बाध्य किया जाता है। ऐसा सारा धन जिसका आसानी से हिसाब नहीं लगाया जा सकता और जो बदनामी का कारण बन सकता है, वह किसी ऐसे स्थान या देश में जमा और उपयोग होने लगता है, जो ऐसे सभी खातों और खाताधारकों को सम्मान, गोपनीयता, सुरक्षा और संरक्षा देने का दावा करता है। एक मोटे अनुमान के अनुसार ऐसे बैंकों और ऐसे देशों में जमा राशि कुछ लाख करोड़ से अधिक होती है। यह इतनी बड़ी राशि है कि कोई देश इसके ब्याज से ही लाभ उठा सकता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कई छोटे–छोटे देश (द्वीप) इस प्रकार के संचालन के लिए विशेष रूप से बनाए गए हैं।

यह कहा जा सकता है कि भारत जैसे देश वाकई दयनीय हैं, कम से कम हमें तो अपने साथ सहानुभूति रखनी चाहिए और हमें अपनी मदद करनी चाहिए। एक जगह भारत कह रहा है कि वह गरीब है और दूसरी जगह कुछ देश सिर्फ भारतीय पैसे के ब्याज पर चल रहे हैं; यह कितना विरोधाभास है, काले धन की परिभाषा के लिए कितनी शर्म की बात है। पैसा तो पैसा है। इसे काला और सफेद रंग देना बेतुकी बुद्धि की पराकाष्ठा है। यह कानून और व्यवस्था में अक्षमता है, या यूं कहें कि कानून और व्यवस्था में काला और सफेद रंग है।

(ए.4) भारत के ज्ञान के बारे में इतनी सारी बातें होने के बावजूद, यह वाकई आश्चर्यजनक है कि भारत क्यों और कैसे गरीब हो गया और अभी भी गरीब माना जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था तभी समृद्ध/बढ़ेगी जब भारत अपनी गरीबी, बेघर होने या कम पैसे के मूल कारण का पता लगाएगा।

इसके कुछ कारण इस प्रकार हो सकते हैं:
(i) भारत ने महान महाभारत के बाद कोई बड़ा युद्ध नहीं लड़ा है। यह देखा गया है कि बहुत से भारतीय अभी भी अपनी पिछली जीत को भूले हुए हैं और वे राम–कथा और भागवत कथा (महाभारत–कथा) की कहानियों के पाठ में व्यस्त हैं। भगवान (कृष्ण और राम) को वास्तविक कर्म के बिना इतनी प्रार्थना सुनना उबाऊ लगता होगा।

(ii) बुद्ध द्वारा राज्य त्यागकर फिर साधु बन जाना और फिर भिक्षा पर जीवन यापन करना, इस आम धारणा को जन्म देता है कि धन होना अभिशाप है, और ये राजा इतने मुखर और दृढ़ थे कि यह बात सिद्ध होती दिख रही थी। दुर्भाग्य से इसने भीख मांगने को सम्मान दिया और कभी–कभी तो भिखारी भी खुद को राजाओं के बराबर मानने लगे।

(iii) कुछ धर्मग्रंथ कहते हैं; धन्य हैं गरीब, ईश्वर का राज्य उनके लिए है; इससे जनसाधारण में गरीबी और उसके स्वीकार्यता को और अधिक महिमामंडित किया गया है।

(iv) कुछ लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि गरीबी पिछले जन्म में किए गए पापों का परिणाम है और इसलिए इसे स्वीकार्य लाचारी बना दिया गया और उन्होंने आगे कहा कि संत के आशीर्वाद से परिदृश्य बदल सकता है और इस तरह ठगों, लुटेरों और चमत्कार/जादूगरों का सर्कस शुरू हो गया, जिसने आम आदमी को वास्तविक कर्म/संक्षिप्तता से दूर कर दिया।

(v) कई लोग कहते हैं कि पैसा चरित्र को खराब कर देता है, इसलिए पैसा न होना ही बेहतर विकल्प है।

(vi) बहुत से लोग दूसरों के पास धन होने की आलोचना करते हैं, लेकिन साथ ही भगवान से धन होने की प्रार्थना भी करते हैं, लेकिन जब धन इन वर्गों के सामने आता है, तो वे उसे लौटाने या उससे दूर भागने के बहाने ढूँढ़ लेते हैं। क्या प्रकृति द्वारा ऐसी विरोधाभासी माँगें पूरी की जा सकती हैं?

(vii) कुछ धर्मों का कहना है कि वे दिन में कम से कम पाँच बार सार्वजनिक रूप से सर्वशक्तिमान को याद करते हैं और उनके अनुयायियों को शायद ही इतना कमाने का समय मिलता है, लेकिन वे दूसरों के पास इतना कमाने से भी घृणा करते हैं। क्या ज़्यादा याद करने या हर समय काम करने और ज़्यादा कमाने में कोई समस्या है?

(अ.5) नानक कहते हैं; काज करो बत्त चखो नाम जपो। लोग और समाज, जो इस प्रकार है, "काम करो, मिलजुलकर खाओ और सर्वशक्तिमान को याद करो", को अधिकाधिक समृद्ध होते हुए देखा जा सकता है।

(बी) मुद्रा

(बी.1)। वस्तु विनिमय में, वस्तुओं और सेवाओं का अन्य वस्तुओं और सेवाओं के लिए सीधे आदान-प्रदान किया जाता था। आधुनिक दुनिया में वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के प्राथमिक साधन के रूप में मुद्रा ने वस्तु विनिमय की जगह ले ली है। मुद्रा को धन का एक साधन कहा जा सकता है जिसका उपयोग किसी विशेष देश में किसी विशेष समय पर वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान में एक मध्यस्थ सामान्य भाजक के रूप में किया जाता है। उदाहरण के लिए भारत में यह रुपया है, अन्य देशों में येन, रियल, रूबल, पैसा, युआन, दीनार, दिरहम, डॉलर, स्टर्लिंग पाउंड, यूरो आदि। कागज या सिक्कों के रूप में ऐसा धन, जिसे सरकार द्वारा जारी किया जाता है और अंकित मूल्य पर स्वीकार किया जाता है, मुद्रा के रूप में जाना जाता है।

मुद्रा का शाब्दिक अर्थ ऊर्जा या "गर्म करना" है और मुद्रा का अर्थ है दौड़ना या "प्रवाहित होना।" ऐसे कागजी बिल/पैसे को प्रतिनिधि मुद्रा कहा जाता था जिसका अर्थ है कि प्रत्येक सिक्का या बिल, भले ही उसका अपना कोई मूल्य न हो, उसे किसी वस्तु की एक निश्चित राशि के लिए बदला जा सकता है क्योंकि केंद्रीय बैंक इसकी गारंटी देते हैं। भारत में, केंद्रीय बैंक, यानी RBI ने भारतीय रुपया (INR) को मानक मुद्रा के रूप में जारी किया है और इसका मूल्य बाजार के कारकों द्वारा निर्धारित किया जाता है।

(बी.2) औद्योगिक क्रांति के बाद, वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ने लगी, जिसने उद्योगपतियों और व्यापारियों को यथासंभव अधिक से अधिक स्थानों पर व्यापार बढ़ाने के लिए प्रेरित किया, जिसके परिणामस्वरूप अर्थशास्त्रियों को स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार करने के लिए कागज के नोट और धातु के सिक्के जैसे आसानी से व्यापार योग्य और सामान्य परिवर्तनीय उपकरण और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार करने के लिए कुछ विनिमय सूत्र बनाने के लिए मजबूर होना पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध के बाद अंतरराष्ट्रीय विनिमय पर लगाए गए कई प्रतिबंधों ने डॉलर को दुनिया की सबसे प्रमुख और बेंचमार्क मुद्रा बनने और दुनिया में मुद्राओं के आदान-प्रदान और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के एक अपरिहार्य माध्यम के रूप में मार्ग प्रशस्त किया। तब से, डॉलर दुनिया भर में ध्यान आकर्षित कर रहा है। इसके मद्देनजर, भारतीय मुद्रा की तुलना, अन्य कई मुद्राओं की तरह, डॉलर के साथ उसके मूल्य को निर्धारित करने के लिए की जाती है।

(बी.3) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, यूएसएसआर एक अन्य शक्ति केंद्र के रूप में उभरा और इसकी मुद्रा रूबल एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार योग्य मुद्रा बनी रही, लेकिन यह शक्ति ब्लॉक के अपने हिस्से तक ही सीमित थी और 25 दिसंबर 1991 को यूएसएसआर के पंद्रह देशों में टूटने तक ऐसा ही रहा।

(बी.4)। बहुत दूर न जाते हुए, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के वर्षों में, दुनिया भर के केंद्रीय बैंक एक औंस सोने (28.3495 ग्राम सोना) के लिए अमेरिकी सरकार को $35 का भुगतान कर सकते थे। दूसरे शब्दों में, कागजी मुद्रा असली धातु द्वारा समर्थित थी और अगर कोई चाहे तो कानूनी तौर पर इसके बदले में इसे बदल सकता था।

लेकिन 1971 में अमेरिका ने अन्य देशों के साथ इस समझौते को रद्द कर दिया और कहा कि डॉलर को अब सोने के साथ भुनाया नहीं जा सकता। 1976 में सोने और अमेरिकी डॉलर के मूल्य पूरी तरह से अलग हो गए थे जब सोना 38 डॉलर प्रति औंस था और इस तरह से पैसा अब प्रतिनिधि मुद्रा नहीं रह गया था जिसका मतलब है कि प्रत्येक सिक्के या बिल को किसी निश्चित राशि या किसी भी वस्तु की किसी भी राशि के बदले में बदले जाने की गारंटी नहीं दी जा सकती है।

(बी.5)। विश्व स्तर पर, प्रतिनिधि मुद्रा के बाद फिएट मनी की अवधारणा आई। फिएट मनी एक प्रकार की मुद्रा है जिसे सरकार द्वारा वैध मुद्रा घोषित किया जाता है, लेकिन इसका कोई आंतरिक या निश्चित मूल्य नहीं होता है और यह सोने या चांदी जैसी किसी भी मूर्त संपत्ति द्वारा समर्थित नहीं होती है।

ऐसा कहा जाता है कि फिएट मुद्रा के मूल्यों की गारंटी सरकार द्वारा दी जाती है जो मुद्रा जारी करती है। इसके अलावा सरकार आर्थिक उतार-चढ़ाव के जवाब में प्रचलन में मुद्रा की आपूर्ति को नियंत्रित कर सकती है, किसी भी मात्रा में मुद्रा छापकर (वह भी बिना किसी स्टॉक में कुछ रखे, जिसके बदले में भुगतान किया जा सके)।

ऐसा कहा जाता है कि फिएट करेंसी का मूल्य जारी करने वाली सरकार में जनता के भरोसे और चाहे कुछ भी हो जाए, उसके भरोसे को बनाए रखने की उसकी क्षमता से आता है। 1976 के बाद, डॉलर यूरो, ब्रिटिश पाउंड और जापानी येन की तरह एक फिएट करेंसी बन गया। (शब्द "फ़िएट" मूल रूप से लैटिन है और यह सरकार या अन्य आधिकारिक व्यक्ति द्वारा जारी किए गए मनमाने आदेश को संदर्भित करता है। जब कागजी मुद्रा पर लागू किया जाता है, तो फिएट करेंसी उस डरावनी धारणा को संदर्भित करती है कि हमारे डॉलर का मूल्य केवल इसलिए है क्योंकि सरकार कहती है कि ऐसा है)।

(बी.6) आज अगर हम मुद्रा के मोर्चे पर देखें तो यह कहा जा सकता है कि दुनिया जिसने भौतिक रूप से मौजूद वस्तुओं (वस्तु विनिमय) के साथ व्यापार करना शुरू किया, पहले प्रतिनिधि मुद्रा में बदल गया, फिर फिएट मनी की अवधारणा में बदल गया और अब इसे डिजिटल मनी/मुद्रा की ओर धकेलने की कोशिश की जा रही है। डिजिटल मनी एक प्रकार की मुद्रा है जिसे सरकार

या बहुराष्ट्रीय कंपनी या किसी ब्रांड द्वारा कानूनी निविदा घोषित किया जाता है, लेकिन इसका कोई आंतरिक या निश्चित मूल्य नहीं होता है और यह सोने या चांदी जैसी किसी मूर्त संपत्ति या किसी विशेष सरकार द्वारा समर्थित नहीं होती है। यह बताया गया है कि अग्रणी शोध फाउंडेशनों में से एक दुनिया को डिजिटल लेन-देन की ओर धकेलने की कोशिश कर रहा है और पाया गया है कि वह कम से कम 2015 से कई देशों के केंद्रीय बैंकों (जैसे भारत में RBI) के साथ मिलकर काम कर रहा है, जैसा कि अमेरिकी कांग्रेस में एक ऐसे फाउंडेशन द्वारा घोषणा की गई है)। स्वीडन और भारत में मुद्रीकरण को इस दिशा में एक प्रयास कहा जाता है।

(बी.7) कहा जाता है कि, पैसा पैसा है, जिसमें कई लोग कहते हैं कि, "पैसा कर्म (काम, कार्य और क्रिया के साथ-साथ किसी की विशेषज्ञता) है, पैसा धर्म (धर्म) है, पैसा मोक्ष (स्वतंत्रता) प्रदान करने वाला है, पैसे के बिना व्यक्ति संदेह और भयभीत रहता है और आशा के साथ शांति से घड़ी या आकाश को देखने के लिए मजबूर होता है," इसलिए यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हर कोई पैसा रखना चाहेगा।

जो लोग जीवन में संतुष्ट हैं और भगवान पर भरोसा रखते हैं, वे उतना ही धन चाहते हैं, जिससे उनकी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी हो सकें, लेकिन जो लोग न तो अपने जीवन में संतुष्ट हैं और न ही भगवान पर भरोसा रखते हैं, वे चाहते हैं कि उनके खजाने में जितना संभव हो सके उतना धन हो और वे उसे अपने नियंत्रण में रख सकें, या शायद उससे भी ज्यादा। ये असंतुष्ट और आस्थाहीन लोग हैं, जिनसे न केवल हर तरह के काम करने की उम्मीद की जा सकती है, बल्कि उनसे हर तरह के खेल, चालें, चालाकी और धौंस जमाने और हुक्म चलाने की भी उम्मीद की जा सकती है, ताकि जितना संभव हो सके उतना धन प्राप्त किया जा सके, भले ही वे उपलब्ध सभी धन पर पूरा नियंत्रण न रख सकें।

(बी.8) तथ्यों और आंकड़ों के भारतीय पक्ष की बात करें तो, जब 1913 में पहली बार डॉलर का अंतर्राष्ट्रीयकरण किया गया था, तब एक भारतीय रुपया नब्बे डॉलर के बराबर था। जब भारत 1947 में आजाद हुआ तो यह 4.16 रुपये यानी एक डॉलर हो गया, 1948 में यह 3.31 रुपये हो गया, 1950 में यह 4.76 रुपये हो गया और 1965 तक ऐसा ही रहा। 1971 में जब अमेरिका ने सोने को डॉलर से अलग करने की घोषणा की (जो कि एक औंस सोने के लिए 35 डॉलर था = 28.3495 ग्राम सोना) तो एक डॉलर 7.49 रुपये के बराबर हो गया, इसके बाद जब अमेरिका ने अंततः डॉलर को सोने से अलग कर दिया (जब सोना 38 डॉलर प्रति औंस था - 28.3495 ग्राम) तो 1976 में एक डॉलर 8.96 रुपये के बराबर हो गया 1998 में यह 41.26 रुपए था, 1999 में यह 43.06 रुपए था, 2004 में यह 45.32 रुपए था, 2009 में यह 48.41 रुपए

था, 2014 में यह 62.33 रुपए था, 2019 में यह 70.39 रुपए था, जो अब 2023 में 82.56 रुपए प्रति डॉलर है (इसे इंटरनेट पर जांचा जा सकता है)।

भारत में सोने (24 कैरेट प्रति 10 ग्राम) की कीमत की बात करें तो, वर्ष 1964 में यह 63.25 रुपये थी, 1971 में (जब अमेरिका ने सोने की कीमत के साथ डॉलर को अलग किया) यह 193.00 रुपये थी, 1976 में (जब अमेरिका ने अंततः सोने की कीमत के साथ डॉलर को अलग किया) यह 432.00 रुपये थी, 1990 में यह 3,200.00 रुपये थी , 1991 में जब भारत की अर्थव्यवस्था खुली थी तब सोने की कीमत 3,466.00 रुपये थी, 2004 में यह 5,850.00 रुपये थी, 2009 में यह 14500 थी, 2014 में यह 28,006.50 रुपये थी, 2019 में यह 35220 रुपये थी और अब 2023 में यह 35000 रुपये है। 61,840.00 **. (उपरोक्त डेटा 28.05.2023 को विभिन्न आधिकारिक साइट से इंटरनेट से लिया गया है)।**

भारत सोने का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है (चीन के बाद)। और सोने का दूसरा सबसे बड़ा आयातक है और यह भारत के कुल आयात का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। भारतीय लोग सोने को आभूषण के रूप में और निवेश के रूप में भी खरीदते हैं क्योंकि मीडिया द्वारा इसे एक सुरक्षित और अच्छा निवेश बताया जाता है। इस वजह से भारत में सोने की कीमत लगातार बढ़ती रहती है, खासकर फसल के मौसम के साथ-साथ त्योहारों और शादियों के दौरान।

निम्नलिखित कुछ कारक हैं जो आम तौर पर सोने की कीमत को प्रभावित करते हैं: (i) सोने का उत्पादन, (ii) बाजार में किसी दिए गए वर्ष में सोने की आपूर्ति और मांग, (iii) केंद्रीय बैंक की स्थिरता और इसकी मौद्रिक नीति और रणनीति जो अर्थव्यवस्था में ऋण प्रवाह को बनाए रखती है, (iv) आभूषण उद्योगों की सेहत, और अंत में, (v) सरकारी भंडार की ताकत।

इसके अलावा वैश्विक बाजारों में होने वाली हलचल भी सोने के मूल्य को निर्धारित करती है। निवेशकों के लिए यह कीमती धातु तेल और डॉलर की तुलना में अधिक सुरक्षित मानी जाती है, इसलिए जब लोग तेल और डॉलर की कीमतों में उतार-चढ़ाव का अनुभव करते हैं तो वे सोने को प्राथमिकता देते हैं। इसके अलावा राजनीतिक कारक और चुनाव तथा सरकार और उसकी नीति में बदलाव जैसी घटनाएँ भी भारत में सोने की कीमत को प्रभावित करती हैं।

(बी.9) एक बार फिर भारत की बात करें तो अगर हम ऊपर के बिंदु क्रमांक (ए.2.जी) को ध्यान से देखें तो भारत की वित्तीय यात्रा को समझना बहुत मुश्किल है कि 1964 में सोने का मूल्य जो 63.25 रुपये प्रति दस ग्राम था वह बढ़कर 1964 में 63.25 रुपये प्रति दस ग्राम हो गया। 61,840.00 (28.05.2023 को), लगभग एक हजार गुना की गिरावट। इसके अलावा

अगर हम इसी अवधि के लिए डॉलर की कीमत देखें तो 1964 में डॉलर जो 4.76 रुपये के बराबर था, अब 82.56 रुपये के बराबर है, जो लगभग बीस गुना की गिरावट है। लेकिन अगर हम 1913 में अपनी अंतरराष्ट्रीय शुरुआत के बाद से डॉलर को देखें तो उस समय एक भारतीय रुपया जो बदले में नब्बे डॉलर देता था, वह इस स्तर पर आ गया है कि यह 82.56 प्रति डॉलर (28.05.2023 को) है, यानी सौ और दस वर्षों में नौ सौ गुना अवमूल्यन हुआ है।

(बी.10)। ऊपर दिए गए बिंदुओं को समझना बहुत मुश्किल है, खासकर स्वतंत्र और स्वतंत्र भारत में और यह इस बात का संकेत है कि देश मूल रूप से तथाकथित उपनिवेशवाद से फिसलकर अब नव-उपनिवेशवाद के अधिक परिष्कृत और कठोर रूप में पहुंच गया है। इसका मुख्य समाधान और फिएट मुद्राओं और डिजिटल मुद्रा का विकल्प कमोडिटी मनी यानी वस्तु विनिमय है, जो एक मूर्त संपत्ति द्वारा समर्थित है। तथाकथित हार्ड मुद्राओं (डॉलर, पाउंड स्टर्लिंग, यूरो, येन) की अस्थिरता और डिजिटल मुद्रा के पूरी तरह से अनिश्चित व्यवहार के बीच, हालांकि कुछ देशों के राष्ट्रपतियों द्वारा सोने में व्यापार करने का प्रस्ताव दिया गया है, सवाल उठता है कि क्या होगा यदि तथाकथित पावर ब्लॉक द्वारा सोने को समान रूप से अस्थिर बना दिया जाए?

इसका समाधान मूल वस्तु विनिमय प्रणाली पर वापस लौटना है, भले ही वह संशोधित प्रारूप में हो। और कम से कम छोटे समुदायों और मित्र देशों के बीच शुरू करना है। इसके अलावा, उन लोगों, समुदायों और देशों के लिए जिनके पास ज़रूरत के समय व्यापार किए गए सामान/सेवाओं के बदले में देने के लिए कुछ भी नहीं है, यह ज़रूरी है कि समाज और मित्र देश ऐसे ज़रूरतमंदों की मदद/सहयोग करने के लिए सद्भावना/दान पूल बनाएँ। ऐसा कहा जाता है कि जो लोग बदले में कुछ भी पैसा/सामग्री नहीं दे सकते, उनकी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद सबसे ज़्यादा मायने रखते हैं और ऐसे लोगों को हर संभव मदद/सहयोग दिया जाना चाहिए।

(बी.11) धोखाधड़ी से बचने के लिए, तथा वस्तुओं की कीमतों में मुद्रास्फीति तथा मुद्रा के उतार-चढ़ाव/अवमूल्यन से अप्रभावित रहने के लिए, बैंकों में पैसा रखने के बजाय घर पर तथा देश में ही सामग्री का भंडारण करना बेहतर है, इसी प्रकार नकदी में - भौतिक रूप से या डिजिटल रूप में - की तुलना में सोने और चांदी सहित विभिन्न प्रकार की वस्तुओं में लेन-देन करना बेहतर है। लेकिन भारत जैसे देश के लिए, यदि वह अंधकारमय शासन को समाप्त करना चाहता है तथा उचित शासन स्थापित करना चाहता है, तो भारत को सोने की सभी इच्छाओं को त्यागना होगा तथा न केवल खरीदना और उपयोग करना बंद करना होगा, बल्कि अपने पास मौजूद सभी सोने को त्यागना होगा तथा उसे विस्मृति में छोड़ देना होगा, तभी भारत पर्यावरण अर्जित कर सकता है। ***

बंदना चौधरी

संपादक- नरेंद्र अग्रवाल

लेखक

Bandana Chaudhary

अप्रैल 1993 में जन्मी बंदना चौधरी अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर हैं। वह एक उत्साही पर्यवेक्षक, मौन कार्यकर्ता और कई महत्वपूर्ण पुस्तकों की प्रकाशक हैं, जैसे मीता-लाइफ स्टाइल एजेंडा, डिविनक्रेसी (दिव्य लोकतंत्र), सनातनी वैश्विक व्यवस्था, परांजलि, धर्यते इति धर्म और काम की बात और नवीनतम वैकल्पिक अर्थव्यवस्था- प्राकृतिक व्यवस्थित अर्थव्यवस्था। उन्होंने यूट्यूब चैनल - 'द डिविनक्रेट' और 'बेहतर बिहार बेहतर भारत' पर कई मुद्दे आधारित साक्षात्कार/भाषण भी दिए हैं।

संपादक: नरेंद्र अग्रवाल

फरवरी 1966 में जन्मे नरेंद्र अग्रवाल ने कहा कि वे अपना समय सिस्टम में जमा गंदगी और गंदगी को साफ करने में लगा रहे हैं और कैसे एक स्थायी तरीके से स्वच्छ और स्वच्छ रहने योग्य वातावरण के प्रावधान के लिए जिम्मेदार संस्थानों को फिर से स्थापित किया जा सकता है। वे पिछले बीस वर्षों से इस लक्ष्य की ओर सचेत रूप से काम कर रहे हैं और कहा जा सकता है कि उन्होंने भारत में व्यापक लोगों के साथ बातचीत और संवाद किया है और इस उद्देश्य के लिए 2007 में "मीता-जीवन शैली एजेंडा" नामक एक व्यापक और बुनियादी "सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक-राजनीतिक" एजेंडा लिखा है।

*****

हमारे साथ जुड़ें:

- **वेबसाइट**: resurrectionofdharma.com
- **ईमेल**: resurrectionofdharma@gmail.com
- **मोबाइल नंबर**: +91-9202974121

धर्म का पुनरुत्थान